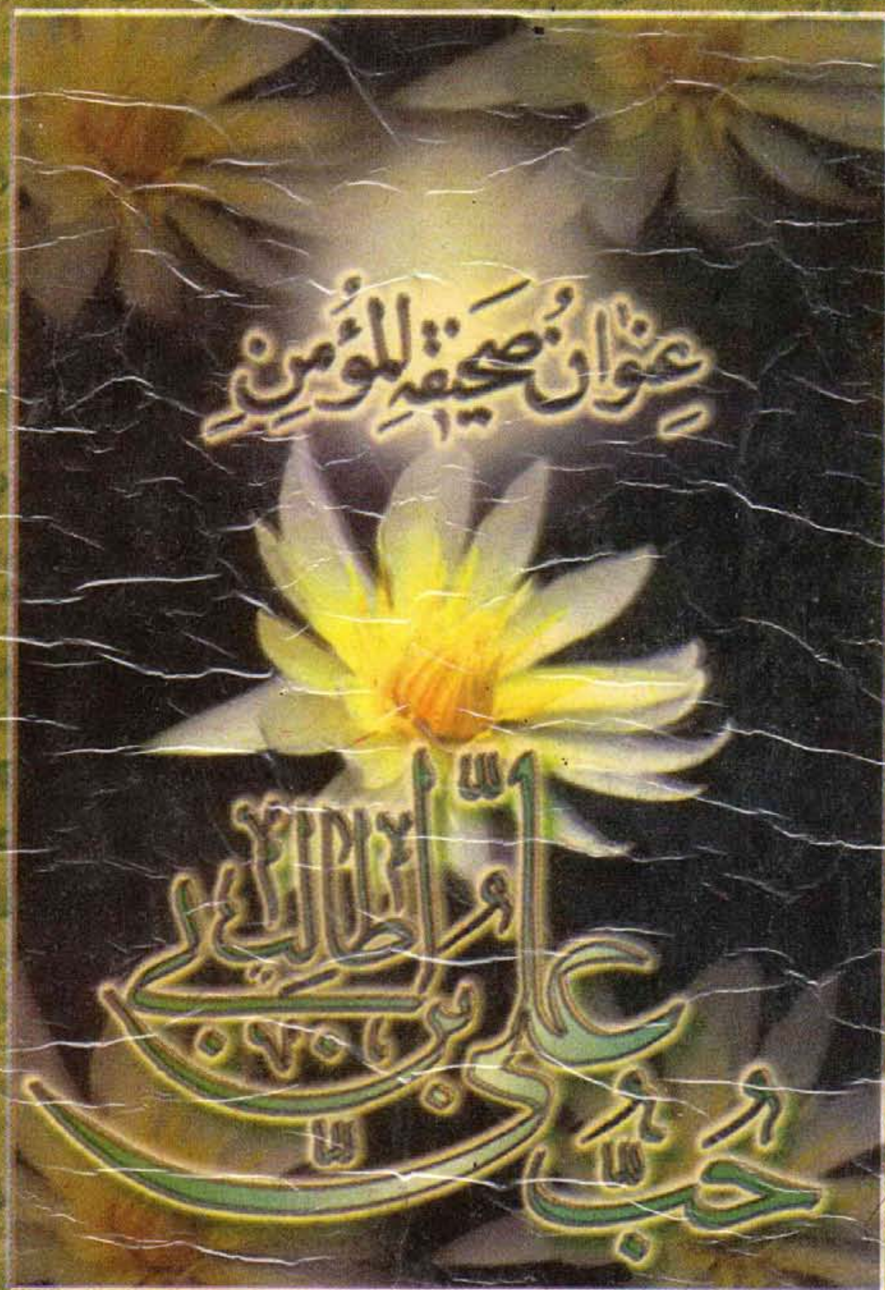
उसूले काफ़ी

भाग 3



शेख़ मो॰ याकूब कुलैनी अ.र.



बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

उसूले काफ़ी

जिल्द सोम

किताबुल हुज्जत व किताबुल ईमान वल्कुफ़्र

हज़रत सिक़तुल इस्लाम अ़ल्लामा फ़ह्हामा
मौलाना शेख़ बिन मोहम्मद याक़ूब
कुलैनी अलैहिर्रहमा

तरजमा

मुफ़स्सिरे क़ुर्आन आली जनाब अदीबे आज़म
मौलाना सय्यद जफ़र हसन साहब क़िबला

नाशिर

अब्बास बुक एजेन्सी

रुस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास अ०,
लखनऊ—3

नाम	:	उसूले काफ़ी (जिल्द सोम)
मोअल्लिफ़	:	सिक़तुल इस्लाम मौलाना शेख़ बिन **मोहम्मद याक़ूब** कुलैनी अलैहिर्रहमा
तरजमा	:	मुफ़स्सिरे कुर्आन आलीजनाब अदीबे आज़म मौलाना सय्यद **ज़फ़र हसन** साहब क़िबला
सन–ए–तबाअ़त	:	जनवरी 2004
मतबूआ	:	ए.बी.सी. ऑफसेट प्रेस, दिल्ली
ज़ेरे एहतेमाम	:	मौलाना सय्यद अली अब्बास साहब तबातबाई
नाशिर	:	अब्बास बुक एजेन्सी
कम्पोज़िंग	:	सैफ़ी कम्प्यूटर्स, यू0जी0एफ0 8–9, आरिफ़ आशियाना चौक, लखनऊ फ़ोन 0522–2256700 फ़ैक्स 2255977
हदिया	:	रु0 65/–

मिलने का पता :

अब्बास बुक एजेन्सी

रुस्तम नगर, दरगाह हज़रत अब्बास अ0
लखनऊ–3 फोन: 2647590 मोबाईल: 9415102990
फैक्स : 0522–2265419, 2255977

अर्ज़े नाशिर

कुरआने मजीद के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व आलेही वसल्लम और अइम्मए ताहेरीन अलैहिमुस्सलाम से मन्कूल हदीसें इस्लाम के लिए सरमायए हयात और मुसलमानों के लिए सरचश्मए हिदायत हैं। इन हदीसों के बग़ैर इन्सान न तो तौहीद का फ़लसफ़ा समझ सकता है न कुरआनी अहकाम से आगाह हो सकता है और न दीन से मुकम्मल तौर पर वाक़फ़ियत हासिल कर सकता है।

कुरआन की इजमाली आयात की तफ़सीर, मुतशाबेहात की ताबीर, वाक़ेआत की तौज़ीह, अहकाम की अमली सूरत, नासिख़ व मन्सूख़ और आम व ख़ास का इल्म मासूमीन की हदीसों के सिवा और किसी ज़रिये से नहीं हो सकता।

सिर्फ़ कुरआने मजीद हमारी हिदायत के लिये काफ़ी नहीं है क्योंकि सामित (ख़ामोश) होने की बिना पर वह किसी आयत के ग़लत मफ़हूम समझने वाले को टोक नहीं सकता, उसके अमल की इस्लाह नहीं कर सकता इसलिए पैग़म्बरे इस्लाम ने कुरआन के साथ साथ एक मासूम गिरोह को भी मोअय्यन किया है जिसका नाम अहलेबैत व इतरत है और हदीसे सक़लैन इस पर शाहिद है।

लेहाज़ा मालूम हुआ कि हर ज़माने में एक मासूम ज़ात जो मकतब, 'इल्मे लदुन्नी' की सनद याफ़ता हो और उसने दुनिया के किसी मदरसे में तालीम न हासिल की हो और उससे किसी ग़लती का इम्कान न हो कुरआन के साथ साथ रहे, ताकि वह गुमराहों को सही रास्ता दिखलाती रहे।

वक़्त का अहम तक़ाज़ा है कि मासूमीन अलैहिमुस्सलाम

की उन हदीसों को हिन्दी लिपि में भी मुन्तकि़ल किया जाये जो अरबी फ़ारसी और उर्दू किताबों का सरमाया है।

लेहाज़ा इस ख़्याल के तहत हमारे इदारे ने हज़रत सिक़तुल इस्लाम मौलाना शेख़ मोहम्मद याकू़ब कुलैनी अलैहिर्रहमः की किताब उसूले काफ़ी (जो हमारे मज़हब की बुनियादी किताबों में शामिल है) को जिसका उर्दू तरजमा आली जनाब अदीबे आज़म मौलाना स0 ज़फ़र हसन साहब कि़ब्ला ने किया है, जिसको हिन्दी में ब–तदरीज शाया करने का फ़ैसला किया और हम जिल्द सोम की इशाअत की सआदत हासिल कर रहे हैं और इन्शाअल्लाह बहुत जल्द बाक़ी दो जिल्दें भी मन्ज़रे आम पर आ रही हैं। हमें उम्मीद है कि हिन्दी दां तबक़ा भी इस किताब से भरपूर इस्तेफ़ादा करेगा। यहां तक उसकी दुनिया व आख़िरत के चिराग़ रौशन व मुनव्वर हो जायें।

एहक़रुल इबाद
सै0 अली अब्बास तबातबाई
अब्बास बुक एजेन्सी,
दरगाह हज़रत अब्बास अ0
रुस्तम नगर, लखनऊ

पेश लफ़्ज़

बाद हम्दो सलात अर्ज़ है कि अश्शाफ़ी तरजमा काफी जिल्द अव्वल ख़त्म होने के बाद ही मैंने जिल्द दोम का तरजुमा क़िसतन क़िसतन रिसालए नूर में तबअ करना शुरू कर दिया था जो बिहम्दिल्लाह फरवरी 1967 में मुकम्मल हो गया उस वक्त से अज़सरे नौ उस की किताबत करानी शुरू कर दी गई। खुदा का लाख लाख शुक्र है कि जिल्द अव्वल की तरह जिल्द सानी भी तबअ हो कर मोमिनीन की नज़र के सामने आ गई। इस ज़माने में किसी की किताब छपवाना मामूली काम नहीं, बिल्खुसूस मबसूत किताबों का क्योंकि काग़ज़ की गरानी हद को पहुँच चुकी है। इस के साथ तबाअत व किताबत की उजरतें भी पहले से ज़्यादा हो गयी हैं। खुदा का शुक्र है कि इन मुश्किलात के तहत उस ने अपने फ़ज़ल व करम से मेरे लिये ये मन्ज़िल आसान कर दी। मैं मौलाना गुलाम हुसैन साहब मौलवी फ़ाज़िल मुदर्रिस जामिया इमामिया का शुक्र गुज़ार हूं कि उन्हों ने किताबत शुदा कापियों में गलतियों की इसलाह कर दी। और मेरे लिये इस बार को हल्का कर दिया अरबी और उर्दू दोनों इबारतों में सेहत के लिये अपने बस की कोशिश तो कर ली गई है फिर भी यह नहीं कहा जा सकता हैं कि अग़लात से बिल्कुल पाक साफ है जहां इस दुनिया में और बहुत सी बातें ना मुमकिनात की फेहरिस्त में शामिल हैं किताब का सहीह छपना भी है क्योंकि प्रेस से निकलने तक बहुत से मराहिल तै करना पड़ते हैं जिस में नज़र का चूक जाना कोई बड़ी बात नहीं इन दोनों जिल्दों के तर्जमे का काम मैंने आलमे पीरी में किया है जब्कि मैं दो कम अस्सी साल का हो चुका हूं मशहूर तो यही है कि आदमी सत्तर साल का हो कर सठ जाता है सत्तरा बहत्तरा मसल मशहूर है। मैं तो आठ साल आगे बढ़ गया हूं उस कादिरे मुतलक़ का कहां तक शुक्र अदा करूं जिस ने इस गई गुजरी उम्र में मुझे यह तौफीक़ दी कि मैंने इन मुकद्दस किताबों का तर्जुमा अपने क़लम से मुकम्मल कर लिया। अगरचे पीराना साली का तक़ाज़ा और तबीअत के इज़्मेहलाल ने इस बोझ का वज़न बहुत ज़्यादा बढ़ा दिया था ता हम मैंने हिम्मत नहीं हारी। मैं उन हज़रात का तहे दिल से

शुक्र गुज़ार हूं जिन्हों ने मेरी इस ना चीज़ मेहनत की क़दर की। मैं चूंकि क़लम चलाने का पचास साल से आज़ारी बना हुवा हूं इस लिये कोई हालत भी हो यह मशग़ला मेरे दम के साथ है इस पचास साल की मुद्दत में दो सौ सात किताबें अब तक मेरे क़लम से निकल चुकी हैं और तबअ़ भी हो चुकी हैं। दो तीन किताबें ग़ैर मत़बूआ़ भी हैं उसूले काफी जिल्द दोम के तर्जमे को ख़त्म करने के बाद मैंने चहारदह मअ़सूमीन अलैहिमुस्सलाम की सवानेह उम्रियों का सिलसिला "नूर" में शुरू कर दिया है बिहम्दिल्लाह इस सिलसिले की पहली किताब सीरते रसूल स0 नूर में शाया हो चुकी है नवम्बर 1967 ई0 से सीरते अली अलैहिस्सलाम क़िस्तन किस्तन छप रही है सवानेह हयात के बाद हर किताब में हक़ाएक व मआ़रिफ़े इस्लाम का बयान भी शामिल है और आखिर तक रहेगा। सीरते रसूल स0 के साथ इस्लाम फितरी दीन है। हकीक़ते इंसानिया और हयात बअ़दल मौत पर सेर हासिल बहस की गई है "सीरते अली अलैहिस्सलाम" में कुरआन और अहलेबैत की दीनी खिदमात पर रौशनी डाली जायेगी। इसी तरह आखिर तक यह सिलसिला चलता रहेगा। हर सवानेह उम्री का हजम कम से कम चार सौ सफहा होगा यह एक लम्बा प्रोग्राम अपने सामने रख लिया है मौत क़रीब से क़रीब तर होती जा रही है ऐसी सूरत में चौदह सवानेह उम्रियों के मुकम्मल होने की कोई सूरत तो नज़र नही आ रही है मगर जिस ख़ालिक़े बरहक़ और क़ादिरे मुतलक़ ने इतना काम मुझसे लिया है उस रहमते वासिआ से क्या बअ़ीद है कि वह यह काम भी मुझ ना चीज़ के हाथों से पूरा करा दे इस प्रोग्राम के तहत इंशा अल्लाहुल अज़ीज़ हमारे मज़हब के तमाम हक़ायक नाज़ेरीन के सामने आ जायेंगे मैं अरबाबे अक़्ल व फहम और उलमाये किराम की खिदमत में दस्त बस्ता मुलतजी हूं कि अगर इस सिलसिले में कुछ गलतियां नज़र से गुजरें तो बजाये तअ़न व तशनीअ़ से मेरा कलेजा जखमी करने के इस खयाल के पेशे नज़र दर गुज़र फरमायें कि गलतियों से बशरियत का दामन पाक नहीं। व मा तौफीक़ी इल्ला बिल्लाह।

राक़िमे इस्म

सय्यद ज़फ़र नक़वी अल–अमरोहवी

फेहरिस्त मज़ामीन



एक सौ दसवां बाब

तारीख़ी पाठ

रसूल सल्ललाहो अलैहि व आलेहि की विलादत व वफ़ात का बयान

आं हज़रत की विलादत आमुल्फ़ील में (जिस साल अबरहा हाथियों की फौज के साथ कअबे को मुनहदिम करने के इरादे से आया था) 12 रबीउल अव्वल रोज़े जुमा वक्ते ज़वाल हुई और एक रवायत में है कि तुलूए फ़जर के वक्त बेअसत से चालीस साल क़ब्ल और अय्यामे तशरीक़ में आप स0 का हमल जमरए वुस्ता के करीब खानए अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब में क़रार पाया और विलादत हुई शेअबे अबूतालिब के अन्दर मुहम्मद बिन यूसुफ के घर के उस हिस्सए आख़िर में जो दाखिल होने वाले के बायें तरफ़ पड़ता है खेज़रान मादरे ख़लीफा महदी अब्बासी ने उसे खरीद के मस्जिद बना दिया जिस में लोग नमाज़ पढ़ते हैं।

तौज़ीह

अय्यामे तशरीक़ के बारे में ओलमां इस्लाम का इख़्तेलाफ है कि बाज़ ने कहा 11, 12, 13

मुराद है लेकिन उस सूरत में आं हज़रत स0 के हमल की मुद्दत सिर्फ तीन माह या फिर पन्द्रह माह करार पाती है लेकिन ऐसा किसी ने ज़िक्र नहीं किया। दूसरा क़ौल है हर माह की 11, 12, 13 यही दुरूस्त मालूम होता है। अल्लामा कुलैनी के इस बयान से तारीख़े विलादत 12 रबीउल अव्वल

मालूम होती है। चुनान्चे शिया ओलमा का इस बात पर इजमाअ है कि हुज़ूर स0 17 रबीअल अव्वल को पैदा हुए लिहाज़ा अल्लामा मजलिसी अलैहिर रहमा ने फ़रमाया कि यह रवायत ज़ईफ है बिला सनद लिखी गई या बसूरते तक़य्या ऐसा लिखा गया है।

और बादे बेअसत बारह साल तक आप स0 का क़याम मक्के में रहा फिर मदीने की तरफ हिजरत की और दस साल तक जिन्दा रहे फिर 12 रबीउल अव्वल रोज़े दोशम्बा 63 साल की उम्र में रेहलत की।

तारीखे वफ़ात की रवायत भी ज़ईफ है और बिनाबर तक़य्या लिखी गई है। शिया ओलमा का इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि तारीख़े वफ़ात 28 सफर है।

नोट :– काफी में अक्सर रवायतें ज़ईफ दर्ज हो गई हैं जिन की तौज़ीह अल्लामा मजलिसी ने अपनी बेनज़ीर किताब मिरअतुल उक़ूल में काफी की बेहतरीन शरह है। फरमा दी है इन्शा अल्लाह हम दोनों जिल्दों के तरजमे से फ़ारिग़ हो कर एक ज़मीमे में ज़ईफ रवायतों को दर्ज कर देंगे।

और आप के वालिद हज़रत अब्दुल्लाह ने मदीने में अपने मामुओं के पास इन्तक़ाल किया जबकि आप स0 सिर्फ दो माह के थे आप स0 की वालिदा माजिदा ने उस वक्त इन्तक़ाल किया जबकि आप स0 चार साल के थे और हज़रत मुत्तलिब के इन्तक़ाल के वक़्त आप की उम्र आठ साल की थी और हज़रत खदीजा से आप स0 ने जब शादी की तो आप स0 की उम्र 20 साल चन्द माह थी (मशहूर रवायत 25 साल है) और बेअसत के क़ब्ल बतने जनाबे खदीजा से क़ासिम व रूक़य्या व ज़ैनब व उम्मे कुल्सूम पैदा हुए (यह रवायत भी ज़ईफ़ है ये तीनों लड़कियां हज़रत की

परवरदा थीं। हालाख्वाहरे खदीजा के बतन से थीं यह रवायत तक़य्या में लिखी गई है) और बादे बेअसत बतने खदीजा से तय्यब व ताहिर और फातिमा पैदा हुई और तय्यब ताहिर क़ब्ले बेअसत पैदा हुए थे और जनाबे खदीजा का इन्तेक़ाल आंहज़हरत के शेअब से निकलने के बाद हुआ और यह हिजरत से एक साल पहले का वाक़िआ है और हजरत अबूतालिब का इन्तक़ाल वफाते खदीजा से एक साल बाद हुआ इन दोनों के इन्तक़ाल के बाद मक्के में रहना हज़रत पर शाक़ हुआ और बेहद हुज़न व मलाल हुआ। जिबरील से शिकायत की। खुदा ने वही की कि इस क़रिये से जिस के बाशिन्दे ज़ालिम हैं निकल जाओ, अबूतालिब के बाद मक्के में तुम्हारा कोई नासिर नहीं और हिजरत का हुक्म दिया।

1. रावी ने पूछा क्या रसूलुल्लाह सरदारे औलादे आदम थे? फ़रमाया, वह तमाम मख़लूक़े इलाही के सरदार थे। खुदा ने मोहम्मद स0 से बेहतर कोई मख़लूक पैदा नहीं की।

2. फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने खुदा ने किसी चीज़ को मोहम्मद स0 से बेहतर पैदा नहीं किया।

3. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया (हदीसे कुदसी) ऐ मोहम्मद मैंने तुमको और अली को एक नूर से पैदा किया। यानि रूह बिला बदन के आसमानों, ज़मीन, अर्श और दरिया के पैदा करने से पहले, पस तुम मेरी तस्बीह और तहलील करते रहे फिर मैंने तुम दोनों की रूहों को जमा किया और तुम दोनों को एक कर दिया। तुम इस हालत में भी मेरी तमजीद और तक़दीस करते रहे फिर मैंने तुम को दो बनाया और फिर दोनों के फिर दो हिस्से किये पस चार हो गये, एक मोहम्मद, एक अली और दो हसन व हुसैन, इमाम ने फ़रमाया अल्लाह ने फातिमा

को पैदा किया इसी इब्तिदाई नूर से जो रूह बिला बदन था। फिर हम को अपनी कुदरत से पैदा किया पस इस का नूर हम में जारी हुआ।

4. अबूहमज़ा से मरवी है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम से सुना कि खुदा ने वही की रसूल पर, ऐ मोहम्मद मैंने तुझ को ख़ल्क किया दरांहालेकि तू कुछ न था और मैंने तुझे बुजुर्गी देने के लिये अपनी रूह तेरे अन्दर फूंकी। मैंने तेरी इताअत को अपनी तमाम मख़लूक़ पर वाजिब किया। पस जिस ने तेरी इताअत की उस ने मेरी इताअत की और जिस ने तेरी नाफ़रमानी की उस ने मेरी नाफरमानी की और यही इताअत मैंने अली और उनकी नस्ल के लिये उन लोगों के लिये रखी जिनको मैंने अपनी ज़ात के लिये मख़्सूस किया है।

5. रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम के सामने शियों के इख़्तेलाफ का ज़िक्र किया। हज़रत ने फ़रमाया ऐ मोहम्मद अल्लाह हमेशा से वाहिद व यकता है।

फिर उस ने मोहम्मद अली और फ़ातिमा को पैदा किया और उन हज़रात को उन की ख़िलक़त पर गवाह बनाया और उन की इताअत को लोगों पर वाजिब किया और उन के मुआमेलात को उन के सुपुर्द किया। पस वह जिस चीज़ को चाहते हैं हलाल करते हैं और जिसे चाहते हैं हराम करते हैं और वह नहीं चाहते, मगर वही जिसको अल्लाह चाहता है। फिर फ़रमाया ऐ मोहम्मद (यह इख़्तिलाफ़ ज़हूरे कायमे आले मोहम्मद से पहले बाक़ी रहेगा) यह वह दियानते इलाहिया है कि जो इस से आगे बढ़ा इस्लाम से ख़ारिज हुआ और जो पीछे रहा वह मुअत्तल रहा और जो हक़ से चिमटा रहा वह ठीक रहा, पस ऐ मोहम्मद यही तरीक़ा एख़्तियार करो।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि कुरैश के कुछ लोगों ने रसूल अल्लाह स0 से कहा– किस वजह से आप स0 को अम्बिया पर सबक़त हासिल हुई, हालांकि आप स0 की बेअसत सब से आख़िर में हुई और आप ख़ातेमुल्अम्बिया हैं फ़रमाया, मैं पहला शख़्स हूँ जो अपने रब पर ईमान लाया और सब से पहले जिस ने उस वक्त जवाब दिया जबकि अम्बिया से अहद लिया गया और उन के नफ़्सों पर गवाह बना, जब खुदा ने कहा क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ, सब ने इक़रार किया सब से पहले, कहने वाला मैं था। मैंने इक़रार बिल्लाह में सबक़त की।

7. मुंफ़ज़्ज़ल ने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा आप ज़िल्ले रहमते इलाही के तहत किस तरह रहे? फ़रमाया ज़िल्ले सब्ज़ के तहत हम ही थे कोई ग़ैर न था हम उस की तसबीह व तहलील त तक़दीस व तमजीद करते थे कोई मलके मुक़र्रब याज़ी रूह हमारे सिवा न था फिर खुदा ने अशयाअ को पैदा करना शुरू किया पस जो चाहा और जैसा चाहा बनाया मलायका वग़ैरह से फिर इल्म को हम तक पहुँचाया।

8. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हम सब से पहले वह ख़ानवादह हैं कि बुलन्द किया अल्लाह ने हमारे नामों को जब उस ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया तो एक मुनादी को यह हुक्म दिया अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाह (तीन बार) और अशहदु अन्ना मोहम्मद रसूल अल्लाह (तीन बार) और अशहदु अन्ना अमीरल मोमिनीन हक्क़ (तीन बार)

9. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने खुदा था जब कोई न था। खुदा ने कौन व मकान को पैदा

किया और एक नूर को पैदा किया जिस से तमाम अनवार ने रौशनी हासिल की और उस में जगह दी अपने इस नूर को जिस से अनवार को ज़िया दी, यही वह नूर था जिस से मोहम्मद स० व अली अ० को पैदा किया। यही दो नस्ल नूरे अव्वलीन थे इन से पहले कोई और शै न थी। ये ताहिर व मुतहहर असलाबे ताहिरा की तरफ़ मुन्तकिल होते रहे। यहाँ तक कि दो पाक सुल्बों अब्दुल्लाह और अबूतालिब में मुन्तकि़ल हुए।

10. जाबिर से मरवी है कि इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – ऐ जाबिर खुदा ने सब से पहले हज़रत रसूले खुदा और उन की इतरत को पैदा किया जो खल्क़ को हिदायत करने वाले हैं वह नूरानी पैकर थे पेशे खुदा मैंने कहा अशबाह से क्या मुराद है ? फ़रमाया नूर का पर नौ,बग़ैर रूह के नूरी बदन और वह मोअय्यद थे रूहे वाहिद से जो रूहुलकुदस है पस वह और उन की इतरत इसी रूहुलकुदस से अल्लाह की इबादत करते थे। इसीलिए अल्लाह ने उन को हलीम, आलिम, नेक और साफ़ बातिन बनाया। वह अल्लाह की इबादत करते हैं। नमाज़ से रोज़े से सज्दों से तसबीह व तहलील से नमाज़ पढ़ते हैं, हज करते हैं और रोज़ा रखते हैं।

11. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने रसूल अल्लाह में तीन खुसूसियतें ऐसी थीं जो दूसरों में न थीं। हज़रत के साया न था। जब किसी रास्ते से गुज़रते तो तीन रोज़ तक वहां खुशबू रहती, तीसरे जब किसी हजर या शजर की तरफ से गुज़रते तो वह सज्दा करता था।

12. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम

ने जब रसूल अल्लाह स0 मेराज को गये तो जिबरील अ0 उनके साथ एक मक़ाम तक गये उस के बाद हज़रत से अलग हो गये, आप ने फ़रमाया – ऐ जिबरील क्या इस हालत में तुम मेरा साथ छोड़ रहे हो, उन्होंने कहा – आप आगे चलें बखुदा इस मकाम पर आप स0 से पहले कोई इन्सान नहीं गया और न उस जगह पर चला है।

13. रावी कहता है अबू बसीर ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा मैं वहाँ मौजूद था– रसूल अल्लाह को कितनी बार मेराज हुई। फ़रमाया दो बार जिबरील ने हज़रत को उन के मरतबे से आगाह करते हुए कहा– ऐ मोहम्मद स0 आप स0 अपने मक़ाम को पहचानिये। आप एक ऐसी जगह हैं कि वहां तक न कोई फरिश्ता पहुँचा है न नबी, बेशक तुम्हारा रब तुम्हारे लिये वसी क़रार देता है। (यहाँ युसल्ली माखूज़ है सलात से जिस के मानी हैं एक चीज़ का दूसरी चीज़ से मुत्तसिल करना और मुराद है वसी मुअय्यन करना, हज़रत ने पूछा कि इस तअय्युन की सूरत क्या है कहा मैं क़ाबिले तसबीह व तक़दीस हूँ, मैं मलायका और रूह का रब हूँ। मेरी रहमत मेरी ग़ज़ब से पहले है (यानि मेरी रहमत का तक़ाजा है कि इमामे आलिम को मोअय्यन करूं) हज़रत ने फ़रमाया या अल्लाह तेरी रहमत का ख़्वास्तगार हूँ। अबू बसीर ने कहा कि इमाम ने फ़रमाया वह मकाम जहाँ रसूल अल्लाह पहुँचे अल्लाह के फ़रमान के मुताबिक़ क़ाबा क़ौसैन था। अबू बसीर ने कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ क़ाबा क़ौसैन क्या है? फ़रमाया वह दरमियानी हिस्सा है यानि क़ब्ज़ए आसमान जिस से किनारों तक दोनों हिस्से बराबर होते हैं। और इन दोनों के दरमियान एक परदा था चमकदार जो लहराता था। ज़बरजद का रसूल स0 ने सुई के नाके

जैसे बारीक सुराख़ से नूरे अज़मते इलाहिया का मुआयना किया। खुदा ने कहा ऐ मोहम्मद तुम्हारे बाद तुम्हारी उम्मत का हादी कौन होगा अर्ज़ किया तू ही बेहतर जानता है कहा अली इब्ने अबी तालिब अमीरूल मोमिनीन सैय्यदुल मुस्लिमीन कायदिल्गुर्रिल मुहज्जेलीन है। फिर इमाम ने फ़रमाया ऐ अबू मोहम्मद (कुन्नियत अबू बसीर) बखुदा विलायते अली अ० ज़मीन से नहीं बल्कि आसमान से मुंह ब मुंह आई हैं –

14. जाबिर से मरवी है कि मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कहा कि हज़रत रसूले खुदा स० का हुलिया मुबारक मुझ से बयान कीजिए। फ़रमाया हज़रत का रंग सुर्खी माएल सफेद था दोनों आंखें फराख़ व सियाह दो अबरू मिले हुए भारी उंगलियां गोया सोना पिघला कर चढ़ा दिया गया है और दोनों कन्धों की हड्डी चौड़ी थी और मज़बूत, जब किसी तरफ दाहिने या बांये मुड़ते तो पूरे पूरे बदन से (इस्तेहकामे बदन की वजह से) सीने के बाल सीने की इब्तिदा से नाफ़ तक थे। गोया चांदी का साफ़ शुदा बदन है और कन्धे के ऊपर आप स० की गरदन चांदी की सुराही मालूम होती थी जब पानी पीते तो आप स० की नाक कशीदा पानी से मुत्तसिल हो जाती और जब चलते तो सर झुका कर गोया किसी नशेब की तरफ उतर रहे हैं। हज़रत जैसा कोई पहले नज़र आया न बाद में।

15. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया खुदा ने मेरे लिये मेरी उम्मत को मिट्टी का पैकर बनाया और मुझे उनके नाम इस तरह बताये जैसे आदम को अस्मा तालीम किये थे। मेरी तरफ झन्डे ले कर असहाब गुज़रे। मैंने अली और उन के शियों के लिए इस्तिग़फ़ार किया। मेरे रब ने अली के शियों के लिये एक

बात का वादा किया किसी ने पूछा वह क्या है? फ़रमाया मग़फ़िरत उस शख़्स के लिये जो उन में से ईमान लाये हैं उनकी बदियों को नेकियों से बदल दूंगा ख़्वाह छोटे हों सिन में या बड़े।

16. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ने लोगों में खुतबा बयान किया फिर अपना दाहिना हाथ उठाया दरांहालेकि मुट्ठी आप की बन्द थी लोगों से फ़रमाया– बताओ इस में क्या है? उन्होंने कहा अल्लाह और उस का रसूल स0 बेहतर जानता है। फ़रमाया इस में अहले जन्नत के नाम हैं। इनके आबाव अजदाद के और इन के क़बीलों के क़यामत तक, फिर बायां हाथ उसी तरह उठाया और पूछा – बताओ इस में क्या है? उन्होंने कहा अल्लाह और उस के रसूल को बेहतर इल्म है।

फ़रमाया नाम हैं दोज़खियों के, उन के आबा और कबायल के जो क़यामत तक होने वाले हैं। फ़रमाया अल्लाह ने हुक्म दिया है और इन्साफ़ से दिया है और अल्लाह का हुक्म इन्साफ़ है। फ़रमाया है एक फ़रीक़ जन्नत में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख़ में।

17. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने एक खुतबे में खुसूसियत से ज़िक्र किया, हज़रत रसूले खुदा और अइम्मा अलैहिमुस्सलाम का और उन की सिफ़ात का। बावजूद लोगों के अज़ीमुश्शान जराएम और आमाले क़बीहा के हमारे रब को नहीं रोका, उस के हिल्म और आहिस्तगी और मेहरबानी ने इस बात से कि वह इन्तेख़ाब करे, महबूब तरीन अम्बिया और बुजुर्ग तरीन अम्बिया हज़रत मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह को जो अज़ रूए विलादत मोअज़्ज़िज़ हैं और साहबे करीम हैं खुल्के

अज़ीम से उनकी असल है। उनका हसब नसब ख़ालिस है और अहले इल्म के नज़दीक उन की सिफ़त मजहूल नहीं, उन की बशारत दी गई अम्बिया को उन की किताबों में और ओलमा उनकी तारीफ़ व तौसीफ़ में गोया हुए और होकमा ने उन के औसाफ़ में ग़ौर व फ़िक्र से काम लिया। किसी हाशिमी की पाकीज़गी उन के क़रीब नहीं और न उस में किसी का उन से मुक़ाबला है उनकी हया की आदत और सख़ावत पसन्द तबियत में कोई उन के मुक़ाबले का नहीं और वह नबुव्वत के वक़ार पर ख़ल्क़ हुए हैं। और उन के अख़लाक़ शायाने शाने नबुव्वत हैं औसाफ़े रिसालत स0 और उन की दानिश्वरी पर उनके नाम की मुहर है जबकि अल्लाह का मोअय्यन करदा वह वक्त आ गया और जो हुक्मे खुदा था वह अपनी आख़िरी हद तक जारी हो गया तो मौत का वक्त आ गया ताकि उन को जज़ाए आख़िरत के लिये ले जाये।

आंहज़रत की नबूवत की बशारत हर रसूल ने अपनी उम्मत को दी और हर बाप ने अपने बेटे को बताया और एक पुश्त से दूसरी पुश्त की तरफ़ यह मआमला चलता रहा। हज़रत के सिलसिलए नस्ल में कहीं ज़िना को दख़ल नहीं और न आदम से ले कर आंहज़रत के बाप हज़रत अब्दुल्लाह तक इज़्देवाजी सिलसिले में कोई नजासत वाक़ेअ हुई।

आंहज़रत अ0 अरब के बेहतरीन गिरोह (कुरैश) से हैं और इज़्ज़तदार पोतों में से (बनी हाशिम और आली मरतबत हैं अज़रूए क़बीला और महफ़ूज़ व पाक हैं और अज़रूए हमल (यानी मां की तरफ़ से पाक हैं) और पाक आग़ोश में तरबियत पाई है अल्लाह ने उन को मुस्तफ़ा, मुरतज़ा व मुजतबा बनाया और उनको खुदा ने अपने इल्म की कुन्जियां दीं और हिकमत के चश्मे अता फ़रमाये उन को बन्दों के लिये

रहमत बना कर भेजा और शहरों के लिये बाइसे फ़लाह व बहबूद और उन पर ऐसी किताबं नाज़िल की जिस में हर शै का बयान है और वह किताब कुरान है। अरबी ज़बान में जिस में कोई ग़लत बयानी नहीं ताकि लोग इसे पढ़ कर मुत्तक़ी बन जायें।

और उन्होंने लोगों से अहकाम बयान किये और इल्मी रौशनी में ऐसा रास्ता बताया जो बातिल से जुदा है। और दीन को लोगों पर वाज़ेह किया और फ़राएज़ को वाजिब किया और शरअी हुदूद से आगाह फ़रमाया और खुदा की मख़लूक़ पर उमूरे मख़फ़िया को ज़ाहिर किया और निजात हासिल करने की तरफ रहनुमाई की और ऐसे निशानात बताए जो हिदायत की तरफ लोगों को बुलाने वाले हैं जिन उमूर की तब्लीग़ के लिये आप भेजे गये उन की तब्लीग़ कर दी और जिस अम्र का हुक्म दिया गया था उसे ज़ाहिर कर दिया और नबुव्वत का जो बार आप के कन्धों पर रखा गया था उसे पूरा कर दिया और राह में जो मुसीबतें आयीं उस पर सब्र किया और राहे खुदा में जेहाद किया और अपनी उम्मत को नसीहत की और निजात की तरफ बुलाया और ज़िक्रे खुदा की तरफ़ रग़बत दिलाई और राहे हिदायत की तरफ रहनुमाई की और लोगों की ज़िन्दगी के अच्छे उसूलों की बुनियाद रखी और हिदायत के मीनारे उन के लिये बुलन्द किये ताकि वह आप के बाद गुमराह न हों और हज़रत अपनी उम्मत पर बड़े मेहरबान और रहम करने वाले थे।

18. किसी ने पूछा क्या रसूलुल्लाह स0 महकूमे अबूतालिब थे (क्योंकि उन के ज़ेरे साया परवरिश पायी थी) फ़रमाया नहीं बल्कि अम्बियाए साबेक़ा के तबर्रूकात और वसाया उन को दिये गये थे उन्होंने वह चीज़े हज़रत रसूले

खुदा स0 को दीं। मैने कहा जब वसीयत सुपुर्द की तो महकूम बिह हो गये। फ़रमाया अगर ऐसा होता तो वसीयत उन को सुपुर्द न की जाती। मैंने कहा फिर अबूतालिब के लिये क्या सूरत है? फ़रमाया उन्होंने आंहज़रत की नबूव्वत का इक़रार किया और जो रसूलुल्लाह खुदा की तरफ से लाये उस को हक़ जाना ओर वसाए अम्बिया को हज़रत के सुपुर्द किया और उसी रोज़ मर गये।

तौज़ीहः वसाया सुपुर्द करने से किसी की फ़ज़ीलत और हुकूमत साबित नहीं होती। हज़रत इमाम हुसैन ने हज़रत उम्मेसलमा के सुपुर्द तबर्रूकात किये हैं।

19. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया – जिस शब को रसूलुल्लाह का इन्तक़ाल हुआ आले मोहम्मद के लिये वह रात सब से ज्यादा लम्बी रात थी और ऐसी हालत थी कि लोगों ने गुमान किया कि न उन के ऊपर आसमान का साया है न नीचे ज़मीन का फ़र्श यानी उनके ज़िन्दा रहने की उम्मीद न थी क्योंकि आंहज़रत की मुफ़ारेक़त के तसव्वुर ने नज़दीकी रिश्तेदारों ओर दूर के ताल्लुक़ दारों सब ही को आज़ुरदह बना दिया था। उसी अस्ना में एक आने वाला आया।

लोग उस को नहीं देखते थे। उस ने कहा अस्सलामो अलैकुम, ऐ अहले बैत तुम पर खुदा की रहमत और बरक़त हो, अल्लाह पर तवक्कुल करना, हर मुसीबत में सब्र है। हर महलके से निजात है और हर माफ़ात की तलाफ़ी है हर नफ़्स को मौत का ज़ायक़ा चखना है रोज़े क़यामत तुम को इस सब्र का अज्र मिलेगा जो आतिशे जहन्नम से दूर रखा गया और जन्नत में दाख़िल हुआ। वह कामयाब हुआ और ज़िन्दगानिये दुनिया मताए गुरूर के सिवा कुछ नहीं, अल्लाह

ने तुम को मुन्तख़ब किया और तुम को फ़ज़ीलत दी और पाक रखा तुम को अपने नबी के अहलेबैत बनाया और अपना इल्म तुम्हारे अन्दर वदीयत किया और तुम को अपनी किताब का वारिस बनाया और अपने इल्म का सन्दूक़ क़रार दिया और अपनी इज़्ज़त का असा बनाया और अपने नूर से तुम्हारी मिसाल दी, लगजिशों से तुम्हें बचाया और फ़ितनों से महफ़ूज़ रखा।

पस सब्र करो, जैसे कि अल्लाह ने फ़रमाया है, अल्लाह ने अपनी रहमत से तुम को दूर न रखा और अपनी नेअमत को तुम से ज़ाएल न किया। क्या तुम वह अल्लाह वाले हो कि तुम्हारी वजह से अल्लाह वालों की नेअमत तमाम हुई और फ़िरक़े जमा हुए और उन्स हुआ कलमे से तुम औलियाए खुदा हो। पस जिस ने तुम को दोस्त रखा वह कामयाब हुआ और जिसन ने तुम्हारे हक़ को ग़सब किया वह हलाक हुआ। तुम्हारी मोहब्बत अल्लाह ने अपनी किताब में अपने मोमिन बन्दों पर वाजिब की है। अल्लाह तुम्हारी नुसरत पर जिस वक्त चाहे क़ादिर है पर अन्जामे मौत पर सब्र करो। उस की बाज़गश्त अल्लाह की तरफ़ है और अल्लाह ने मन्ज़ूर किया अपने नबी से इमामत तुम्हारे सिपुर्द करने को और अपने मोमिनीन औलिया को तुम्हारे सुपुर्द किया। पस जिस ने इस अमानत को अदा किया खुदा ने उस को नेकी अता फ़रमाई, पस तुम हो वह जिन को इमामत सौंपी गई है। तुम्हारी इताअत वाजिब तुम्हारी मोहब्बत फ़र्ज़ की गई है। रसूलुल्लाह ने मरने से पहले दीन को कामिल बना दिया और बुराई से बाहर निकलने का रास्ता वाज़ेह कर दिया ऐसी सूरत में जाहिल के लिये कोई हुज्जत बाक़ी नहीं रहती, पस जो जाहिल रहा या जान बूझ कर जाहिल बना रहा या इन्कार या

Presented by: https://jafrilibrary.com

भूल गया अहदे रूबूबियत को या कसदन भुलाया तो रोज़े क़यामत उस का हिसाब अल्लाह पर है और तुम्हारे पसे परदह अल्लाह है। अल्लाह ने अपने असरार तुम को वदीयत कर दिये हैं। सलाम हो तुम पर, रावी कहता है– मैंने इमाम से सवाल किया यह तसल्ली और दिलासा किस की तरफ़ से आया है? फ़रमाया खुदा की तरफ़ से।

20. फ़रमाया सादिक़े आले मोहम्मद ने जब रसूलुल्लाह स० को शबे तार में देखा जाता था तो चांद के टुकड़े की तरह एक नूर आप से सातेअ होता था।

21. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह पर जिबरील नाज़िल हुए और कहा खुदा का सलाम आप पर हो। वह कहता है मैंने आग को हराम किया उन असलाब व अरहाम पर जिन में तुम रह रहे हो और उस आगोश पर जिस में तुम्हारी परवरिश हुई और सुल्ब तुम्हारे बाप अब्दुल्लाह का सुल्ब है और जिस ने बहालते हमल तुम को उठाया बतने आमिना बिन्ते वहब है और जिस आगोश में पले, वह आगोशे अबूतालिब है और एक रवायत में है वह आगोश फ़ातिमा बिन्ते असद है।

22. फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अब्दुल मुत्तलिब रोजे महशर एक जुदागाना हैसियत से महशूर होंगे उन की पेशानी अम्बिया की सी होगी और हैबत बादशाहों की सी।

23. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि अब्दुल मुत्तलिब मस्अलए बदाअ के सब से पहले क़ायल हुए वह रोज़े क़यामत आम लोगों से बिलकुल अलग ख़ास हैसियत में महशूर होगें उनकी पेशानी अम्बिया की सी होगी हैबत मुलूक की सी।

24. फ़रमाया हज़रत अबूअब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने रोज़े क़यामत अब्दुल मुत्तलिब इस तरह मबऊस होंगे कि तमाम लोगों से अलग उनकी शान होगी उन में अम्बिया की सी ताबिन्दगी पेशानी पर होगी बादशाहों की सी शान व शौकत होगी। ये इसलिये कि वह बदाअ के सबसे पहले क़ायल थे एक बार उन्होंने रसूले ख़ुदा को ऊँटों के चरवाहों के पास भेजा। ऊँट भाग कर मुतफ़र्रिक़ हो गये थे। हज़रत ने उनको जमा किया इस लिये वापसी में ताख़ीर हुई। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब घबराये और ख़ानए काबा के दरवाज़े की तरफ ज़ंजीर पकड़ कर फ़रियाद करने लगे ऐ मेरे रब क्या तू अपने महबूब बन्दे को हलाक कर देगा अगर तू ऐसा करेगा तो यह एक अम्रे अज़ीम होगा जो तेरे ऊपर ज़ाहिर है उस के बाद रसूलुल्लाह ऊँटों को ले आये। अब्दुल मुत्तलिब रास्तों में और घाटियों में हज़रत को तलाश कर रहे थे और फ़रमा रहे थे–ऐ परवरदिगार ! क्या तू अपने महबूब बन्दे को हलाक कर देगा यह अम्रे अज़ीम है। जो अम्र तुझ पर ज़ाहिर है। रसूलुल्लाह स0 को देखते ही उन्होंने छाती से लगाया और रूए मुबारक पर बोसा दे कर फ़रमाया– अब मैं कभी तुम को किसी काम को न भेजूंगा इस ख़ौफ़ से कि मबादा कोई फ़रेब दे कर तुम को कत्ल कर दे।

25. फ़रमाया अब्दुल्लाह अलैहिस्सलाम ने जबकि अबरहा बादशाहे हब्शा अपना लश्कर लेकर आया तो उस के साथ हाथी भी थे ताकि ख़ानए क़ाबा को ढ़ा दे उस के लश्कर वाले अब्दुल मुत्तलिब के ऊँटों के गल्ले की तरफ़ से गुज़रे तो उन को हांक कर ले गये जब अब्दुल मुत्तलिब को पता चला तो पासबान के पास गये। उस से कहा यह अब्दुल

मुत्तलिब बिन हाशिम हैं। उस ने कहा क्या चाहते हैं तरजुमान ने कहा कि हमारे लश्कर वाले उन के ऊँट ले आये हैं यह उन की वागुज़ाश्त चाहते हैं अबरहा ने अपने असहाब से कहा यह रईसे कौम हैं इन्हें मालूम है कि मैं इस घर के इनहेदाम के लिये आया हूँ जिस की यह इबादत करते हैं यह बजाय इस के अपने ऊँटों का सवाल करते हैं। अगर यह इनहेदामे क़ाबा के रोकने का सवाल करते तो मैं पूरा करता। अच्छा इन के ऊँट दे दो। अब्दुल मुत्तलिब के तरजुमान ने पूछा कि बादशाह ने क्या क़हा? उस ने बताया अब्दुल मुत्तलिब ने फ़रमाया, उस से कहो मैं ऊँटों का मालिक हूँ और उस घर का भी एक मालिक है वह खुद इस हमले को रोकेगा ऊँट अब्दुल मुत्तलिब को वापस दिये गये और वह अपने घर को पलटे, राह में उस हाथी से कहा ऐ महमूद उस ने अपना सर हिलाया। उस से कहा तू जानता है कि तुझे यहाँ क्यों लाये हैं उस ने कहा नहीं। उन्होंने कहा इस लिये लाये हैं कि तेरे रब का घर तुझ से मुनहदिम करायें, क्या तू ऐसा करेगा? उसने सर हिला कर कहा नहीं, अब्दुल मुत्तलिब अपने घर आ गये। सुबह को जब उन्होंने हरम पर चढ़ाई का इरादा किया तो हाथी ने उन की इताअत से इन्कार किया। अब्दुल मुत्तलिब ने अपने एक दोस्त से कहा तू पहाड़ पर चढ़ कर देख क्या नज़र आता है वह गया और कहने लगा, मैं दरया की तरफ से एक काला बादल उडता देख रहा हूँ। अब्दुल मुत्तलिब ने कहा तेरी नज़र ने ठीक देखा। अब आंख जमा कर देखता रह, जब वह सियाही क़रीब आयी तो उस ने कहा, यह तो बहुत से परिन्दे हैं हर एक की चोंच में एक कंकरी है। ठीकरी के टुकड़े जैसी या उस से कम, अब्दुल

मुत्तलिब ने कहा यह इस कौम के लिये आये हैं। उन परिन्दों ने वह कंकरियां उन के सरों पर डालीं जो जिस्म को फोड़ती हुई उन के पाख़ाने के मक़ाम से निकल गईं और सब हलाक हो गये। सिर्फ उन में से एक बाक़ी रह गया ताकि उस हाल से लोगों को आगाह करे जब वह बता चुका तो वह भी हलाक कर दिया गया।

26. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ख़ानए काबा में अब्दुल मुत्तलिब के लिये फ़र्श बिछाया जाता था, उन के सिवा और के लिये नहीं, उन की औलाद इर्द गिर्द खड़ी हो जाती थी ताकि लोगों को उनके क़रीब जाने से रोके। रसूलुल्लाह स0 रास्ते से गुज़रते हुए आये और उन की रान पर बैठ गये। बाज़ ने इशारा किया उन को हटा दिया जाये। अब्दुल मुत्तलिब ने कहा – मेरे बेटे को रहने दो सल्तनत उस के पास आने वाली है।

27. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब रसूलुल्लाह स0 पैदा हुए तो चन्द दिन तक उन की वालिदा के दूध न उतरा। अबूतालिब ने उन को अपनी छाती से लगाया। खुदा ने दूध उतार दिया और रसूल स0 की रिज़ाअत उस से हुई, फिर अबूतालिब ने उन को हलीमा सय्यदा के सुपुर्द किया।

28. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अबूतालिब की मिसाल असहाबे कहफ़ की सी है। उन्होंने ईमान को छिपाया और शिर्क को ज़ाहिर किया पस खुदा ने उन को दोहरा अज्र दिया।

29. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से लोगों ने कहा बाज़ हज़रात कहते हैं कि अबूतालिब काफ़िर थे।

फ़रमाया वह झूठे हैं, कैसे काफ़िर होगा वह जो यह कहता है–

क्या तुम जानते हो कि हम ने मोहम्मद स0 को पाया है।

मूसा जैसा नबी जिसका ज़िक्र कुतुबे साबिक़ा में मौजूद है।

एक दूसरी हदीस में है कि अबूतालिब क्यों काफ़िर हो सकते हैं जबकि कहते हैं–

हमारा बेटा झूठा नहीं है उस को सब जानते हैं और वह बातिल की तरफ तवंज्जो नहीं करता।

वह रौशन रू हैं, बादल उस के चेहरे से बरकत हासिल करता है वह यतीमों का पुश्त पनाह है और बेवाओं की इस्मत का पासबान है।

30. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने एक रोज़ हज़रत रसूले खुदा स0 मस्जिदे हराम में लिबासे नौ पहने हुए आये। मुशरेकीन ने आप स0 के ऊपर ऊँटनी की आलाइश जो बच्चा पैदा होने के बाद निकलती है आप स0 के ऊपर ला डाली जिस से आप स0 के कपड़े गन्दे हो गये। पस इस से आप के दिल को बहुत ज्यादा ग़म हुआ। आप अबूतालिब के पास आए और कहा– ऐ चचा आप के नज़दीक मेरी क्या क़द्र है? उन्होंने पूछा तुम्हारा क्या हाल है? हज़रत ने वाक़ेआ बयान किया। अबूतालिब ने हम्ज़ा को बुलाया तलवार ली और हम्ज़ा से कहा इस आलाइश को उठाओ और आंहज़रत स0 को ले क़र क़ौम की तरफ़ चले। कुरैश क़ाबा के गिर्द जमा थे। जब उन्होंने अबूतालिब को आते देखा तो समझ गये कि गुस्से में भरे हुए हैं। आप स0

ने हम्ज़ा से कहा आलाइश को उठाओ और उन सब के मुँह पर मलो। फिर रसूले खुदा से फ़रमाया, भतीजे अब तो हमारा बदला पूरा हो गया।

31. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जब हज़रत अबूतालिब का इन्तक़ाल हो गया तो जिबरील नाज़िल हुए और कहा – ऐ मोहम्मद स0 अब आप मक्का से निकल जाइये यहाँ अब आप स0 का कोई मददगार नहीं और कुरैश आप पर हमला करना चाहते थे। पस हज़रत तेज़ी के साथ निकले और मक्का के उस पहाड़ के पास आये जिस को हजून कहते हैं और उस में चले गये।

32. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि अबूतालिब इस्लाम लाये मुताबिक़ हिसाबे जुम्मल जो हर ज़बान में है।

33. फ़रमाया अब्दुल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि इस्लाम लाये अबूतालिब बहिसाबे जुम्मल व अक़्द अपने हाथ के लिहाज़ से जो 63 होते थे।

तौज़ीह

हिसाबे जुम्मल व अक़्द एक तूलानी अमल है जो दोनों हाथों की अंगुलियों के पोरों से निकाला जाता है मतलब यह है कि इस अमल की रू से जो अदद 63 का बरआमद हुआ उस से किनाया है उस अम्र की तरफ़ कि हज़रत अबूतालिब ने 63 शेअरा आंहज़रत की तारीफ़ में कहे।

34. असबग़ बिन नबाता से मरवी है कि रोज़े फ़तहे बसरा अमीरूल मोमिनीन रसूल स0 के ख़च्चर पर सवार थे। आप ने फ़रमाया लोगों क्या मैं तुम को बताऊँ कि बेहतरीन मख़लूक़ उस दिन कौन होगा जिस दिन अल्लाह सबको

जमा करेगा? अबू अय्यूब अन्सारी ने कहा ज़रूर ऐ अमीरूल मुअमिनीन आप बयान फ़रमाएं क्योंकि आप मजलिसे रसूल में हमेंशा हाज़िर रहते थे। और हम गायब भी रहते थे। फ़रमाया रोज़े क़यामत बेहतरीन मख़लूक औलादे अब्दुल मुत्तलिब से सात शख़्स होंगे। उनकी फ़ज़ीलत का इन्कार नहीं करेगा। मगर काफ़िर और नहीं मुन्किर होगा उनका मगर अल्लाह से इन्कार करने वाला। अम्मार बिन यासिर रहमतुल्लाह अलैह ने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन उनके नाम बताइये ताकि हम भी पहचान लें। फ़रमाया रोज़े क़यामत जमा होने वालों में बेहतरीन ख़ल्क मुरसलीन होंगे। और सब रसूलों से अफ़ज़ल मोहम्मद़ मुस्तफ़ा होंगे। और उम्मत के नबी के बाद अफ़ज़ल वसीये नबी होगा। वसियों में सब से अफ़ज़ल वसीए मोहम्मद हैं। आगाह हो कि अफ़ज़ले खल्क़, औसिया के बाद शोहदा हैं। और अफ़ज़ले शोहदा हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब हैं। और जाफ़र इब्ने अबूतालिब जिनके दो सब्ज़ पर होंगे। जिन से वह जन्नत में उड़ते होंगे। सिवाए उन के इस उम्मत में किसी और को दो बाज़ू नहीं दिये गये ये वो चीज़ है जिस से अल्लाह ने मोहम्मद मुस्तफा स0 को मुकर्रम बनाया और उन को शरफ बख़्शा और रसूल स0 के दोनों नवासे हसन, हुसैन हैं। और महदी हैं। खुदा ने हम अहले बैत में से जिस को चाहा ले लिया फ़िर ये आयत पढ़ी जो अल्लाह की इताअत करता है और रसूल की, वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने इनाम नाज़िल किया है और वो लोग नबी हैं, सिद्दीक हैं, शहीद हैं, सालेह हैं, और ये अच्छे रफ़ीक़ हैं। ये अल्लाह का फज़्ल है और अल्लाह का अलीम होना काफ़ी है।

35. रावी कहता है मैंने इमाम मोहम्मद बाकर अलैहिस्सलाम से पूछा कि हजरत रसूले खुदा स0 पर नमाजे

जनाज़ा कैसे पढ़ी। फ़रमाया जब अमीरूल मोमिनीन गुस्ल दे चुके और कफ़न दे कर ढांप चुके तो दस आदमियों को अन्दर दाख़िल किया वो आंहज़रत स0 के गिर्द खड़े हुए फिर अमीरूल मोमिनीन ने उनके बीच में खड़े होकर सूरह अहज़ाब की यह आयत पढ़ी बेशक अल्लाह और उस के मलायका दुरूद भेजते हैं नबी पर ऐ ईमान वालों तुम भी दुरूदो सलाम भेजो सब ने यह आयत पढ़ी इसी तरह फिर अहले मदीना और इस के गिर्द के लोगों ने पढ़ी।

तौज़ीह – चूंकि हुजरए रसूल स0 में ज्यादा लोगों की गुन्जाइश न थी लिहाज़ा दस आदमियों ने नमाज़ पढ़ी सूरह अहज़ाब की ये आयत अमीरूल मोमिनीन ने अव्वल पढ़ी बादे नमाज़ अलाहिदा पढ़ी चूंकि नमाज़े मय्यत से अलाहिदा चीज़ थी लिहाज़ा खुसूसियत से इस का ज़िक्र किया गया।

36. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने अली से फ़रमाया तुम मुझको इसी हुजरे में दफ़न करना और मेरी कब्र चार अंगुश्त बुलन्द करना और इस पर पानी छिड़कना।

37. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अब्बास ने अमीरूल मोमिनीन से कहा लोग इस ख़याल से जमा हुए हैं कि रसूलुल्लाह स0 को जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न करें और इन में से कोई नमाज़े जनाज़ा की इमामत करे। ये सुन कर अमीरूल मोमिनीन बाहर आये और फ़रमाया रसूलुल्लाह जैसे जिन्दगी में ख़ल्क़ के इमाम थे मरने के बाद भी हैं। उन्होंने वसीयत की है कि मुझे उसी जगह दफ़न किया जाये जहाँ मेरी रूह क़ब्ज़ हो। फिर आप अ0 दरवाज़े पर खड़े हुए और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और लोगों से कहा कि वह दस दस

आयें और नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर बाहर निकल जायें।

38. इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब रसूले खुदा की रूह क़ब्ज़ हुई तो मलायका मुहाजिरीन और अन्सार ने जूक़ दर जूक़ आंहज़रत पर नमाज़ पढ़ी। अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया मैंने आंहज़रत से सुना है दरांहालेकि हुज़ूर सहीह व सालिम थे कि ये आयत कब्ज़े रूह के बाद मेरी नमाज़ के मुतअल्लिक़ नाज़िल हुई है। इन्नल्लाहा व मलाइकतहू.......अल्अख

39. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से पूछा अस्सलामु अला रसूलुल्लाह के क्या माने हैं? फ़रमाया अल्लाह तआला ने जब अपने नबी और उनके वसी और उनकी बेटी और दोनों बेटों और तमाम अइम्मा और उन के शियों को पैदा किया और उनसे अहद लिया कि मुशरिकों की अज़ियत पर सब्र करें। और एक दूसरे को सब्र की तल्कीन करें और बाहम राब्ता पैदा करें और अल्लाह से डरें और खुदा ने इनसे वादा किया वह इनको एक मुबारक सरज़मीन अता करेगा और अमनो अमान के हरम में जगह देगा और इनके हुसूले रहमतो बरकत के लिये बैतुल मामूर को नाज़िल करेगा। (यानि शब हाए कद्र में मलायका इनके पास लौहे महफूज़ से अख़्ज़ किये हुए अहकाम लायेंगे) और एक बुलन्द मकाम इनके लिये जाहिर करेगा और ज़रर दुश्मन से इनको बचाये रखेगा और ऐसी ज़मीन इनको देगा जिसे अल्लाह ने सलामती से बदल दिया होगा और इस में ऐसी सलामती होगी कि इस में दुश्मन से कोई निज़ाअ न होगी और वह इनके लिये ख़ालिस होगी दुश्मनों का इसमें कोई दख़ल न होगा और वह जो चाहेंगे वो मौजूद होगा और रसूलुल्लाह ने अइम्मा और उनके शियों से

इसका अहद ले लिया है पस रसूल स0 पर सलाम तज़किरा है उसी मीसाक़ का और ताज़ा करना है खुदा के सामने उस अहद को ताकि वो ताजील करें अपने वादे के पूरा करने में।

तौज़ीह

मज़कूरा बाला उमूर जो बयान किये गये हैं इनका ताल्लुक ज़हूरे क़ायमे आले मोहम्मद से है।

40. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि खुदा वन्दा रहमत नाज़िल कर मोहम्मद स0 पर जो तेरे बरगुज़ीदा हैं। तेरे ख़लील हैं, तेरे नजीब हैं, और तेरे अम्र के मुदब्बिर हैं।

बुलन्दी पर से क़ब्रे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम को देखने की मुमानिअत

1. जाफ़र इब्ने मुसन्ना से मरवी है कि मैं मदीने में था। मस्जिदे नबवी की छत जिससे कब्रे नबी स0 नज़र आती थी। गिर गई थी काम करने वाले ऊपर चढ़ते थे और उतरते थे (बगरज़े तामीर) मैंने अपने साथियों से कहा तुम में कौन ऐसा है जिससे इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मिलने का वादा किया हो। मेहरान ने कहा मैं हूँ। इसमाईल ने कहा मैं हूँ, मैंने उन दोनों से कहा। हमारी तरफ़ से एक सवाल हज़रत से करो कि आया कब्रे नबी स0 से बुलन्द हो कर देखना दुरूस्त है, वह लोग गये दूसरे रोज़ जब हम फिर जमा हुये तो इस्माईल ने कहा हम ने तुम्हारा मसअला दरयाफ्त किया था आप ने फ़रमाया कि तुम यह पसन्द करोगे कि हज़रत से ऊँचे हो कर उसको देखो जिससे बीनाई जाती रहे या वह हज़रत को इस हाल में देखे कि तन्हा खड़े नमाज़ पढ़ रहें हों या अपनी किसी बीबी के पास हों।

तौज़ीह

मिरअतुल अूकूल में अल्लामा मज्लिसी अलैहिर्रहम तहरीर फरमाते हैं कि यह रवायत ज़ुईफ़ है क्योंकि इसके रावी जाफ़र इब्ने मुसन्ना असहाबे इमामे रज़ा अलैहिस्सलाम से हैं उन्होंने इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम का ज़माना नहीं देखां दूसरे उलमाए इमामिया का इस पर इत्तेफाक़ है कि अंबिया और अइम्मा अलैहिमुस्सलाम मरने के बाद ज़िन्दा तो ज़रूर हैं लेकिन ऐसी ज़िन्दगी वह नहीं होती जैसी मरने से पहले होती है। हाँ यह सहीह है सिवाये किसी खास ज़रूरत के कब्र से ऊँचा होना और बुलन्दी से उसको देखना जायेज़ नहीं।



एक सौ ग्यारहवां बाब

ज़िक्रे विलादते अमीरिल मोमिनीन अलैहिस्सलाम

हज़रत अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम 30 आमुल फील में पैदा हुऐ और क़तल हुऐ माहे रमज़ान की 21 तारीख रोज़े यकशंबा 40 हिजरी में जब्कि आप 63 साल के थे। रसूलुल्लाह के बाद 30 साल तक ज़िन्दा रहे आप अलैहिस्सलाम की वालिदा फातिमा बिन्ते असद इब्ने हाशिम इब्ने अब्दे मनाफ थीं वह सब से पहले हाशमी हैं जो मां और बाप दानों तरफ से हाशमी हैं।

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि फातिमा बिन्ते असद रसूले खुदा की खुशखबरी लेकर हज़रत

अबू तालिब के पास आयीं, अबू तालिब ने कहा सब्र करो, एक सिब्त में तुम को खुशखबरी दूंगा। ऐसे ही मौलूद की सिवाये मंसबे नबुव्वत के और फ़रमाया सिब्त तीस साल का होता है और हज़रत रसूले खुदा और अमीरूल मोमिनीन की उम्र में तीस साल का फ़क्र है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़ातिमा बिन्ते असद मादरे अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम वह पहली बीबी हैं जिन्हों ने पा पियादा मक्के से मदीने तक रसूल स० की तरफ़ हिजरत की और वह रसूलुल्लाह स० पर सब से ज़्यादा मेहरबान थीं उन्हों ने रसूले खुदा स० से सुना कि रोज़े कयामत लोग इसी तरह बरहना महशूर होंगे जैसे वह मां के पेट से पैदा हुऐ थे, उन्हों ने कहा हाऐ कैसी रूसवाई होगी। हज़रत ने फ़रमाया मैं खुदा से सवाल करूंगा कि वह तुम्हें आसिया की तरह क़ब्र से उठाये। रसूल स० से उन्हों ने तंगयी–ए–कब्र का हाल सुना तो कहने लगीं हाये मेरी कमज़ोरी, हज़रत ने फ़रमाया ग़म न करो मैं अल्लाह से सवाल करूंगा कि वह तुम्हें इससे नजात दे। एक दिन रसूलुल्लाह से कहा मैं अपनी उस कनीज़ को आज़ाद करना चाहती हूँ फ़रमाया खुदा उसके हर अज़ो के बदले तुम्हारे हर अज़ो को नारे जहन्नम से नजात देगा। जब बीमार हुईं तो रसूलुल्लाह स० को वसीयत की और हुक्म दिया कि उनके वसी की हैसियत से खादिमा को आज़ाद कर दें इतना कह कर जबान बन्द हुई फिर रसूलुल्लाह को इशारे से बताती रहीं रसूलुल्लाह ने उनकी वसीयत को कुबूल किया। एक दिन हज़रत बैठे हुये थे कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम रोते हुये आये। हज़रत ने रोने का सबब पूछा। फ़रमाया मेरी

मां फातिमा का इंतक़ाल हो गया। रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया हाय! मेरी मां का और जल्दी से उठ कर वहां पहुँचे उनको देखा तो रोने लगे और औरतों को हुक्म दिया कि उनको ग़ुस्ल दें और जब फ़ारिग़ हों तो जब तक हज़रत को आगाह न करें कुछ और न करें, जब वह ग़ुस्ल दे चुकीं तो उन्हों ने बताया हजरत स0 ने उनको अपनी वह क़मीसे खास दी जो आपके जिस्म से मुत्तसिल रहती थी और हुक्म दिया कि उसका कफन दें और मुसल्मानों से कहा जब तुम मूझे कोई ऐसा काम करते देखो जो इससे पहले मैंने नहीं किया हो तो मुझसे पूछो ऐसा क्यों किया। ज़ब वह ग़ुसल से फारिग़ हुई तो हज़रत आये और जनाज़ा अपने कंधे पर उठाया।

आप स0 बराबर जनाज़ा उठाये चले आ रहे थे यहां तक क़ब्र के पास लाये और उसको रख दिया और खुद क़ब्र में दाखिल हुये और इसमें लेटे फिर मय्यत को अपने हाथों पर उठाया और क़ब्र में रखा फ़िर उस पर झुक कर देर तक कुछ कहते रहे फिर फ़रमाया तुम्हारा बेटा, तुम्हारा बेटा, तुम्हारा बेटा, फिर क़ब्र से निकल आये और क़ब्र बन्द कर दी फिर क़ब्र पर झुके और फ़रमाया ला इला ह इल्लल्लाह। खुदावन्दा मैंने उनको तेरे सुपुर्द किया फिर लौट आये, मुसलमानों ने कहा आज आप ने वह किया जो इससे पहले नहीं किया था फ़रमाया आज मैंने अबू तालिब की नेकी को कम कर दिया है अगर उनके पास कोई शैय होती थी तो मुझे अपने ऊपर और अपनी औलाद पर तरजीह देती थीं। मैंने उनसे जिक्र किया कि कयामत के दिन लोग बरहना महशूर होंगे। उन्हों ने कहा हाय! रूस्वाई, मैं ज़ामिन हुवा इस का कि खुदा उनको आसिया की तरह महशूर करेगा। उन्हों

ने कब्र की तंगी का ज़िक्र किया और कहा हाय ज़ईफ मैं ज़ामिन हुवा इसका कि अल्लाह इससे बचायेगा। पस मैंने उनको अपनी कमीज़ का कफन दिया और उनकी कब्र में लेटा और उनकी कब्र पर झुक कर तलक़ीन की, इन सवालात के जवाब की जो उनसे पूछे गये उनसे सवाल किया गया रब के मुतअल्लिक उन्हों ने जवाब दिया फिर सवाल रसूल के मुतअिल्लक किया उन्हों ने जवाब दिया फिर सवाल किया वली और इमाम के मुतअल्लिक इस पर वह खामूश हुई मैंने कहा वह आप का बेटा है, आपका बेटा है।

3. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना कि जब रसूलुल्लाह स० पैदा हुये तो हज़रत आमिना को नज़र आने लगे ईरान और शाम के महेल्लात फातिमा बिन्ते असद वालिदए अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम अबू तालिब अलैहिस्सलाम के पास आईं हंसती हुई और बशारत देती हुई और जो कुछ आमिना से सुना था। उसको बयान कियां अबू तालिब ने उनसे कहा तुम इससे तअज्जुब करती हो तुम हामिला होगी और पैदा होगा तुमसे उनका वसी और वज़ीर।

4. सफवान सहाबी–ए–रसूल स० ने बयान किया कि जिस रोज़ अमीरूल मोमिनीस अलैहिस्सलाम का इंतकाल हुवा वह मक़ाम फरते गिरया से हिलने लगा और लोग इस तरह परेशान थे जैसे रसूलुल्लाह स० की वफात के दिन नागाह एक शख्स रोता हुवा आया और जल्दी से आया और इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन कहता हुवा आया फिर कहने लगा आज खिलाफते नबविया क़तअ़ हो गई (यानी ता जुहूरे इमाम मेहदी अब हकूमत जुहहाल हो गई)

और लोग इल्मी मसायल के लिये उन्हीं की तरफ़ रूजूअ़ करेंगे) फिर वह उसके दरवाज़े पर खड़ा हुवा जहां अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम थे और कहने लगा ऐ अबुल हसन अलैहिस्सलाम अल्लाह आप पर रहम करे आप अलैहिस्सलाम सब से पहले इसलाम लाने वाले और उनमें सब से ज़्यादा पुर खुलूस ईमान वाले और यक़ीन में सब से ज़्यादा डरने वाले और बुर्जुग तर और रूए तहम्मुल व तअब और रसूलुल्लाह के सब से ज़्यादा हिफ़ाज़त करने वाले और तमाम असहाब में सब से ज़्यादा अमीन और अज़ रूऐ मनाक़िब अफ़ज़ल और सबक़त इललखैर में सब से ज़्यादा अकरम।

और अज़ रूऐ दर्जा सब से आला और अज़ रूए क़राबते रसूल स0 सब से ज़्यादा नज़दीक और तरीक़ए कार में और आ़दात व खसाएल में और अमल में सब से ज़्यादा मुशाबेह और मंज़िलत में शरीफ तर अल्लाह तआ़ला आपको जज़ा दे और रसूल स0 और मुसलमानों की तरफ़ से भी जज़ाऐ खैर हो, जब असहाब ने कमज़ोरी दिखाई तो आप अलैहिस्सलाम कवी रहे और उन में सुसती आई तो आप अलैहिस्सलाम चुस्त रहे जब वह ढीले पड़े तो आप अलैहिस्सलाम उठ खड़े हुऐ और जब असहाब ने तरीका–ए–रसूल स0 तर्क किया तो आप इस पर क़ायम रहे।

आप अलैहिस्सलाम रसूल स0 के खलीफए बर हक़ हैं आप अलैहिस्सलाम ने (मसलिहते दीनी पर नज़र रखते हुए) अम्रे खिलाफत में नेज़ाअ़ न किया और बावजूद मुनाफ़िकों के ख्वाहिश के और काफिरों के ग़ैज़ व ग़ज़ब, हासिदों की ना पसंदीदगी और फासिकों की हिक़ारत के आप अलैहिस्सलाम ने आजिज़ी और फरोतनी का इज़हार न किया। जब लोग

अम्रे दीन की बजा आवुरी में सुस्त पड़ गये थे, आप अलैहिस्सलाम एअ़लाये कलिमतुल हक़ के लिए खड़े हो गये जब कि दूसरों ने पर्दा पोशी की तो आप अलैहिस्सलाम नूरे खुदा की रोशनी में चले, जब कि और लोग अपनी जगह से हिलते न थे जिन्हों ने आप अलैहिस्सलाम का इत्तेबाअ़ किया। उन्हों ने हिदायत पाई आप अलैहिस्सलाम मज्लिसे रसूल स0 में सबसे ज्यादा धीमी आवाज़ में बोलते थे और अज़ रूऐ इताअ़ते रसूल स0 सबसे ज़्यादा बुलन्द दर्जे पर थे और कम कलाम करने वाले थे और सबसे ज़्यादा दुरूस्त बोलने वाले थे और बेहतरीन राये वाले थे और अज़रूऐ क़ल्ब सबसे ज़्यादा बहादुर थे और अज़रूए यकीन सबसे ज़्यादा मज़बूत और अमलन सबसे ज़्यादा बेहतर, उमूरे दीन के सबसे ज़्यादा जानने वाले थे। वल्लाह आप अलैहिस्सलाम दीन के यअ़सूब (सरदार) थे अव्वल भी आखिर भी, अव्वल उस वक्त जब लोगों में तफ़रक़ा पड़ गया और आखिर उस वक्त जब कि लोगों के पाये अमल सुस्त पड़ गये।

आप मोमिनों के लिये मेहरबान बाप थे। जब कि वह आप अलैहिस्सलाम के लिये मिस्ले अयाल बन गये आप अलैहिस्सलाम ने उनके बोझ को उठा लिया जिसके उठाने में वह कमज़ोर साबित हो चुके थे और जो चीज़ें मोमिनीन छोड़ बैठे थे आप अलैहिस्सलाम ने उनकी हिफाज़त की और निगाह रखा इन उमूर को जो उन्हों ने मुहमल बना दिये थे और रोका मोमिनीन को जब वह जमा हुऐ (कत्ले उसमान पर) और आप अलैहिस्सलाम बुलन्द तबअ़ रहे जब कि उन्हों ने जज़अ़ की (इलज़ामे कत्ले उसमान में) और सब्र से काम लिया जब कि उन्हों ने जल्दी की (कुबूले खिलाफत में) और

मालूम कर लिया उन कीनों को जो (अहले शाम) रखते थे और मोमिनों ने पा लिया आप अलैहिस्सलाम से उन चीज़ों को जिनका उन्हें गुमान भी न था (जंगे मआविया) आप अलैहिस्सलाम काफिरों के लिए एक सख़्त अज़ाब थे और मोमिनों के लिए महफूज़ क़िला, आपने गुम्राह इमामों की नेमतों को ख़ाक में मिला दिया और इमामत की बख़शिशों को कामयाब बना दिया, और हासिल किया उन चीज़ों को जिनकी तरफ सबक़त करते हैं और फ़ज़ाएले इमामत को बरक़रार रखा और आप अलैहिस्सलाम की दलीले इमामत में कोई कमी न हुवी और आप अलैहिस्सलाम की बसीरत में कमज़ोरी पैदा न हुई और दुश्मन के मुक़ाबिल नफ़्स को गिरने न दिया।

आप मिस्ल उस पहाड़ के थे जिसको सख़्त से सख़्त आंधी जगह से नहीं हटा सकती। और रसूल स0 ने फ़रमाया अगरचे जिस्मानी लेहाज़ से क़म्ज़ोर थे मगर अम्रे खुदा में कवी थे अपनी ज़ात में फ़रोतनी करने वाले लेकिन पेशे खुदा बड़े मर्तबे वाले रूऐ ज़मीन पर मोमिनीन के लिये जलीलुल क़दर् कोई आप अलैहिस्सलाम की ज़ात में ऐब नहीं लगा सकता था और न आप अलैहिस्सलाम के बारे में ग़म्माज़ी कर सकता था और न गुनाह की आप से तमअ़ रख सकता था और न कोई चापलूसी कर सकता था।

और ज़ईफ़ व ज़लील आप अलैहिस्सलाम के नज़दीक कवी व अज़ीज़ रहे आप कवी से उसका हक लेने वाले हैं और क़वी व अज़ीज़ आप अलैहिस्सलाम के नज़दीक ज़अीफ व ज़लील है आप कम्ज़ोर का हक उसे दिलाने वाले हैं उस मुआ़मले में अज़ीज़ व गैर अ़ज़ीज़ दोनों आप अलैहिस्सलाम

के लिये बराबर हैं आप अलैहिस्सलाम की शान हक़ व सिदक़ और नरमी है आप अलैहिस्सलाम का क़ौल हुक्मे सहीह और हतमी है। आप अलैहिस्सलाम का अम्र हिल्म और हज़्म के साथ है जो कुछ आप करें आप अलैहिस्सलाम सहीह रास्ते पर चलने वाले हैं और हर मुशकिल काम आप के लिये आसान है।

आप अलैहिस्सलाम ने फितने की आग बुझाई और उमरे दीन को एअ़तेदाली हालत पर रखा आप अलैहिस्सलाम की वजह से इस्लाम क़वी हुवा। और बा वजूद काफिरों की ना पसंदीदगी के अम्रे खुदा ज़ाहिर हुवा और इस्लाम और मोमिनीन अपनी जगह पर कायम रहे और आप अलैहिस्सलाम ने बहुत नुमायां सबक़त हासिल की और आप अलैहिस्सलाम के दोस्तों को सख़्त परेशानी का सामना है और आप की शान इससे बहुत बुलन्द है कि सिर्फ रोने पर इकतफा की जाये आप अलैहिस्सलाम की मौत से न सिर्फ जमीन वाले बल्कि अहले आसमान भी अन्दोहनाक हैं और आप अलैहिस्सलाम की मौत ने लोगों को बुरी तरह शिकस्ता दिल कर दिया इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलेहि राजिऊन हम अल्लाह की क़ज़ा व कद्र पर राज़ी हैं और हम ने इस अम्र को अल्लाह के सिपुर्द कर दिया खुदा की कसम आप की मौत से ज़्यादा कोई मुसीबत मुसलमानों पर नहीं आई आप अलैहिस्सलाम मोमिनों के लिये जाये पनाह और मज़बूत क़िला थे और एक मज़बूत आज़माइश थे और काफिरों के लिये सख्ती और गज़ब, खुदा ने अपने नबी को अपने पास बुला लिया और खुदा हम को आप की मुसीबत पर रोने के अज्र से महरुम न करे जब इसका कलाम ख़त्म हुआ तो वो रो दिया और तमाम असहाबे

रसूल स0 रोए, उसके बाद लोगों ने उसे बहुत तलाश किया मगर पता नहीं चला।

5. रावी कहता है कि आमिर ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा, लोग कहते हैं कि अमीरूल मोमिनीन मकामे रोहबा (कूफे का एक मुहल्ला) में दफ़न किये गये हैं, फ़रमाया नहीं उसने कहा फिर कहां, फ़रमाया जब हज़रत का इंतकाल हुवा तो इमाम हसन अलैहिस्सलाम जनाज़े को लेकर कूफा के बुलन्द मकाम पर आये जो नजफ (दरिया के किनारे) के करीब था गर्रा उसके बायें तरफ और हैरा दाहनी तरफ था। पस दफन किया। सफेद पाक पत्थरों के दरमियान, इस गुफ्तगू के बाद आमिर कहता है मैं उस जगह गया और जो निशान बताया था उससे पता लगा लिया जब हज़रत के पास आया तो हाल बयान किया हज़रत ने फ़रमाया तुम ठीक पहुंचे अल्लाह तुम पर रहम करे। तीन बार फ़रमाया।

6. अब्दुल्लाह इब्ने सिनान से मरवी है कि मेरे पास उमर इब्ने यज़ीद आया और मुझसे कहा सवार हो जाओ मैं सवार होकर उसके साथ चला हम हफ्से कनासी के मकान पर आये मैंने उससे साथ चलने की खाहिश ज़ाहिर की वह हमारे साथ चला जब हम मकामे गर्रा तक पहुंचे तो एक क़ब्र के पास जाकर रूके उसने कहा सवारी से उतरो। यह क़ब्र अमीरूल मोमिनीन की है, हम ने कहा तुम ने कैसे जाना, उसने कहा जब हज़रत अबूअब्दिल्लाह हैरा में मुकीम थे तो मैं कई बार यहां आया और हज़रत ने मुझे बताया कि यह अमीरूल मोमिनीन की क़ब्र है।

7. ईसा इब्ने शलकान रावी है कि मैंने हज़रत अबू

अब्दिल्लाह से सुना कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम के कुछ मामू बनी मख़ज़ूम में थे उनका एक जवान उनके पास आया और कहने लगा कि मेरा भाई मर गया है और उसकी मौत ने मुझे सख़्त सदमा पहुचाया है आप ने फ़रमाया तुम उसे देखना चाहते हो। उसने कहा बेशक, फ़रमाया मुझे उसकी कब्र दिखाओ। फिर हज़रत चले और चादर लपेटे हुऐ थे जब कब्र के पास पहुंचे तो आप ने अपने होंटों को हरकत दी और कब्र पर ठोकर मारी एक शख़्स क़ब्र से निकला और ब ज़बाने फ़ारसी गोया हुवा। हज़रत ने फ़रमाया क्या तुम मरते वक़्त अरब नहीं थे? उस ने कहा थे तो लेकिन जब हम मरे तो फुलां फुलां के मज़हब पर थे पस हमारी ज़बानें बदल गई।

8. इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम का इंतक़ाल हो गया तो इमाम हसन अलैहिस्सलाम कूफा में आये और खुदा की हम्द व सना और नबी पर दुरूद के बाद फ़रमाया लोगो! इस रात को उस शख़्स ने रेहलत फ़रमायी जिसके फ़ज़ायल को न अव्वलीन ने पाया न आख़िरीन ने पाया वह साहिबे रायते रसूल थे उनके दाहिनी तरफ़ जिब्रईल अलैहिस्सलाम रहते थे और बायें तरफ मीकाईल, जब तक फतह न होती वह मैदान से न हटते। खुदा की कसम उन्हों ने न चांदी छोड़ी है न सोना सिवाये उन सत्तर दिरहम के जो उन्हों ने इस लिये बचा रखे थे कि अपने घर के लिये एक कनीज़ खरीदें, वल्लाह अमीरूल मोमिनीन का इंतक़ाल इसी रात में हुवा जिस रात को वसी–ए–मूसा यूशअ़ बिन नून का हुवा था और यही वह रात थी कि जिस में हज़रत ईसा को उठाया गया

और यही वह रात है जिस में कुरआन नाज़िल हुवा।

9. फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने जब अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम को गुसल दिया गया तो घर के एक तरफ से आवाज़ आई कि अगर तुम आगे से जनाज़े को उठाओ गे तो पीछे से जनाज़ा खुद उठ जायेगा और अगर पीछे से जनाज़े को उठाओ गे तो आगे से जनाज़ा खुद चलेगा।

10. मैंने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना कि फ़ातिमा बिन्ते मोहम्मद बेअ़सते रसूल स0 के पांच साल बाद पैदा हुई और अट्ठारह साल 75 दिन की उम्र में वफ़ात पाई।

11. फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जब अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम का इंतेकाल हुवा तो इमाम हसन अलैहिस्सलाम, इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और दो और शख्स (मलायका) जनाज़े को लेकर निकले तो चलते हुये कूफ़े को दाहिनी तरफ़ छोड़ा फिर ज़मीने बुलन्द की तरफ़ आये और मुकामे ग़र्रा तक पहुंचे यहां दफ़्न करके वापस आये।



एक सौ बारहवां बाब

ज़िक्रे विलादते जनाबे फातिमा स०

जनाब फ़ातिमा अलैहस्सलाम बेअसते रसूल स0 से 5 बरस बाद पैदा हुई और 18 साल 75 दिन की उम्र में वफ़ात पाई और आंहजरत स0 की वफ़ात के बाद 75 दिन जिन्दा रहीं।

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मन्कूल है कि हज़रत फातिमा रसूलुल्लाह स0 के बाद 75 दिन जिन्दा रहीं और बाप के गम में बेहद मुलूल व महजून थीं जिब्रईल आकर तसल्ली व दिलासा देते थे और उनका दिल बहलाते थे और बाप के हालात बताते और उनके मकाम की खबर देते और आगाह करते इन वाकिआ़त से जो उनकी औलाद को उनके बाद पेश आने वाले थे अली अलैहिस्सलाम उसे लिख लेते थे।

2. फ़रमाया इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने कि फातिमा अलैहस्सलाम सिद्दीक़ा और शहीदा हैं और बनातुल अंबिया को हैज़ नहीं आता।

3. इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब जनाबे फातिमा का इंतेक़ाल हुवा तो अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने पोशीदा तौर पर दफन किया और निशाने क़ब्र को मिटा दिया ताकि किसी को पता न चले फिर अपना मुह क़ब्रे रसूल स0 की तरफ़ करके फ़रमाया अस्सलामुअलैका या रसूलल्लाह स0, यह सलाम मेरी तरफ से और आप की बेटी और जायरा की तरफ़ से जो आराम कर रही हैं अपनी कब्र में जो आप स0 की ज़मीन है और अल्लाह ने इंतेखाब किया उनका आप से सबसे जल्द मिलने वालों में।

या रसूलल्लाह स0 आपकी प्यारी बेटी सय्यदते निसाइल आलमीन के गम में मेरा सब्र कम्ज़ोर साबित हो रहा है। मगर यह कि आप स0 की तअस्सी की आप स0 की जुदाई के गम में और आपको मदफूने लहद करने में कैसा सब्र आज़मा वह वक्त था जब मैंने आप स0 के लहदे कब्र में रखा और जब कि मेरे सीने पर आप का दम निकला हां किताबे खुदा मेरे

लिये बाइसे कुबूले सब्र है इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन, इमानत मुझसे वापस ले ली गई और जो चीज़ गिरवी थी वह वापस ले ली गई, फातिमा जहरा को मुझसे उचक लिया गया। ऐ रसूलुल्लाह अब यह आसमान व ज़मीन मेरे लिये कितने बुरे हो गये मेरा यह हुज़्न दायमी है और मेरी रात बेदार रखने वाली है और यह वह गम है जो मेरे दिल से दूर होने वाला नहीं है यहां तक कि खुदा मुझे उस घर में पहुंचा दे जहां आप मुकीम है यह वह मलाल है जो दमबदम बे ताब करने वाला है और पै दर पै उभरने वाला है कितने जल्द हमारे दरमियान जुदाई हो गई मैं उपने गम की शिकायत अपने अल्लाह से करता हूं आप स0 की बेटी आप को बतायेंगी कि आप की उम्मत ने उन पर जुल्म करने में किस तरह एक दूसरे की मदद की आप स0 उन से सवाल करें वह सब बतायेंगी उनके दिल में गम की वह सोज़िश है जो किसी तरह कम होने में नहीं आती और उनको अपने गम को दिल से हटाने में कोई सूरत नज़र नहीं आई आप उनसे कहेंगे और अल्लाह ही हुक्म करने वाला है और वह सब हुक्म करने वालों से बेहतर है।

सलामे रूख्सती कुबूल हो, यह जुदाई नाकारा की सी है न मुलूल की सी, अगर मैं रूगरदानी करूं तो यह किसी मलाल की वजह से नहीं और अगर ठहरूं तो खुदा ने जा साबिरों से वादा किया हैं इससे बदगुमानी की बिना पर नहीं, आह आह! इस गम में सब्र ही बेहतर है अगर ज़ालिमों के गलबे का खौफ़ न होता तो मैं उसी जगह रहता और मेरा यह मक़ाम लाज़मी और मुसतकि़ल होता, मैं रोता ज़ने पिसरे मुर्दा के रोने की तरह इस अज़ीमुश्शान मुसीबत पर पस अल्लाह

की हिफाज़त में मैं आप स0 की बेटी को दफ्न करता हूं वह बेटी जिससे हक छीना गया जिसको मीरासे पदर न दी गई जो अहद लोगों ने किया था उसे ज़्यादा ज़माना भी न गुजरा था वह ज़िक्र पुराना भी न था या रसूलल्लाह खुदा के सामने शिकायत है और आप स0 के सामने अल्लाह आप स0 को सब्र दे, दरूद हो आप पर और आप स0 की बेटी पर।

4. रावी कहता है मैंने इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा, जनाब फातिमा को किसने गुस्ल दिया ? फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन ने, हज़रत का यह फरमाना मुझ पर गरां गुजरा, फ़रमाया जो मैंने कहा तुम उससे दिल तंग हुऐ मैंने कहा हां ऐसा ही है फ़रमाया दिल तंग न हो वह सिद्दीक़ा थीं, नहीं गुस्ल दे सकता था उनको मगर सिद्दीक़, क्या ऐसा नहीं हुवा कि मरयम को गुस्ल हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दिया।

5. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र व इमाम जाफ़र अलैहिस्सलाम ने कि जब हज़रत फातिमा पर जो जुल्म करना था कर चुके तो आप ने उमर का गरीबान पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचा और कहा ऐ पिसरे खत्ताब खुदा की कसम अगर मुझे इसका खौफ न होता कि बेगुनाहों पर मुसीबत नाज़िल हो जायेगी और क़हरे इलाही में वह भी घिर जायेंगे तो मैं ज़रूर बद दुआ करता और खुदा उसे जल्द कुबूल कर लेता।

6. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाकर अलैहिस्सलाम ने जब फातिमा पैदा हुई तो खुदा ने एक फरिश्ते को वही भेजी उसने हज़रत रसूले खुदा स0 की ज़बान पर जारी किया कि मैंने इसका नाम फातिमा रखा फिर खुदा ने कहा मैंने तुम को

इल्म का जुदा करने वाल बनाया यानी तुम्हारी जुर्रियत में इल्म हमेशा रहेगा और नापाकी से दूर रहेंगे। फिर इमाम मोहम्मद बाकर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह ने फातिमा के इल्म को जुदा करने वाला बनाया यानी तालीम करने वाला बनाया और नापाकी से दूर रहने वाला करार दिया, यौमे मीसाक़।

7. इामम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हजरत रसूले खुदा स0 ने जनाबे फ़ातिमा से कहा उठो और लकड़ी का वह बड़ा कांसा लाओ वह उठीं और ले आईं इसमे सरीद व शोर्बा में रोटी चूरी हुई और गोश्त की बूटियां थीं गर्म, पस हजरत रसूले खुदा स0 और हजरत अली अलैहिस्सलाम और फ़ातिमा और हसन व हुसैन अलैहिमुस्सलाम ने उसको खाया 13 दिन।

उम्मे ऐमन ने हज़रत इमाम हुसैन के पास कुछ खाना देख कर कहा आप के पास यह कहां से आया।

फ़रमाया हम तो उसे कई रोज़ से खा रहे हैं उम्मे ऐमन यह सुन कर फातिमा के पास आई और कहने लगीं ऐ फातिमा जब उम्मे ऐमन के पास कोई चीज़ होती है तो फातिमा और उनके बच्चे उसमें शरीक हैं और जब फातिमा के पास कुछ हो तो उम्मे ऐमन उसमें शरीक नहीं। जनाब फ़ातिमा ने इस में से निकाल कर उम्मे ऐमन को दिया वह उन्हों ने खा लिया उसके बाद वह खान खतम हो गया। रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया अगर तुम उसे न खिलातीं तो यह खाना तुम और तुम्हारी औलाद कयामत तक खाती रहतीं, इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह कांसा हमारे पास है। जुहूरे कायमे आले मोहम्मद के वक़्त निकाला जायेगा।

8. इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि एक रोज़ रसूलुल्लाह स० बेठे हुयें थे कि एक फ़रिश्ता आया जिसके 24 चेहरे थे रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया ऐ मेरे हबीब मैं आपको इस सूरत में क्यों देख रहा हूँ फरिशते ने कहा। मैं जिब्रईल नहीं अल्लाह ने मुझे इस लिये भेजा है कि नूर की तरवीज नूर से करूं। फ़रमाया किसकी किस से? उस ने कहा फातिमा की अली अलैहिस्सलाम से। हजरत ने फ़रमाया कि जब वह फरिशता पलटा तो दोनों शानों के दरमियान लिखा था। मुहम्मद रसूलुल्लाह अलीयुन वसीय्योहू। हज़रत रसूलुल्लाह ने फ़रमाया ये कब से तेरे दोनों कन्धों के दरमियान लिखा हुवा है। उस ने कहा खिलकते आदम से 22 हज़ार साल पहले से।

9. रावी कहता है मैंने इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम से जनाब फातिमा स० की क़ब्र के मुतअल्लिक़ पूछा वह अपने घर में दफन की गई जब बनी उमैया (अमर बिन अ़ब्दुल अज़ीज़) ने मस्जिदे रसूल स० की तोसीअ़ की तो कब्र मस्जिद में आ गई।

अल्लामा मजलिसी मिरअतुल अुकूल में तहरीर फरमाते हैं कि मकामे कब्र के मुतअल्लिक़ जो रवायात हैं उनमें सहीह रवायात यह है कि जनाब फातिमा अपने घर में दफन हुईं। शेख कुद्देसा सिर्रहु ने लिखा है कि जब तुम रौजा–ए–रसूल स० में आओ तो जनाब फातिमा की ज़ियारत करो, क्यों कि उनकी कब्र भी वहीं है हमारे ओलमा ने मवाज़ेए कब्र में इखतिलाफ किया है बाअ़ज़ ने कहा कि वह बकीअ़ में दफन हुई, बाअ़ज़ ने कहा कि रौज़–ए–रसूल स० में कब्र है, बाअ़ज ने कहा अपने घर में दफन हुई बाअ़ज़ बनी उमैया ने मस्जिदे

रसूल को बढ़ाया तो उनकी क़ब्र मस्जिद का हिस्सा बन गई। मेरे नज़दीक अफजल सूरत यह है कि दोनों जगह ज़ियारत पढ़ी जाये। इसमें कोई नुक़सान नहीं बल्कि अजरे अज़ीम है और बक़ीअ में दफन होने की रिवायत सहीह नहीं, अल्लामा मज्लिसी तहरीर फरमाते हैं कौले अज़हर यही है कि वह अपने घर में दफन हुई मैंने बहुत सी हदीसे मुतवातिरा इसके मुतअल्लिक बिहारूल अनवार में लिख दी हैं। सुदूक़ अलैहिर्रहमा ने मआनिल अख़यार में इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से रवायत की है कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया मेरी क़ब्र और मिम्बर के दरमियान एक बाग़ है जन्नत के बागों में से एक बाग़ है इन दोनों रिवायतों में जमा की सूरत यह है कि तौसीए मस्जिद के वक़्त हज़रत फातिमा के घर का कुछ हिस्सा भी इसमें आया हो।

इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अगर हज़रत अली अलैहिस्सलाम को पैदा न करता तो रूऐ ज़मीन पर फातिमा के लिये कोई कुफ़ू न होता। आदम से लेकर कयामत तक।



एक सौ तेरहवां बाब

जिक्रे विलादते इमाम हसन अलैहिस्सलाम

1. इमाम हसन अलैहिस्सलाम माहे रमज़ान 2 हिजरी में जो साले बदर है पैदा हुये और एक रिवायत के मुताबिक़ 3 हिजरी में और माहे सफर के आखिर में (28 सफर) 41 हिजरी रेहलत फरमाई जब आपका सिने मुबारक 47 साल चन्द माह था और आप अलैहिस्सलाम की वालिदा–ए–गिरामी जनाबे

फातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह स0 थीं।

फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम ने कि जब हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम की वफात का वक़्त करीब आया तो आप रोये किसी ने कहा फरज़न्दे रसूल स0 आप क्यों रोते हैं आप की मंज़िलत पेशे रसूल स0 बहुत बड़ी है और आप के मुतअल्लिक़ रसूलुल्लाह ने बहुत कुछ कहा है आप ने बीस हज पा पियादा किये हैं और तीन बार राहे खुदा में अपना कुल असासा दे दिया है हत्ता कि जूते तक। फ़रमाया कि में दो बातों की वजह से रोता हूं अव्वल इस वाकेए से जो मेरी मौत का सबब हुवा और दूसरे अहिब्बा के फिराक़ से।

2. फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने कि वफात पाई इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने जब्कि वह 47 साल के थे 50 हिजरी में रसूलुल्लाह के बाद 40 साल ज़िन्दा रहे।

3. अबू बकर हज़रमी ने बयान किया कि जअ़दा बिन्ते अशअ़स ने इमाम हसन को और आप की एक कनीज़ को ज़हर दिया कनीज़ ने तो क़ै कर दी। लेकिन इमाम अलैहिस्सलाम के बतन में वह सरायत कर गया जिससे जिगर के टुकड़े हो गये और आप का इंतेक़ाल होगया।

4. फ़रमाया इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इमाम हसन अलैहिस्सलाम अपनी उम्र के किसी हिस्से में घर से निकले और आपके साथ जुबैर का लड़का था जो आपकी इमामत का काएल व मुअ़तक़िद था। वह दोनों एक मंज़िल पर उतरे जो कि मक्का व मदीना की मंज़िलों में से थी एक सूखे दरखत के नीचे, जुबैरी बेठे, जुबैरी ने सर उठा कर दरख्त को देखा और कहने लगा कि अगर इस दरखत में फल होते तो हम खाते। इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने

फ़रमाया क्या तुम्हें ताज़ा खुरमे खाने की खाहिश है। उस ने कहा ज़रूर। आप ने आसमान की तरफ हाथ उठा कर दुआ की और कुछ ऐसे कलिमात कहे जिन को मैं न समझा पस दरखत हरा भरा अपनी असली हालत पर हो गया। हरे हरे पत्ते निकल आये और इसमें रूतब आगये। यह देख कर उस ऊंट वाले ने जिसका ऊँट किराये पर लिया था कहा कि यह जादू है। इमाम हसन ने फ़रमाया यह जादू नहीं है बल्कि यह दुआ है फरज़न्दे नबी की जो कुबूल हुई पस लोग दरखत पर चढ़े और खोशे काट लिये और सब ने उनको शिकम सेर होकर खाया।

5. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से रिवायत है कि इमाम हसन ने फ़रमाया खुदा के दो शहर हैं एक मशरिक़ में है दूसरा मग़रिब में है। इन दोनों के गिर्द शहर पनाह है लोहे की। यानी बहुत मज़बूत और उन दोनों में हज़ार हज़ार दर हैं और उनमें सत्तर हज़ार ज़बानें बोलने वाले हैं हर ज़बान दूसरे के खिलाफ़ है और मैं जानता हूं इन सब ज़बानों को और जो कुछ इसके अन्दर है इन पर हुज्जते खुदा सिवाये मेरे और मेरे भाई हुसैन अलैहिस्सलाम के और कोई नहीं।

तौज़ीह

हदीसे बाला में जिन दो शहरों का ज़िक्र है अल्लामा मजलिसी मिरअतुल उकूल में इनके मुतअल्लिक़ तहरीर फरमाते हैं कि इनसे मुराद जाबलका और जाबलसा हैं जिन में से एक मशरिक़ में है और एक मग़रिब में है जाबलसा मग़रिब में एक शहर है जिसके बाद इंसानी आबादी नहीं और जाबलक़ा मशरिक़ में है जो सिफात इन दोनों शहरों की बयान की गई हैं वह कुदरते इलाही से बईद नहीं इनको सिवाये मअ़सूमीन

के कोई नहीं देखता वह मोअय्यिद मिनल्लाह हैं तमाम रूये ज़मीन के लिये। लेहाज़ा इनकी नफी ज़रूरी नहीं (अमरीका को दो सौ बरस पहले कोई नहीं जानता था क़रनों के बाद इसका पता चला इसी तरह हो सकता है कि यह शहर भी नज़रे खलायक से पोशीदा हों अमरीका का जिक्र न पहली किताबों में मिलता है और न जबानों पर तज़किरा था कोलम्बस ने इसका पता चलाया) लोहे की दीवारें होने से मुराद है दीवारों का मज़बूत होना जिन को तोड़ कर शहर में दाखिल होना मुमकिन न हो और कसरते लुगात से मुराद है मुख़तलिफ क़ौमों की आबादी जिनकी ज़बानें मुख़तलिफ हों और शारेअ़ अल मक़ासिद ने लिखा है के बअ़ज़ ओलमा ने बयान किया है कि महसूस और मअ़कूल दोनों आलमों के दरमियान एक वास्ता है जिसको आलमे मिसाल कहते हैं न तो इसमें तजर्रुदे मुजर्रेदात है और न मुखालेतए नादियात, इसमें तमाम मुजर्रेदात व अजसाम व अअ़राज़ व हरकात व सकनात, औजाअ़ व हैयत-और तअ़ूम व रवायह की मिसाल मौजूद है। जो कायम बिज़ातिही है मुअल्लक़ है लेकिन माद्दा में नहीं है और एक महल है जो किसी मज़हर के ज़रिये हुसन को ज़ाहिर करता है जैसे आईना–ए–खयाल, पानी और हवा और मुंतकिल होता है एक मज़हर से दूसरे मज़हर की तरफ और कभी यह मिसाली सूरतें बिगड़ जाती हैं जैसे आईना के खराब होने की सूरत हो जाती है मुख्तसर यह कि इल्म की मिसाल बहुत बड़ा आलम है जिसकी वुसअ़त ला महदूद है वह आलमे हिस्सी जैसा है अपने अफलाक की मिसालिया हरकात में अपने अनासिर को कुबूल करने में इसके मुरक्कबात में यानी आलमे हिस्स के अलावा एक आलमे मिसाली भी है जिसके अजायबात गैर मुतनाही हैं

और इसकी नुदरत का अहसा ना मुमकिन है पस इन्ही मिसाली शहरों में से जाबलका और जाबलसा भी हैं और इन्हीं को दो ऐसे शहर फ़रमाया है जिसके हज़ार दरवाज़े हैं और इसकी मखलूक बेशुमार है और यही वह आलम है जिसमें मलायका जिन, शयातीन रहते हैं क्योंकि यह अज़क़बील मिसाल हैं और अज़कबीले नफसे नातिका और इससे ज़ाहिर होते हैं मुजर्रदात मुखतलिफ सूरतों में और हुसन व कुबह और लताफ़त व कसाफत वगैरह हैं अपनी अपनी इसतेदाद व काबिलियत के मुताबिक और इसकी मआ़द भी, मआ़दे जिस्मानी की तरह होगी क्योंकि बदन मिसाली वह है जिस में नफ़्स तसर्रुफ करता है और इसका हुक्म बदने हिस्सी का सा हुक्म है क्यों कि इसके तमाम हवास जाहिरी व बातिनी लज़्ज़त पाते हैं और तकलीफ़ महसूस करते हैं। अजसामे माद्दिया की तरह। अल्लामा मजलिसी फरमाते हैं मेरे लिये यह सब खुराफात और ला यानी तकल्लुफात हैं। हकीकते अम्र को तो अल्लाह, उसका रसूल और अइम्मा ही जानते हैं लेकिन बज़ाहिर तरजीह उसी कौल की मअ़लूम होती है कि यह बसतियां जिन्न व शैतानों की हैं जो नजरे अवाम से पोशीदा हैं इन्हीं के बेशुमार रूप भी हैं और बेशुमार बोलियाँ भी।

6. इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि एक साल इमाम हसन ने पा पियादा हज किया। आपके पाओं मोतवर्रिम हो गये एक गुलाम ने कहा। अगर आप सवार हो जाते हैं तो इसके वरम को सुकून मिल जाता, फ़रमाया नहीं जब अगली मंज़िल आयेगी तो एक हबशी तुझे मिलेगा जिसके पास तेल होगा। वह इससे खरीद लेना और कीमत देने में ताखीर न करना। उस ने कहा वहां तो ऐसा दवा

फरोश नहीं देखा।

फ़रमाया हां इस मंज़िल के करीब वह तेरे सामने होगा पस एक मील आगे बढ़े थे कि हबशी को मौजूद पाया। इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने गुलाम से कहा। उसके पास जा और तेल खरीद ले और क़ीमत दे दे। हबशी ने कहा ऐ गुलाम इस तेल की किसको ज़रूरत है उस ने कहा हसन इब्ने अली को, उसने कहा मुझे उनके पास ले चल, वह ले आया। उसने कहा मुझे इसका इल्म न था कि आपको इसकी ज़रूरत है और आप ने उसको उसकी दवा जाना। मैं कीमत न लूंगा। मैं तो आपका गुलाम हूं चाहता हूं कि आप मेरे लिये दुआ करें कि खुदा मुझे एक लायक बेटा दे जो आप अहले बैत का दोस्त हो। मैंने अपनी अहलिया को दर्दे ज़िह की हालत में छोड़ा है फ़रमाया तू अपने घर जा। अल्लाह ने तुझे लायक़ बेटा दिया है जो हमारे शीयों में से होगा।



एक सौ चौदहवां बाब

ज़िक्र मोलिदे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम 3 हिजरी में पैदा हुये और शहीद हुऐ मुहर्रम 61 हिजरी में जब कि आपकी उम्र 57 साल थी और चन्द माह, आप अलैहिस्सलाम के कत्ल का बाएस हुवा उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद मलऊन जो वाली–ऐ–कूफ़ा था। यह वाक़िआ हकूमते यज़ीद मलऊन में हुवा और कत्ल किया उनको उमरे सअ़द ने करबला में दस मुहर्रम को, आप अलैहिस्सलाम की वालिदा फातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह थीं।

तौज़ीह

हज़रत की विलादत के बारे में इख़्तेलाफ़ है किसी ने माहे रबीउल अव्वल में लिखी है किसी ने रबीउल आख़िर में, शैख मुफ़ीद के इरशाद में पांचवीं शअ़बान 4 हिजरी तारीखे विलादत लिखी है लेकिन 3 शअ़बान पर ओलमा का ज्यादा इत्तेफाक़ है। वल्लाहु अअ़लम बिस्सवाब।

1. हजरत इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया वक्ते शहादत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की उम्र 57 साल थी।

2. फ़रमाया इमाम जाफर सादिक अलैहिस्सलाम ने इमाम हसन अलैहिस्सलाम और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के हमल में एक तुहर का फर्क़ था और उनकी विलादत में छ माह और कुछ दिन का।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का हमल क़रार पाया तो जिब्रईल रसूले खुदा स0 के पास आये और कहा कि अंकरीब फातिमा एक लड़के को पैदा करेंगी जिसको आपकी उम्मत कत्ल कर देगी। जब फातिमा हामिला हुईं तो रंजीदा हुईं और जब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पैदा हुये तो रंजीदा हुईं। हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने फ़रमाया कोई मां सिवाये फातिमा के अपने लड़के के पैदा होने पर रंजीदा न हुई होगी उनको यह मालूम हो गया था कि उनका यह बेटा कत्ल कर दिया जायेगा। इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के बारे में यह आयत नाज़िल हुई हम ने इंसान को वसीयत की अपने वालिदैन से एहसान के बारे में उनकी मां बहालते हमल भी रंजीदा रही और वज़अ़े हमल के वक़्त भी और उसके हमल और दूध बढ़ाई की

मुद्दत तीस महीने थी।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जिब्रईल अलैहिस्सलाम हज़रत रसूले खुदा पर नाज़िल हुये और फ़रमाया ऐ मोहम्मद स0 अल्लाह आप स0 को बशारत देता है एक मौलूद की जो बतने फ़ातिमा से होगा। आप स0 के बाद उसको आपकी उम्मत क़त्ल करेगी। फ़रमाया ऐ जिब्रईल मेरे रब को मेरा सलाम पहुंचाओ और कहो कि मुझे बतने फ़ातिमा से ऐसे मौलूद की ज़रूरत नहीं जिसको मेरे बाद मेरी उम्मत कत्ल करे। जिब्रईल ने परवाज़ की इसके बाद फिर आये और ऐसा ही कहा। फ़रमाया ऐ जिब्रईल मेरे रब से मेरा सलाम कहो और कहना मुझे ऐसे मौलूद की ज़रूरत नहीं जिब्रईल गये और वापस आकर कहा खुदा का आपको सलाम हो वह आप को बशारत देता है कि आप की ज़ुर्रियत में वह इमामते विलायत व वसायत को क़रार देगा। यह सुन कर हज़रत ने फ़रमाया मैं राज़ी हूं।

फिर आप स0 ने फ़ातिमा को कहला भेजा कि अल्लाह ने बशारत दी है मुझको ऐसे मौलूद की जो तुम्हारे बतन से पैदा होगा। और उसको मेरे बाद मेरी उम्मत क़त्ल करेगी। हज़रत फ़ातिमा ने कहला भेजा कि मुझे ऐसे मौलूद की ज़रूरत नही जिसे आपके बाद आप स0 की उम्मत कत्ल करे। हज़रत ने फ़रमाया खुदा ने उसकी ज़ुर्रियत में इमामत व वसायत व विलायत को क़रार दिया है तब हज़रते फ़ातिमा ने कहा मैं राज़ी हूं आयत पस वह बहालते हमल भी दिलगीर रहीं और बवक़्ते वज़अ हमल भी और हमल और दूध बढ़ाई की मुद्दत तीस माह थी जब वह पूरी कुव्वत वाले हुए और

चालीस साल की उम्र हुई तो कहा मेरे परवरदिगार मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी इस नेअ़मत का शुक्रिया अदा करूं जो तुने मुझे दी है। और मेरे वालिदैन को और यह कि मैं ऐसे अअ़माले सालेह बजा लाऊं कि तु मुझसे राज़ी रहे और मेरी जुर्रियत में भी यह सलाहियत दे। इमाम फ़रमाते हैं कि अगर हज़रत फी जुर्रियती न फ़रमाते और सिर्फ जुर्रियती फ़रमाते तो आपकी तमाम औलाद इमाम होती और चूंकि इमाम हर ज़माना में और हर वक़्त में एक ही होता है लेहाज़ा औलाद की यह कस्रत न हुई।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने न ही जनाब फ़ातिमा का दूध पिया और न किसी औरत का उनको आंहज़रत स0 के पास लाया जाता था आप अपना अंगूठा उनके मुंह में दे देते थे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम इससे इतनी ग़िज़ा हासिल कर लेते थे कि दो तीन दिन के लिये काफी हो जाती थी पस हुसैन अलैहिस्सलाम का गोश्त रसूल स0 के गोश्त से उगा हो और खून उनके खून से और छ माह का कोई बच्चा सिवाऐ हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम इब्ने मरयम और हुसैन अलैहिस्सलाम के पैदा होकर ज़िन्दा नहीं रहा। (यहिया का हमल भी छ माह का था)

और एक रवायत में है कि इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब हज़रत रसूले खुदा के पास इमाम हुसैन को लाया जाता तो आप अपनी ज़बान उनके मुंह मे दे देते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम इसको चूसते और यह चूसना ही काफ़ी हो जाता। इमाम हुसैन ने किसी औरत का दूध नहीं पिया।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने सूरए साफ़्फ़ात की उस आयत के मुतअल्लिक़ हज़रत इब्राहीम ने सितारों पर नज़र करके फ़रमाया मैं बीमार हूं (तुम्हारे साथ

ईदगाह नहीं जा सकता) फ़रमाया इमाम ने कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने सितारों की रफतार से उन मुसीबतों का जो इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पर आने वाली थीं पता चलाया और फ़रमाया मैं मसायबे हुसैन के पेशे नज़र होने की वजह से बीमार हो रहा हूं।

तौज़ीह

नुजूम के मुतअल्लिक़ सहीह इल्म हज़राते अंबिया अलैहिमुस्सलाम को मिंजानिब अल्लाह हासिल होता है इस इल्म में ग़लती का इम्कान नहीं इनके अलावा नुजूमियों के पास जो इल्म है उसमें ग़लती का इम्कान इस लिये ज़्यादा होता है अव्वल तो वह क़यास से काम लेते हैं दूसरे उनके हिसाब में भी ग़लती हो जाती है इसी लिये आम लोगों को इल्मे नुजूम हासिल करने की मुमानिअ़त की गई है जिसके मुतअल्लिक़ बहुत सी अहादीस अल्लामा मज्लिसी ने बिहारूल अनवार की किताबुस्समा वल आलम में नक़ल फ़रमाई हैं उस हदीस के मुतअल्लिक़ यह एतराज़ हो सकता है कि हज़ारहा बरस पहले वाक़िआ शहादत क्यों पेशे नज़र हुवा तो इसका जवाब यह है कि जब आम नुजूमी कई कई बरस आगे का हिसाब सितारों की रफ्तार से मालूम करके पेशीन गोइयां कर देते हैं अगर खलीले खुदा ने जो रफ़्तारे नुजूम से सहीह माने में जानने वाले थे शहादते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का पता चला लिया तो क्या तअज्जुब की बात है यूरप के मशहूर नुजूमी हेली ने पचास बरस पहले यह पता चला लिया था कि आसमान पर ख़त्ते इस्तेवा से हट कर एक नया सितारा नमूदार होने वाला है जिसके असरात यह होंगे चुनांचि उसकी पेशीन गोई पूरी हुई वह सितारा मअ़ अपने असरात

के उफुक़ पर नमूदार हुवा जो हेली स्टार कहलाता है।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जब शहादते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का वाक़िया पेश आया तो मलायका ने गिरया किया और खुदा की बारगाह में अर्ज की। तेरे बरगुज़ीदा बन्दे हुसैन अलैहिस्सलाम पर जो तेरे नबी का बेटा है यह जुल्म इस पर किया जा रहा है ख़ुदा ने कायमे आले मुहम्मद की झलक उन्हें दिखा कर कहा यह है वह जिसके जरिये से मैं इस ख़ूने नाहक़ का इंतेक़ाम लूंगा।

7. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के लिये मदद मा बैन आसमान व जमीन आई तो उनको एख़्तियार दिया गया। दरमियाने मदद और लिकाये इलाही के पस हज़रत ने लिक़ाऐ इलाही को एख़्तियार किया।

रावी कहता है कि जब इमाम हुसैन स0 शहीद कर दिये गये तो उस कौमे जफ़ा कार ने हज़रत की लाशे मुबारक को पामाले सुमे अस्पां करना चाहा। जनाबे फ़िज़्ज़ा ने जनाब ज़ैनब से कहा। ऐ मेरी शहज़ादी मैंने सुना है कि जब सफीना गुलामे रसूल स0 की कशती टूट गई तो वह एक जज़ीरे में पहुंचा नागाह एक शेर सामने आया। उसने कहा ऐ अबू हारिस मैं गुलामे रसूल स0 हूं शेर ने आहिस्ता आवाज़ की यहां तक कि सफीना एक रास्ते पर खड़ा होगया और शेर एक तरफ चला गया और सो गया। फिज़्ज़ा ने जनाब जैनब से कहा इजाज़त दीजिये कि मैं उसे पुकार कर बताऊं कि वह कल क्या करने वाले हैं रावी कहता है फिज़्ज़ा ने ख़ैमे से निकल कर मैदान का रूख किया और आवज़ दी। ऐ अबुलहारिस, शेर निकला। फिज़्ज़ा ने ख़ैमे से कहा। क्या तू जानता है कि कल यह गिरोह क्या इरादा रखता है यह अबू

अब्दिल्लाहिल–हुसैन की लाश को पामाल करना चाहते हैं उस ने यह सुन कर मक़तल की तरफ रूख किया और अपना एक हाथ लाशे हुसैन पर रख दिया जब सवार पामाली के लिये बढ़े और उन्हों ने शेर को देखा तो उमरे सअद लअनतुल्लाहे अलैह ने कहा कि यह एक फितना है इसके पास न जाओ और लौट आओ तो वह लौट गये।

8. रावी कहता है कि बादे शहादते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम आप की बीवी (रबाब) जो बनी कल्ब से थीं मसरूफे मातम हुई वह और दूसरी बीवियाँ और कनीज़ें इतना रोईं कि आंखों के आंसू खुश्क हो गये और रोना बाकी न रहा। एक कनीज़ को देखा कि उसके आंसू जारी हैं उसको हिलाकर कहा कि यह क्या बात है कि तेरे आंसू जारी हैं उसने कहा जब मुझे ज़्यादा थकन महसूस हुई तो मैंने सत्तू का शरबत पी लिया। इमाम ने फ़रमाया कि इन बीबी को हुक्म दिया खाना खाने का और सत्तू पीने का। तो सब ने सेर होकर खाया पिया। फ़रमाया यह मैंने इस लिये किया है ताकि बदन में हुसैन अलैहिस्सलाम पर गिरया करने की कुव्वत रहे हज़रत ने फ़रमाया किसी ने उन बीबी के पास चन्द ताएर भेजे पूछा यह कैसे हैं किसी ने कहा यह फुलां शख्स ने तोहफा भेजा है ताकि उन्हें खाकर जिस्म में जान आये और हुसैन अलैहिस्सलाम पर गिरया करने में मदद मिले। उन्होंने कहा मेरे घर शादी नहीं है कि तोहफे आयें इनका क्या करूं फिर हुक्म दिया कि इनको छोड़ दो। वह परिन्दे घर से निकल गये और फिर किसी को पता नहीं चला कि वह मा बैन आसमान व ज़मीन कहां ग़ायब हो गये घर में भी उनका कोई असर बाक़ी न रहा।



एक सौ पन्द्रहवां बाब

ज़िक्र विलादते अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम

हज़रत अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम 38 ई0 में पैदा हुये आप की वफात 95 हिजरी में बउम्र 57 साल हुई उनकी वालिदा का नाम सलामा (ज़्यादा मशहूर शहर बानो है मुमकिन है कि यह नाम इस्लामी हो) बिन्ते यज़्दजर्द बिन शहर यार बिन शेरूयह बिन किसरा था और यज़्दजर्द ईरान का आखिरी बादशाह था।

1. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बिन्ते यज़्दजर्द हज़रत उमर के पास आयीं तो मदीने की बाकेरा लड़कियां उनका हुस्न व जमाल देखने बालाये बाम आई और जब मस्जिद में दाख़िल हुई तो चेह की ताबन्दगी से मस्जिद रोशन हो गई। उमर ने जब उनकी तरफ देखा तो उन्हों ने अपना चेहरा छुपा लिया और कहा बुरा हो हुरमुज़ का उसकी सूऐ तदबीर से यह रोज़ बद नसीब हुवा। हज़रत उमर ने कहा क्या तू मुझे गाली देती है (कि मेरे देखने को रोज़े बद कहा) और उनकी अज़ीयत का इरादा किया। अमीरूल मोमिनीन ने कहा ऐसा नहीं है। इसको एख़तियार दो कि वह मुसलमानों में से किसी को अपने लिये एख़तियार करे। उसके हिस्सए ग़नीमत में इसको समझ लिया जाये जब एख़तियार दिया गया तो वह लोगों को देखती हुई चलीं और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के सर पर अपना हाथ रख दिया। अमीरूल मोमिनीन ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है कहा जहां शाह। हज़रत ने फ़रमाया नहीं बल्कि शहर बानो। फिर इमाम

हुसैन अलैहिस्सलाम से फ़रमाया। ऐ अबू अब्दिल्लाह तुम्हारा एक बेटा इसके बत्न से पैदा होगा जो अहले ज़मीन में सब से बेहतर होगा। चुनांचे अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम पैदा हुए पस वह बेहतरीन अरब हाशमी होने की वजह से और बेहतरी अजम थे इरानी होने की वजह से। अबुल असवद दोएली ने कहा। वह ऐसे लड़के हैं जिनका तअल्लुक़ किसरा और हाशिम दोनों से है जिन बच्चों के गले में तावीज़ डाले जाते हैं उनमें वह सबसे बेहतर हैं।

2. रावी कहता है कि अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ इमाम मेहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने बयान किया कि उनका एक नाक़ा था जिस पर आप ने बाईस हज किये थे और कभी उसको भूल कर कोड़ा ने मारा था। हज़रत की मौत के बाद हमें इसका पता न चला कि कहां चला गया। एक नौकर ने ख़बर दी कि नाक़ा घर से निकल कर अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम की क़ब्र पर पहुंचा और दोना घुठने क़ब्र पर रख कर अपनी गर्दन क़ब्र पर मलने लगा और वह दर्दनाक आवाज़े निकाल रहा था। मैंने नौकरों से कहा जाओ उसको मेरे पास ले आओ क़ब्ल इसके कि मुखालिफों को इसकी इत्तेला हो या वह इसको देख लें यह भी फ़रमाया कि उसने क़ब्र को इससे पहले नही देखा।

3. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जब मेरे वालिद अली इब्ने हुसैन ने इंतक़ाल फ़रमाया तो उनका नाक़ा चरागाह से आया और अपनी गर्दन क़ब्र पर रख दी और देर तक उसे क़ब्र पर रगड़ता रहा। मैंने हुक्म दिया कि उसे चरागाह वापस ले जाओ और मेरे वालिद इसी पर सवार होकर हज व उमरा बजा लाते थे और उसको आप ने

कभी कोड़ा नहीं मारा। यह हदीस अल–सदूक़ इब्ने बाब्वैह ने भी नकल की है।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जब वह रात आई जिसमें इमाम जैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम का इंतकाल होने वाला था तो आप ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से फ़रमाया। बेटा मैं वज़ू करना चाहता हूं। इमाम ने फ़रमाया मैं वज़ू के लिये पानी लाया। फ़रमाया यह दरकार नहीं इसमें कोई शै मुर्दा है मैं चिराग़ लाया तो देखा कि ज़र्फ़ में एक मुर्दा चूहा है मैंने और पानी लाकर दिया। हज़रत ने फ़रमाया। बेटा यह मेरे इंतक़ाल की रात है इसके बाद अपने नाक़ा के मुतअल्लिक़ वसीयत की कि इसे अच्छी तरह रखना और इसके खाने का लेहाज़ रहे मैंने नाक़े को एक इहाते के अन्दर कर दिया। जब हज़रत का इंतक़ाल होगया तो बहुत जल्द एहाता से निकल गया और कब्र पर पहुंच कर अपनी गर्दन इस पर रख दी और गिड़ गिड़ाया। उसकी आंखों में आंसू थे इमाम मोहम्मद बाक़िर को खबर दी गई कि नाक़ा कहीं चला गया आप उसके पास आये और फ़रमाया सब्र कर अल्लाह तुझे जज़ा दे। फिर उसने ऐसा न किया।

फ़रमाया जब हज़रत मक्के जाते थे तो कोड़ा सवारी पर रख लेते थे लेकिन मदीना की वापसी तक नाक़ा को कोड़े से मारते न थे और इमाम ने यह भी फ़रमाया कि हज़रत अली इब्ने हुसैन अंधेरी रातों में एक थैला लेकर निकलते थे जिसमें दिरहम व दीनार होते एक एक दरवाज़े पर जाते उसे खट खटाते जो आता उसे अता फरमाते। जब हज़रत का इंतक़ाल हुंवा तब लोगों को पता चला कि वह रातों को आने वाले अली इब्ने हुसैन थे।

5. फ़रमाया इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने मैंने सुना है कि जब हज़रत अली इब्ने हुसैन के मरने का वक़्त आया तो आप पर बेहोशी तारी हुई फिर जब ग़श से इफ़ाक़ा हुवा तो आपने सूरह वाकेआ और सूरह इन्ना फतहना की तिलावत की और फ़रमाया हम्द है उस खुदा की जिसने अपने वादे को हमारे साथ पूरा किया और हमो रूऐ ज़मीन का वारिस बनाया और जहां हमने चाहा जन्नत में जगह दी इसके बाद ही हज़रत की रूह क़ब्ज़ होगई और फिर कुछ कह न सके।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम का इंतेक़ाल 57 साल की उम्र में हुवा। 95 हिजरी में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के बाद 35 साल ज़िन्दा रहे।



एक सौ सोलहवां बाब

ज़िक्रे विलादते इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम

इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम 57 हिजरी में पैदा हुऐ और वफात 114 हिजरी में 57 साल की उम्र में और मदीने में जन्नतुल बक़ी के अन्दर उस जगह के पास जहां आपके बाप अली इब्ने हुसैन थे दफन हुए उनकी वालिदा उम्मे अब्दुल्लाह बिन्ते इमाम हसन इब्ने अली इब्ने अबी तालिब थीं उन सब पर सलाम और उनकी ज़ुर्रियत पर भी।

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि मेरी वालिदा दीवार के नीचे बैठी थीं कि नागाह दीवार शक़ हुई उसकी आवाज़ हम ने सुनी उन्होंने अपने हाथ से इशारा

करके कहा कसम है हक़्के मोहम्मद मुस्तफ़ा स0 की नहीं इजाज़त दी तुझे अल्लाह ने गिरने की पस वह फ़ज़ा में मुअल्लक़ हो कर रह गई यहां तक कि आप वहां से हट गयीं। मेरे वालिद ने एक सौ दीनार उनके बच जाने पर तसद्दुक़ किये और अबू सबाह से मरवी है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि उनकी दादी (उनके बाप की मां) सिद्दीक़ा थीं औलादे इमाम हसन अलैहिस्सलाम में और कोई औरत उनकी मिस्ल नहीं हुई मोहम्मद इब्ने हसन ने अब्दुल्लाह इब्ने अहमद से इसी तरह रिवायत की है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जाबिर अंसारी रजि0 असहाबे रसूल स0 में सबसे आख़री थे सिवाए हम अहलेबैत के सबसे कतअ़ तअल्लुक किये हुये थे मस्जिदे रसूल में बैठे रहते थे बे तहतुल्हनक का सियाह अमामा बांधे हुऐ और बार बार कहते थे। या बाक़िरूल इल्म या बाक़िरूल उलूम (ऐ इल्म के शिगाफ़ करनें वाले) अहले मदीना यह सुनकर कहते थे जाबिर दीवानें होगये हैं। बकवास किया करते हैं। वह कहते थे खुदा की कसम मैं बकवास नहीं करता।

बल्कि मैंने रसूलुल्लाह को कहते सुना है कि ऐ जाबिर तुम एक शख़्स से मुलाक़ात करोगे। जिसका नाम मेरा नाम होगा जिसके खसाएल मेरे खसाएल होंगे वह इल्म के सर चश्मों को शिगाफ़्ता करेगा। यह है वह बात जिस ने मुझे मजबूर किया है। इन अल्फाज़ के कहने पर। एक दिन जाबिर मदीने की एक राह से गुज़रे जहां एक मकतब थी और इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम उसमें बैठे थे जाबिर ने उनको देखा तो कहने लगे ऐ लड़के ज़रा आगे आना वह आगये फिर कहा ज़रा पीछे फिरना फिर वह पलटे जाबिर ने

कहा वल्लाह यह तो रसूलुल्लाह स0 ही के से शमाएल हैं ऐ लड़के तुम्हारा नाम क्या है फ़रमाया मेरा नाम है मोहम्मद इब्ने अली इब्ने हुसैन यह सुन कर जाबिर ने सरे इमाम पर बोसा दिया और कहने लगे मेरे मां बाप आप पर फिदा हैं। आप अलैहिस्सलाम के बाप रसूलुल्लाह स0 ने आपको सलाम कहा है और ऐसा ऐसा कहा है यह सुन कर इमाम मोहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम अपने घर आये। दर हालांकि इज़्तेराब लाहिक़ था और यह वाक़िया अपने वालिदे माजिद को सुनाया। उन्हों ने फ़रमाया बेटा क्या जाबिर ने ऐसा कहा है। फ़रमाया हां ऐ फरज़न्द अपने घर में रहा करो। जाबिर आप के पास बराबर सुब्ह व शाम आया करते थे। अहले मदीना कहा करते थे किस कदर तअ़ज्जुब की बात है कि जाबिर इतने बुजुर्ग और आखिरी सहाबीये रसूल स0 हो कर इस लड़के के पास आते हैं कुछ दिन बाद जब हज़रत अली इब्ने हुसैन का इंतेकाल हो गया तो इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम उस अज़मत की बिना पर जो जाबिर को बिना बर सुहबते रसूल हासिल थी जाबिर के पास आने लगे एक रोज़ आप जाबिर के पास बैठे हुए खुदा के बारे में कुछ बयान फरमा रहे थे कि अहले मदीना कहने लगे कि हम ने उस शख्स से ज़्यादा जरी नहीं देखा कि बे वास्ता हदीसे रसूल बयान कर रहा है जब हजरत ने सुना तो यह फ़रमाया रसूलुल्लाह स0 ने ऐसा फ़रमाया है उन्हों ने कहा कितना झूठा है यह शख्स कि रसूल स0 को देखा नहीं था और बिला वास्ता उनसे हदीस बयान करता है जब यह सुना तो आप ने जाबिर के हवाले से बयान किया तब उन्हों ने तसदीक़ की जाबिर हज़रत के पास आते थे और तहसीले इल्म करते थे।

3. अबू बसीर से मरवी है कि मैं इमाम मोहम्मद बाक़िर

अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुवा और अर्ज़ किया आप वारिसे रसूलुल्लाह हैं? फ़रमाया हां, मैंने कहा रसूलुल्लाह वारिसे अंबिया थे और वह सब जानते थे। फ़रमाया हां मैंने कहा क्या आप इस पर कादिर हैं कि मुर्दों को ज़िन्दा करदें और अंधों और मबरूसों को अच्छा करदें फ़रमाया हां अल्लाह के इज्न से। ऐ अबू मोहम्मद (कुन्नियत अबू बसीर) तुम मेरे करीब आओ, जब मैं क़रीब हुआ तो हज़रत ने मेरे चेहरे और मेरी आंखों पर अपना हाथ फेरा। मैंने सूरज आसमान व ज़मीन, मकानात और शहर की हर चीज़ को देखा। हज़रत ने फ़रमाया क्या तुम यह चाहते हो कि ऐसे ही रहो। और रोज़े कयामत तुम्हारे लिये भी वही सूरत हो जो आम लोगों के लिये नफा व नुक़सान की होगी या यह कि अपनी पहली हालत की तरफ लौट जाओ और जन्नत तुम्हारे लिये मखसूस हो जाये मैंने कहा मैं अपनी पहली ही हालत की तरफ लौटना चाहता हूं हज़रत में मेरी आंखों पर हाथ फेरा और मैं जैसा था वैसा ही होगया। मैंने यह वाक़िया इब्ने अबी उमैर से बयान किया उन्हों ने कहा मैं गवाही देता हूं कि यह अम्र इसी तरह हक़ है जैसे दिन का वुजूद हक़ है।

4. रावी मोहम्मद इब्ने मुस्लिम कहते हैं कि मैं एक दिन इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर था कि कुमरियों का एक जोड़ा दीवार पर आकर बैठा और दोनों ने गुफ्तगू की, इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम कुछ उनकी बातों का जवाब देते रहे वह उठे और दीवार पर फिर बैठे और नर ने मादा से कुछ कहा। मैंने कहा मैं आप पर फिदा हूं उन तायरों का क्या मुआमला है फ़रमाया ए इब्ने मुस्लिम हर वह चीज़ जो खुदा ने पैदा की हैं परिन्दे हों या

चौपाए या हर वह चीज़ जिसमें जान है वह हमारी बात के ज़्यादा सुन्ने वाले और बनी आदम से ज़्यादा इताअ़त करने वाले हैं।

इस नर कुमरी ने बदगुमानी की अपनी मादा के मुतअल्लिक़ (कि वह किसी दूसरे से जुफ़्त हुई है) उसने हलफ से कहा कि ऐसा नहीं किया और वह दोनों इस पर राज़ी हुए कि मोहम्मद इब्ने अली से फ़ैसला कराया जाये। वह मेरे पास आए मैंने दोनों को बताया कि नर ने मादा पर ज़ुल्म किया है पस नर ने इसकी तसदीक़ की कि मादा का बयान सहीह है।

5. अबू बकर खज़रमी से रिवायत है कि जब इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने शाम में बुलाया और आप अलैहिस्सलाम उसके महल के दरवाज़े पर पहुंचे तो उस ने अपने असहाब और हाज़िरीन से कहा जो बनी उमैय्या में से थे जब मैं मोहम्मद इब्ने अली से सरज़निश कर चुकूं तो तुम में से हर एक आगे बढ़ कर सरज़निश करे फिर हुक्म दिया कि उनको अन्दर आने की इजाज़त दो, जब हज़रत आये तो अपने हाथ उठा कर फ़रमाया अस्सलामु अलैकुम इस सलाम में उन सब को शरीक किया और आप अलैहिस्सलाम एक जगह बैठ गये। हिशाम को इस पर गुस्सा आया कि उसको शायाने सल्तनत सलाम क्यों न कियां दूसरे बे इजाज़त क्यों बैठ गये उस ने सरज़निश करते हुए कहा ए मोहम्मद इब्ने अली तुम में से एक शख़्स हमेशा ऐसा रहता है जो मुसलमानों में तफ़रेक़ा डाले। वह अपनी तरफ लोगों को बुलाता है और अज़रूये हिमाक़त यह गुमान करता है कि वह इमाम है बा वजूदे

किल्लते इल्म के। फिर जितनी सरज़निश करना चाहता था कि जब वह चुप हुवा तो दरबारियों में से एक एक आगे बढ़ा ता आंकि यह दौर आखिर तक पहुंच गया जब यह लोग ख़ामोश हुए तो इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। लोगो! तुम कहां बहके जा रहे हो और क्या इरादा रखते हो। तुम में से पहलों की हिदायत भी हम से मुतअल्लिक़ थी और तुम्हारे आखिर वालों की हिदायत भी हम पर ही खत्म होगी अगर तुम्हारी हुकूमत इस दुनिया में है तो हमारी आखिरत में होगी। जिसके बाद कोई हकूमत नहीं होगी। हम ही तो हैं जिनके मुतअल्लिक़ खुदा फरमाता है अच्छा अंजाम मुत्तकियों के लिएं है।

उसने हज़रत को क़ैद करने के लिये हुक्म दिया जब आप कैद खाने पहुंचे तो वहां के क़ैदियों में कोई ऐसा न रहा जिस ने आप से इल्म हासिल न किया हो और आप की तरफ दिल माएल न हुआ हो यह हाल देखकर ज़िन्दान बान हिशाम के पास आया और कहा मैं डरता हूं कि अहले शाम के दिल आप की तरफ से न फिर जायें और जिस मसनदे हकूमत पर बैठे हो उससे अलग न कर दिये जाओ। फिर सारा हाल बयान किया। हिशाम ने हुक्म दिया कि हज़रत को मअ़ उनके साथियों के मदीना ऐसे रास्तों से ले जायें जिनके करीब आबादी न हो और हुक्म दिया कि बाज़ारों को उन पर बन्द रखा जाये और खाने पीने से उनको बाज़ रखा जाये। राह में तीन दिन गुज़र गये उन्हें खाना और पानी मुयस्सर न हुआ जब शहरे मदाएन पहुंचे तो अहले शहर ने दरवाज़े बन्द कर लिये आपके साथियों ने भूख और प्यास की शिकायत की। आप एक पहाड़ पर तशरीफ ले गये ताकि वह लोग आपको देखें। निहायत बुलन्द आवाज़ से आपने फ़रमाया। ऐ

इस शहर के रहने वालो जिसके बाशिन्दे ज़ालिम हैं, मैं बक़ीय्यतुल्लाह हूं खुदा फरमाता है अगर तुम मोमिन हो तो बक़ीय्यतुल्लाह तुम्हारे लिये बेहतर है एक बूढ़े आदमी ने यह कलेमात सुने, वह लोगों के पास आकर कहने लगा। ऐ क़ौम वल्लाह शुऐब नबी ने भी इसी तरह लोगों को बुलाया था अगर तुमने इस शख़्स के लिये बाज़ार न खोले तो खुदाई अज़ाब तुम्हें ऊपर से और नीचे से घेर लेगा अगर इस मबर्ता मेरी तसदीक करो और मेरी इताअ़त करो और जो कुछ होने वाला है (अगर बता दूं) तो तुम मुझे झूठा समझोगे मैं तुमको नसीहत कर रहा हूं यह सुन कर वह बहुत जल्द शहर से निकले और खाने पीने का सामान हज़रत और उनके साथियों के पास लाये जब हेशाम को यह ख़बर मिली तो उसने उसको अपने पास बुलाया फिर पता न चला कि उसने उसके साथ क्या किया।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम की वफात 57 साल की उम्र में हुई और हज़रत अली इब्ने हुसैन अलैहिस्सलाम के बाद वह 19 साल दो माह ज़िन्दा रहे।



एक सौ सतरहवां बाब

ज़िक्र विलादते अबू अब्दिल्लाह जाफ़र बिन मोहम्मद अलैहिस्सलाम

इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम 83 हिजरी में पैदा हुए और शव्वाल 184 हिजरी में ब उम्र 65 साल इंतक़ाल

फ़रमाया और बक़ीअ के अन्दर उस ज़मीन में दफन हुए जहां उनके बाप दादा और इमाम हसन की कब्रें हैं। उनकी वालिदा उम्मे फरवा थीं उम्मे फरवा की वालिदा असमा बिन्ते अब्दुर रहमान बिन अबू बक्र थीं।

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि हज़रत अली इब्ने हुसैन के नज़दीक सईद इब्ने मुसय्यब बिन क़ासिम बिन मोहम्मद बिन अबू बकर और अबू खालिद काबुली मोतमद लोगों में से थे और फ़रमाया मेरी वालिदा ईमान लाईं विलायते अहले बैत पर और अज़ाबे खुदा से डरती थीं और उनका ईमान मुस्तहकम था और अल्लाह मुस्तहकम ईमान वालों को दोस्त रखता है और फ़रमाया कि मेरी वालिदा ने बयान किया कि मेरे वालिद ने उन से कहा। ए उम्मे फरवा मैं गुनहगार हूं शीयों के लिए अपने अल्लाह से हर रोज़ व शब में एक हज़ार बार दुआ करता हूं हम अइम्मा हैं। मुखालिफों के हाथ जो मुसीबत हम पर आती हैं हम बरदाश्त करते हैं क्यों कि हम इसका सवाब जानते हैं और वह लोग भी सब्र करते हैं बा वजूदे कि वह नहीं जानते।

रावी कहता है कि मंसूर ने हसन बिन ज़ैद बिन हसन बिन अबी तालिब को जो मंसूर की तरफ से हाकिमे हरमैन थे यह हुक्म भेजा कि वह जाफ़र इब्ने मोहम्मद अलैहिमुस्सलाम के घर को जबकि वह उसके अन्दर हों जला दें। हसन ने आप अलैहिस्सलाम के दरवाज़े और दहलीज़ में आग डाल दी हज़रत इस में से निकले चले आये और फ़रमाया मैं इब्राहीम खलीलुल्लाह का पोता हूं।

3. रफ़ीद गुलाम यज़ीद बिन उमर बिन हुबेरा ने बयान किया कि इब्ने हुबैरा को मुझ पर गुस्सा आया और उसने मेरे

कत्ल करने की कसम खाई। मैं भाग कर इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की पनाह में आया और हाल बयान किया। फ़रमाया वापस जा और मेरा सलाम कहना कि मैंने तेरे गुलाम रुफैद को पनाह दी है। लेहाज़ा अब उसके साथ बुरा सुलूक न करना। मैंने कहा कि वह मर्दे शामी बद राए है। फ़रमाया तू जा और जो कुछ मैंने कहा है उसे बयान कर, मैं चला, एक बादिया से गुज़र रहा था कि एक सहराइ अरब मुझे मिला और कहा कहां जाता है। मैं तेरा चेहरा मक़्तूलों का सा पा रहा हूं। फिर कहा पैर दिखा, मैंने दिखाया। उसने कहा यह तो मक़्तूलों का सा पैर है फिर जिस्म के लिये भी यही कहा। फिर कहा ज़बान दिखा, मैंने दिखाई। उसने कहा जा अब तेरे लिये ख़ौफ़ नहीं इस पर एक ऐसा पैग़ाम है कि अगर तू मज़बूत पहाड़ों को पहुंचा दे तो वह भी तेरे मुतीअ़ हो जायें। उस ने कहा जब मैं हुबैरा के दरवाज़े पर पहुंचा तो इजाज़त चाही। जब अन्दर गया उसने कहा चोर खुद अपने पैरों से आ गया है ऐ गुलाम चमड़ा बिछा और तलवार ला फिर उसने मेरे हाथ पसे गर्दन से बांधने का हुक्म दिया और लोगों को मेरे पास से हट जाने को कहा जल्लाद कत्ल करने के लिये खड़ा हुवा। मैंने कहा ऐ अमीर जल्दी न कर। अब मैं तेरे कब्ज़े में हूं मैं एक खास बात तुझसे बयान करना चाहता हूं उसने कहा बयान कर, मैंने कहा ख़िलवत में कहूंगा उसने सब को हटा दिया। मैंने कहा हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने बाद सलाम फ़रमाया है कि मैंने तेरे गुलाम रुफ़ैद को पनाह दी है अब इसको सज़ा न देना। उसने कहा अल्लाहु अकबर क्या इमाम ने ऐसा ही फ़रमाया है मुझे सलाम कहला कर भेजा है मैंने क़सम खाई। उसने

तीन बार ऐसा ही कहलवाया। फिर उसने मेरे हाथ खोल दिये और कहा मुझे चैन न आयेगा। जब तक तू भी इसी तरह मेरे हाथ न बांधे। मैंने कहा न मेरे हाथ में इतनी ताक़त है न मेरा नफ्स इस पर राज़ी है उसने कहा यह करनर होगा। चुनांचे मैंने किया। फिर उसे खोल दिया। उसने अपनी अंगूठी देकर कहा अब मेरे तमाम मुआमलात तेरे हाथ मे हैं जो चाहे कर।

4. रावियों ने कहा कि हम इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर थे। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरे पास खज़ायने ज़मीन हैं और उनकी कुंजियां हैं अगर ज़मीन पर अपना पैर मार कर कहूं कि जो सोना तेरे अन्दर है उसे निकाल तो वह निकाल देगी। फिर आप ने पैर से ज़मीन पर खत दिया। ज़मीन वहां से शक़ हो गई। फिर अपने हाथ से सोने की ईंट जो अन्दाज़न एक बालिशत थी निकाली और फ़रमाया तुम लोग अच्छी तरह देखो हमने देखा तो बहुत सारी ईंटें एक दूसरे पर रखी चमक रहीं थीं हम में से एक ने कहा। आप अलैहिस्सलाम को जो कुछ दिया गया है उस में से अपने मुहताज शियों को भी दीजिये। फ़रमाया हमारे शियों के लिये दुनिया व आख़िरत दोनों में हिस्सा है खुदा हमारे शियों को जन्नत में दाख़िल करेगा और दुशमनों को जहन्नम में।

तौज़ीह

दुनिया व आख़िरत में हमारे शियों का हिस्सा है इससे मुराद इमाम की यह है कि जब कायमे आले मोहम्मद ज़ुहूर फ़रमायेंगे तो उस वक़्त उनके लिये दौलत की फ़रावानी होगी। और कबले ज़ुहूर जो उनको तकलीफ़ पहुंची होगी उनके बदले में खुदा उनको जन्नत देगा।

5. अबू बसीर से मरवी है कि हमारा हमसाया सरकारी मुलाज़िम था उसने बहुत सी दौलत हासिल की और गाने वालियां फराहम कीं उन सब को जमा करके गाना कराता था और शराब पीता था। मुझे सख्त अज़ीयत होती थी। मैंने कई बार शिकायत की मगर वह बाज़ न रहा। जब मैंने ज़्यादा इसरार किया तो उसने कहा मैं फिस्क़ व फुजूर में मुबतला हूं और आप इससे बरी हैं। अगर आप मेरा मुआमला खिदमते इमाम में पेश कर दें तो मुझे उम्मीद है कि अल्लाह मुझे इस बला से नजात देगा। मेरे दिल में यही आया है जब मैं खिदमते इमाम में आया तो उसका हाल बयान किया। फ़रमाया जब तुम कूफ़ा जाओ और वह तुम्हारे पास आये तो कहना। जाफ़र बिन मोहम्मद ने कहा है कि यह सब छोड़ दो मैं तुम्हारे लिये जन्नत का ज़ामिन हूं। जब में कूफा पहुंचा तो आने वालों के साथ वह भी आया। मैंने उसे रोके रखा जब ख़िलवत हुई तो मैंने कहा।

ऐ शख़्स मैंने तेरा ज़िक्र इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कर दिया था उन्हों ने फ़रमाया जब कूफा जाओ और वह आये तो कहना कि जाफ़र बिन मोहम्मद अलैहिस्सलाम ने कहा है कि यह सब छोड़ दे मैं तेरे लिए जन्नत का ज़ामिन हूं, यह सुन कर वह रो दिया। फिर मुझसे कहा अल्लाह अल्लाह हज़रत ने तुम से ऐसा कहा है मैंने क़सम खाकर कहा बेशक यही फ़रमाया है उसने कहा तुम्हारा यह कहना काफी है इसके बाद वह चला गया चन्द रोज़ के बाद उसने मुझे बुलाया, मैं गया देखा कि वह अपने घर में बरहना हैं मुझसे कहा ऐ अबू बसीर वल्लाह मेरे घर में जो चीज़ भी थी। मैंने सब निकाल दी है अब मेरा जो हाल है वह तुम देख रहे हो। मैं अपने रिश्तेदारों के पास गया और उसको पहनाने के

लिए कुछ कपड़े लिये फिर कई दिन मैं उसके पास न गया उसने मुझे बुला भेजा कि मैं अलील हूं, मैं गया और बराबर जाता रहा और उसका इलाज कराता रहा यहां तक कि मौत का वक़्त क़रीब आ गया। मैं उसके पास बैठा था और उस पर निज़ाअी कैफ़ियत तारी थी ज़रा इफाक़ा हुवा तो उसने कहां ऐ अबू बसीर आप के इमाम ने जो हम से वादा किया था पूरा कर दिया इसके बाद वह मर गया अल्लाह की उस पर रहमत हो। जब मैं हज को गया तो इमाम अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर हुवा। इज़्ने दुखूल चाहा जब मैं दाखिल होने लगा तो अभी एक पैर दरवाज़े में था और दूसरा दहलीज़ में कि हज़रत ने खुद ही फ़रमाया ऐ अबू बसीर! हम ने तुम्हारे दोस्त के साथ जो वादा किया था वह पूरा कर दिया।

6. जाफ़र बिन मोहम्मद बिन अशअस का बयान है कि आया तुम जानते हो कि क्या सबब है इसका कि हमने अम्रे इमामते अहले बैत को तसलीम किया और हमने इमामते जाफ़र सादिक़ की मारिफ़त हासिल की। हालांकि हम न कभी इसका ज़िक्र करते थे और न उसकी मारिफ़त से हमारा कोई तअल्लुक था (क्योंकि उसका बाप मोहम्मद अशअस क़ातिलाने हुसैन अलैहिस्सलाम से था।) सफवान रावी कहता है मैंने कहा यह क्या वाक़िआ है? उस ने कहा मंसूर दवानिक़ी ने मेरे बाप मोहम्मद अशअस से कहा ऐ मोहम्मद मुझे एक ऐसा शख़्स दरकार है जो साहिबे अक़्ल हो और एक काम मेरी तरफ़ से कर सके।

मेरे बाप ने कहा – फुलाल इब्ने मुहाजिर अपने मामू को इस काम का अहल पाता हूं उसने कहा तो उसे ले आओ। मैं अपने मामू को ले आया। मंसूर ने कहा ऐ इब्ने

मुहाजिर ये माल ले कर मदीना जा और अब्दुल्लाह बिन हसन (मुसन्ना) बिन हसन अलैहिस्सलाम और उनके खानदान वालों से जिन में जाफ़र बिन मुहम्मद भी शामिल हों मिल और उन से कहो, मैं मर्दे मुसाफ़िर हूं। खुरासान का रहने वाला हूं, वहां के शियों ने यह माल आप लोगों के पास भेजा है ये कहकर ये माल उन शरायत के साथ उनमें से हर एक को दे देना। जब माल ले लें तो कहना कि मैं एक क़ासिद हूं कि जो कुछ आपने लिया है उसकी रसीद भी आप दे दें। ये बातें सुनकर उसने माल लिया और मदीना पहुंचा, वापस आया तो मुहम्मद अशअ़स भी उसके पास था। मंसूर ने कहा कहो क्या हुआ उसने कहा मैं उन लोग़ों से मिला। ये उनकी रसीदें हैं सिवाये जाफ़र इब्ने मुहम्मद के जब मैं उनके पास पहुंचा तो वह मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहे थे मैं उनके पीछे बैठ गया ताकि नमाज़ के बाद उनसे वही कहूं जो उनके खानदान वालों से कहा था। हज़रत ने नमाज़ थोड़ी देर बाद ख़त्म की और मेरी तरफ़ मुड़कर फ़रमाया। ऐ शख़्स अल्लाह से डर और हम अहले बैत को धोका न दे बनी मरवान का दौरे हुकूमत भी ख़त्म हुआ है (उनकी फ़रेबकारियां भी ऐसी ही थीं, उन्होंने हमारे खानदान को तबाह कर दिया) अब वह मोहताजे माल हैं (लेकिन खुरूज का इरादा नहीं रखते) फिर वह मेरे क़रीब हुए और वह सब बातें बयान कर दीं जो मेरे और तेरे दर्मियान हुई थीं गोया वह हम में तीसरे थे। मन्सूर ने कहा अहले बैत में एक मुहद्दिस (जो फ़रिश्तो की आवाज़ सुने) होता आया है। बेशक जाफ़र बिन मुहम्मद मुहद्दिस हैं ये सबब है मेरी उस गुफ़्तगू का।

7. अबू बसीर रावी है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की उम्र बवक्ते शहादत 65 साल 148 हिजरी

थी।

8. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने मैंने कफ़न दिया अपने बाप दोशतवी (एक करिये का नाम है) में जिनका आप एहराम बांधते थे और आपकी एक कमीज़ में और हज़रत अली इब्ने हुसैन के अमामा में और एक चादर में जिसे आप ने चालीस दीनार में खरीदा था।



एक सौ अठारहवां बाब

ज़िक्र मोलिदे इमाम मूसा बिन जाफ़र अलैहिस्सलाम

इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम 128 हिजरी में बमक़ाम अबवा पैदा हुए और 6 रजब 182 हिजरी में 54 या 55 बरस की उम्र में शहादत पायी। सनदी बिन शाहिक की क़ैद में आप की वफात हुई 179 हिजरी में ख़लीफा हारून जब अपने उमरा से फारिग़ होकर 20 माहे शव्वाल को मदीना मुनव्वरा आया तो हजरत को मदीना से अपने साथ ले गया और फिर हज किया फिर वह बसरा की राह से वापस हुवा और ईसा इब्ने जाफ़र की हिरासत में इंतेक़ाल फ़रमाया और बग़दाद में कब्रिस्ताने कुरैश में दफन किये गये आपकी वालिदा उम्मे वलद थीं जिनको हमीदा कहा जाता था।

1. उक्कासा रावी इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के पास आया। इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम भी उसके पास खड़े थे आप अलैहिस्सलाम ने अंगूरों का एक ख़ोशा उसके सामने रखा और एक एक दाना खाने लगा। फ़रमाया। एक एक दाना तो बूढ़ा या बच्चा (अपनी कमजोरी

की वजह से) खाता है। और जवान चार चार दाने खाता है वह हरीस जो डरता है कि मैं सेर होने से न रह जाउं तुम दो दो दाने खाओ कि यह मुसतहब है फिर उसने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कहा आप अबू अब्दिल्लाह की शादी क्यों नहीं करते। अब तो वह शादी के क़ाबिल हैं उस वक़्त आपके सामने एक थैली रखी थी फ़रमाया एक बरबरी बुरदा फ़रोश आने वाला है जो दारे मैमून में कयाम करेगा। उससे हम कनीज़ खरीदेंगे।

रावी कहता है कुछ दिन गुज़रने के बाद हम इमाम मोहम्म्द बाक़िर के पास आये। फ़रमाया मैं तुमको आगाह करता हूं कि वह बुरदा फ़रोश जिसका मैंने ज़िक्र किया था आ गया। फ़रमाया तुम जाओ इस थैली के बदले उस कनीज़ को ख़रीद लो। रावी कहता है हम बुरदा फ़रोश के पास आये। उसने कहा जो मेरे पास था। मैं बेच चुका। अब तो मेरे पास दो बीमार कनीज़ें हैं एक उनमें दूसरी से अच्छी है। हमने कहा। उन्हें दिखाओ तो उसने दिखाई हम ने कहा यह जो इन दोनों में बेहतर है इसकी क्या क़ीमत है उसने कहा सत्तर दीनार। हमने कहा। उन्हें दिखाओ तो उसने दिखाई। हम ने कहा इससे कम न ज़्यादा। हमने कहा हम इस थैली के बदले ख़रीदते हैं जितने हों हमें इसका इल्म नहीं, उसके पास एक शख़्स था जिसके सर और दाढ़ी के बाल सफेद थे बैठा था। उसने कहा थैली को खोल कर रकम गिन लो। बुरदा फरोश ने कहा तुम मत खोलो अगर सत्तर से कम निकले तो मैं नहीं बेचूंगा। बूढ़े ने कहा मेरे पास आओ और थैली की मुहर तोड़ दो जब हम ने खोला तो उसमें सत्तर ही दीनार थे न कम न ज़्यादा, हमने ख़रीद लिया और उसे लेकर इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के पास आये

इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम उनके पास बैठे थे हमने इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कुल हाल बयान किया। हज़रत ने खुदा की हम्द व सना के बाद कनीज़ से पूछा, तुम्हारा नाम क्या है। उन्हों ने कहा हमीदा, फ़रमाया तुम हमीदा हो दुनिया में और महमूदा हो आख़िरत में, मुझे बताओ तुम बाकिरा हो या उम्मे सैय्यिब उन्हों ने कहा बाकिरा फ़रमाया, यह कैसे नख़्ख़ासों के हाथ जो औरत आ जाती है वह उसे बाकिरा नहीं रहने देते। उन्हों ने कहा। यह शख़्स मेरे पास आया और इस तरह बैठा जैसे औरत से जिमाअ़ करने मर्द बैठता है। पस खुदा ने उस पर एक मर्दे बुजुर्ग को मुसल्लत किया। जिसने उसको तमाचे मारे वह उठ खड़ा हुवा कई बार उसने यह नापाक इरादा किया। हर बार वह बुजुर्ग मानेअ आये आप ने फ़रमाया ऐ अबू जाफ़र इसको लो। इसके बतन से अहले ज़मीन का बेहतरीन शख़्स मूसा नामी पैदा होगा।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह ने हमीदा पाक व साफ हैं तमाम औनास से जैसे तपाया हुवा सोना मैल कुचेल से पाक होता है खुदा ने उनकी मुहाफ़िज़त की यहां तक कि खुदा की तरफ़ से वह गिरामी ज़ात मुझे मिली जो मेरे बाद खुदा की हुज्जत होगा।

3. अबू ख़ालिद ज़ेबाली से मरवी है कि जब इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम को पहली बार महदी के पास मदीना ले जाया जा रहा था तो हज़रत का नुजूल मंज़िले ज़ेबाली पर हुवा मैं गमनाक हालत में हज़रत से बात चीत कर रहा था आप ने फ़रमाया ऐ अबू ख़ालिद मग़मूम क्यों हो? मैंने कहा कैसे रंजीदा न हूं। आप एक सरकश इंसान के पास जा रहे हैं ख़ुदा जाने क्या हादसा वहां पेश आये। फ़रमाया इस बार

मेरे लिये कोई ख़ौफ़ नहीं फुलां महीने फुलां दिन तुम मुझे पहले मील पर मिलना। मैं बराबर महीने और दिन उस रोज़ से गिनता रहा। जब वह दिन आया तो मैं इस मील पर पहुंचा, मैं इंतेज़ार करता रहा। यहां तक कि सूरज गुरूब होने लगा। जो कुछ हज़रत ने फ़रमाया था उसके मुतअल्लिक़ दिल में शक पैदा हुवा नागाह एक सियाही इराक़ की तरफ से नमूदार हुई मैं आगे बढ़ा तो मैंने इमाम अलैहिस्सलाम को सबसे आगे ख़च्चर पर सवार देखा। हज़रत ने फ़रमाया ऐ अबू ख़ालिद मैंने कहा। लब्बैक यबना रसूलिल्लाह। फ़रमाया शक न करो शैतान तुम्हारे शक को दोस्त रखता है। मैने कहा खुदा का शुक्र है कि उसने आपको उन ज़ालिमों से रिहाई दिलाई। फ़रमाया अभी मुझे फिर एक बार उनके फंदे में फंसना है। और फिर रिहाई नसीब न होगी।

4. रावी कहता है कि मैं इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर था कि नसरानी आया और हम हज़रत के साथ मक़ामे अरीज़ में थे। नसरानी ने कहा मैं एक दूर दराज़ शहर से बड़ी मशक्क़त उठाने के बाद आया हूं। मैं अपने रब से तीस साल से दुआ कर रहा हूं कि मुझे बेहतरीन दिन और बेहतरीन बन्दे की तरफ हिदायत करो जो उनमें सब से ज़्यादा आलिम हो। पस एक शख़्स ने ख़्वाब में मुझे एक शख़्स को बताया जो दमिशक़ के बालाई हिस्से में रहता है। मैं उसके पास पहुंचा और उससे गुफ़्तगू की। उसने कहा अगरचे मैं अपने दीन (ईसाइ) का बहुत बड़ा आलिम हूं। लेकिन एक और शख़्स जो मुझसे ज़्यादा आलिम है। मैं तलबे इल्म में सफर को दुशवार नहीं जानता और न मशक्क़त को ध्यान में लाता हूं मैंने पूरी इंजील पढ़ी है। दाऊद की ज़ुबूर पढ़ी है और तौरैत की चारों किताबों को पढ़ा है। मैंने ज़वाहिरे

कुरआन को पूरा पढ़ा है फिर उस आलिम ने मुझसे कहा। अगर तुम इल्मे नसरानियत जानना चाहते हो तो मैं अरब व अजम में इसका सबसे बड़ा आलिम हूं और अगर क़बाती बिन सरजील सामरी वाला इल्मे यहूद चाहते हो तो मैं उसका सबसे ज़्यादा आलिम हूं और अगर तू इल्मुल इस्लाम, इल्मे तौरात व इल्मे जुबूर और किताबे हूद और हर उस चीज़ का इल्म जो अंबिया में से किसी नबी पर अब या इससे क़बल नाज़िल हुवा या जो खबर आसमान से आई और उसको किसी ने न जाना हो या जाना हो और वह ऐसी किताब में है जिस में हर शै का बयान है और मोमिनीन के लिये शिफा है औंर रूहानी मसर्रत और बसीरत का बायस है उसं शख़्स के लिये जो नेकी का इरादा रखता हो और जिसे हक से उन्स हो तो मैं तेरी रहनुमाई एक ऐसे शख़्स की तरफ करता हूं उसके पास जा अगर अपने पैरों से चल सकता हो/ अगर पैरों से न चल सकता हो तो घुठनों के बल जाना और अगर इस पर भी कुदरत न हो तो बैठ कर घिसटता हुवा और अगर इस पर भी कुदरत न हो तो चेहरे के बल जाना। मैंने कहा मुझे जाने की कुदरत बलेहाज़े बदन व माल हासिल है। उसने कहा तू फोरन जा और यसरब पहुंच। मैने कहा मैं तो यसरब को क़तअन नही जानता। उसने कहा तो मदीना जा जहां अरब में एक बनी हाशिम मबऊस हुये थे जब वहां पहुंचे तो औलादे बनी ग़नम बिन मालिक बिन नज्जार का पता लगा तो जो बाबे मस्जिद के पास रहते हैं और नसरानियों का लिबास पहने थे क्योंकि वहां का हाकिम उन पर सख़्ती करता है और ख़लीफ़ा और ज़्यादा सख्त है।

फिर बनी अम्र बिन मबज़ूल से जो बक़ी जुबैर में रहते

हैं इमाम मूसा बिन जाफ़र अलैहिस्सलाम के मुतअल्लिक़ पूछना कि उनका घर कहां है आया वह शहर में मौजूद हैं या सफर में है तू वहां जाकर मिलना क्योंकि उनका सफर इससे ज़्यादा दूर नहीं होगा जितना तुम ने किया होगा। फिर उनको बताना कि मतराने अलिया ने जो ग़ोता दमिश्क़ में रहता है मुझे आप के पास भेजा है और बहुत बहुत सलाम कहा है और यह पैगाम दिया है कि मेरी अकसर खुदा से यह दुआ रहती है कि मेरे इस्लाम का इज़्हार आप के हाथों पर हो फिर हज़रत से यह सब वाकिआ बयान करना वह तुझको असा पर तकिया किये हुये मिलेंगे फिर कहना ऐ मेरे सरदार आपकी इजाज़त है कि मैं बराये ताज़ीम सीने पर हाथ रख दूं और बैठ जाउं।

हज़रत ने फ़रमाया बैठने की इजाज़त है तकफीर यानी सीने पर हाथ रखने की नहीं। वह बैठा और अपनी टोपी उतार कर कहा मैं आप पर फ़िदा हूं कलाम करने की इजाज़त है। फ़रमाया ज़रूर तुम तो आये ही इस लिये हो।

नसरानी ने कहा जिस शख़्स ने मेरी रहनुमाई आप की बारगाह तक की है आप उसको जवाबन सलाम करते हैं या वह सलाम करते हैं फ़रमाया मैं यह दुआ करता हूं कि खुदा आपकी हिदायत करे अब रहा सलाम यह उसी वक्त होगा जब वह हमारे दीन में दाखिल हो जायेगा।

नसरानी ने कहा खुदा आपकी हिफाज़त करे मैं आपसे किताबे खुदा के मुतअल्लिक़ सवाल करता हूं जो मोहम्मद स0 पर नाज़िल हुई और उन्होंने उसको बयान किया और उसकी तारीफ़ की।

फ़रमाया हामीम और इस वाज़ेह और रौशन किताब को

हम ने मुबारक रात में नाज़िल किया ताकि हम अपने अहकाम से खिलाफ वर्जी करने वालों को डरायें। उसने कहा उसकी बातिनी तफसीर क्या है। फ़रमाया हामीम से मुराद है मोहम्मद। जैसा कि किताबे हूद में है जो उन पर नाज़िल हुई थी इससे दो हर्फ़ मीम और हा शुरू वाले कम कर दिये गये हैं।

और किताबे मुबीन से मुराद है अली इब्ने अबी तालिब अलैहिस्सलाम और रात से मुराद फातिमा हैं और यह जो खुदा ने फ़रमाया है उससे जुदा किया जायेगा हर अम्रे हकीम तो मुराद है कि ब्रतने फातिमा से खै़रे कसीर का जुहूर यानी मर्दे हकीम (इमाम हसन) मर्दे हकीम (इमाम हुसैन) मर्दे हकीम यानी हर ज़माने में एक इमाम ता ज़ुहूरे क़ाएमे आले मोहम्मद पैदा होता रहेगा।

उसने कहा इन लोगों में से अव्वल व आखिर का वस्फ़ बयान कीजिये।

फ़रमाया ब लेहाज़े सिफात सब एक दूसरे की मिस्ल हैं तीसरे का (इमाम हुसैन) अलैहिस्सलाम का इस गिरोह के वस्फ़ बयान करता हूं जिनकी नसल में इमामत ता कयामत बाकी रहेगी। अगर तुम ने तग़य्युर व तहरीफ न की और इंकार न किया हो जैसा कि तुम करते आये हो सब एक दूसरे के मिस्ल हैं तीसरे का (इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को उस गिरोह का वस्फ बयान करता हूं जिसकी नसल में ता कयामत इमामत बाकी रहेगी अगर तुम ने तग़य्युर व तहरीफ न की और इंकार न किया हो जैसा कि तुम करते आये हो तो इसका ज़िक्र तुम अपनी उस किता में पओगे जो तुम पर नाज़िल हुई। नसरानी ने कहा मैं कुछ जानता हूं आप से नही छुपाउंगा और न आपकी तकज़ीब करूंगा और जो कुछ मैं

कहूंगा उसके सिदक व किज़्ब को आप जान ही जायेंगे क्योंकि अल्लाह ने अपने फज़्ल से बड़ा इल्म दिया और आपको वह नेअमतें दी गई हैं जो लोगों के खयाल में नहीं आ सकतीं और न छुपाने वाले उसको छुपा सकते हैं और न झुठला सकते हैं बस मेरा कौल इस बारे में हक़ होगा जैसा कि मैंने पहले बयान किया और जैसा कि आप ने फ़रमाया। इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं जल्द तुम को वह चीज़ बता दूंगा जिसको कुतुबे आसमानी के पढ़ने वाले बहुत कम लोग जानते हैं अच्छा बताओ मरयम की मां का नाम क्या था? किस रोज़ बतने मरयम में ईसा की रूह फूंकी गई और दिन की किस साअत में ऐसा हुवा और मरयम ने किस रोज़ हज़रत ईसा को जना और दिन की कौन सी साअत थी।

नसरानी ने कहा मुझे मालूम नहीं। हज़रत ने फ़रमाया मरयम की मां का नाम मरसा था जिसके मानी अरबी में बखशी हुई के हैं (क़ामूस में उनका नाम हिना लिखा है हो सकता है कि दो नाम हों और नसरानियों में मरसा मशहूर हो) और जिस दिन ईसा का हमल क़रार पाया रोज़े जुमा वक्ते ज़वाल था यही वह दिन था कि जिब्रईल मरयम के पास आये थे मुसलमानों के लिए इस से बड़ी ईद नहीं अल्लाह ने भी उसको साहिबे अज़मत क़रार दिया और हज़रते रसूले खुदा ने भी। पस हुक्म दिया कि रोज़े जुमा ईद क़रार दें और मरयम की पैदाइश सेह शंबा को हुई चार घड़ी दिन चढ़े नीम रोज़ में और क्या तुम उस नहर को जानते हो जिसके करीब मरयम ने ईसा को जना था उसने कहा नहीं फ़रमाया वह नहरे फुरात थी जिसके करीब खुरमा और अंगूर के दरख़्त थे

और वह दिन कि मरयम की ज़बान बात करने से बन्द हुई (यानी उनका यौमे सुम्त था) वही था कि कैदूस (ज़ालिमे कौमे यहूद) ने अपनी औलाद और अपने पेरूओं को पुकारा और उन्हों ने उसकी मदद की और औलादे इमराम को उनके घरों से निकाला ताकि वह मरयम के मुआमले में गौर करें उन्हों ने मरयम के बारे में वही कहा जिसकी हिकायत अल्लाह ने अपनी किताब (कुरआन) में की है (यह तुम ने क्या किया न तुम्हारा बाप बद आदमी था न तुम्हारी मां बदकारह थी)

पस तुम ने उस दिन के वाक़िआत को समझा उसने कहा हां मैंने इंजील में पढ़ा है। उस दिन को नया दिन लिखा गया है हज़रत ने फ़रमाया जब मेरे बयान से तसदीक़ हो गई तो अब बगैर हिदायत पाए यहां से न उठना।

नसरानी ने कहा कि यह भी बताइये कि मेरी मां का नाम सिरयानी और अरबी ज़मान में क्या था फ़रमाया सिरयानी में अंक़ालिया था और तेरी दादी का नाम अंक़ूरा था और तेरी मां का नाम अरबी में मैय्यत है और तेरे बाप का नाम अब्दुल मसीह है अरबी में अब्दुल्लाह है क्योंकि मसीह का कोई बन्दा न था। नसरानी ने कहा आप ने सच फ़रमाया और मेरे साथ नेकी की। अब यह बताइये कि मेरे दादा का क्या नाम था फ़रमाया जिब्रईल था लेकिन वह अब्दुर्रहमान था यह नाम मैंने अभी तजवीज़ किया है उसने कहा क्या वह मुसलमान था। हज़रत ने फ़रमाया हां वह शहीद कत्ल किया गया। उस पर एक लश्कर ने हमला करके शहीद कर दिया और यह लशकर अहले शाम का था उसने कहा यह बताइये कि कुन्नियत से पहले मेरा नाम क्या था? फ़रमाया अब्दुस्सलीब

था उसने कहा अब आपने मेरा क्या नाम रखा। फ़रमाया अब्दुल्लाह। उसने कहा खुदाये अज़ीम पर ईमान लाया और गवाही देता हूं कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं जो अकेला और बेनियाज़ है वह ऐसा नहीं जैसा नसारा बयान करते हैं। (तीन में का तीसरा) और न ऐसा है जैसा यहूदी कहते हैं उज़ैर इब्ने अब्दुल्लाह) और न वह अजनासे शिर्क में से कोई जिंस है और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के अब्द व रसूल हैं जिनको ख़ुदा ने हक़ के साथ भेजा है पस जो अहल थे हक़ उन पर ज़ाहिर हो गया। और ना अहल बातिल परस्त बने रहे। हज़रत रसूले ख़ुदा सुर्ख़ व सियाह सब की तरफ़ भेजे गये उनकी रिसालत तमाम बनी नौअ़ के दरमियान मुशतरक है। पस जिसे साहिबे बसीरत बनना था बन गया और जिसे हिदायत पानी थी पा ली। बातिल परस्त अंधे बने रहे और गुमराह हो गये उनकी वजह से जिनको वह खुदा के सिवा पुकारते थे और मैं गवाही देता हूं कि ख़ुदा का वली नातिक़ ब हिकमत है और उनसे पहले जो अंबिया गुजर चुके हैं उन्हों ने भी हिकमते बालिग़ा से कलाम किया। और इताअते खुदा के बारे में उन्हों ने लोगों की मदद की और बातिल और उसके मानने वालों और पलीदगी (गुनाह) और उसमें मुलव्विस लोगों को उन्हों ने छोड़ दिया और उन्हों ने गुमराही के रास्ते को तर्क किया खुदा ने उनके इताअत गुज़ार होने की वजह से उनकी मदद की और उनको मअ़सियत से बचाये रखा पस वह औलिया–ए–खुदा हैं और नासिरे दीन हैं लोगों को ख़ैर व बरकत की तरफ रग़बत दिलाते और नेकी का हुक्म देते थे। मैंने कहा मैं उनके हर छोटे बड़े पर ईमान लाया जिनका मैंने ज़िक्र किया उन पर

भी और मैं बख़्शने वाले और बुलन्द मतर्बा वाले रब्बुल आलमीन पर ईमान लाया। फिर उसने जुन्नार तोड़ डाला और सोने की सलीब को निकाल फेंका फिर हज़रत से कहा अब आप मुझे हुक्म दें ताकि मैं उसके मुताबिक नेकी करूं फ़रमाया तुम्हारा एक भाई है जो दीन में तुम ही जैसा है और वह तुम्हारी कौम का आदमी है कबीला–ए कैस बिन सालबा से और उसको भी अल्लाह ने तुम्हारी तरह नेअमते इस्लाम दी है पस उससे इज़हारे हमदरदी करो उसकी हमसायगी इख़्तियार करो और तुम दोनों के नफ़का के लिये जो इस्लाम में तुम्हारा हक़ है मै उसे पूरा करूंगा उस ने कहा खुदा आपकी हिफाज़त करे मैं मालदार हूं मुहताजे एआनत नहीं। मैं तीन सौ नजीब घोड़े और एक हज़ार ऊंट अपने वतन में छोड़ आया हूं आपका हक़ उन पर मुझ से ज़्यादा है आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम अल्लाह और उसके रसूल की पनाह में हो और तुम इस वक़्त ब हैसियत इब्नुस्सबील हमारे मेहमान हो अलग़र्ज़ वह एक रासिखुल अक़ीदा मुसलमान बना। बनी फेहर की एक औरत से उसने शादी की और इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने औक़ाफ़े अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम से पचास हज़ार दीनार इसका मेहर अदा किया और ख़िदमत के लिये कनीज़ें दीं रहने को घर दिया और जब तक इमाम अलैहिस्सलाम को मदीना से न ले जाया गया आप के साथ रहे हज़रत के जाने के बाद वह सिर्फ 28 रोज़ ज़िन्दा रहा।

5. रावी कहता है मैं इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत मैं हाज़िर था कि एक राहिब जो नजराने यमन का रहने वाला था। और उसके साथ राहिबा भी थी। मदीने

में आया। फुज़ैल बिन यसार ने उन दोनों के लिए इमाम मूसा काज़िम से एजाज़त चाही हज़रत ने फ़रमाया कल उनको उम्मे ख़ैर के कुएं के पास ले आना। रावी कहता है हम वहां पहुंचे वह लोग भी आ गये हज़रत ने कहा एक मोटा लिबास उस औरत को पहनाया जाये ताकि यह बरहना बदन मेरे सामने न रहे) पस हम सब बैठे राहिबा ने हज़रत से मुख़तलिफ़ सवालात दरयाफ़्त किये आप ने उनके जावाबात दिये इसके बाद चन्द सवाल हज़रत ने उससे किये जिनके जवाब वह न दे सकी उसके बाद वह मुसलमान हो गयी उसके बाद राहिब ने सवालात किये हज़रत ने हर सवाल का जवाब दिया। राहिब ने कहा मैं अपने दीन पर बड़ा रासिख था और नसारा में कोई मेरे मबलग़े इल्म तक नहीं पहुंच सकता था। मैंने सुना हिन्दुस्तान में एक शख़्स है जब वह बैतुलमकदिस के हज का इरादा करता है तो एक दिन या रात में वहां जाकर अपने घर हिन्दुस्तान में वापस आ जाता है।

मैंने (रावी) पूछा वह हिन्दुस्तान में कहां रहता है उसने कहा सिंध में, मैंने कहा उसके मुतअल्लिक़ तो मैंने बयान किया है उसके पास सुरअते रफ़्तार के मुतअल्लिक़ क्या चीज़ है उसने कहा वही इल्म है जिस से आसिफ वज़ीरे सुलैमान शहरे सबा से बिलक़ीस का तख़्त उठा लाये थे उसका ज़िक्र आप अलैहिस्सलाम की किताब (कुरआन) में भी है और हम अदयान वालों की किताबों में भी है इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से पूछा अल्लाह के कितने नाम ऐसे हैं जिनके वास्ते से दुआ रद् नहीं होती। राहिब ने कहा वह बहुत से हैं लेकिन वह खास जिस ने सायल का सवाल रद् नही होता वह सात हैं। हज़रत ने कहा बताओ क्या हैं तुम्हें

उन में से कुछ याद हैं उसने कहा नहीं, कसम उस अल्लाह की जिस ने तौरैत को मूसा अलैहिस्सलाम पर नाज़िल किया और ईसा अलैहिस्सलाम को मकामें इबरत बनाया और अरबाबे अकल के शुक्र के लिये एक आज़माइश क़रार दिया और मोहम्मद स0 को रहमत व बरकत और अली अलैहिस्सलाम को मक़ामे इबरत व बसीरत और उनकी नस्ल में औसिया को क़रार दिया और मैं कुछ नहीं जानता अगर जानता होता तो मुझे न आप से कलाम की ज़रूरत होती और न आप के पास आता और न सवाल करता। इमाम ने फ़रमाया अच्छा अब तुम उस हिन्दी को बताओ राहिब ने कहा मैंने सात असमा के मुतअल्लिक़ सुना था लेकिन ये नहीं सुना था कि उनमें बातिनी ख़ूबी क्या है उनकी शरह क्या है और न यह कि उनकी हक़ीक़त और कैफ़ीयत क्या है पस मैं अपने मक़ाम से चला और सिंध पहुंचा और उस शख़्स का पता चलाया मालूम हुवा कि पहाड़ में उस ने एक इबादत खाना बना लिया है और वहां से साल में सिर्फ दो बार निकलता है और हिन्दियों को गुमान यह है कि बग़ैर तुख़्म और हल चलाये उसके यहां ग़ल्ला उगता है मैं उसके दरवाज़े पर पहुंचा और तीन रोज़ इंतज़ार करता रहा। न दक्कुल बाब किया और न जुस्तजू की जब चौथा दिन हुवा बकुदरते खुदा दरवाज़ा यूं खुला कि एक गाय आयी उसके लम्बे लम्बे थन दूध से भरे हुये थे उसने दरवाज़ा धकेला तो वह खुल गया मैं उसके पीछे चल कर दाखिल हुवा।

मैंने वहां एक शख़्स को देखा जो आसमान की तरफ देखता है और रोता है ज़मीन की तरफ़ देखता है और रोता है और पहाड़ों की तरफ देखता है और रोता है। मैंने कहा सुबहानल्लाह दुनिया में आप जैसे लोग कितने कम हैं?

उसने कहा यह एक नेकी है। उस शख़्स की नेकियों में से जिसको तुम पीछे छोड़ आये हो। मैंने कहा मुझे बताया गया है कि आप के पास असमाऐ इलाहिया में से एक ऐसा नाम है जिसकी बरकत से आप एक दिन रात में बैतुल मक़िदस जाते हैं और लोट आते हैं उसने कहा तुम बैतुल मकदिस को जानते हो मैंने कहा मैं तो उसी बैत को जानता हूं जो शाम में है उन्होंने कहा कोई बैतुल मुक़ददस नहीं सिवाये बैते आले मोहम्मद स0 के, मैंने कहा मैंने तो आज तक नहीं सुना क्या वह है बैतुल मुक़ददस, उन्होंने कहा नहीं जिसे लोग बैतुल मुक़ददस कहते हैं वह अंबिया का क़िब्ला या उनकी इबादत गाहें हैं उनको ज़माना-ए साबिक में खतीरतुल महारीब कहा जाता था न कि बैतुल मुक़ददस। यहां तक कि हज़रत ईसा और मोहम्मद स0 के दरमियान फ़ितरत का ज़माना आगया।

और अहले शिर्क की बला नाज़िल हुई और शयातीन के घरों में जो छुपी बातें थीं वह ज़ाहिर हो गईं उन्हों ने अदल बदल शुरू कर दी और नये नये नाम ईजाद कर लिये जैसा कि खुदा फ़रमाता है बातिनी तफ़सीरे आले मोहम्मद में और ज़ाहिरी अल्फाज़ यह हैं यह (लात व उज्ज़ा वग़ैरह) ऐसे नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे दादा ने घढ़ लिये हैं खुदा की तरफ़ से तो उनको कोई कुव्वत नहीं दी गयी।

मैंने कहा मैं तो आपके पास बड़ी मंज़िलें तैय करके दूर दराज़ शहर से यहां आया हूं बहुत सी तकलीफें और परेशानियां इस उम्मीद पर बरदाश्त की हैं कि मेरी हाजत बर आयेगी।

उन्होंने कहा मैं नहीं ज़ानता कि तुम्हारी मां जब हामिला हुइ थी तो फ़रिश्ता आया और यह भी नहीं जानता हूं कि तुम्हारे बाप ने तुम्हारी मां से हमबिस्तरी के वक़्त गुस्ल

किया था और बहालते तोहर उसके पास गया।

लेकिन मेरा गुमान है कि तेरे बाप ने अपनी बेदारी वाली रात को तौरेत या इंजील की चौथी किताब ज़रूर पढ़ी होगी। और उसके अहकाम पर अमल किया होगा इस लिये तेरा अंजाम बख़ैर होगा। अब तू जहां से आया है वहीं लौट जा और मोहम्मद स0 के मदीना में पहुंच जिसे तयबा कहते हैं और जाहिलिय्यत में जिसका नाम यसरब था।

तू वहां उस मकाम पर जाना जिसको बक़ीअ कहते हैं वहां सराये मर्दा का पता लगाना और तीन दिन उसमें ठहरना। फिर दरयाफ़्त करना उस सियाह फ़ाम बूढ़े को जो सराये के दरवाज़े पर बोरिये बुनता है उसका यह बोरिया वहां के शहरों में ख़स्फ़ कहलाता है उस बूढ़े से मेहरबानी का बरताओ करना और कहना। मुझे तुम्हारे इस मेहमान ने भेजा है जो इस घर के उस गोशे में रहता था जिसमें चार लकड़ियां थीं (यानी चौखट थी किवाड़ न थे) फिर उससे फुलां बिन फुलां (मुराद इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम) का पता पूछना और दरयाफ़्त करना उनकी नशिस्त गाह कहां है जहां वह मसाएल का जवाब देते हैं और पूछना वह किस वक़्त आते हैं या वह खुद दिखायेगा या वस्फ़ बयान करके तआरूफ़ करायेगा। मैंने कहा। जब मैं उनसे मिलूं तो क्या करूं फिर पूछ लेना जो कुछ हो चुका या जो होने वाला है।

और सवाल करना दीन के उन निशानात से जो हो चुके हैं और जो बाक़ी हैं, हज़रत ने फ़रमाया जिससे तुम मिले थे उसने तुमको अच्छी नसीहत की, राहिब ने कहा उसका नाम किया है? फ़रमाया मोतम्मिम इब्ने फ़ीरोज़ा वह नसलन फारसी है उन लोगों में है जो खुदाये वाहिद ला शरीक पर ईमान लाये और ख़ुलूस व यक़ीन के साथ उसकी

इबादत की और अपनी क़ौम के खौफ़ से भागे। ख़ुदावन्दे आलम ने उन्हें रूहानी हुकूमत अता फ़रमाई और सिराते मुस्तकीम की हिदायत की। और मुत्तक़ियों में से करार दिया और उसके और अपने मुख़लिस बन्दों के दरमियान तआरूफ़ कराया वह हर साल मक्के में हज करने आता हैं और हर महीने के शुरू में उमरा बजा लाता है।

और अपनी हिन्दुस्तानी रिहाइशगाह से मक्का आता है यह खुदा की तरफ़ से फ़ज़्ल व मदद है और अल्लाह शुक्र करने वालों को ऐसा ही बदला देता है फिर राहिब ने बहुत सवाल किये जिनके हज़रत ने जवाबात दिये। फिर राहिब न कहा। मुझे वह आठ हुरूफ़ बताइये जो नाज़िल हुए उनमें से चार तो ज़मीन पर रहे और बाकी हवा में और ज़मीन वालों और हवा वालों का मिस्दाक़ वही होगा जो उनकी तफ़सीर बयान करे। फ़रमाया वह हमारा क़ाएम होगा ख़ुदा उस पर वह कलाम नाज़िल करेगा जिसकी वह तफ़सीर बयान करेगा। जो चीज़ उस पर बतौर कलाम नाज़िल होगी वह न सिद्दीकों पर नाज़िल हुई होगी न रसूलों पर और न हिदायत याफ़्ता लोगों पर।

राहिब ने कहा इन चार बातों में से दो मुझे बता दीजये जो ज़मीन पर हैं वह क्या हैं? फ़रमाया मैं तुझे चारों बताये देता हूं अव्वल कलेमा ला इला ह इल्लल्लाह ला शरीक ल हू है और उसकी ज़ात बाकी रहने वाली है। दूसरा कलेमा मोहम्मद रसूलुल्लाह स0 कहना है खुलूसे क़ल्ब से और तीसरे हम अहले बैत हैं और चौथे हमारे शिया हैं और हम रसूलुल्लाह से हैं और रसूलुल्लाह एक सबब के साथ अल्लाह से हैं।

राहिब ने कहा मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मोहम्मद रसूलुल्लाह स0 हैं और जो कुछ वह ख़ुदा की तरफ़ से लाये हक़ है और आप लोग मख़लूक़े इलाही के खुलासा हैं और आप के शिया पाक हैं जाते बारी में शक करने से और नाअहल लोगों ने उनको ज़लील समझ रखा है और उनके लिये अंजाम बख़ैर हैं और रब्बुल आलमीन के लिये हम्द है इमाम अलैहिस्सलाम ने उसके लिये रेशमी जुब्बा मंगाया और कूही क़मीज़ और मोज़े और टोपी उसको अता फ़रमाया और उसने जुहर की नमाज़ पढ़ी हज़रत ने उससे फ़रमाया तुम ख़तना भी करा लो। उसने कहा वह तो मेरी पैदाइश के सातवीं दिन हीं हो गई थी।

6. अब्दुल्लाह इब्ने मोग़ीरा से रिवायत है कि इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम मिना में एक औरत की तरफ़ से हो कर गुज़रे जो रो रही थी और उसके गिर्द बच्चे रो रहे थे उसकी गाय मर गइ थी हज़रत उसके पास आये और फ़रमाया तू क्यों रोती है उसने कहा ए बन्दा–ए खुदा मेरे यतीम बच्चे हैं और सिर्फ़ यही गाय मेरी और उनकी मआ़श का जरिया थी वह मर गयी और अब कोई ज़रिया मेरी मआश का बाकी न रहा। हज़रत ने कहा तू चाहती है कि मैं उसे जिन्दा कर दूं उसने ब इलहामे रब्बानी कहा बेशक मैं चाहती हूं हज़रत एक गोशे में गये और दो रकअत नमाज़ पढ़ी और अपने हाथ उठा कर दुआ की और गाय को आवाज़ दी और एक ठोकर मारी और वह उठ खड़ी हुई जब औरत ने अपनी गाय को देखा तो चींख पड़ी रब्बे कअ़बा की क़सम यह ईसा इबने मरयम हैं लोग वहां जमा हो गये हज़रत उनके दरमियान थे फिर आप चले आये।

7. इसहाक़ बिन अम्मार ने कहा कि मैंने सुना कि इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने एक शख़्स को उसके मरने की खबर दी मैंने अपने दिल में कहा उनको यह भी इल्म है कि उनका शीया कब मरेगा। हज़रत गुस्से की सूरत में मेरी तरफ़ मुतवज्जे हुये और फ़रमाया ए इसहाक़ रूशैद हुजरी मौतों और बलाओं का इल्म रखते थे और इमाम तो उनसे बेहतर है ए इसहाक जो तुम्हें करना है कर लो तुम दो बरस के अन्दर मर जाओगे और तुम्हारे भाई और खानदान वाले तुम्हारे मरने से चन्द रोज़ बाद ही अलाहेदा अलाहिदा हो जायेंगे और बाज़ बाज़ को ख़ाएन क़रार देगा। यहां तक कि दुश्मन उनकी शमातत करेंगे। यह बात तुम्हारे दिल में रहे मैंने कहा मैं अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता हूं इस बात से जो मेरे दिल में आयी, कुछ मुद्दत ही गुज़री थी कि इसहाक़ मर गया और बनू अम्मार उसकी दौलत के दावे दार बन कर उठ खड़े हुए और अहलकारों को इतनी रिश्वत दी कि मुफ़लिस हो गये।

8. अली बिन जाफ़र कहते हैं कि मोहम्मद बिन इस्माईल मेरे पास आये और अभी मक्का ही में थे कि मोहम्मद ने कहा चचा मैं बग़दाद जाना चाहता हूं मेरी ख़्वाहिश है कि अपने चचा अबुल हसन यानी मूसा बिन जाफ़र से रूख़सत हो लूं मेरी दरख़्वास्त है कि आप भी मेरे साथ चलें मैं उनके साथ अपने भाई के मकान पर पहुंचा जो सूबा में था। यह मग़रिब से कुछ पहले था। मैंने दक्कुल बाब किया। मेरे भाई ने पूछा कौन है मैंने कहा अली हूं। फ़रमाया मैं अभी आता हूं चूंकि वज़ू देर में करते थे इस लिये मैनें कहा ज़रा जल्दी कीजिये। आप इस तरह तशरीफ़ लाये कि गुले अर्मनी से रंगी हुई इज़ारबन्द गले में पड़ा हुवा था आप दरवाज़े की दहलीज़ पर

बैठ गये अली इब्ने जाफ़र ने झुक कर सर पर बोसा दिया और कहा मैं एक ऐसे अम्र के लिये आया हूं कि आप उसको दुरुस्त करें तो अकसर हम से ख़ता होती ही है हज़रत ने फ़रमाया वह क्या है मैंने कहा यह आप के भतीजे आप से रूख़सत होने आये हैं बगदाद जा रहे हैं फ़रमाया उनको बुलाओ मैंने बुलाया वह एक गोशे में थे जब वह आये तो हज़रत के सर पर बोसा दिया और कहा मैं आप पर फिदा हूं मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये फ़रमाया मेरी नसीहत यही है कि मुझे क़त्ल कराने के बारे में अल्लाह से डरना। उसने कहा जो आप के साथ बदी का इरादा करे खुदा उस पर अज़ाब नाज़िल करे और उसके लिये बद दुआ की। फिर हज़रत के सर पर बोसा देकर कहा। ए चचा मुझे नसीहत कीजिये फ़रमाया मेरे खून के बारे में ख़ुदा से डरना। उसने कहा जो आप से बदी करे ख़ुदा का उस पर अज़ाब हो फिर हज़रत के सर को बोसा देकर कहा ऐ चचा मुझे नसीहत कीजिये आप ने फिर वही फ़रमाया। जब अलग हुये मैं उनके साथ चला हज़रत ने फ़रमाया अली भाई आप रूक जाइये। मैं रूक गया हज़रत घर के अन्दर गये और मुझे बुलाकर 100 दीनार की एक थैली दे कर फ़रमाया। अपने भतीजे से कहिये कि इस रक़म से अपने सफ़र में मदद हासिल करे।

अली ने कहा मैंने यह रक़म चादर के एक गोशे में बांध ली। फिर आप ने सौ दीनार और दिये और फ़रमाया यह भी उसे दे दो। मैंने कहा जब आप को इससे ख़ौफ़ है जैसा कि आपने बयान किया तो फिर आप इसकी मदद क्यों कर रहे हैं फ़रमाया जब मैं सिला–ए रहम करूंगा तो वह क़त्अे रहम करेगा। तो खुदा उसकी उम्र को कम करेगा। फिर आप ने

चमड़े का एक तकिया उठाया जिस में खरे तीन हज़ार दिरहम थे फ़रमाया यह भी उसे दे दो मैं यह सब रक़म लेकर बाहर निकला और उनमें से पहली रक़म उसको दी वह बहुत खुश हुआ और हज़रत को दुआयें देने लगा। फिर मैंने बाकी रकमें दीं जिन से वह इतना खुश हुआ कि मैं समझा कि अब वह बग़दाद न जायेगा। लेकिन वह चला गया और जब हारून के सामने गया तो उसको ख़लीफ़ा-ए रसूलुल्लाह कह कर सलाम किया और कहा कि मेरे ख़याल में रूए ज़मीन पर दो ख़लीफ़ा तो नहीं होने चाहिये मैंने अपने चचा मूसा बिन जाफ़र को देखा कि लोग ख़लीफ़ा-ए रसूल स0 कह कर सलाम करतें हैं हारून ने एक लाख दिरहम उसके पास भेजें लेकिन वह मर्ज़े ख़न्नाक़ में ऐसा मुबतेला हुवा कि न देख सका न छू सका।

9. अबू बसीर रावी है कि इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम की उम्र ब वक़्ते शहादत 54 साल की थी। 183 हिजरी और अपने वालिद गिरामी की शहादत के बाद 35 साल ज़िन्दा रहे।



एक सौ उन्नीसवां बाब

ज़िक्रे विलादत इमामे रिज़ा अलैहिस्सलाम

इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम 148 हिजरी में पैदा हुए और 203 हिजरी में वफ़ात पाई जबकि आपकी उम्र 55 साल थी आप अलैहिस्सलाम की तारीख़े वफ़ात में इख़तेलाफ़ है मगर सहीह यही है हज़रत इमाम अलैहिस्सलाम की वफ़ात तूस के क़रिये सनाबाद में हुई जो नोक़ान से क़रीब है मामून ने आप

को मदीना से मर्व में बुलाया था और मर्व बसरा और ईरान के रास्ते में है।

जब मामून मर्व से बग़दाद चला तो हज़रत को अपने साथ लिया जब आप क़रिये सनाबाद में पहुंचे तो रेहलत फ़रमाई। आपकी वालिदा माजिदा का नाम उम्मुल्बनीन था।

1. रावी कहता है कि इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने मुझसे फ़रमाया क्या तुम्हें मालूम है कि मग़रिब का कोई बरदा फ़रोश आया हैं मैंने कहा नहीं, फ़रमाया मेरे साथ उसके पास चलो, पस हज़रत और मैं सवार होकर चले हम एक ऐसे शख़्स के पास पहुंचे जो अहले मदीना में से था और एक और शख़्स उसके साथ था।

मैंने कहा जो कनीज़ें तुम्हारे पास हैं हमें दिखाओ उसने सात कनीज़ें दिखाईं हज़रत ने फ़रमाया मुक़ददस इनमें से किसी की हमें ज़रूरत नहीं और दिखाओ उसने कहा इनके अलावा एक बीमार कनीज़ है उस से कहा उसे क्यों नहीं दिखाते। उसने इंकार किया और रुगरदानी की। हज़रत ने मुझे दूसरे रोज़ फिर भेजा और फ़रमाया उससे कहो यह तो बता इसकी क़ीमत क्या है वह क़ीमत बतायेगा। तुम कहना हम ने ख़रीद ली। मैं उसके पास गया उसने उसकी क़ीमत बता कर कहा मैं इससे कम में न दूंगा। मैंने उससे कहा मैंने ले ली। उसने कहा यह तुम्हारी हो गयी। लेकिन यह तो बताओ कि जो शख़्स कल तुम्हारे साथ आये थे वह कौन थे मैंने कहा बनी हाशिम में से हैं। उसने कहा बनी हाशिम की किस शाख़ से? मैंने कहा मैं इससे ज़्यादा नहीं जानता उसने कहा मैं इस कनीज़ के मुतअल्लिक कुछ बताना चाहता हूं मैंने इसको मग़रिबे अक़सा से ख़रीदा है एक

औरत अहले किताब से मुझे मिली। उसने कहा तेरे साथ यह कनीज़ कैसी है मैंने कहा मैंने इसको अपने लिये खरीदा है उसने कहा तू इसके रखने का अहल नहीं। यह दुनिया के बेहतरीन इन्सान के लिये है इससे ऐसा लड़का पैदा होगा जिसका मिस्ल न मशरिक़ में होगा और न मग़रबि में। ग़रज़ मैं ले आया। थोड़ी मुद्दत गुजरी थी कि उनके बतन से इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

2. सफ़वान बिन यहया ने बयान किया कि जब इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने इंतेक़ाल किया तो इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम ने अपनी इमामत का तज़किरा किया। हज़रत से कहा गया कि आप ने एक ऐसे अम्रे अज़ीम को ज़ाहिर किया है जिसकी बिना पर हम इस सरकश (हारून) से डरते हैं फ़रमाया वह कितनी ही क़ोशिश करे मेरे ऊपर क़ाबू न पा सकेगा।

3. रावी कहता है कि मैं इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप अलैहिस्सलाम के घर के अन्दर जो दूसरा घर था आप उसमें तशरीफ़ फ़रमा थे। रात की तारीकी थी आप अलैहिस्सलाम ने अपना हाथ उठाया तो ऐसी रोशनी हो गई गोया दस चिराग़ जल रहे हैं एक शख़्स ने इज्ने बारयाबी चाही। तब आप अलैहिस्सलाम ने चिराग़ रोशन किया और उसको इजाज़त दी।

4. रावी कहता है कि रसूलुल्लाह स० के गुलाम अबू राफ़े की औलाद में से एक शख़्स था, तैस नामी उसका मेरे उपर कर्ज़ था उसने तक़ाज़ा किया और मुझ पर सख़्ती की। बहुत से लोग उसके तरफ़दार होकर मुझे मलामत करने लगे। जब मैंने यह सूरत देखी तो नमाज़े सुबह मस्जिदे रसूल स० में पढ़ कर इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम से मिलने चला।

हज़रत उस रोज़ अरीज़ तशरीफ़ ले गये थे जब मैं दरवाज़े के नज़दीक पहुंचा तो मैंने देखा। हज़रत एक गधे पर तशरीफ ला रहे हैं जिस्म पर एक क़मीज़ है और रिदा। जब मैंने हज़रत को देखा तो अर्ज़े हाल करते शर्म आई हज़रत मेरे क़रीब आकर ठहर गये। मैंने सलाम किया। रमज़ान का महीना था। मैंने कहा आप के गुलाम तेरा का मेरे ऊपर कर्ज़ है मैं गुमान करता हूं कि आप अलैहिस्सलाम उसे रोकेंगे। मैंने बताया कि कितना कर्ज़ा है और कुछ न कहा। मुझे हुक्म दिया कि उनके आने तक यहां बैठा रहूंगा मैं इंतेज़ार में मग़रिब के वक़्त तक बैठा रहा हालांकि मेरा सीना तंग हो रहा था इरादा था कि उठ कर चल दूंगा। हज़रत को आता देखा और आपके गिर्द कुछ लोग थे।

और वह लोग हज़रत से सवाल कर रहे थ और आप अलैहिस्सलाम सदक़ात दे रहे थे जब वह चले गये तो हज़रत घर में गये और बरआमद हुऐ। मुझे बुलाया मैं आपके साथ अन्दर गया मैं भी बैठा और हज़रत भी बैठे। मैं हाकिमे मदीना इब्ने मुसय्यब के मुतअल्लिक़ बात चीत करने लगा। मैं अकसर उसके मुतअल्लिक़ गुफ़तगू किया करता था। जब गुफ़तगू ख़त्म हुई तो हज़रत ने फ़रमाया मेरा गुमान है कि तुम ने इफ़तार नहीं किया मैंने कहा नहीं। आप अलैहिस्सलाम ने खाना मंगाया और जब मेरे सामने रखा तो एक गुलाम को हुक्म दिया मेरे साथ खाने का, जब हम दोनों खा चुके तो फ़रमाया उस तकिया को उठाओ और जो उसके नीचे है उसे ले लो। मैंने उठाया तो उसके नीचे दीनार थे। मैंने उसे उठा कर अपनी आसतीनों में रख लिये। हज़रत ने चार गुलामों को हुक्म दिया कि मेरे घर तक मुझे पहुंचा दें मैंने कहा इब्ने मुसय्यब के गुलाम घूमते फिरते हैं। मैं नहीं चाहता कि आप

के गुलाम मेरे साथ देख कर वह पूछ गछ करें। फ़रमाया तुम्हारी राये साएब है अल्लाह तुम्हारी मदद करे और गुलामों से कहा जहां से तुम्हें लौटाना चाहें पलट आना। जब मैं अपने घर के क़रीब पहुंचा और इतमीनान हो गया तो उनको लौटा दिया। मैंने घर में जाकर चिराग़ मंगाया और दीनार गिने तो 48 थे मेरे ऊपर कर्ज़ा 28 दीनार था उसमें एक दीनार ज़्यादा चमकदार था मुझे उसकी खुशनुमाई पर तअज्जुब हुआ चिराग़ के क़रीब देखा तो उस पर वाज़ेह हुरूफ में लिखा था 28 दीनार कर्ज़े के लिये हैं बाक़ी तुम्हारे लिये। हालांकि खुदा की क़सम मैंने नहीं बताया था कि मुझ पर कितना क़र्ज़ है रब्बुल आलमीन ख़ुदा का शुक्र है कि उसने अपने वली को यह इज़्ज़त बख़शी।

5. रावी कहता है कि इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम उसी साल हज को गये थे जिस साल हारून हज को गया था जब कोहे फ़ारेह के पास पहुंचे जो मक्का जाते हुये बायें तरफ पड़ता है तो आप ने फ़रमाया। इस पर इमारत बनाने वाले और उसको मुन्हदिम करने वाले का एक एक अज़ो जुदा कर दिया जायेगा।

हम इसके माने न समझे हज़रत के वहां से जाने के बाद हारून आया और उसी जगह उतरा उसका वज़ीर जाफर बिन यहया बर्मकी उस पहाड़ पर चढ़ा और हुक्म दिया कि यहां उसके लिये एक मकान बनायें ताकि उसमें आकर ठहरे। जब मक्का से वापस हुवा तो फिर चढ़ा और उसके गिराने का हुक्म दिया। जब इराक पहुंचा तो बहुक्मे हारून उसके जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर दिये गये।

6. इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया मैं इमाम रेज़ा

अलैहिस्सलाम पर कुछ मांगने में ज़ोर दे रहा था वह वादा फ़रमा चुके थे एक दिन हज़रत हाकिमे मदीना के इस्तेक़्बाल को निकले मैं भी आप अलैहिस्सलाम के साथ था। आप फुलां क़स्र के सामने पहुंच कर चन्द दरख़्तों के साये में बैठ गये मैं भी बैठ गया। मेरे और हज़रत के सिवा और कोई वहां नहीं था मैंने कहा आज ईद का दिन है और मेरे पास कुछ भी नहीं, हज़रत ने अपना कोड़ा ज़ोर से ज़मीन पर रगड़ा फिर अपना हाथ मारा और सोने की एक ईंट उठा कर कहा लो इससे काम चलाओ। हम से जो देखा है इससे किसी दूसरे को ख़बरदार न करना।

7. यासिर ख़ादिम और रय्यान बिन सलत दोनो रावी हैं कि जब अमीन की सल्तनत का दौर ख़त्म हुवा और मामून बादशाह बना तो उसने इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम को ख़ुरासान बुलाया हज़रत ने हुस्ने तदबीर से टालना चाहा मगर मामून बराबर लिखता रहा जब हज़रत ने जान लिया कि अब बे कुबूल किये चारएकार नहीं और वह मानेगा नहीं तो आप ने इरादा–ए–सफ़र किया। इमाम मोहम्मद तक़ी की उम्र उस वक़्त सात साल की थी, मामून ने लिखा कि आप बराहे दैलम व कुम न आयें (यहां शीया ज़्यादा थे अंदेशा था कि रोक न लिये जायें।) बल्कि बराहे बसरा व अहवाज़ व फ़ारस मर्व पहुंचें, जब आप अलैहिस्सलाम वहां पहुंचे तो उस ने अम्रे ख़िलाफ़त को इम्तेहानन) आप के सामने पेश किया। आप ने इंकार फ़रमाया। तब उस ने वली अहदी के बारे में कहा।

हज़रत ने फ़रमाया इसके मुतअल्लिक़ कुछ शराएत हैं जिनका जवाब मैं चाहता हूं। मामून ने कहा जो आप चाहें पूछें फ़रमाया मैं वली अहदी इस सूरत में कुबूल करूंगा कि

न कोई हुक्म दूंगा न रोकूंगा न फ़तवे दूंगा न कोई मुक़द्दमा फ़ैसल करूंगा न किसी को हाकिम मुकर्रर करूंगा न किसी चीज़ में तबदीली करूंगा आप मुझे इन तमाम मामलों में माफ़ फरमायेंगे। मामून ने इन सब बातों का जवाब दिया और मंजूर किया।

यासिर गुलामे इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम का बयान है कि जब ईद आई तो मामून ने इमाम अलैहिस्सलाम के पास पैग़ाम भेजा कि वह सवार होकर तशरीफ़ ले जायें और नमाज़ पढ़ायें और खुतबा बयान करें। हज़रत ने जवाब दिया कि वली अहदी कुबूल करने में जो शराएत मैंने पेश की हैं उनका आपको इल्म है। उसने जवाब में कहला भेजा कि मेरा मक़सद इससे सिर्फ़ यह है कि आप अलैहिस्सलाम की तरफ़ से लोगों के कुलूब मुतमइन हो जायें और आप अलैहिस्सलाम की फ़ज़ीलत को लोग पहचान लें। हज़रत बराबर तरदीद फ़रमाते रहे और मामून का इसरार रहा। आप ने फ़रमाया अगर मुझे माफ़ ही कर दिया जाये तो यह मेरे लिये ख़ुशी का बाइस होगा और अगर मेरा उज़्र कुबूल नहीं तो फिर नमाज़ के लिये निकलूंगा जिस तरह रसुलूल्लाह और अमीरूल मोमेनीन निकले थे। मामून ने कहा मुझे इसमें कोई उज़्र नहीं है फिर मामून ने हुक्म दिया अपने सरदारों और अहलकारों को वह सवार होकर इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर जायें। यासिर कहता है कि लोग हज़रत की शान देखने के लिये रास्तों और मकानों की छतों पर आ बैठे। मर्द, औरतें और बच्चे सब और दरबारी सरदार और फ़ौजी जवान हज़रत के दरवाज़े पर आ मौजूद हुये। जब सुबह हुई तो हज़रत ने गुस्ल फ़रमाया और सूती अमामा बांधा और एक छोर सीने पर

लटकाया। दूसरा दोंनो शानों पर रखा। और अपने गुलामों से फ़रमाया तुम भी ऐसा करो फिर अपने हाथ में असा लिया। जब हज़रत बाहर तशरीफ़ लाये तो हम सब हज़रत इमाम अलैहिस्सलाम के आगे आगे थे आप पा बरहना और पाजामे के पाईंचे निस्फ़ साक़ तक उठे हुये थे और दामन गरदाने हुये थे।

जब हज़रत चले और हम आप के साथ चले तो अपना सर आसमान की तरफ उठाया और चार तकबीरें कहीं हम ने खयाल किया कि आसमान और शहर के दरो दीवार उनका जवाब दे रहे हैं हम ने कहा कि सरदाराने सल्तनत और आम लोग तैय्यार हैं हथियार लगाये हुये हैं और खूब आरास्ता व पैरास्ता हैं जब हम इस सूरत से निकले और इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम भी बरआमद हुये तो आप थोड़ी देर दरवाज़े पर ठहरे और चार मरतबा अल्लाहो अकबर फ़रमाया और फिर कहा शुक्र है उस खुदा का जिस ने हमें हिदायत की। अल्लाहो अकबर उसने चौपायों के गोश्त का हम को रिज़क दिया और हम्द है उस खुदा की ज़िस ने हमें आज़माइश में डाला। हज़रत के साथ हमारी आवाज़ें भी बुलन्द हुई। यासिर गुलाम ने कहा आवाज़े गिरया से शहरे मर्व गूंज उठा। जब लोगों ने इमाम अलैहिस्सलाम को बरहना पा देखा और यह कि दस दस कदम चल कर रुक जाते हैं और तीन तकबीरें कहते हैं तो हमने गुमान किया कि आसमान व ज़मीन और पहाड़ तकबीरों का जवाब दे रहे हैं और तमाम मर्व में जोशे गिरया व बुका हैं जब मामून को यह ख़बर मिली तो उसके वज़ीर फैसल बिन सुहैल ने कहा कि अगर इमाम इसी तरह ईदगाह तक पहुंचे तो लोग उनके गिरवीदा हो जायेंगे मेरी

राय यह है कि आप उनसे लौट जाने को कहें। चुनांचे मामूंन ने ऐसा ही किया। इमाम अलैहिस्सलाम ने अपने जूते मंगाये पहन कर सवार हुये और लौट आये।

8. यासिर से मरवी है कि बग़दाद के इरादे से मामून खुरासान से चला। फ़ज़्ल उसका वज़ीर और इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम भी उसके साथ थे राह में फ़ज़्ल को उसके भाई हसन बिन सहल का एक ख़त मिला।

मैंने इल्मे नुजूम से मालूम किया कि फुलां महीने तुम यौमे चहार शंबा गरमी–ए आहन व आतिश का ज़ायक़ा चखोगे यानी क़त्ल कर दिये जाओगे और मसलेहत यह है कि तुम और अमीरूल मोमिनीन और इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम उस दिन जब हम्माम में दाखिल हों तो तू हजामत कराना (पछने लगवाना) और जो ख़ून निकले उसे अपने हाथ पर डालना ताकि नहूसत तुझसे दूर रहे जुर्रियासतैन ने मामून को इत्तेला दी और दरख़्वास्त की कि अबुल हसन को भी इत्तेला दे दो मामून ने इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम को लिखा। इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम ने जवाब में लिखा कि मैं कल हम्माम में न जाउंगा आज रात मैंने रसूलुल्लाह स0 को ख़्वाब में देखा फ़रमा रहे हैं ऐ अली कल हम्माम में न जाना। मेरी राय में कल हम्माम में न आप जायें और न फ़ज़्ल। मामून ने लिखा। ऐ मेरे सरदार आप भी सच्चे हैं और रूसुलूल्लाह भी, मैं कल नहीं जाऊंगा और फ़ज़्ल को तो खुद ही इल्म है। यासिर ने बयान किया जब शाम हुई और सूरज डूब गया तो इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम सब कह दो कि इस रात में जो हादसा होने वाला है हम उसके लिये खुदा से पनाह मांगते हैं यही बार बार फ़रमाते रहे जब सुबह हुई

तो इमाम ने मुझ से फ़रमाया छत पर जाओ और सुनो क्या आवाज़ आती है मैं ऊपर गया तो शोर व गुल सुना जो बढ़ता ही चला गया पस मामून की तरफ़ चले तो उस दरवाज़े से दाख़िल हुवा जो उसके घर से इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम के घर की तरफ़ था वह हज़रत की तरफ़ था वह हज़रत को देख कर कहने लगा। ऐ मेरे आक़ा अबुल हसन ख़ुदा आपको अज्र दे उसने मेरी बात मानने से इंकार किया और हम्माम में चला गया। कुछ लोग तलवारें लेकर आये और उसको क़त्ल किया उनमें से तीन आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया गया एक उन में से उसकी ख़ाला का बेटा फ़ज़्ल बिन क़लमैन (दो दफ्तरों का मुंशी) था यासिर ने कहा पस जमा हुये लशकर और सरदार जिनका ताल्लुक़ फ़ज़्ल से था और आये मामून के दरवाजे पर और कहने लगे उसी ने बहकाया और क़त्ल कराया है यानी मामून ने हम उसके ख़ून का बदला जरूर लेंगे और वह आग लेकर आये ताकि उसका दरवाज़ा जला दें। मामून ने कहा ऐ मेरे आक़ा अबुल हसन आप जाकर उन लोगों को प्रागंदा कीजिये। यासिर कहता है हज़रत सवार हुए और मुझसे कहा तू भी सवार हो हम घर के दरवाजे से जब निकले तो बहुत से लोगों ने मुज़ाहिमत की। हज़रत ने अपना हाथ उठा कर कहा मुतफ़र्रिक हो जाओ यासिर का बयान है कि लोग इस तरह बेताबी से आगये कि एक के ऊपर एक था पस हज़रत ने जिसको इशारा किया वह सवार हो कर चल दिया।

9. मुसाफ़िर गुलामे इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम का बयान है कि हारून बिन मुसय्यब हाकिमे मदीना ने चाहा कि जंग करके मोहम्मद बिन सादिक़ से जिन्हों ने मक्के

में खुरूज किया था और ज़ैदिया फिरक़े के इमाम थे और ख़ुरासान में वफ़ात पाई) इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम ने मुझसे फ़रमाया कि तुम हाकिमे मदीना के पास जाओ और उससे कहो कल ख़ुरूज न करना वर्ना शिकस्त खायेगा और तेरे असहाब क़त्ल कर दिये जायेंगे। अगर पूछे तू ने कैसे जाना तो कह देना कि मैंने ख़्वाब देखा है मैं उसके पास गया और कहा कल आप खुरूज न करें वर्ना शिकस्त होगी और आप के अस्हाब क़त्ल हो जायेंगे उसने कहा तुझे कैसे मालूम मैंने कहा ख़्वाब में देखा है उसने अज़ राहे तमसख़ुर कहा। गुलाम बग़ैर आब दस्त लिये सो गया यानी उसने खवाब को एतबार के क़ाबिल न समझा नतीजा यह हुवा कि उसने खुरूज किया और हार गया। मुसाफिर ने कहा मैं इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम के पास था। यहया बिन खालिद बर्मकी उधर से गुज़रा उसके घोड़े की गर्द से हज़रत का चेहरा गर्द आलूद हो गया। आप ने फ़रमाया यह बेचारे क्या जानें कि इस साल क्या हादसा पेश आयेगा (फ़ज़्ल बिन यहया का क़त्ल) फिर मुसाफ़िर ने कहा हज़रत ने फ़रमाया इस से ज़्यादा अजीब वाक़िआ हारून का है। मैं इसका मतलब न समझा यहां तक कि हारून की क़ब्र हज़रत के पाईने पा रही।

10. रावी कहता है कि मेरे एक दोस्त ने मुझे ख़बर दी कि हज़रत इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम के पास कोई बहुत सा माल ले कर आया आप ने इज़हारे मसर्रत न किया। लाने वाला रंजीदा हुआ और अपने दिल में कहने लगा। मैं इतना माल लाया हज़रत इस पर खुश न हुये। आप अलैहिस्सलाम

ने गुलाम से फ़रमाया तश्त और पानी ला। उसके बाद आप कुर्सी पर बैठे और गुलाम से फ़रमाया पानी डाल। आप की उंगलियों से तश्त में सोना गिरने लगा। फिर आप ने उस शख़्स से कहा जिस पर ख़ुदा का यह फ़ज़्ल हो उसको क्या परवाह है उस माल की जो उसके पास लाया गया।

11. इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम ने 49 साल की उम्र में 202 हिजरी में इंतक़ाल फ़रमाया और इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम दो या तीन माह कम व बेश बीस साल ज़िन्दा रहे।



एक सौ बीसवां बाब

ज़िक्र विलादते इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम

इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम माहे रमज़ान 195 हिजरी में पैदा हुए और आख़िर ज़ीक़ादा 220 हिजरी में ब उम्र 25 साल दो माह 18 दिन रेहलत फ़रमाई और बग़दाद के मक़ाबिरे कुरैश में अपने जद इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम के पास दफ़्न हुए जिस साल आपकी वफ़ात हुई उसके अव्वल में मोतसिम ने आपको बग़दाद में बुलाया था आपकी वालिदा कनीज़ थीं जिनका नाम सबीका सोबिया था और उनको ख़ेज़रान भी कहते थे एक रिवायत में है कि वह मारिया कुब्तियह मादरे इब्राहीम बिन रसुलूल्लाह स0 के ख़ानदान से थीं।

1. अली बिन ख़ालिद से मरवी है कि मोहम्मद ने जो अक़ीदतन ज़ैदी थे बयान किया मैं सिपाही था। मुझे ख़बर

मिली कि नाहिया शाम से एक शख़्स कैद करके लाया जा रहा है और लोग कह रहे हैं उसने नबुव्वत का दावा किया है। अली बिन खालिद ने कहा मैं शहर के दरवाज़े पर आया और दरबानों पहरेदारों को हटाता हुआ उस शख़्स तक पहुंचा मैंने देखा कि वह साहिबे अक़्ल व फ़हम इंसान है। मैंने उससे कहा। ऐ शख़्स तेरी सर गुज़शत और मामला क्या है। उसने कहा मैं मुल्के शाम का रहने वाला हूं इस जगह मशगूले इबादत था जिस मक़ाम को रासुल हुसैन कहते हैं। इस हालत में कि मैं मशगूल था एक शख़्स मेरे पास आया और मुझसे कहने लगा खड़ा हो और मेरे साथ चल। मैंने कहा अच्छा। नागाह मैंने अपने को मस्जिदे कूफ़ा में पाया। उसने कहा जानता हैं यह कौन सी जगह है? मैंने कहा हां यह मस्जिदे कुफ़ा है उसने वहां नमाज़ पढ़ी मैंने भी उसके साथ वहां नमाज़ पढ़ी मैं उसके साथ रहा नागाह हम मदीना में मस्जिदे रसूल स० में पहुंच गये। उसने रसूलुल्लाह को सलाम किया मैंने भी किया। उसने नमाज़ पढ़ी मैंने भी पढ़ी उसने रसूलुल्लाह पर दुरूद भेजा। नागाह मैंने अपने आपको मक्के में पाया। मैं उसके साथ रहा। उसने मनासिक अदा किये मैंने भी किये नागाह मैंने अपने आपको फिर उसी जगह पाया। जहां मैं शाम में इबादत कर रहा था। उसके बाद वह शख़्स चला गया। दूसरे साल फिर वह आया और वही अमल किया जो गुज़िश्ता साल किया था जब हम मनासिके हज से फ़ारिग़ हुये और उसने मुझे शाम वापस किया और मूझसे जुदा होना चाहा। तो मैंने कहा। मैं क़सम देता हू उस ज़ात की जिस ने आपको यह कुदरत दी है जिसको मैंने देखा मुझे यह बताइये कि आप कौन हैं ? फ़रमाया मैं मोहम्मद बिन अली बिन मूसा हूं। उसने कहा, यह ख़बर फैलनी शुरू हो

गयी यहां तक कि मोहम्मद बिन अब्दुल मलिक ज़य्यात तक पहुंची। उसने मुझे बुलाया और गिरफ़्तार कर के हथकड़ी और बेड़ी में जकड़ दिया और इराक़ की तरफ़ मुझे भेजा, रावी कहता है मैंने उससे कहा। यह क़िस्सा तुम मोहम्मद बिन अब्दुल मलिक से बयान करो (दरख़ास्त में लिखो कि मैं मुद्दई–ए–नबुव्वत नहीं हूं। बल्कि असल वाक़िया यह है) उसने ऐसा ही किया। ज़य्यात ने (जो वासिक़ बिल्लाह बादशाह अब्बासी का सिपहसालार था) जवाब में लिखा। उसी से कहो जो तुझे शाम से एक रात में कूफ़ा ले गया। और कूफ़ा और मदीना से मक्का और मक्का से फिर शाम में लौटाया कि इस कैद से रेहा करे। अली बिन ख़ालिद ने कहा कि इस वाक़ेए ने मुझे बहुत सदमा पहुंचाया और मेरा दिल कुढ़ा और मैंने उसे सब्र व ज़ब्त की तलक़ीन की। दूसरे रोज़ मैं सुबह को फिर उससे मिलने गया। नागाह मैंने देखा कि लशकर वाले चौकीदार, पहरेदार और बहुत सी मख़लूक़ जमा है मैंने कहा यह क्या मामला है लोगों ने बताया कि जो मुद्दईये नबुव्वत शाम से लाया गया था वह कल रात से गायब है ख़ुदा जाने ज़मीन निगल गई या कोई परिन्दा उसे उठा ले गया।

2. रावी कहता है कि मैं मदीने रसूल स0 में मुक़ीम था मैं देखा करता था कि इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम हर रोज़ वक़्ते ज़वाल मस्जिदे रसूल में आते। सहेन में उतरते और क़ब्रे रसूल स0 के पास जाकर सलाम करते और बैते फ़ातिमा की तरफ़ लौट जाते अपने जूते उतारते और नमाज़ पढ़ते एक रोज़ शैतान ने मेरे दिल में वस्वसा डाला कि जब हज़रत अपनी सवारी से उतरें तो बढ़ कर वह मिट्टी उठा लूं जिस पर हज़रत का क़दम रखा जाये। मैं उस रोज़

हज़रत के इंतज़ार में बैठा हुवा था ताकि मैं यह काम करूं जब ज़वाल का वक़्त आया तो हज़रत अपने गधे पर तशरीफ़ लाये लेकिन वहां न उतरे जो मस्जिद के दरवाज़े पर था।

फिर जौज़ए रसूल स0 पर तशरीफ़ लाये फिर उस जगह वापस आये जहां नमाज़ पढ़ते थे कई रोज़ ऐसा ही हुवा मैंने कहा जूता उतारेंगे तो मैं कंकरियां ले लूंगा। जिन पर हज़रत के क़दम रखे गये हों दूसरे रोज़ वक़्ते ज़वाल तशरीफ़ लाये और पत्थर पर उतरे फिर अन्दर आये। रसूलुल्लाह स0 को सलाम करके उस जगह पर पहुंचे जहां नमाज़ पढ़ते थे पर हज़रत ने बग़ैर जूता उतारे नमाज़ पढ़ी (एक क़िस्म की नअल अरबी में नमाज़ पढ़ी जा सकती है) कई रोज़ हज़रत ने ऐसा ही किया मैंने दिल में कहा यूं काम न चलेगा मुझे हम्माम जाना चाहिये जब आप हम्माम में दाखिल होंगे तो जो मिट्टी आपके क़दम के नीचे होगी ले लूंगा। मैंने पता चलाया कि इमाम अलैहिस्सलाम किस हम्माम में गुस्ल फ़रमाते हैं मालूम हुआ बकीअ़ वाले हम्माम में जो औलादे तलहा में से एक शख़्स का है पस दिन का पता लगा कर मैं हम्माम के दरवाज़े पर पहुंचा और मर्दे तलही से बात करने लगा मैं हज़रत की आमद का मुंतज़िर था तलही ने कहा अगर हम्माम करने का इरादा है तो उठो और अन्दर दाख़िल हो वरना बहुत देर फिर मौक़ा न मिलेगा। मैंने कहा यह क्यों ? फरज़न्दे इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम हम्माम में दाख़िल होना चाहते हैं मैंने कहा यह कौन हैं मैंने कहा आले मोहम्मद स0 से हैं साहिबे जुहद व तक़वा हैं मैंने कहा क्या उनके साथ हम्माम में कोई और नहीं जा सकता? उस ने कहा हम उन के लिये हम्माम ख़ाली करा देते हैं हम यह बातें कर ही रहे

थे कि हज़रत तशरीफ़ ले आये। आप के साथ नौकर थे एक नौकर के पास बोरिया था जब हज़रत लिबास उतारने की जगह दाख़िल हुये तो उसने बोरिया बिछा दिया आप गधे पर सवार होकर हम्माम में दाख़िल हुए और जब कपड़े उतारने की जगह पर पहुंचे तो बोरिये पर उतरे मैंने मद्रे तलही से कहा क्या यही हैं जिनके जुहद व तक़वा और सलाहे नफ़्स की तू ने तारीफ़ की। उसने कहा वल्लाह यही हैं ऐसा अमल उन्हों ने कभी नहीं किया जैसा आज किया हैं।

मैंने अपने दिल में कहा यह असर मेरे इरादे का है जिसे मैं खींचे चला आ रहा हूं मैं हज़रत के निकलनें का इंतेज़ार करता हूं शायद जो मेरा मक़सद है वह पूरा हो जाये जब आप बर आमद हों। आप हम्माम से निकले तो कपड़े पहने और गधे को मंगाया। गुलाम ने मस्लख़ में (कपड़े उतारने की जगह) दाख़िल किया। आप बोरिये पर से सवार हुए और चले गये। मैंने दिल में कहा मैंने हज़रत को अज़ीयत दी अब इस ख़याल की तरफ़ ने लौटूंगा और कभी ऐसा इरादा न करूंगा। उसी रोज़ वक्ते ज़वाल जब सवार होकर आये तो सहेन में उसी जगह उतरे जहां उतरा करते थे रसूलुल्लाह(के मज़ार) को सलाम किया और उस जगह आये जहां बैते फ़ातिमा में नमाज़ पढ़ा करते थे जूते उतार डाले और नमाज़ पढ़ने लगे।

(इस हदीस से मालूम हुआ कि इमामे वक़्त लोगों के इरादे से वाक़िफ़ होता है।)

3. अली इब्ने असबात से मरवी है कि इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम मेरी तरफ़ आये तो मैंने आप के सरापे को ग़ौर से देखा ताकि मैं आपके क़द व क़ामत का तज़किरा

अपने अस्हाब से मिस्र में करूं मैं ग़ौर ही कर रहा था कि आप बैठे और फ़रमाया। ऐ अली! ख़ुदा ने इमामत में भी वही मेयारे हुज्जत रखा जो नबुव्वत में है एक जगह फ़रमाता है हम ने उसको अपना हुक्मे (नुबुव्वत) बचपन में दिया दूसरी जगह फ़रमाता है जब वह पूरी कुव्वत वाला हो गया और चालीस साल की उम्र का हुआ। पस यह भी जाएज़ है कि अपना हुक्म बचपन में दे दे और यह भी जायज़ है कि चालीस साल के बाद दे (आपका यह मक़सद था कि तुम मेरे बचपन के क़द व क़ामत पर न जाओ खुदाई ओहदे का तअल्लुक़ किसी सन् से मखसूस नही।

4. रावी कहता है कि इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम के किरदार को आज़माने के लिये मामून ने बहुत सी तदबीरें कीं ताकि आपका फ़िस्क़ ज़ाहिर हो लेकिन उसे कामयाबी न हुई चूंकि उसकी ख़ॉहिश थी अपनी बेटी से रिश्ता करने की लेहाज़ा एक तदबीर उसने यह भी की कि दो सौ निहायत हसीन कनीज़ें हज़रत के पास भेज दीं जिन में से हर एक के पास निहायत खुशनुमा जाम था उसमें मोती या जवाहिरात पड़े हुये थे और हुक्म दिया कि जब वह अपने बुज़ुर्गों की तरह शाने इमामत दिखा रहे हों उनके सामने जायें और इशवा गरी दिखायें जब वह आई तो हज़रत ने कोई तवज्जुह न फरमाई जब मामून इस तदबीर से नाकाम हुवा तो मखारिक़ गवैय्ये को जो दराज़ रीश था बुलाया। उसने कहा कि अगर उनके दिल में दुनयावी ख़ाहिश ज़रा सी होगी तो मैं ज़रूर कामयाब हूंगा। पस मामून के महल में वह इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम के सामने बैठा और ऐसी बुलन्द आवाज़ से गाने लगा कि उस घर के तमाम लोग जमा हो

गये वह अपनी सारंगी बजा रहा था और गा रहा था देर तक यह सिलसिला जारी रहा मगर हज़रत ने उसकी तरफ़ कोई तवज्जोह नहीं की न दाहिनी तरफ देखा न बाई तरफ़, फिर अपना सर उठा कर फ़रमाया ओ! मर्दे दराज़ रीश खुदा से डर, हज़रत केयह फ़रमाते ही मिज़राब और बाजा उसके हाथ से गिर गया और मरते दम तक उसके दोनों हाथ बेकार हो गये। मामून ने उसका हाल पूछा तो उसने कहा जब इमाम अलैहिस्सलाम ने मुझे डांटा तो मेरे बदन में ऐसा लर्ज़ा पैदा हुवा जिसका असर आज तक है।

5. दाऊद ने कहा कि मैं इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम के पास आया तो मेरे पास तीन खत थे जिनके शुरू में जिसके लिए लिखा गया है उसका नाम न था, मैं शुबहे में पड़ गया और ग़मगीन हुआ। हज़रत ने उन में से एक को लेकर फ़रमाया। यह ख़त ज़ियाद बिन शेब के नाम है फिर दूसरा उठा कर फ़रमाया यह फुलां के नाम है, मैं हैरान हो गया। हज़रत ने मुझे देख कर तबस्सुम किया। फिर मुझे तीन सौ दीनार दे कर फ़रमाया इनको मेरे फुलां चचाज़ाद भाई के पास ले जाओ। वह तुझ से कहेगा कि किसी ऐसे तजुर्बे कार को बताओ जो मेरे लिये सामान ख़रीद दे। रावी कहता है एक सारबान ने मुझसे कहा। मैं हज़रत से उसके नौकर रखने के बारे में बात चीत करूं। मैं हज़रत के पास इस बारे में बात चीत करने के लिये गया लेकिन मैंने देखा कि हज़रत तनावुल फ़रमा रहे हैं और आपके पास कुछ लोग हैं मैं उनके सामने कुछ न कह सका। फिर मुझसे फ़रमाया। ऐ अबू हाशिम खाओ और मेरे सामने खाना रखा। हज़रत ने बग़ैर कुछ कहे खुद ही फ़रमाया। ऐ गुलाम इस सारबान को

बुला जिसे अबू हाशिम लाये हैं और अपने पास रख और यह भी रिवायत की कि एक दिन मैं हज़रत के साथ बाग में दाख़िल हुआ। मैंने कहा मैं मिट्टी खाने की तरफ़ राग़िब हूं पस आप दुआ फ़रमायें यह सुन कर ख़ामोश हो गये। तीन दिन बाद ख़ुद ही फ़रमाया। ऐ अबू हाशिम तुम्हारा मिट्टी खाना ख़त्म हुआ। अबू हाशिम का बयान है कि उस रोज़ से कोई चीज़ मेरे नज़दीक मिट्टी से ज़्यादा क़ाबिले नफ़रत न थी।

6. मोहम्मद बिन अली हाशमी कहता है कि मैं आया इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम के पास उस सुबह को जिसकी शब में आप अलैहिस्सलाम की शादी बिन्ते मामून से हुई थी। मैंने रात को दवा खाई थी सब से पहले उस सुबह को आने वाला मैं था मुझे प्यास लगी मैंने पानी मांगना मुनासिब न जाना, हज़रत ने मेरी तरफ़ देख कर फ़रमाया। मालूम होता है कि तुम प्यासे हो, मैंने कहा हां, हज़रत ने गुलाम या कनीज़ से कहा। हमें सेराब कर (यह न फ़रमाया इसे सेराब कर) मेरे दिल में यह बात आई कि अगर मेरे लिये मांगते तो शायद यह लोग ज़हर मिला लाते इस ख़याल से रंजीदा था। गुलाम पानी लेकर आया तो हज़रत मुझे देख कर मुसकुराये। गुलाम से कहा मुझे पानी दे हज़रत ने पानी लेकर पिया फिर मुझे दिया तो मैंने पी लिया। मुझे फिर प्यास मालूम हुई फिर मैंने पानी मांगना मुनासिब न जाना हज़रत ने फिर वही किया जो पहले किया था हज़रत ने फिर पहले ख़ुद पिया बाद में मुझे पिलाया और तबस्सुम फ़रमाया। मोहम्मद बिन हमज़ा से कहा मुझ से हज़रत ने फ़रमाया यह हाशमी ऐसा ही है जैसा लोग कहते हैं। (शकी)

7. इब्राहीम ने अपने बाप से रिवायत की है कि इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम से अतराफ़ के शियों के एक गिरोह ने इजाज़त चाही जब हज़रत ने इजाज़त दी वह लोग आये और एक की मज्लिस में 30 हज़ार सवाल किये हज़रत ने उन सब के जवाब दिये जबकि आपकी उम्र 10 साल थी।

8. रावी कहता है इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ हज़रत ने एक चीज़ का हुक्म दिया। मैंने अल–हम्दो लिल्लाह न कहा हज़रत ने फ़रमाया तुम ने अल–हम्दो लिल्लाह क्यों न कहा। इसके बाद जब मैं इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में आया तो आप ने मुझे एक चीज़ का हुक्म दिया मैंने अल–हम्दो लिल्लाह कहा। फ़रमाया अब तुम ने अदब हासिल किया।

9. रावी कहता है कि मैं इमाम नक़ी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में आया हज़रत ने फ़रमाया ऐ मोहम्मद आले फ़रज (गुलाम अली इब्ने यक़तीन) के लिये कोई हादेसा पेश आया मैंने कहा उमर (फ़रज का बेटा) मर गया। हज़रत ने 24 बार अल–हम्दो लिल्लाह कहा मैंने कहा अगर मैं जानता कि यह खबर आप को इतना ख़ुश करेगी तो पा बरहना दौड़ता हुआ आता। फ़रमाया क्या तुम नहीं जानते हो कि इस मलऊन ने मेरे वालिद से कहा था मैंने कहा मुझे इल्म नहीं। फ़रमाया उन्हों ने किसी मुआमले में उससे मुख़ातिब किया तो उसने कहा आप नशे में हैं हज़रत ने फ़रमाया ख़ुदा तो जानता है कि मैं रोज़े से हूं पर उसको हर्ब का मज़ा चखा और क़ैद की ज़िल्लत दे। पस ब ख़ुदा चन्द ही रोज़ गुज़रे थे कि उसका माल और जो कुछ था वह लुट गया और वह क़ैद कर लिया गया। और अब वह मर गया। ख़ुदा उस पर रहम न करे।

ख़ुदा ने उससे इंतेक़ाम लिया। और हमेशा उसके औलिया उसके दुश्मनों से बदला लेते रहेंगे।

10. रावी कहता है मैंने मस्जिदे मुसय्यब में इमाम मोहम्मद तक़ी के साथ मेहराबे मस्जिद में नमाज़ पढ़ी (ज़िक्रे नमाज़े मग़रिब इस लिये है कि मुसाफ़िर और मुक़ीम सब के लिये रकआत बराबर हैं) वहां बेरी का एक सूखा दरख़्त था। हज़रत ने पानी मंगाकर उस दरख़्त के नीचे वज़ू किया वह हरा भरा हो गया और हर साल फल देने लगा।

11. मुतरफ़ी कहता है इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम का इंतेक़ाल हो गया और मेरे उन पर चार हज़ार दिरहम कर्ज़ थे मैंने दिल में कहा कि यहं मेरा माल गया इमाम मोहम्मद तकी अलैहिस्सलाम ने मेरे पास पैग़ाम भेजा कि इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम का इंतेक़ाल हो गया है और तुम्हारे उन पर चार हज़ार दिरहम हैं वह ले जाओ मैं गया तो हज़रत ने उस मुसल्ले को उठाया जिस पर बैठे थे उसके नीचे उतने ही दिरहम थे हज़रत ने वह मेरे हवाले किये।

12. मोहम्मद बिन सिनान से मरवी है कि हज़रत इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम का इंतेक़ाल 25 साल 3 माह और 12 दिन की उम्र में हुआ और रोज़े सेहशंबा 6 ज़िलहिज्जा को 220 हिजरी में यह वाक़ेआ पेश आया। अपने वालिद माजिद के बाद आप 25 रोज़ कम 19 साल ज़िन्दा रहे।



एक सौ इक्कीसवां बाब

ज़िक्रे विलादते इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम

हज़रत की विलादत 15 ज़िल हिज्जा 212 हिजरी में हुई और एक रिवायत में है कि माह रजब अल मुरज्जब 214 हिजरी को पैदा हुऐ और 4 जमादिल आखिर 254 हिजरी में इंतेक़ाल हुआ। एक रिवायत में है कि आपका इंतेक़ाल रजब 254 हिजरी में हुआ जबकि आपकी उम्र 41 साल थी और एक रिवायत के मुताबिक़ 40 साल 6 माह, मुतवक्किल अब्बासी ने यहया बिन हर्समा बिन अअ़युन के साथ आपको मदीने से सामरा बुलाया वहीं हज़रत ने वफ़ात पाई और अपने ही घर में दफ़न हुऐ आप अलैहिस्सलाम की वालिदा माजिदा कनीज़ थीं जिनका नाम समाना था।

1. खैरान का बयान है कि मैं मदीने में इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ हज़रत ने पूछा वासिक़ का क्या हाल है? मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हूं मैंने उसको मअल ख़ैर छोड़ा है मैं अज़ रूये ताल्लुक़ सब से ज़्यादा क़रीब हूं दस रोज़ हुए कि मैं उससे जुदा हुआ हूं। फ़रमाया अहले मदीना कहते है कि वह मर गया है। जब इमाम अलैहिस्सलाम ने यह फ़रमाया तो मैं समझ गया कि यह हज़रत ही ने फ़रमाया है फिर फ़रमाया जाफ़र बरादरे वासिक़ का क्या हाल है? मैंने कहा वह क़ैद ख़ाने में बुरे हाल से है। फ़रमाया वह साहबे हकूमत होगा। फिर फ़रमाया मोहम्मद इब्ने अब्दुल मलिक ज़य्यात का क्या हाल है मैंने कहा वह ब दस्तूर सिपह सालार है और लोग उसके साथ हैं

और उसका हुक्म नाफ़िज़ है फ़रमाया नहूसत उस पर छा गई है यह फ़रमाकर आप ख़ामोश हो गये फिर फ़रमाया जो मुकद्दराते इलाहिया हैं उनका जारी होना ना गुज़ीर है ऐ खैरान वासिक़ मर गया और उसकी जगह मुतवक्किल जाफ़र बादशाह बन गया और इब्ने ज़य्यात क़त्ल कर दिया गया। मैंने अर्ज़ किया कब ? फ़रमाया तेरे वहां से निकलने के 6 दिन बाद।

2. सालेह बिन सईद से मरवी है कि मैं इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की यह दुश्मन (मुतवक्किल वग़ैरह) आप अलैहिस्सलाम के नूर को बुझाना चाहते हैं और आप को बे इज्ज़त करने की सई करते हैं आप अलैहिस्सलाम को उस बद तरीन घर में मेहमान बुलाकर मुक़ीम किया है जो ख़ानुस्सआलीक यानी मोहताज ख़ाना है। हज़रत ने फ़रमाया ऐ इब्ने सईद यहां आओ फिर अपने हाथ से इशारा कर के फ़रमाया। यह देखो, मैंने देखा कि खुशनुमा हीरे भरे बाग़ात हैं उनमें हसीन औरतें खूशबू में लपटी उड़ रहीं हैं ख़ूबसूरत लड़के चमकदार मोतियों की तरह मौजूद हैं, तुयूर खुशनवा हैं ख़ूबसूरत हिरन हैं, नहरें जारी हैं, मैं यह देख कर हैरान रह गया। फ़रमाया हमारे लिये यह सामान हर जगह मौजूद है हम मोहताज ख़ाने में नहीं।

3. इसहाक़ जल्लाब से मरवी है कि मैंने सामरा में इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम के लिये बहुत सी बकरियां कुरबानी के लिये ख़रीदीं हज़रत एक वसीअ़ असतबल में ले गये जिसे मैंने कभी न देखा था। फिर हज़रत के हुक्म के मुताबिक हर शख़्स के नाम की बकरी जुदा करने लगा। फिर हज़रत ने मुझे इमाम मोहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम और

उनकी वालिदा वग़ैरह के पास भेजा, उसके बाद मैंने हज़रत से बग़दाद वापस जाने और अपने वालिद से मिलने के लिये इजाज़त चाही यह यौमे तरविया था। हज़रत ने फ़रमाया कल हमारे पास रहो। फिर चले जाना। मैं ठहर गया यौमे अरफ़ा में हज़रत ही के पास रहा। सुबह को ईदुल अज़हा थी जब सुबह हुई तो हज़रत मेरे पास आये और फ़रमाया ऐ इसहाक़ उठ। मैं खड़ा हो गया। आंख खोली तो मैं बग़दाद में अपने मकान के दरवाज़े पर था। अंदर दाख़िल हो कर मैं अपने वालिद और अइज़्ज़ा से मिला। मैंने उनसे कहा अरफ़ा तो मैं ने असकर (सामरा में किया और ईद बग़दाद में की।

4. रावी कहता है कि मुतवक्किल के फोड़ा निकला जिसकी तकलीफ़ से वह मरने के क़रीब हो गया किसी को इतनी जसारत न होती थी कि नशतर से शेगाफ़ दे दे। उसकी मां ने नज़र की कि अगर शिफ़ा हो जायेगी तो अपने माल से बहुत सा माल हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम को देगी। फ़तह बिन ख़ाक़ान वज़ीर मुतवक्किल ने कहा कि किसी इमाम अलैहिस्सलाम के पास भेजा जाये और इलाज के लिये कहा जाये मुमकिन है उनके पास कोई ऐसा इलाज हो जिस से आपको सुकून हासिल हो जाये। चुनांचे एक आदमी इमाम अलैहिस्सलाम के पास भेजा और उसने हाल बयान किया वह शख़्स लौट आया और कहा इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि बकरी की मेंगनी को अरक़े गुलाब में मिलाया जाये और लुगदी बना कर फोड़े पर रखी जाये। लोगों ने इसका मज़ाक़ उड़ाया। फ़तह ने कहा ऐसा न करो अअलमे ज़माना हैं जो कुछ फ़रमाया है उसका असर जानते हैं पस मेंगनी मंगवा कर हसबे फ़रमूदा–ए–इमाम

अमल किया गया। जब लुगदी को फोड़े पर रखा तो नींद ग़ालिब हुई और सुकून मिला और फोड़ा फूट गया और मवाद बाहर आ गया।

उसकी मां को सेहत की बशारत दी गई उसने हज़रत के पास दस हज़ार दीनार भेजे और अपनी मोहर लगा दी जब मुतवक्किल अच्छा हो गया तो बतहा के एक अलवी ने कहा कि इमाम के पास लोग हथियार, और माल लाते हैं उसने अपने दरबान हाजिब से कहा कि रात को छापा मारो और जो कुछ घर में हो उसे ले आओ अज़ क़िस्मे माल व हथियार इब्राहीम बिन मोहम्मद रावी है कि मुझ से सईद हाजिब ने कहा मैं रात को हज़रत इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम के घर गया मेरे साथ सीढ़ी थी। मैं छत पर चढ़ा जब मैं उतरा तो तारीकी की वजह से मुझे ज़ीना नज़र न आया और समझ में न आया कि घर में कैसे पहुंचूं। हज़रत ने आवाज़ दी। ऐ सईद ठहर जा शमा आती है। मैं ठहर गया। शमा आई तो मैं घर के अन्दर गया। देखा कि हज़रत उनी जुब्बा पहने हैं और उसी की टोपी है और बोरिये का मुसल्ला है मुझे यक़ीन हुआ कि हज़रत नमाज़ पढ़ रहे थे। मुझ से फ़रमाया घर के सब हिस्से तेरे सामने हैं मैंने कोना कोना तलाश किया। सिवाये इसके कुछ न पाया कि मुतवक्किल की मां की चन्द मोहर करदा हमयानियां और एक थैला मोहर करदा था। फ़रमाया इस मुसल्ले को भी उठा कर देख लो मैंने देखा तो एक तलवार कपड़े में लिपटी हुई बे नियाम थी यह सब ले कर मुतवक्किल के पास गया। जब उसने हमयानों पर अपनी मां की मोहर देखी तो उसके पास किसी को भेजा। रावी कहता है कि मुझे एक ख़ास ख़ादिम ने ख़बर

दी कि उसने कहा मैं जब तेरी बीमारी से मायूस हो गई थी यह नज़्र मानी थी कि जब तुझ को शिफ़ा हो जायेगी। तो मैं इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम को दस हज़ार दीनार दूंगी। चुनान्चे मैंने भिजवा दिये। यह मोहर मेरी है और जब थैला खोला तो उसमें चार हज़ार दीनार थे। मुतवक्किल ने एक हमयानी का और इज़ाफ़ा करके मुझ से कहा। इसे हज़रत के पास ले जा। मैं वह दोनों थैले और तलवार लेकर हज़रत के पास आया और हज़रत से कहा। मेरे ऊपर अपना पहला आना शाक़ था। फ़रमाया ज़ुल्म करने वाले अन्क़रीब जान लेंगे कि उनका हश्र क्या हुआ।

5. अली बिन मोहम्मद नोफ़ली से मरवी हैं कि मुझ से मोहम्मद इब्नुल–फरज ने कहा कि अबुल हसन अलैहिस्सलाम ने उसे लिखा। ऐ मोहम्मद जो तेरा असासा है उसे जमा कर और एहतियात से रह। वह कहता है मैं अपना सामान जमा करने लगा लेकिन मेरी समझ में न आया कि हज़रत ने ऐसा क्यों लिखा मेरे पास (कुछ दिन बाद, बादशाह का पैग़ाम बर आया और मुझे क़ैद करके मिस्र ले चला और मेरी इमलाक पर क़ब्ज़ा कर लिया और मैं क़ैद ख़ाने में आठ साल रहा। क़ैद ख़ाने में हज़रत का ख़त फिर मिला उसमें लिखा था। ऐ मोहम्मद मग़रिब की सिम्त मंज़िल न करना। मैंने ख़त पढ़ा। दिल में कहा जब मैं क़ैद ख़ाने में हूं तो हज़रत ने यह ख़त क्यों लिखा बड़े तअज्जुब का मक़ाम है। चन्द रोज़ बाद मैं रिहा हो गया। अल–हम्दो लिल्लाह। मोहम्मद इब्नुल–फ़रज ने अपनी ज़मीनों के मुतअल्लिक हज़रत से सवाल किया। आपने उसे लिखा कि अन्करीब उसे वापस मिल जायेगी और अगर न भी मिलेंगी तो तुझे नुक़सान न होगा। और वह

इससे पहले ही मर गया। अहमद बिन ख़ज़ीब ने मोहम्मद इब्नुल–फरज से दरख़ास्त की कि वह मक़ामे असकर से बाहर निकल जाये। उसने इमाम अली नक़ी से मशवरा किया। आप ने लिखा तुम बाहर चले जाओ। इंशाअल्लाह इसमें तुम्हारे लिये बेहतरी होगी चुनांचेह वह वहां से निकल आये और कुछ अरसे बाद इंतेक़ाल किया।

6. अहमद बिन मोहम्मद ने कहा कि मुझ से बयान किया अबू याकूब ने कि मैंने मुलाक़ात की मोहम्मद से असकर में उसके मरने से पहले वह इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम के इस्तेक़बाल को आया था। जब हज़रत सामरा वारिद हुऐ थे हज़रत ने उसकी तरफ़ देखा। दूसरे रोज़ वह बीमार हुवा मैं उसकी अयादत के लिये गया। चंद रोज़ बाद उसने बयान किया कि हज़रत ने उसके पास एक कपड़ा भेजा। उसने ले लिया और लपेट कर उसके सर के नीचे रख लिया। उसी में उसको कफ़नाया गया। अहमद ने रिवायत की है कि अबू याकूब ने बयान किया कि मैंने अबुल हसन को इब्ने ख़ज़ीब के साथ देखा। उस ने कहा।

आप जाइये। फ़रमाया तू मुझ से पहले जायेगा। चार रोज़ न गुज़रे कि इब्ने ख़ज़ीब (सरदारे सलतनते अब्बासिया) का पैर शिकंजा में दे दिया गया फिर उसके मरने की खबर आ गई। अहमद ने अबू याकूब से रिवायत की है कि जब इब्ने ख़ज़ीब ने इमाम अलैहिस्सलाम से ब जब्र मकाने मसकूना ख़ाली करने को कहा तो आप ने उससे कहला भेजा कि ख़ुदा तेरे लिये कोई जगह बाक़ी न छोड़ेगा पस चन्द ही रोज़ बाद हुकूमत के एताब में आ गया और वह शिकंजे में कसा गया।

7. रावी कहता है कि मैंने 243 हिजरी में यहया बिन हर्समा से वह ख़त लिया जो मुतवक्किल ने इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम के नाम लिखा था। जिसका मज़मून यह था।

बिसमिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम। अम्मा बाद! अमीरूल मोमेनीन आप के हक़ का आरिफ़ है और आप की कराबत की रिआयत करने वाला है और क़ुबूल करने वाला है आपके हक़ का जो आप के और आप के अहले बैत के लिये है ताकि आप के और आप के घर वालों के लिये बाइसे इस्लाह हो और आपकी और उनकी इज़्ज़त बाक़ी रहे और आप और वह बरकत और सलामती के साथ ज़िन्दगी बसर करें, मेरा मक़सद इससे अपने रब की रेज़ा हासिल करना है और आप के बाद आप के अहले बैत के मुतअल्लिक़ जो मेरा फर्ज़ ख़ुदा ने क़रार दिया है उसे पूरा करूं। अमीरूल मोमिनीन ने मुनासिब समझा है बर तरफ कर देना अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद का जो मदीनए रसूल स0 में जंग और नमाज़ पढ़ाने का ज़िम्मेदार था क्यों कि जैसा आप मे ज़िक्र किया है उसने अपनी जिहालत से आप के हक़ का इंकार किया है और आपकी क़द्र व मंज़िलत को घटाया है। और ऐसी बातें आप से मंसूब की हैं जिनको मैं जानता हूं कि आप अलैहिस्सलाम की ज़ात उनसे बरी है। और ऐसे इरादों के तर्क में आपकी नियत सच्ची है और आप ने इसके लिये अपने नफ़्स को आमादा नही किया।

और अमीरूल मोमिनीन ने इन उमूर पर ग़ौर करके मोहम्मद बिन फ़ज़्ल को अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद की जगह वाली–ए–मदीना बनाया है और हुक्म दिया है कि वह आपकी ताज़ीम व तकरीम पूरी तरह बजा लाये और आप के हुक्म व राये पर अमल करे और ऐसा करके ख़ुदा और अमीरूल

मोमिनीन से तक़र्रुब हासिल करे। अमीरूल मोमिनीन को आप से मिलने का बड़ा इश्तियाक़ है वह अहदे मुहब्बत को ताज़ा करना चाहता है और उसकी नज़र आप की तरफ़ है अगर आप उसकी मुलाक़ात से खुश हों और उसके पास क़याम पसंद करें तो आप अपनी राये के मुताबिक़ मअ उनके जिनको आप अपने ख़ानदान में दोस्त रखते हों या जो आप के नौकर चाकर हों पूरी फुरसत और इत्मिनान के साथ चले आयें आपको पूरा अख़्तियार होगा। जब चाहें रवाना हों जहां चाहें असनाये सफ़र में मंज़िल करें जब चाहें वहां से कूच करें अगर आप पसंद करें तो यहया बिन हर्समा गुलामे अमीरूल मोमेनीन और उसके साथ वाले फ़ौजी आप के पीछे पीछे चलते और मंज़िलों पर क़याम करते रहें यह सब आपकी राय पर मौक़ूफ़ हैं यहां तक कि मेरे पास पहुंच जायें जब आप यहां पहुंचेगे तो मेरे भाई, मेरे लड़के, मेरे ख़ानदान वाले और नौकर चाकर अज़ रूऐ मंज़िलत आप पर शफ़ीक़ व मेहरबान और आपके अफ़आल के मद्दाह सब से ज़्यादा आप पर नज़र रखने वाले सब से ज़यादा आप पर शफ़ीक़ व मेहरबान होंगे और आपके ख़ान्दान वालों के लिये इंशाअल्लाह सब से ज़्यादा बाइसे सुकून व इत्मिनान साबित होंगे। यह ख़त लिखा है इब्राहीम अल–अब्बास ने और दरूद व सलाम हो मोहम्मद व आले मोहम्मद स0 पर।

(ऐसे ऐसे हीलों से हमारे अइम्मा को बुलाया जाता था और जब वह आ जाते थे तो उन पर ज़ुल्म व सितम के पहाड़ गिराये जाते थे और क़ैद व बन्द में रख कर आख़िर कार ज़हर से शहीद किये जाते थे।)

8. रावी कहता है मुतवक्किल ने अपने दरबारियों से कहा वाये हो तुम पर तुम कोई तदबीर मेरी परेशानी दूर करने की नहीं करते। इमाम अली नक़ी ने मुझे आजिज़ कर रखा है न तो वह मेरे साथ शराब पीते हैं न मेरी सोहबत में बैठते हैं न उस मुआमले में वह कोई फ़ुर्सत का वक़्त निकालते हैं उन्हों ने कहा यह न सही, उनके भाई मूसा सही जो निहायत ला उबाली और अय्याश आदमी हैं। शराब पीते हैं इश्क बाज़ी करते हैं (जब उनकी यह बदकारी मशहूर हो गी तो आपको और हम को यह कहने का मौक़ा मिलेगा कि ऐसे ही उनके भाई हैं) मुतवक्किल ने कहा उसे बुलाओ ताकि उसकी वजह से हम धोका दे सकें, लोगों में यह प्रोपेगंडा करें कि यह भी इब्ने रज़ा हैं पस उनको ख़त लिखा गया और बड़ी इज्ज़त से बुलाया गया। तमाम बनी हाशिम, सरदाराने लशकर और आम लोगों को उन्हों ने बताया कि जब वह वहां पहुंचेंगे तो ज़मीन का कोई हिस्सा उनके नाम एलाट किया जायेगा और उस पर इमारत बनवाई जायेगी शराब खोरों और गाने बजाने वाली औरतों को उनके पास रखा जायेगा और बहुत सी मुराआत हासिल होंगी और ऐसा शानदार मकान मिलेगा जिसमें मुतवक्किल उसके पास आये जाये मूसा पहुंचे तो इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम उनसे वसीफ़ के मक़ाम पर मिले जहां आने जाने वालों का ख़ैर मक़दम किया जाता था। आप ने सलाम करके पूरा हक़्क़े ताज़ीम अदा किया और फ़रमाया उस शख़्स (मोतवक्किल) ने तुम को ज़लील करने के लिये बुलाया है ताकि तुम्हारे मरतबे को भी पस्त करे। तुम हरगिज़ इसका इक़रार मत करना कि मैंने कभी शराब पी है मूसा ने कहा अगर उसने बुलाया ही इस लिये है तो ? फ़रमाया देखो अपनी आबरू रेज़ी न करना

उसने तुम्हारी हतक का इरादा किया है। मूसा ने हज़रत की बात मानने से इंकार कर दिया। हज़रत ने मुकर्रर समझाया। जब कोई जवाब न दिया तो फ़रमाया। देखो तुम्हें और उसे एक जगह बैठने को मौका ही न मिलेगा। मूसा तीन साल रहे हर रोज़ सुबह को जाते थे और दरबान यह कह कर टाल देता कि आज बादशाह ज़्यादा मशगूल है शाम को जाते तो वह कहता, शराब में मस्त हैं सुबह जाते तो मालूम होता दवा खाये पड़े हैं ग़रज़ इसी तरह तीन साल गुज़र गये और उससे मिलने का मौक़ा न मिला।

9. रावीये हदीस मोहम्मद बिन अली ने बयान किया कि ख़बर दी मुझे ज़ैद बिन अली बिन हुसैन बिन ज़ैद ने कि मैं बीमार था। तबीब आया रात के वक़्त और एक दवा के मुतअल्लिक़ कि उसे दिन में ऐसे ऐसे इस्तेमाल करना। मेरे लिये ऐसा करना मुमकिन न था। तबीब दरवाज़े से निकला ही था कि नसर एक शीशी लेकर आया जिस में वही दवा थी। उसने कहा इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम ने सलाम कहा है और पैग़ाम दिया है कि इसे दिन में इस तरह इस्तेमाल करना। मैंने ले लिया और पिया। मुझे शिफ़ा हो गई मोहम्मद बिन अली ने कहा कि मुझ से जैद बिन अली ने कहा कि तअन करने वाले कहते हैं कि यह शिया ग़ालियों की हदीस है कि वह अइम्मा को आलिमुल ग़ैब जानते हैं। उन्हें आगाह होना चाहिये कि यह मुकाशेफ़ा नहीं बल्कि कुरआन से इस्तिंम्बात है।



एक सौ बाइसवां बाब

ज़िक्रे विलादते इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम

हज़रत माहे रमज़ान में और एक रिवायत में है कि माह रबीउल आखिर 233 हिजरी में पैदा हुये और रोज़े जुमा 8 रबीउल अव्वल 260 हिज़री में वफ़ात पाई। जबकि आपकी उम्र 28 साल थी और अपने उसी घर में दफ़न किये गये जहां आप के वालिदे माजिद सरमन राय (सामरा) में दफ़न थे आपकी वालिदा माजिदा कनीज़ थीं जिनका नाम हदीस यासौसन था।

1. अहमद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन ख़ाक़ान कुम में वज़ीरे इम्लाक व इख़राज था एक रोज उसकी मज्लिस में अलवी सादात और उनके मुख़तलिफ़ मज़हबों का ज़िक्र चल पड़ा और अहमद बहुत मुतअस्सिब नासिबी मज़हब का था। उसने कहा मैंने सामरा मे अलवियों में से किसी को इमाम हसन असकरी से बेहतर आदमी ब लेहाज़ रविश और सुकूने क़ल्ब और पाकदामनी और अपने फ़ज़्ल व करम में अपने घर वालों और बनी हाशिम पर और किसी को नहीं पाया और वह लोग अपने बड़े बूढ़ों और साहिबाने मरतबत से उनको मुक़द्दम जानते हैं इसी तरह सरदाराने लश्कर और वुज़रा और आम लोग भी उनका एहतराम मलहूज़ रखते हैं।

एक रोज़ जब मेरे बाप की मज्लिम जमी हुई थी मैं भी उनके पास मौजूद था यकायक दरबान अन्दर आये और कहा कि अबू मुहम्मद स0 इब्ने रज़ा दरवाज़े पर हैं। मेरे बाप ने ब आवाज़े बुलन्द कहा उनको आने दो दरबानों से यह

सुन कर कि मेरे बाप के सामने एक शख़्स का ज़िक्र सिर्फ़ कुन्नियत (अबू मोहम्मद) के साथ किया। बड़ा तअज्जुब हुआ क्यों कि कुन्नियत से ज़िक्र करना मख़सूस था ख़लीफ़ा से या वली अहद से या जिसके लिये बादशाह हुक्म दे।

पस दाखिल हुवा एक शख़्स गंदुमगों, हसीन क़ामत, ख़ूबसूरत चेहरा, गुदाज़ बदन नौजवान जिसके चेहरे पर रोअब व जलाल था। जूं ही मेरे बाप ने देखा। नंगे पैर उनकी तरफ़ चले, मैंने अब तक किसी बनी हाशिम के साथ ऐसा करते उनको नहीं देखा था। और न सरदाराने हुकूमत के साथ, जब वह क़रीब आये तो उन से मुआनिक़ा किया और उनके सर और सीने को बोसा दिया और उनका हाथ पकड़ कर उस जगह लाये जहां ख़ुद बैठे थे। मैं यह ताज़ीम देख कर हैरान था। नागाह दरबान ने आकर मोवफ़्फ़क (बरादर अब्बासी बादशाह) आ रहा है और मोवफ़्फ़क जब मेरे बाप से मिलने आता था तो उसके दरबान और ख़ास ख़ास सरदार आगे चलते थे। पस वह सफ़ ब सफ़ दरवाज़े से लेकर मेरे बाप की नशिस्तगाह तक खड़े हो गये ताकि वह आये और फिर चला जाये। मेरा बाप हज़रत से मुतवज्जेह हो कर बातें करता रहा जब तक कि उस ने अपने ख़ास गुलामों की तरफ देखा उसने हज़रत से कहा। मैं आप अलैहिस्सलाम पर फिदा हूं अगर आप चाहें तो अब चले जायें।

और अपने दरबानों से कहा। इनको सफ़ों के पीछे से निकाल ले जाओ ताकि मोवफ़्फ़क न देखे पस वह खड़े हुए और उनके साथ मेरे बाप भी खड़े हुए और मोआनिक़ा करके रूख़सत किया। मैंने अपने दरबानों से पूछा यह कौन थे जिनकी तुम ने कुन्नियत बयान की और मेरे बाप ने उनके

साथ ऐसा अमल किया। उन्हों ने कहा यह एक अलवी सय्यद हैं जिनका नाम हसन इब्ने अली और उर्फ इब्ने रेज़ा है मेरा तअज्जुब बढ़ गया और उस दिन से मैं उनके मुआमले में और अपने मां बाब के मुआमले में और जो मैंने देखा था सख़्त मुतफ़क्किर था। जब रात हुई तो मेरे बाप की आदत थी कि इशा के बाद बैठ कर अपने मोआमेलात पर और जो हालात बादशाह तक पहुंचाने होते थे उन पर ग़ौर किया करते थे।

जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर बैठे तो मैं उनके पास आया उस वक़्त उनके पास कोई न था। मुझ से कहा ऐ अहमद! तुम कुछ पूछना चाहते हो। मैंने कहा हां, अगर आप इजाज़त दें। कहा इजाज़त है जो चाहो पूछो, मैंने कहा यह कौन साहब थे जो सुबह आप के पास आये और आप ने उनकी इंतेहाई ताज़ीम की और अपने और अपने वालेदैन का नफ़्स उन पर फ़िदा किया।

उसने कहा बेटा यह राफ़्ज़ियों के इमाम हैं यह हसन इब्ने अली उर्फ इब्ने रेज़ा हैं फिर थोड़ी देर ख़ामोशी के बाद कहा अगर इमामत ख़ुलफ़ाए बनी अब्बास से हट जाये तो बनी हाशिम मे उनसे ज़्यादा कोई मुस्तहक़ नहीं, उनका इस्तेहक़ाक़ है उनकी फ़ज़ीलत पाकदामनी, नेक रौशन, सियानते नफ़्स, ज़ुहद, इबादत, हुस्ने अख़लाक़ और दरसी अमल की वजह से है अगर तुम उनके बाप को देखते जिनको मर्दे आक़िल, फ़हीम व आलिम कहा जाये तो बजा है यह सुन कर (अपने मज़हबी तअस्सुब की बिना पर मेरा क़लक़, तफ़क्कुर और गुस्सा अपने बाप पर और ज़्यादा हुआ कि मैंने उनकी ज़बान से राफ़ज़ियों के इमाम की इतनी

तारीफ़ सुनी।

और मैंने अपने बाप को उसके क़ौल व फ़ेअल में साहिबे तक़सीर समझा। अब मेरे लिये इसके सिवा चारए कार न था कि मैं ख़ुद उनके हालात की जुस्तजू करूं। चुनांचे जब मैंने बनी हाशिम के हालात सरदाराने लश्कर से, मुंशियों से, क़ाज़ियों से और फ़क़ीहों से और आम लोगों से पूछे तो उनमें से हर एक ने उनकी इंतेहाई जलालत व अज़मत और महल्ले रफ़ीअ और क़ौले जमील को बयान किया और उनके तमाम ख़ानदान और मशाएख़ पर उनको तरजीह दी। यह सूरत देख कर मेरे दिल में उनकी ज़्यादा अज़मत हो गयी और कैसे न होती जब कि मैंने देखा है कि उनका दोस्त हो या दुश्मन उनके बारे में अच्छा ही ख़याल रखता है और उनकी तारीफ़ ही करता है, एक अशअरी फ़िरक़े का आदमी था जो वहां मौजूद था। अहमद (रावी) से कहने लगा। ऐ अबू बकर उनके भाई जाफ़र का भी कुछ हाल तुम्हें मालूम है मैंने कहा कौन जाफ़र ताकि उसके हालात मालूम करके हसन इब्ने अली से मुक़ाबेला किया जाये उस ने कहा जाफ़र खुल्लम खुल्ला बदकार, ज़िनाकार, ला परवाह और बड़ा शराब ख़ोर है तुम ने कम आदमी ऐसे देखे होंगे कि अपनी पर्दा दरी इस तरह करते हों उसने अपने नफ़्स को बहुत ज़लील कर रखा है अहमद ने कहा वक़्ते वफ़ाते हसन इब्ने अली बादशाह और उसके असहाब को एक ऐसा वाक़िआ पेश आया कि मैं तअज्जुब में रह गया। मेरे गुमान में भी ऐसा होना न था।

एक रोज़ बादशाह (मोतमद) ने मेरे बाप के पास पैग़ाम भेजा कि इब्ने रेज़ा बीमार हैं वह फ़ौरन सवार होकर ख़लीफ़ा

के पास पहुंचे और फिर वापस आये आप के साथ बादशाह के पांच ख़ादिम निहायत मोतमद और ख़ासुल ख़ास थे उनमें बादशाह का गुलामे ख़ास नहरीर भी था और उनको हुक्म दिया कि वह इमाम के घर पर रहें और उनके हाल से आगाह करते रहें और तबीबों को बुलाकर हुक्म दिया कि वह उनके पास आते जाते रहें।

और सुबह व शाम उनकी ख़बर रखने का हुक्म दिया दो तीन दिन बाद उसे आगाह किया गया कि हज़रत पर ज़ोफ़ ग़ालिब है उसने तबीबों को हुक्म दिया कि हर वक़्त हज़रत के घर पर हाज़िर रहें और क़ाज़ियुल कुज़्ज़ात को बुलाकर हुक्म दिया कि दस आदमी ऐसे इंतेख़ाब करे जो हज़रत के दीन व इमामत पर यक़ीन रखते हों और यह कि वह हर वक़्त हज़रत के घर पर मौजूद रहें और हज़रत की वफ़ात तक वहीं रहें हज़रत के मरते ही शहरे सामरा में नौहा व बुका की आवाजें बुलंद हुई बादशाह ने कुछ लोग भेजे और घर की तलाशी लें और जो कुछ बर आमद हो उस पर मोहर लगा दें और उनके फ़रज़न्द की जुस्तजू करें कुछ औरतें भेजी गईं ताकि वह हमल की तहक़ीक़ करें। वह कनीज़ो के पास गई और उनको देखा भाला। एक ने कहा एक कनीज़ हामेला है उसको अलाहिदा कमरे में रखा गया और नहरीर ख़ादिम और उसके साथियों को चन्द औरतों के साथ निगरां मुक़र्रर किया गया। उसके बाद तजहीज़ व तकफ़ीन का सामान होने लगा। बाज़ार बन्द हो गये और बनी हाशिम और मेरे बाप के सरदार और आम लोग नमाज़े जनाज़ा के लिये आने लगे। सामरा में उस रोज़ क़यामत का समां था। जब जनाज़ा तय्यार हुआ तो बादशाह ने मेरे बाप के पास ईसा बिन मुतवक्किल को भेजा कि नमाज़े जनाज़ा

पढ़ाये।

जब जनाज़ा नमाज़ के लिये रखा गया तो अबू ईसा उसके पास आये और हज़रत का चेहरा खोलकर तमाम बनी हाशिम अलवी और अब्बासियों, सरदाराने लशकर, मुतसद्दी क़ाज़ी और साहिबाने अद्ल से कहा। देख लीजिये यह हसन इब्ने अली बिन मोहम्मद बिन रेज़ा हैं जो अपनी मौत अपने बिस्तर पर मरे हैं और उनकी खिदमत के लिये मौजूद रहे हैं। बादशाह के खुद्दाम और मोतमद फुलां फुलां और फुलां क़ाज़ी और तबीब और साहिबाने अद्ल व इंसाफ, इसके बाद चेहरा ढांप दिया उसके बाद हुक्म दिया कि जनाज़ा उठाया जाये। पस वसते ख़ाना से उठा कर उस घर में लाये जहां उनके बाप दफ़न थे।

जब हज़रत दफ़न हो गये तो बादशाह और लोग हज़रत के लड़के की तलाश में लगे। मंज़िलों और घरों में जा ब जा तलाश किया और मीरास की तक़सीम से रूके रहे जो लोग उस कनीज़ के निगरां थे जिन पर हमल का शुबह था। वह बराबर निगरानी करते रहे यहां तक कि हमल ग़लत साबित हुवा। पस हज़रत की मीरास उनकी मां और भाई के दरमियान तक़सीम कर दी गई उनकी वालिदा ने हस्बे वसीयते इमाम कुल मीरास का क़ाज़ी की अदालत में दावा किया। जो क़ाज़ी के यहां से डिग्री हो गया। अब बादशाह को फिर हज़रत के लड़के की जुस्तजू हुई जाफ़र मुक़दमा हारने के बाद मेरे बाप के पास आये और कहा अगर आप मुझे मेरे भाई की जगह इमाम क़रार दे दें तो मैं आप को हर साल बीस हज़ार दीनार दिया करूंगा। मेरे बाप ने उनको डांटा और कहा ऐ अहमक़ बादशाह तलवार खींचे बैठा है उन

लोगों के ऊपर जो तेरे बाप और भाई को इमाम मानते हैं ताकि इस अक़ीदे से उन्हें हटा दे अगर तू अपने बाप और भाई के नज़दीक इमाम होता तो तुझे बादशाह और ग़ैर बादशाह के सहारे की ज़रूरत न होती। तू यह चीज़ हम से न पायेगा। और उसके बाद उनको बहुत ख़फ़ीफ़ व ज़लील किया और हुक्म दिया कि उनके सामने से हटा दिया जाये और मेरे पास आने की इजाज़त न दी जाये मेरी ज़िन्दगी भर, पस वह और हम इस हालत में बाहर निकल आये और बादशाह बराबर इमाम अलैहिस्सलाम के फ़रज़न्द की तलाश में रहा।

2. रावी कहता है कि इमाम हसन असक़री अलैहिस्सलाम ने अबुल क़ासिम इसहाक बिन जाफ़र ज़ुबैरी को मोअतज़ बादशाह अब्बासी के मरने से तक़रीबन बीस रोज़ पहले लिखा कि अपने घर में रहा करो जब तक हादेसा न हो जब बरीहा क़त्ल कर दिया गया तो उसने लिखा कि वह हादेसा तो ख़त्म हो गया। अब क्या हुक्म है। फ़रमाया यह वह हादेसा नहीं है वह दूसरा हादेसा है फिर मोअतज़ पर जो गुज़रनी थी गुज़र गई यानी क़त्ल कर दिया गया।

3. मोहम्मद इब्ने अली ने बयान किया कि जब हम तंगदस्ती में मुब्तिला हुये तो मेरे बाप ने मुझ से कहा चलो उस शख़्स यानी इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के पास चलें उनकी सख़ावत का बहुत शोहरा है, मैंने कहा आप उनको पहचानते हैं, उन्हों ने कहा नहीं मैंने उनको देखा भी नहीं, उसने कहा हम हज़रत की तरफ़ चले। रास्ते में मेरे बाप ने कहा। हमारी ज़रूरत (500) पाँच सौ दिरहम की है दो सौ लिबास के लिये दो सौ अदाये क़र्ज़ के लिये और सौ खाने

के लिये। मैंने दिल में कहा। काश! मुझे तीन सौ दिरहम दे दें ताकि मैं सौ में गधा ख़रीद लूं सौ में ख़ूर्द व नोश करूं और सौ में कपड़े बना लूं और कुर्दिस्तान चला जाऊं जब हम वहां पहुंचे और हज़रत के दरवाज़े पर आये। मेरे बाप ने कहा। ऐ मेरे सय्यद व आक़ा। इस हाल में मुझे आपके पास आते शर्म आई जब हम घर से बाहर निकले तो हज़रत का गुलाम मेरे पास आया और एक थैली 500पाँच सौ दिरहम की दे कर कहा इस में से दो सौ में कपड़े बनाना दो सौ कर्ज देना और सौ खाने का ख़र्च चलाना और कुर्दिस्तान न जाना बल्कि सौरा जाना तो वह सौरा गया और एक औरत से शादी की अब उसकी आमदनी एक हज़ार दीनार है बा वजूद इसके कि वह फ़िर्क़ए वाक़ेफ़ीया (जो इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम को ज़िन्दा मानता है और कहता है कि वह इमाम महदी हैं) मोहम्मद बिन इब्राहीम ने उस से कहा, वाये हो तेरे ऊपर क्या इस से ज़्यादा कोई दलील हज़रत की इमामत की तू चाहता है उस ने कहा अब वह वाक़ेफ़ीया का अक़ीदा मेरे अन्दर सरायत कर गया है।

4. रावी ने कहा कि अहमद बिन–हारिस क़ज़वीनी ने बयान किया कि मैं अपने बाप के साथ सामरा में था और मेरा बाप इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के तवीला का साइस था मुस्तईन (बादशाह अब्बासी) के पास एक ख़च्चर था बेहद ख़ूबसूरत और क़द आवर लेकिन वह अपने ऊपर किसी को सवार होने नहीं देता था और न लजाम लगाने और ज़ीन रखने की इजाज़त देता था बहुत से चाबुक सवार जमा थे लेकिन इस पर सवारी करना मुमकिन न था, एक मुसाहिब ने उससे कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम को बुलाइये या तो वह इस पर सवार

हो गये या इसने इसको क़त्ल कर दिया। इस सूरत में आप को उनकी तरफ़ से राहत मिल जायेगी। उसने बुला भेजा। हज़रत इमाम अलैहिस्सलाम के साथ मैं भी गया। मेरे बाप का बयान है कि जब हज़रत घर में दाख़िल हुये मैं साथ था तो आप ने सहेन में ख़च्चर खड़ा देखा आप उसके पास गये और उसके पुट्ठे पर हाथ रखा तो उसको पसीना आ गया और बहने लगा। फिर आप मुस्तईन के पास आये उसने मरहबा कहा और करीब बिठा कर कहा। ऐ अबू मोहम्मद इसको लजाम दीजिये। आप ने मेरे बाप से कहा। जा तू इसे लजाम दे। मुस्तईन ने कहा नहीं आप ही दीजये। हज़रत ने अपनी चादर रखी और जा कर लजाम दे दी। और वापस आकर बैठ गये उसने कहा अब ज़ीन भी कस दीजिये आप ने मेरे बाप से कहा जा और ज़ीन कस। मुस्तईन ने कहा नहीं आप ही यह कीजिये। आप ने उठ कर यह ज़ीन लगा दी। उसने कहा क्या आप सवार हो जोयेंगे फ़रमाया हां पस आप बग़ैर किसी रुकावट के सवार हो गये और घर में उसे चलाया दुलकी दौड़ाया वह ख़ूब अच्छी चाल चला उसके बाद आप वापस आ गये और उतर गये। उसने कहा आप ने इसे कैसा पाया। फ़रमाया बहुत हसीन और चुस्त है यह आप के लिये अच्छा है। उस ने कहा ऐ अबू मोहम्मद जब मैं इस पर आप को सवार कर चुका तो यह आप ही का हो गया। हज़रत ने मेरे बाप से फ़रमाया। इसको ले लें उन्होंने उसकी लजाम पकड़ ली और उसको अपने साथ ले गये।

(अफ़सोस कि यह सब कुछ देखने के बाद भी उनकी इमामत का क़ायल न हुआ)

5. रावी कहता है कि मैंने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम से अपनी हाजत बयान की। आप अलैहिस्सलाम

ने अपना कोड़ा ज़मीन पर रगड़ा और उसको अपने रूमाल से ढका और 500पाँच सौ दीनार उस में से निकाल कर मुझे दिये और माज़ेरत की।

6. अबू अली मुतह्हिर ने इमाम अलैहिस्सलाम को लिखा कि अहले क़ादसिया ने इस साल हज का इरादा मुलतवी कर दिया है इस लिये कि राहे मक्का में उन्हें प्यासा मरने का ख़तरा है हज़रत ने लिखा जाओ ज़रा ख़ौफ़ न करो इंशा अल्लाह कोई तकलीफ़ न होगी। पस सब सहीह व सालिम पहुंच गये।

7. मोहम्मद बिन इस्माईल अलवी ने बयान किया कि इमाम हसन अलैहिस्सलाम अली बिन नरमिश के पास क़ैद किये गये और वह बड़ा नासिबी और आले मोहम्मद से सख्त अदावत रखने वाला था। बादशाह ने उस से कहा इनको इस इस तरह अज़ीयत देना। आप अभी एक ही दिन रहे थे कि उसने अपने रुख़्सार हज़रत के कदमों पर रख दिये और हज़रत की अज़मत व जलालते शान की वजह से निगाह ऊपर को न उठाता था। हज़रत उसके पास से इस हाल में निकले कि अज़ रूऐ बसीरत वह सब से बेहतर और अज़ रूऐ क़ौल सबसे अफ़ज़ल था।

8. रावी कहता है कि अबू हाशिम जाफ़री पर जो औलादे जाफ़रे तय्यार से थे एक ऐसी क़ौम ने हमला किया जिसके मुक़ाबले की ताब उनको न थी इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम को एक ख़त में यह परेशानी लिखी। आप ने तहरीर फ़रमाया। इंशा अल्लाह तुम इस मुहिम को सर करोगे पस वह थोड़े से लोग लेकर मुक़ाबले को निकले और वह लोग बीस हज़ार से ज़्यादह थे उन पर फ़त्ह हासिल की।

9. रावी कहता है मैंने इमाम हसन अस्करी अलैहिस्सलाम को लिखा कि इस आयत में वलीजा के क्या माने हैं उन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल स0 और मोमिनीन के सिवा किसी को अपना राज़दार दोस्त नहीं बनाया मैंने अपने दिल में कहा, किताबे ख़ुदा में इस आयत में मोमेनीन से कौन मुराद हैं हज़रत ने जवाब में लिखा वलीजा वह है जिस को वली–ए–अम्र के अलावा दोस्त बनाया जाये और मोमिनीन के मुतअल्लिक जो तुम्हारे दिल में ख़याल आया तो वह अइम्मा हैं जो अल्लाह पर ईमान लाये पस उनकी अमान जायज़ है।

10. अबू हाशिम कहते हैं कि मैंने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के क़ैद ख़ाने की तकलीफ़ और बेड़ी की मुसीबत बज़रीए तहरीर बयान की। आप ने जवाब में लिखा आज दो पहर को तुम नमाज़े ज़ोहर अपने घर में पढ़ोगे चुनांचि ऐसा ही हुआ जैसा हज़रत ने फ़रमाया था। मैं बहुत तंग दस्त हो रहा था। मैंने चाहा कि ख़त लिख कर कुछ दीनार मांगूं मगर हया दामनगीर हुई जब मैं अपने घर आया तो हज़रत तशरीफ़ लाये और सौ दीनार देकर फ़रमाया हया और रंज न करो और जब ज़रूरत हुआ करे मांग लिया करो इंशा अल्लाह तुम्हें मिल जाया करेगा।

11. रावी कहता है कि मैंने बार बार लोगों से सुना था कि इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम अपने गुलामों से उनकी ज़बानों में जो तुर्की रूमी और सक़लाबी हैं कलाम करते हैं मुझे इस बात पर बड़ा तअज्जुब था दिल में कहता था यह पैदा हुये मदीने में और इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम के मरने तक घर से नहीं निकले और न कोई उनके पास आया इन्होंने यह ज़बानें सीखीं कहां से यह मैंने अपने दिल

में कहा। हज़रत एक दिन मेरे पास तशरीफ़ लाये और फ़रमाया अल्लाह ने ज़ाहिर किया है अपनी हुज्जत को तमाम मख़लूक़ पर और अता किया है उसको इल्मे लुग़ात व अंसाब व आजाल व हवादिस। अगर ऐसा न हो तो क्या फ़र्क़ रहे हुज्जते ख़ुदा और आम लोगों में।

12. रावी कहता है मैंने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम को लिखा क्या इमाम को ख़्वाब में एहतेलाम होता है इस ख़त को रवाना करने के बाद मेरे दिल में ख़याल आया कि एहतेलाम तो कारे शैतान है और ख़ुदा ने अपने औलिया को इस से पनाह में रखा है हज़रत ने जवाब दिया कि अइम्मा का हाल ख़्वाब व बेदारी में बराबर है ख़्वाब की हालत में कोई तबदीली उन में नहीं होती और जैसा कि तुम ने ख़याल किया है ख़ुदा अपने औलिया को शैतान से बचाता है।

• 13. हसन बिन ज़रीफ़ ने कहा कि मेरे दिल में दो मसअलों की खटक थी मैंने चाहा कि एक ख़त के ज़रिये से दोनों मसअले मालूम करूं पस मैंने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम को ख़त लिखा कि क़ायमे आले मोहम्मद स0 का ज़ुहूर होगा तो आप क़ज़ाया का फ़ैसला किस तरह करेंगे और वह लोगों के दरमियान फ़ैसला करने की जगह होगी कहां ? मैंने चाहा कि यह भी पूछ कि चौथी के बुख़ार का क्या इलाज है लेकिन यह लिखना भूल गया। जवाब में हज़रत ने लिखा क़ायमे आले मोहम्मद स0 अपने इल्म से उसी तरह फ़ैसला करेंगे जैसे दाउद बग़ैर गवाह लिये किया करते थे तुम यह भी सवाल करना चाहते थे कि चौथी के बुख़ार का क्या इलाज है मगर तुम भूल गये इसका इलाज यह है कि

एक पर्चा लिखो या नारो कूनी बरदन व सलामन अला इब्राहीम, इंशा अल्लाह सेहत होगी। मैंने यह तावीज़ मरीज़ की गर्दन में डाला तो सेहत हो गई।

14. रावी कहता है कि मैं राह में इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के इंतेज़ार में बैठा था जब हज़रत उस तरफ़ से गुज़रे तो मैंने अपनी हाजत बयान की और क़सम खाकर कहा कि मेरे पास एक दीनार भी नहीं, न सुबह के खाने को है न शाम के लिये। हज़रत ने फ़रमाया तुम ने झूठी क़सम खाई है। तुम ने दो सौ दीनार ज़मीन में दबाये हैं, इस लिये नहीं कहता कि तुम्हें कुछ दूं, नहीं ऐ गुलाम इसको सौ दीनार दे दे फिर मुझ से कहा जो दीनार तुम ने दफ़न किये हैं उनसे तुम शदीद ज़रूरत के वक़्त महरूम हो जाओगे हज़रत ने जो कुछ फ़रमाया था वही हुआ मैंने दो सौ दीनार इस लिये दफ़्न कर दिये थे कि जब शदीद ज़रूरत होगी तो उन से मदद लूंगा चुनांहे जब खाने पीने की ज़रूरत लाहिक़ हुई और रिज़्क़ के तमाम दरवाज़े बन्द हो गये तो मैंने वह जगह तलाश की और खोदा मेरे बेटे ने उसका पता चला लिया था वह उसे निकाल कर ले गया और मुझे कुछ न मिला।

15. रावी का बयान है कि मेरे पास एक घोड़ा था जिस के हुस्न ने मुझे तअज्जुब में डाला था और मैं जा ब जा उसका ज़िक्र करता था एक रोज़ इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आप ने फ़रमाया तुम ने अपने घोड़े का क्या किया मैंने कहा वह मेरे पास है यहीं आपके दरवाज़े पर है उसी से मैं उतरा हूं। फ़रमाया शाम से पहले अगर कोई ख़रीदार मिल जाये तो उसका तबादला कर लो इसी अस्ना में एक और शख़्स आ गया और

सिलसिलए कलाम मुंकतअ़ हो गया। मैं रंजीदा अपने घर आया और अपने भाई से ज़िक्र किया उसने कहा मेरी समझ में नहीं आता मैं इस बारे में क्या राये दूं। मैंने उसके फ़रोख़्त में बुख़्ल से काम लिया और किसी ऐसे को तलाश न किया जिसके हाथ बेचूं। शाम को जब हम नमाज़े इशा पढ़ चुके थे साईस आ कर कहने लगा आप का घोड़ा मर गया। यह सुन कर मुझे बड़ा रंज हुआ और समझ गया कि हज़रत ने इसी लिये फ़रमाया था। चन्द रोज़ बाद मैं ख़िदमते इमाम अलैहिस्सलाम में हाज़िर हुआ और अपने दिल में कहता था कि काश हज़रत मुझे इसके बदले मे कोई चौपाया दे दें क्योंकि मैं बहुत रंजीदा था जब मैं बैठा तो हज़रत ने फ़रमाया। अच्छा मैं इसके बदले चौपाया देता हूं। ऐ गुलाम मेरा कुमैत ख़च्चर इनको दे दे और मुझ से कहा यह चाल और ब लेहाज़ उम्र तुम्हारे घोड़े से अच्छा है।

16. रावी कहता है कि जिस ज़माने मे मोहतदी ने शीआने अली अलैहिस्सलाम के क़त्ल की मुहिम शुरू कर रखी थी मैंने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम को लिखा कि खुदा का शुक्र है कि तुर्कों के ख़ुरूज की वजह से उसकी तवज्जोह हमारे क़त्ल की तरफ़ से हट गई है और मुझे यह खबर मिली है कि वह आपको धमकी देते हुए कहता है कि मैं नई आबादी से जिला वतन कर दूंगा। इमाम अलैहिस्सलाम ने इसके जवाब में अपने दस्ते मुबारत से लिखा कि उसका कहना उसकी उम्र को कम कर देगा। आज के दिन से पांच दिन शुमार करो छटे दिन वह निहायत ज़िल्लत व हिक़ारत से क़त्ल कर दिया जायेगा। चुनांचे ऐसा ही हुआ।

17. मैंने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम से दरख़्वास्त

की कि मेरा दर्दे चश्म दूर होने के लिये दुआ फरमायें दूसरी आंख तो जा ही चुकी थी हज़रत ने तहरीर फ़रमाया कि अल्लाह ने तेरी आंख को महफ़ूज़ फ़रमाया। पस वह सही सालिम हो गई। ख़त के आख़िर में तहरीर फ़रमाया अल्लाह तुमको अज्र दे और अच्छा सवाब दे, मैं पढ़ कर ग़मगीन हुआ, मेरे ख़ानदान में कोई मरा न था चन्द दिन के बाद जब मेरा बेटा तय्यब मरा तो मैं समझा कि उसकी ताज़ियत थी।

18. रावी कहता है कि सामरा में एक शख़्स हमारे पास मिस्र से आया जिसका नाम सैफ़ इब्नुल्लैस था वह शिकायत करने आया था मोहतदी बादशाह अब्बासी से उसके ख़ादिम शफीअ़ की जिस ने ज़मीन ग़स्ब करके उसको निकाल दिया था। हम ने उसको मशवरा दिया कि वह इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम से सहूलते अम्र के लिय दरख़ास्त करे। हज़रत ने उसे तहरीर फ़रमाया ख़ौफ़ न कर तेरी ज़मीन तुझे मिल जायेगी बादशाह के पास न जा बल्कि उस हाकिम से मिल जिसके हाथ में ज़मीन का मुआमेला हैं और उसे डरा सुल्ताने आज़म यानी ख़ुदा से जो रब्बुल आलमीन है पस वह उस से मिला। उस ने कहा तेरे मिस्र से निकलते ही शफ़ीअ़ ने मुझे लिखा कि मैं तुझे बुलाकर ज़मीन तेरे हवाले कर दूं पस उस ने क़ाज़ी अबुश्शोराब के हुक्म से गवाहियां लेकर ज़मीन उसको वापस कर दी। और मोहतदी के पास जाने की ज़रूरत न रही। पस वह ज़मीन उसके कब्ज़े में आ गई बाद का हाल मालूम नहीं और उसी सैफ़ बिन लैस ने बयान किया कि जब मैं मिस्र से चला था तो मेरा बेटा मिस्र में बीमार था और बड़ा बेटा मेरा वसी और क़ायम मक़ाम था मेरे अहल व अयाल और जायदाद का, मैंने इमाम अलैहिस्सलाम को

लिखा कि मेरा बेटा बीमार है आप दुआ फरमायें हज़रत ने लिखा तुम्हारा बीमार बेटा अच्छा हो गया। और बड़ा बेटा मर गया। खुदा की हम्द करो और बे क़रार न हो वरना सवाब से महरूम रहोगे। पस जैसा हज़रत ने कहा था वेसी ही ख़बर मुझे मिली।

19. रावी कहता है मुझ से यहिया बिन कुशैरी ने क़रयए क़ीर में बयान किया कि इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम का एक वकील था जिसे आप ने अपने घर के एक हुजरे में जगह दी थी और उसके साथ अपने एक सफ़ेद फ़ाम गुलाम को रख दिया था। वकील ने गुलाम से बदकारी करना चाही। उसने इस शर्त से कुबूल किया कि वह उसके लिये शराब मुहय्या करे। वकील ने शराब को हासिल किया और गुलाम से अपना मुहं काला किया। उसके और इमाम अलैहिस्सलाम के दरमियान तीन दरवाज़े मुक़फ़्फ़ल थे वकील ने बयान किया मैं अपनी ग़लती पर आगाह हुआ। नागाह दरवाज़े खुले और हज़रत तशरीफ़ लाये और दरवाज़े पर खड़े हो कर फ़रमाया। ऐ लोगो! तुम ख़ुदा से डरो और परहेज़गार बनो जब सुबह हुई तो हज़रत ने गुलाम के फ़रोख़्त करने का हुक्म दिया और मुझे घर से निकाल दिया।

20. रावी ने ख़बर दी मुझे मोहम्मद बिन रबीअ़ ने कहा कि मैंने मुनाज़रा किया अहवाज़ में एक मजूसी से। फिर मैं सामरा आया। उस मजूसी की एक बात मेरे दिल में गड़ गई थी। मैं अहमद बिन ख़ज़ीब के दरवाज़े पर बैठा हुआ था कि इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम अहलचियों के जलसे के दिन ख़लीफ़ा के दरबार से वाप़स होते हुये उधर से गुज़रे उन्हों ने मुझें देखा और अपनी उंगुली से ऊपर की तरफ़

इशारा करते हुये कहा वह एक है वह एक है वह यकता है पस इस बात का मेरे दिल पर असर हुवा।

21. अबू हाशिम जाफ़री से रवायत है कि मैं एक रोज़ इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में आया चाहता था कि आप से अंगूठी बनाने के लिये चांदी मांगूं ताकि मेरे लिये बरकत का बाएस हो लेकिन मैं भूल गया। जब मैं चलने के लिये उठा तो आप ने अंगूठी मेरी तरफ फेंकी और फ़रमाया तुम तो चांदी ही चाहते थे हम ने तुम को चांदी भी दी और नग भी और बनवाने की उजरत भी। ऐ अबू हाशिम अल्लाह तुम्हें मुबारक करे। मैंने कहा मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के वली हैं और मेरे ऐसे इमाम हैं जिनकी ताअत में बकाये दीन है। ऐ अबू हाशिम अल्लाह तुम्हें बख़्शे।

22. रावी कहता है मैं जब इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में आता तो प्यासा होता तो मुझे आपकी जलालते शान की वजह से पानी मांगने की हिम्मत न होती। हज़रत ख़ुद ही गुलाम से फ़रमाते इसे पानी पिलाओ और जब मैं चलने की फ़िक्र में होता तो फ़रमाते ऐ गुलाम सवारी ला।

23. रावी ने कहा सालेह बिन वसीफ के पास कुछ अब्बासी आये और सालेह इब्ने अली वग़ैरह भी इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के साथ सालेह बिन वसीफ़ की निगरानी में कै़द थे। सालेह ने उन लोगों से कहा। मैंने शरीर तरीन दो आदमियों के सिपुर्द हज़रत को किया था वह दोनो इबादत गुज़ार और सौम व सलात के पाबंद हो गये। मैंने उस कै़दी के बारे में उन दोनों से बात चीत की। उन्हों ने कहा। तुम क्या पूछते हो उस शख़्स के बारे में जो साएमुन्नहार

और क़ाएमुल्लैल है न किसी से बोलता है न किसी काम में मशगूल होता है और रोअब का यह हाल है कि जब हम उसकी तरफ़ देखते हैं तो बदन कांप ज़ाता है और हमारे नफ़्सों पर ना क़ाबिले बर्दाशत असर पड़ता है यह सुन कर वह लोग नाकाम वापस गये।

24. मोहम्मद बिन हसन मकफ़ूफ़ ने कहा कि मेरे एक दोस्त ने असकर के एक नसरानी फ़स्साद की ज़बानी बयान किया कि इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने मुझे एक रोज़ नमाज़े ज़ोहर के वक़्त बुलाया और कहा कि इस रग की फ़स्द को खोल और एक रग बताई जिसको फ़स्द खोली जाने वाली रगों में नहीं जानता था। मैंने दिल में कहा और यह अम्र और ज़्यादा ताज्जुब खेज़ है कि वक़्ते ज़ोहर फ़स्द खोल रहे हैं हालांकि यह फ़स्द का वक़्त नहीं और फिर ऐसी रग का जिसे मैं जानता भी नहीं, हज़रत ने फ़रमाया। तुम इंतेज़ार करो और घर में ही रहो जब शाम हुई तो मुझे बुला कर फ़रमाया। ख़ून निकालो मैंने ख़ून निकाला। फिर फ़रमाया रोक दो। मैंने रोक दिया, फिर फ़रमाया जाओ मत यहीं ठहरो, जब आधी रात हुई तो मुझे बुलाकर फ़रमाया ख़ून को जारी करो। इस पर मैंने पहले से ज़्यादा तअज्जुब किया। पूछना मुनासिब न जाना। मैंने ख़ून निकाला तो सफ़ेद ख़ून नमक की तरह निकला। हज़रत ने फ़रमाया। अब बन्द कर दे। मैंने बन्द कर दिया। फिर फ़रमाया अब तुम सुबह तक यहीं रहो जब सुबह हुई तो आपने अपने वकील से फ़रमाया इसे तीन दीनार दे दो। मैंने ले लिये और मैं वहां से इब्ने बख़तशूअ नसरानी के पास पहुंचा और यह किस्सा बयान किया उस ने कहा मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रहे हो। मैंने

तो तिब में यह हाल कहीं नहीं पढ़ा और न किसी किताब में देखा। नसरानी किताबों का सब से बड़ा आलिम फ़लां फ़ारसी है तुम उससे मालूम करो। मैंने बसरे तक के लिये एक कशती किराए पर ली और वहां से अहवाज़ तक आया और उस मर्दे फ़ारसी से मिला और वाक़िआ बयान किया उसने कहा मुझे कुछ मोहलत दो चन्द रोज़ बाद मैं तक़ाज़े के लिये पहुंचा उस ने कहा जिस शख़्स के मुतअल्लिक़ तुमने यह बयान किया उसने वह किया जो मसीह (ईसा) ने अपने ज़माने में चन्द बार किया था।

25. मोहम्मद बिन हजर ने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम से शिकायत की अब्दुल अज़ीज़ बिन वल्फ और यज़ीद बिन अब्दुल्लाह के ज़ुल्म की। हज़रत ने उसे लिखा कि अब्दुल अजीज़ को मामेला ठीक हो जायेगा। लेकिन यज़ीद बिन अब्दुल्लाह का और तेरा मामेला पेशे ख़ुदा तै होगा। पस् अज़ीज़ मर गया। और यज़ीद बिन हजर क़त्ल कर दिया गया।

26. अली बिन मोहम्मद से मरवी है कि हमारे असहाब में से किसी ने बयान किया कि इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम को तहरीर गुलाम मोहतदी के घर में क़ैद किया गया। वह हज़रत पर बहुत सख़्ती करता और सताता था उसकी बीवी ने कहा ख़ुदा तेरा सत्या नास करे तू जानता है कि तेरे घर में कौन बुज़ुर्ग क़ैद हैं तूने उनके नफ़्स की पाकीज़गी को समझा है मैं तुझे अज़ाबे ख़ुदा से डराती हूं उसने कहा मैं उनको दरिंन्दों के दरमियान छोडूंगा चुनांचे उसने ऐसा ही किया। उसने देखा कि हज़रत इन दरिंन्दों के दरमियान खड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं।

27. अहमद बिन इसहाक से मरवी है कि मैं हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ मैंने दरख़्वास्त की कि आप मेरे साथ कुछ लिख कर दिखा दें ताकि आपका ख़त आया करे तो मैं पहचान लिया करूं फ़रमाया ऐ अहमद ख़त मोटे और बारीक क़लम के लिहाज़ से मुख़ालिफ़ हो जाते हैं पस तुम शक को राह न दो। फिर आपने दवात मंगाई और लिखा। चूंकि सियाही रवां न थी लेहाज़ा पानी डाला। मैंने अपने दिल में कहा कि जिस क़लम से आप लिख रहे हैं यह मुझे अता फ़रमा देते तो अच्छा होता। जब आप लिख चुके तो मेरी तरफ़ मुतवज्जेह होकर बात चीत शुरू की और क़लम को दवात वाले कपड़े से साफ़ करने लगे फिर फ़रमाया ऐ अहमद यह कलम ले लो। मैंने कहा। हुज़ूर मैं एक मसअले में परेशां ख़ातिर हूं आपके पदरे बुज़ुर्गवार से पूछना चाहा था मगर मौक़ा न मिला हज़रत ने फ़रमाया वह क्या है मैंने कहा आप के आबाये किराम से मरवी है कि अंबिया अपनी पुश्त पर सोते हैं और मोमिनीन दाहनी करवट से और मुनाफ़िक़ीन बायें करवट से और शयातीन मुंह के बल। फ़रमाया हां ऐसा ही है। मैंने कहा मैं दाहिनी तरफ़ सोने की कोशिश करता हूं मगर मुम्किन नहीं होता। मुझे उस करवट पर नींद नहीं आती। हज़रत कुछ देर ख़ामूश रहे फिर फ़रमाया क़रीब आओ। अपना हाथ अपने कपड़ों के अन्दर करो फिर हज़रत ने अपनी आस्तीन से अपना हाथ निकाला और मेरे लिबास के अन्दर दाख़िल किया और दाहिने हाथ से बायें पहलू को और बायें से दाहिने पहलू को मला (तीन बार) फ़रमाया ऐ अहमद अब तू बाईं करवट न सोयेगा चुनांचे ऐसा ही हुआ।



एक सौ तेइसवां बाब

ज़िक्रे विलादते साहेबुल अम्र अलैहिस्सलाम

हज़रत 15 शअबान 255 हिजरी को पैदा हुऐ।

1. रावी कहता है कि जब जुबैरी (मोहतदी बादशाह अब्बासी) क़त्ल कर दिया गया तो इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह सज़ा है उस शख़्स की जो ओलियाऐ ख़ुदा पर तोहमत लगाता है उसने गुमान किया था कि वह मुझे क़त्ल करेगा। और यह कि मेरा कोई फरज़न्द नहीं उसने देख लिया कि ख़ुदा को कैसी क़ुदरत है। रावी कहता है अल्लाह ने उनको बेटा दिया जिसका नाम उन्हों ने मीम हे मीम दाल रखा। यह विलादत 256 हिजरी में हुई।

2. अली बिन मोहम्मद ने कहा कि बयान किया मुझ से मोहम्मद और हसन ने कहा कि अली बिन इब्राहीम ने 279 हिजरी में बयान किया मुझसे। उन दोनों ने क़हा कि बयान किया हम से मोहम्मद इब्ने अली बिन अब्दुर्रहमान अबदी ने अब्दे क़ैस से उसने ज़ौ इब्ने अजली से उसने एक मर्दे फ़ारसी से जिसका नाम उसने बताया कि मैं सामरा में इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के दरवाज़े पर आया आप ने बग़ैर मेरे इज़्न तलब किये मुझे बुलाया जब मैं दाखिल हुआ और सलाम किया तो फ़रमाया ऐ फ़लां तेरा क्या हाल है बैठ जा। फिर मेरे ख़ानदान के मर्दों और औरतों का हाल पूछा। फिर फ़रमाया तुम किस ग़रज़ से आये हो। मैंने कहा कि आप अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में रहने के लिये फ़रमाया। अच्छा तुम इस घर में रहो। चुनांचे मैं हज़रत के नौकरों के साथ रहने लगा। मेरा काम यह था कि सौदा सलफ़ बाज़ार से

ख़रीद लाता और मैं बग़ैर इज़्न हज़रत की ख़िदमत में हाज़िर हो जाता जब आप मर्दाने हिस्से में होते थे। एक दिन मैंने घर के अन्दर हरकत सुनी हज़रत की आवाज़ आई ठहर जा। यह सुन कर मेरी हिम्मत न हुई कि बाहर निकलूं और न अन्दर आ सकूं। फिर एक कनीज़ निकली जिसके पास एक ढकी हुई चीज़ थी हज़रत ने मुझसे फ़रमाया अन्दर आ जाओ। मैं दाख़िल हुआ आंपकी कनीज़ को पुकारा और फ़रमाया जो कुछ तेरे पास है खोल दे उसने खोला तो वह एक निहायत ख़ूबसूरत साहबज़ादे थे फ़रमाया उसके शिकम को भी खोल दे मैंने देखा कि सीना से नाफ़ तक सब्ज़ बाल थे। काला कोई न था। मुझ से फ़रमाया यह तुम्हारे इमाम हैं उसके बाद इमाम अलैहिस्सलाम की वफ़ात तक फिर मैंने कभी उनको न देखा। जो इब्ने अली ने उनसे पूछा तुम ने उनकी उम्र का क्या अंदाज़ा किया। कहा दो साल, अबदी ने कहा मैंने जौ से पूछा तुम्हारा अंदाज़ा क्या है कहा चौदह साल और अबू अली और अबू अब्दिल्लाह ने कहा हमारा अंदाज़ा 21 साल है।

तौज़ीह : हदीसे अव्वल में हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम की विलादत 255 हिजरी और 256 हिजरी दोनों लिखी हैं अल्लामा मज्लिसी मिरअतुल उकूल में तहरीर फरमाते हैं कि यह इख़्तेलाफ़ ग़ालिबन शमसी और क़मरी हिसाब की बिना पर है। सहीह साल 256 हिजरी है। उलमा ने लिखा है कि लफ़्ज़े नूर के अअ़दाद 256 हैं और यही लफ़्ज़ आपके साले विलादत को बताता है।

हदीसे दोम को अल्लामा मज्लिसी ने ज़ईफ़ तहरीर किया है उम्र के तख़मीने में जो इख़्तेलाफ़ है उसकी वजह है

कि फ़ारसी ने हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की हयात में देखा था। और दूसरों ने वुकलाये नाहिया-ए-मुकद्दसा के लिहाज़ से बताया चूंकि हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम का नुमू आम इंसानों से अलाहेदा था। लेहाज़ा उम्र का इख़्तेलाफ़ यूं भी हो सकता है।

3. अबू सईद ग़ानिम हिन्दी से रिवायत है कि मैं हिन्दुस्तान के इलाक़े कशमीर के दाख़िली हिस्से का रहने वाला था और मेरे चालीस साथी और थे। हम बादशाह के दाहिनी तरफ़ कुर्सियों पर बैठा करते थे और किताबे तौरैत व इंजील व ज़ुबूर और सुहूफ़े इब्राहीम पढ़ा करते, लोगों के क़ज़ाया फ़ैसल करते और इल्मे दीन की तालीम देते और हलाल व हराम के मुतअल्लिक़ फ़तवा देते थे और बादशाह और रेआया सब हमारी तरफ़ रूजूअ करते थे। एक दिन रसूलुल्लाह स० का ज़िक्र छिड़ा। हम ने कहा कि उस नबी का ज़िक्र तमाम आसमानी कुतुब में है लेकिन उनका मुआमेला हम पर मख़फ़ी है हम पर वाजिब है कि उनके मुतअल्लिक़ जुस्तजू करें और उनके हालात का पता चलायें।

हम सबने इस राय से इत्तेफ़ाक़ किया कि मैं जाकर हालात मालूम करूं मैं माले कसीर लेकर निकला, बारह माह सफ़र करने के बाद काबुल पहुंचा। राह में डाकुओं ने हमला किया और मेरा तमाम माल लूट लिया और मुझे बुरी तरह ज़ख़्मी किया और मुझे शहरे काबुल में पहुंचाया गया। जब मेरी रसाई वहां के बादशाह तक हुई और वह मेरे हालात से बाख़बर हुआ। तो मुझे शहर बल्ख़ भेज दिया। वहां का हाकिम दाउद बिन अब्बास बिन अबुल असवद था। उसको लोगों से मेरे मुतअल्लिक़ पता चला कि मैं हिन्द से आया हूं

और मैंने फ़ारसी ज़बान सीख ली थी। पस वहां के फुकहा और मुतकल्लेमीन से मुनाज़िरे हुये और दाउद बिन अब्बास ने मुझे अपने दरबार में बुलाया। फ़ोकहा को जमा किया। उन्होंने मुझसे मुनाज़ेरा किया। मैंने उन्हें बताया कि मैं अपने वतन से उस नबी की तलाश में निकला हूं जिसका ज़िक्र मैंने आसमानी किताबों में पढ़ा हैं उस ने कहा वह कौन हैं और नाम क्या है। मैंने कहा। मोहम्मद स0 उसने कहा वह हमारे नबी हैं जिनकी तू तलाश में है।

मैंने ओलमा से उनके अहकामे शरीअत पूछे, पस उन्हों ने बताये। मैंने कहा। मैं तो यह जानता हूं कि मोहम्मद नबी हैं लेकिन यह नही जानता उनका वस्फ़ तुमं ने बयान किया है वही है या नहीं। मुझे उनके रहने की जगह बताओ ताकि मैं वहां जाउं उन्होंने कहा वह तो इंतेक़ाल कर गये। मैंने कहा उनका वसी कौन है। कहा अबू बकर। मैंने कहा यह तो कुन्नियत है असली नाम बताइये। उन्हों ने अब्दुल्लाह बिन उस्मान और कुरैश तक नसब बयान किया। मैंने कहा अपने नबी स0 का नसब भी बयान कीजिये। उन्हों ने नसब बयान किया। मैंने कहा जिन की मुझे तलाश है यह वह नहीं हैं। जिन को मैं तलाश करता हूं वह उनके वह ख़लीफ़ा है जो दीन में उनके भाई और नसब में इब्ने अम हैं और उनकी बेटी का शौहर है और उसके बेटों का बाप है। उस नबी की औलाद रूये ज़मीन पर नहीं। सिवाये उस शख़्स की औलाद के जो ख़लीफ़ा है। यह सुनते ही वह मुझ पर हमला आवर हुये और कहने लगे ऐ अमीर यह शख़्स शिर्क से निकल कर कुफ़ की तरफ़ आया है इसका ख़ून हलाल है। मैंने कहा लोगो! मैं एक ऐसे दीन से ताल्लुक रखता हूं जब तक उससे

बेहतर दीन न पा लूंगा। उसको तर्क न करूंगा। मैंने उन किताबों में जो अंबिया पर नाज़िल हुईं। उस नबी की यही सिफ़त पाई है। मैं हिन्दुस्तान से आया हूं और उसी इज़्ज़त के साथ जो मुझे हासिल है मैं उनको तलाश कर रहा हूं जब मैंने तुम से तुम्हारे नबी की सिफ़ात सुनीं जिनको तुम ने बयान किया तो मैं समझ गया कि यह वह नबी नहीं जिसका आसमानी किताबों में ज़िक्र है लेहाज़ा तुम मेरी ईज़ा रसानी से बाज़ रहो।

और हाकिम ने एक शख़्स हुसैन बिन इशकीब नामी को बुलाकर कहा इस शख़्स से मुनाज़रा कर। उसने कहा अल्लाह आप की हिफ़ाज़त करे बल्ख़ में और बहुत से फ़ोक़हा व ओलमा हैं जो मुझ से ज़्यादा जानने वाले हैं और मुनाज़ेरा के मश्शाक़ हैं उसने कहा जैसा मैंने कहा। तुम ही मुनाज़ेरा करो इसे ख़लवत में ले जा कर नर्मी से बात चीत करो।

जब मैं इब्ने इशकीब की सिपुर्दगी में आया तो उसने मुझ से कहा तुम्हारा मतलूब वही नबी है जिसका वस्फ़ इन लोगों ने बयान किया है लेकिन जैसा उन्हों ने कहा। अम्रे ख़िलाफत का उससे कोई ताल्लुक़ नहीं, यह नबी मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह हैं और उनके वसी अली इब्ने अबी तालिब हैं और वह फ़ातिमा बिन्ते मोहम्मद स० के शौहर हैं। और हसन अलैहिस्सलाम व हुसैन अलैहिस्सलाम के जो रसूलुल्लाह स० के नवासे हैं बाप हैं।

अबू सईद ग़ानिम कहता है यह सुन कर मैंने कहा अल्लाहो अकबर यही वह नबी है जिसकी तलाश मुझे है फिर मै दाउद बिन अब्बास के पास आया और कहा ऐ अमीर मैंने

पा लिया जिसकी तलाश थी और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मोहम्मद स0 अल्लाह के रसूल स0 हैं। इसके बाद उस ने मेरे साथ अच्छा बरताव किया और सिला–ए रहम किया और उसने हुसैन से कहा इसके साथ मेहरबानी का बरताव करो मैं हुसैन के पास रहने लगा। और मैंने हस्बे ज़रूरत इल्मे दीन उससे हासिल किया अज़ क़िस्म रोज़ा व नमाज़ व फरायज़। एक दिन मैंने कहा हमने अपनी किताबों में पढ़ा है कि मोहम्मद स0 ख़ातेमुन्नबीयीन हैं। उनके बाद कोई नबी नहीं और यह कि उनकी ख़िलाफ़त उनके बाद उनके वसी और वारिस और जानशीन को मिलेगी।

और यह अम्रे ख़ुदा उनकी औलाद में चलता ही रहेगा। यहां तक कि दुनिया ख़त्म हो पस मोहम्मद स0 के वसी का वसी कौन है उसने कहा हसन अलैहिस्सलाम, फिर हुसैन अलैहिस्सलाम फ़रज़न्दाने मोहम्मद स0, फिर यह वसीयत का सिलसिला हज़रत साहेबुज़्ज़मां अलैहिस्सलाम तक पहुंचेगा। फिर उस ने मुझे वह वाक़िआत बताये। अब मैंने उस तरफ़ जाने का इरादा किया।

रावी कहता है कि ग़ानिम कुम पहुंचा और 264 हिजरी में हमारे असहाब के साथ रहा। उसके बाद वह बग़दाद पहुंचा उसके साथ उसका एक सिंधी साथी भी था जो उसका हम मज़हब भी था। ग़ानिम ने बयान किया कि मुझे अपने साथी की बाज़ बातें ना पसंद हुईं लेहाज़ा मैंने उस से जुदाई अख़्तियार की और मैं कुम से चल कर अब्बासी हकूमत में आया नमाज़ पढ़ने के बाद मैं मुतफ़क्किर था इस मुआमेले में जिस की तलाश है उस तक कैसे पहुंचू कि एक

शख़्स मेरे पास आया और कहा तेरा नाम ग़ानिम हिन्दी है। मैंने कहा हां। उस ने कहा तेरे मौला तुझे बुलाते हैं। मैं उसके साथ चला। यहां तक कि हम एक घर और बाग़ में पहुंचे जहां एक बुजुर्ग बेठे थे उन्हों ने फ़रमाया मरहबा। ऐ ग़ानिम फिर हिन्दी जबान में कहा तेरा क्या हाल है और फुला फुलां को किस हाल में छोड़ा है।

ता आंकि आप अलैहिस्सलाम ने नाम बताये उन चालीस आदमियों के जिनको मैंने कश्मीर में छोड़ा था और एक एक के मुतअल्लिक़ मुझसे सवाल किया हिन्दी ज़बान में, फिर तुम्हारा इरादा इस साल हज का है अहले कुम के साथ। मैंने कहा हां ऐ मेरे आक़ा! फ़रमाया उनके सांथ हज को न जाना (वर्ना क़ज़्ज़ाक़ लूट लेंगे) इस साल अगर जाओ तो वापस आ जाना और अगले साल हज करना। फिर एक थैली जो हज़रत के सामने रखी थी मुझे दे दी और फ़रमाया। इसे अपनी ज़रूरियात में सर्फ़ करो और फुलां शख़्स के पास बग़दाद न जाना और यह हाल उससे न कहना। रावी कहता है कि उसके बाद ग़ानिम मेरे पास आ गया। शहरे कुम में। फिर उसने अपने मक़सद में कामयाबी (हज़रत हुज्जत की हुज़ूरी) के बाद कुम में रिहाइश अख़्तियार की। लोगों ने बताया कि हमारे साथी जो हज के लिये निकले थे उक़बा (पुश्ता घाटी) से वापस आ गये। (डाकुओं के ख़ौफ से) ग़ानिम ख़ुरासान चला गया। अगले साल उसने हज किया और ख़ुरासान से हमारे लिये तोहफ़े भेजे, वह मुद्दत तक वहीं रहा। वहीं मरा। अल्लाह उस पर रहम करे।

4. अली बिन मोहम्मद ने सअद बिन अब्दुल्लाह से रवायत की है कि हसन बिन नज़्र और अबू सेदाम और कुछ

लोगों ने इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के बाद इस बारे में गुफ़्तुगू की कि हज़रते हुज्जत के वोकला की मारिफ़त जो माल हज़रत की ख़िदमत में भेजा जाता है वह आप तक पहुंचा भी है या यह लोग अपने ही पास रख लेते हैं उन लोगों ने इसकी तहकीक़ का इरादा किया। हसन बिन नज़्र ने अबू सेदाम से कहा। मैं हज का इरादा रखता हूं उसने कहा इस साल न जाओ। हसन ने कहा मुझे इसकी फ़िक्र में नीन्द नहीं आती। मेरा जाना ज़रूरी हैं और उसने अहमद बिन याली बिन हम्माद को अपने माल का वसी बनाया और वसीयत की कि यह माल नाहिया मुकद्दसा ले जाओ और कोई चीज़ किसी को न दे बल्कि अपने हाथ से हज़रत हुज्जत अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुंचाये।

हसन ने कहा जब मैं बग़दाद पहुंचा तो किराये पर एक घर ले लिया। मैं उसमें ठहरा। एक वकील मेरे पास कपड़े और दीनार लाया और मेरे पास रख दिये। मैंने कहा यह क्या है उसने कहा तुम्हारी नज़र के सामने है फिर दूसरा दिन आया फिर तीसरा दिन आया यहां तक कि घर सामान से भर गया। फिर अहमद बिन इसहाक जो कुछ उसके पास था ले आया मुझे बड़ा ताज्जुब हुवा और फ़िक्र हुई मेरे पास इमाम अलैहिस्सलाम यानी हज़रते हुज्जत का ख़त आया। उसमें लिखा था कि जब दिन का इतना हिस्सा गुज़र जाये तो जो तुम्हारे पास है उसे ले कर आओ। मैं सब सामान ले कर चला। रास्ते में 60 डाकुओं का एक गिरोह था लेकिन रास्ते से सहीह सालिम गुज़र गया और मक़ामे असकर पहुंचा। वहां हज़रत का एक और ख़त मिला। मैंने हम्मालों के बोरों में सामान लदवाया। जब दरवाज़े पर पहुंचा तो वहां एक हबशी

गुलाम खड़ा था उसने कहा तुम हसन बिन नज़र हो उसने कहा हां उसने कहा अन्दर आओ मैं सहने ख़ाना में आया हम्मालों के साथ सब सामान भी लाया। मैंने घर के एक गोशे में बहुत सी रोटियां देखीं उसने हर हम्माल को दो दो रोटियां दीं। वह चले गये तो मैंने देखा घर के एक दरवाज़े पर पर्दा पड़ा हुआ है अन्दर से आवाज़ आई। ऐ हसन बिन नज़्र ख़ुदा का शुक्र है कि उसने तुझ पर एहसान किया। पस हमारे मामले में शक न कर शैतान तेरे बारे में शक करने वाले को दोस्त रखता हैं मुझे दो कपड़े दे कर फ़रमाया। यह ले इनकी तुझे ज़रूरत पड़ेगी। मैंने ले लिये सईद कहता है कि हसन बिन नज़्र वहां से लौट आया और माहे रमज़ान में उसका इन्तेक़ाल हो गया। और इन ही दो कपड़ों का उसे कफ़न दिया गया।

5. रावी कहता है कि हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद इमामत के बारे में मुझे शक हुआ मेरे बाप के पास माले कसीर था उसने उसे लिया और एक कश्ती में एक गिरोह के साथ निकला। पस सख़्त बुख़ार आया मुझ से कहा बसरा वापस ले चलो यह मरज़ पैग़ामे मौत है और ये भी कहा कि इस माल के बारे में ख़ुदा से डरो और वसीयत की कि उसे हजरत हुज्जत तक पहुंचा देना इसके बाद वह मर गये। मैंने अपने दिल में कहा। मेरे बाप ने ग़लत वसीयत नहीं की। मैं इस माल को इराक़ ले जाउंगा। और दरिया के किनारे एक मकान किराये पर ले लूंगा। और किसी को न बताउंगा कि मेरे पास क्या है अगर कोई अम्र ऐसा ही ज़ाहिर हुआ जैसा कि इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम के वक़्त में (ऐजाज़ी शान से) होता

था। तो मैं यह माल हज़रते हुज्जत के पास भेज दूंगा। वर्ना रोक लूंगा। पस वह सामरा आया और मैंने एक शर्त पर एक मकान किराये पर ले लिया और रहने लगा एक दिन एक क़ासिद हज़रते हुज्जत का एक खत मेरे पास लाया। उसमें लिखा था ऐ मोहम्मद तेरे पास इतना इतना माल फ़लां फ़लां चीज़ के अन्दर है यहां तक कि तफ़सील से उन चीज़ों का ज़िक्र किया था जो मेरे पास थीं और जिनका इल्म किसी को न था पस मैंने वह सब माल उस क़ासिद के सिपुर्द कर दिया और इसके बाद चन्द दिन ऐसे गुज़रे कि मैं दर्द से सर नहीं उठा सकता था पस हज़रत का एक रूक़ा मेरे पास और आया कि हम ने तुम को तुम्हारे बाप की जगह अपना वकील बनाया।

6. रावी कहता है कि मैंने कुछ चीज़ें साहेबुल अम्र अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में मर्ज़बानी अल–हारिसी की तरफ भेजीं उनमें सोने के कंगन भी थे। हज़रत ने वह कंगन वापस कर दिये मैंने उनको तोड़ने का हुक्म दिया। उनको तोड़ा गया तो बीच में से तांबे और लोहे की सलाखें निकलीं या बीच में से ख़ाली थे। मैंने सलाखें निकाल कर भेजीं तो हज़रत ने ले लिया।

7. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम की साहबज़ादी ख़दीजा के गुलाम मदायनी ने बयान किया कि अहले मदीना में से कुछ लोग तालिबीने हक़ थे और हक़ बयान करते थे उनके पास मोअय्यना वज़ायफ़ आ जाया करते थे जब अबू मोहम्मद मर गये तो कुछ लोग उन में से कहने लगे कि हज़रत के कोई लड़का ही नहीं, पस जो लोग उन में से साहिबे औलाद होने पर साबित क़दम रहे उनके वज़ायफ़ तो

हज़रते हुज्जत की तरफ़ से जारी रहे बाक़ी के रोक लिये गये। और अल–हम्दोलिल्लाहे रब्बिल आलमीन कहने वालों में से न रहे।

8. अली बिन मोहम्मद ने बयान किया कि इराक़ अरब के एक शख़्स ने हज़रत हुज्जत के पास कुछ माल भेजा आप अलैहिस्सलाम ने रद कर दिया और फ़रमाया कि पहले इस में से अपने चचाज़ाद भाई का हक़ निकालो और सूरत यह थी कि उस शख़्स के कब्ज़े में उसके चचाज़ाद भाईकी एक ज़मीन थी जिस में उसकी शिरकत थी उस ने उसको रोक रखा था। जब उसने ग़ौर किया तो उसकी क़ीमत चार सौ दिरहम ही होती थी पस उसने वह हक़ निकाल कर जब हज़रत के पास भेजा तो आप अलैहिस्सलाम ने कुबूल कर लिया।

9. कासिम इब्ने उला कहता हैं कि मेरे चन्द बेटे थे मैं उनके लिये दुआ करने को हज़रत साहिबुल अम्र अलैहिस्सलाम को लिखता था। हज़रत उनके मुतअ़ल्लिक़ कुछ तहरीर न फ़रमाते थे वह सब मर गये। जब मेरा लड़का हसन पैदा हुआ तो मैंने उसके लिये दुआ को लिखा। हज़रत ने जवाब दिया। पस अल–हम्दो लिल्लाह वह ज़िन्दा है।

10. रावी कहता है कि मैं एक साल बग़दाद से निकला और हज़रत साहेबुल अम्र से सफ़र की इजाज़त चाही आप ने इजाज़त न दी। मैं 28 रोज़ ठहरा रहा और क़ाफ़िला नहरवान की तरफ़ कूच कर गया। हज़रत साहेबुल अम्र अलैहिस्सलाम ने चहार शंबे को सफ़र की इजाज़त दी मैंने सफ़र किया और मैं क़ाफ़िले से मिल जाने से मायूस था लेकिन जब मैं नहरवान पहुंचा तो क़ाफ़िला वहां रूका हुआ

था। मैंने अपने ऊंटों को खिलाया पिलाया क़ाफ़ला रूका रहा। फिर क़ाफ़िले ने कूच किया मैंने भी कूच किया चूंकि हज़रत ने मेरी सलामती के लिये दुआ फ़रमाई थी लेहाज़ा इस सफ़र में बेहमदिल्लाह कोई तकलीफ़ न हुई।

11. रावी कहता है मेरे पाख़ाने के मुक़ाम पर एक नासूर हो गया। मैंने तबीबों को दिखलाया और इलाज में माल भी ख़र्च किया। उन्होंने कहा हमें इसकी दवा मालूम नहीं। मैंने हज़रत साहिबुल अम्र अलैहिस्सलाम को लिखा और दुआ का ख़्वास्तगार हुआ। हज़रत ने लिखा ख़ुदा ने तुमको सेहत अता फ़रमाई। ख़ुदा तुम को हमारे साथ दुनिया व आख़िरत में रखे। अगला जुमा आया तो मुझे सेहत हो गई। और नासूर मेरी हथेली की तरह बराबर हो गया। मैंने अपने एक दोस्त तबीब को बुला कर दिखाया उसने कहा हम को इसकी दवा का इल्म ही नहीं।

12. अली इब्ने हुसैन अल–यमानी ने बयान किया कि मैं बग़दाद में था। मैंने यमन वालों के क़ाफ़ले में जाने का इरादा किया। मैंने साहिबुल अम्र को लिख कर इजाज़त चाही। हज़रत ने जवाब दिया कि उनके साथ मत जाओ इसमें तुम्हारे लिये बेहतरी नहीं। तुम कूफ़े में ठहरे रहो। मैं ठहर गया। क़ाफ़िला रवाना हो गया। मालूम हुवा कि उन पर बनू हंज़ला के डाकूओं ने हमला किया और उनको हलाक कर दिया। फिर मैंने बराहे दरिया इजाज़त चाही। हज़रत ने इजाज़त न दी। मैंने उन कश्तियों का हाल मालूम किया जो उस साल रवाना हुई थीं। पता चला कि उनमें से एक न बची। हिन्द की एक क़ौम ने जो दरियाई डाकू कहलाते हैं। उन पर हमला किया और लूट लिया। रावी कहता है कि जब

मैं वहां से असकर आया (सामरा) और मग़रिब के वक़्त रौज़ेए इमाम अली नक़ी और इमाम हसन असकरी अलैहिमुस्सलाम में आया। मैंने न तो किसी से बात की और न किसी से शनासाई पैदा की। मैंने मस्जिद में नमाज़ पढ़ी। बाद ख़त्मे नमाज़ ज़ियारत बजा लाया। नागाह एक ख़ादिम मेरे पास आया और कहा उठ मैंने कहा कहां चलूं उसने कहा घर चल, मैंने कहा तू जानता है मैं कौन हूं तू किसी और को बुलाने के लिये भेजा गया है उसने कहा नहीं तुम्हारे ही लिये भेजा गया हूं।

तू अली इब्नुल हुसैन क़ासिदे जाफ़र इब्ने इब्राहीम है अल–गरज़ वह मुझे ले कर चला और हुसैन इब्ने अहमद के मकान में मुझे ठहराया। मैं नहीं समझ सका कि उस से क्या कहूं। थोड़ी देर बाद वह आया और उन तमाम मसाएल का जवाब लाया जिनके जवाब की मुझे ज़रूरत थी मैं तीन दिन रहा। मैंने रौज़े के अन्दर जाकर ज़ियारत चाही। हज़रत ने इजाज़त दें दी। मैंने रात को ज़ियारत की।

13. हसन बिन फ़ज़्ल बिन यज़ीद यमानी कहता है कि मेरे बाप ने हज़रत हुज्जत को अपने क़लम से ख़त लिखा हज़रत ने उसका जवाब दिया। फिर मैंने अपने क़लम से लिखा। हज़रत ने उसका जवाब भी दिया फिर हमारे असहाब में से एक आलिम ने ख़त लिखा। इसका जवाब न आया हमने ग़ौर किया तो मालूम हुआ कि क़र्मती मज़हब का मानने वाला है। हसन बिन फ़ज़्ल ने कहा। मैंने सामरा में इमाम अली नक़ी और ख़ानए इमाम हसन असकरी अलैहिमुस्सलाम की ज़ियारत की और तूस में आया (लफ़्ज़े तूस कातिब की ग़लती से लिखा गया है बज़ाहिर मालूम होता है कि यह तूबा

है जिसके माने हैं ज़्यादा पाक और मुराद है ख़ानए साहिबुल अम्र अलैहिस्सलाम) फिर मैं हज़रते हुज्जत के घर आया और मैंने ये तै किया कि सामरा से उस वक़्त तक वापस नहीं जाउंगा .जब तक मेरा मामला हज़रत हुज्जत की तरफ़ से वाज़ेह न हो जाये और मेरी हाजत बर न आये। मैं इतनी मुद्दत ठहरा कि मैं उकताने लगा। और मुझे यह ख़ौफ़ हुआ कि तूले क़ेयाम से कहीं मेरा हज फ़ौत न हो जाये एक दिन मैं इसी फ़िक्र में मुहम्मद बिन अहमद के पास आया कि उस पर तक़ाज़ा करूं उसने कहा तुम फ़लां मस्जिद में जाओ वहां एक शख़्स मिलेगा। चुनांचे मैं गया। मेरे पास एक शख़्स आया। वह मुझे देख कर हंसा और कहा ग़म न करो। इस साल तुम हज कर लोगे। और अपने ख़ानदान और औलाद के पास सहीह व सालिम वापस आओगे। इससे मैं मुत्मइन हो गया। और मेरा दिल ठहर गया।

मैंने कहा अल–हम्दो लिल्लाह! यह है तस्दीक़ उस अम्र की। दूसरी बार मैं फिर सामरा आया। पस भेजी गई मेरे लिये दीनार की एक थैली और कुछ कपड़े, मैं ग़मगीन हुआ और अपने दिल में कहा अगर यह चीज़ें ले लेता हूं तो लोग कहेंगे हिर्स व तमअ यहां लायी थी और मैं जिहालत को काम में लाया और वापस कर दिया। और हज़रत को फिर एक ख़त लिखा जिस शख़्स को यह चीज़ें वापस की थीं उसने मुझसे कोई बात ही न कही। मैं निदामत में अपना हाथ मलता था और मैं इस मुआमेले में ग़ौर व फ़िक्र कर रहा था। दिल में कहता था कि अगर हज़रत ने इन दीनारों को लौटा दिया तो मैं इन थैलियों को न तो खोलूंगा और न उनमें तसर्रुफ़ करूंगा बल्कि मैं उनको अपने बाप के पास ले

जाउंगा। क्यों कि वह मुझ से बेहतर इस मुआमले को समझने वाले हैं वह जैसे चाहेंगे ख़र्च करेंगे इसी ख़ेयाल में था कि हज़रत का क़ासिद जो दीनार लाया था मेरे पास आया और मुझसे कहने लगा कि तुम ने बहुत बुरा किया कि हज़रत को न जाना। हज़रत फ़रमाते हैं कि हम अपने दोस्तों के साथ अक्सर ऐसा सुलूक किया करते हैं और बसा औक़ात वह ख़ुद हम से ब ग़रज़े बरकत मांगा करते हैं। पस चूंकि तू ने अल्लाह से फिर इस्तग़फ़ार किया। अल्लाह तेरा गुनाह मआफ़ करेगा। हम ने दीनारों को रोक लिया (क्योंकि तू इस में तसर्रुफ़ का इरादा नहीं रखता) लेकिन कपड़े भेजे हैं ताकि तू हज के वक्त उनसे एहराम बांधे।

उसने कहा मैंने दो हाजतों के लिये हज़रत को ख़त लिखा और तीसरी बात इस ख़ौफ़ से न लिखी कि मबादा हज़्रत को नागवार हो मेरे पास उन दो बातों का जवाब भी आया और इस तीसरी बात का जो मेरे दिल में थी।

हसन ने कहा मैंने जाफ़र बिन इब्राहीम नैशापुरी से यह तै किया कि वह मेरे साथ हज को चले और मेरा हम कजावा हो जब मैं बग़दाद पहुंचा तो कुछ ऐसी बातें ज़ाहिर हुई कि मैंने अलाहिदगी अख़्तियार कर ली और मैं अपना हम कजावा तलाश करने के लिये निकला। मेरी मुलाक़ात इब्ने वजना से हुई। मैं उसके पास गया ऊंट किराया करने को कहा। मैंने उसको अपने से नाखुश पाया उसने कहा मैं कई रोज़ से तेरी तलाश में हूं हज़रत साहिबुल अम्र ने फ़रमाया था कि वह तेरे साथ जायेगा। पस उससे अच्छा सुलूक करना और उसका हम कजावा बनना और ऊंट किराये पर लेना।

14. रावी कहता है कि मुझे साहिबुल अम्र अलैहिस्सलाम

के वकील हाजिज़ के बारे में शक हुआ कि यह हज़रत तक माल पहुंचाता है या नहीं मैंने माले ख़ुम्स व ज़कात जमा किया ताकि हज़रत तक ख़ुद पहुंचा दूं। चुनांचे मैं सामरा पहुंचा। हज़रत का हुक्म आया कि शक का महल नहीं न हमारे बारे में न उस शख़्स के बारे में जिसको हम अपने हुक्म से अपना क़ायम मक़ाम बनाये। पस जो कुछ तुम्हारे पास है हाजिज़ बिन यज़ीद को दे दो।

15. मुहम्मद बिन सालेह कहता है कि मेरा बाप जो हज़रत साहिबुल अम्र का वकील था हमदान में जब मर गया। और मैं वकील हुआ तो मेरे बाप ने हज़रत हुज्जत तक पंहुंचाने के लिये दूसरों के सिपुर्द कुछ काम किया था। मैंने हज़रत को इत्तेलाअ़ दी। आप ने तहरीर फ़रमाया। उन से मांगो और सख़्ती करो। मैंने मांगा तो और लोगों ने तो दे दिया। मगर एक शख़्स जिसके ऊपर चार सौ दीनार थे उसने न दिये। मैं उससे मांगने गया तो टाल मटोल करने लगा। और उसके बेटे ने मेरी तौहीन की और मुझे बेवक़ूफ़ बनाया। मैंने उसके बाप से शिकायत की। उसने कहा क्या हुआ अगर ऐसा किया यह जवाब सुन कर उसकी डाढ़ी पकड़ ली और उसको पैरों से घिसट लिया और उसके घर के अन्दर उसको ख़ूब मारा पीटा किया।

उसका बेटा फ़रयाद करता हुआ निकला कि ऐ अहले बग़दाद ये शख़्स कुम का रहने वाला है और राफ़िज़ी है इसने मेरे बाप को क़त्ल कर डाला। मैं अपने घोड़े पर सवार हुआ और मैंने कहा ऐ अहले बग़दाद तुम एक मर्दे मुसाफ़िर के ख़िलाफ़ एक ज़ालिम की तरफ़ तवज्जोह कर रहे हो मैं तो हमदान का रहने वाला सुन्नी हूं। यह मुझे निसबत देता है

अहले कुम और रफ़्ज़ की तरफ़ ताकि मेरा हक़ और मेरा माल दबाये बैठा रहे यह सुन कर वह लोग उस पर टूट पड़े और इरादा किया कि मेरा हक़ लेने के लिये उसकी दुकान पर घुस जायें मैंने उनको रोका और अपने मक़रूज़ को बुला कर माल तलब किया उसने कहा इन लोगों को घर से निकाल दो। मैं क़सम खाकर कहता हूं कि अगर रूपया न दूं तो मेरी बीवी को तलाक़ हो।

16. बदर गुलाम अहमद बिन हसन से मरवी है कि मैं इलाक़ए जबल में वारिद हुआ और मैं इमामते अइम्मा का क़ायल न था लेकिन उन सब से मुहब्बत रखत था। जब यज़ीद बिन अब्दुल्लाह मरा तो उनसे अपनी बीमारी में वसीयत की कि उसका घोड़ा, तलवार और पटका उसके मौला यानी साहिबुल अम्र तक पहुंचा दूं। मुझे यह ख़ौफ़ हुआ कि अगर मैंने घोड़ा इज़कूतकीन (हाकिमे वक्त) के हाथ फ़रोख़्त न किया तो वह मुझे ज़लील करेगा। मैंने इन तीनों चीज़ों को सात सौ दीनार में फ़रोख़्त किया और उसका हाल किसी से बयान न किया। नागाह हज़रते हुज्जत का ख़त मेरे पास आया कि सात सौ दीनार हमारे हक़ के जो तुम्हारे पास हैं वह अदा कर दो जो क़ीमत है घोड़े तलवार और पटके की।

17. अली ने अपने रावी के ज़रिये से बयान किया कि मेरे यहां एक लड़का पैदा हुआ। मैंने साहिबुल अम्र अलैहिस्सलाम से इजाज़त चाही, सातवें रोज़ ख़तना कराने की, हज़रत का जवाब आया ऐसा न करो। वह लड़का सातवें या आठवें दिन मर गया। मैंने मरने की इत्तेलाअ़ दी। हज़रत ने तहरीर फ़रमाया। इसके बाद दो लड़के होंगे जिनके नाम अहमद व

जाफ़र रखना। चुनांचे ऐसा ही हुआ उसने कहा मैं ने हज का इरादा किया और लोगों को विदाअ़ किया। मैं चलने ही वाला था कि हज़रत का ख़त आया हम उस साल जाने को अच्छा नहीं जानते आगे तुम्हें इख़्तियार है। मैं तंग दिल और ग़मगीन हुआ। मैंने लिखा मैं हस्बुल हुक्म रुक तो गया हूं लेकिन हज से रह जाने का ग़म ज़रूर है। हज़रत ने तहरीर फ़रमाया। तंग दिल न हो इंशा अल्लाह अगले साल हज करोगे। अगले साल मैंने लिखा कि इजाज़त है और तहरीर किया कि अपना हम कजावा मुहम्मद बिन अब्बास को बना लिया है वह मोतमद है मुझे उसकी देयानत और हिफ़ाज़त पर भरोसा है हज़रत का जवाब आया। असदी अंच्छा अदील है। अगर वह आये तो उस पर इसको तरजीह न देना जब असदी आया तो मैंने उसको अपना हम कजावा बना लिया।

18. हसन इब्ने अली ने बयान किया कि मजरूह ने मिरदास इब्ने अली के सिपुर्द कुछ माल किया कि इसे नाहियए मुकद्दसा में हज़रत साहिबुल अम्र तक पहुंचा दे मिर्दास के पास हज़रत का ख़त आया कि माले तमीम के साथ वह माल भी भेज दे जो शीराज़ी ने सिपुर्द किया है।

19. हसन बिन ईसा ने जिसकी कुन्नियत अबू मुहम्मद है, बयान किया कि जब इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम का इंतेक़ाल हो गया तो मिस्र का एक शख़्स कुछ माल ले कर मक्के आया ताकि नाहिया मुक़द्दसा पहुंचा दे। यहां के लोगों ने इख़्तेलाफ़ किया। बाज़ ने कहा इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम ला वलद मरे उनके जानशीन जाफ़र हैं बाज़ ने कहा उनके बेटे हैं इस मिस्री ने एक शख़्स अबू तालिब नामी को तहक़ीक के लिये भेजा वह सामरा आया उसके पास ख़त

था। वह जाफ़र के पास गया और उन से सुबूत मांगा उन्हों ने कहा इस वक़्त पेश नहीं कर सकता। वह हज़रत साहिबुल अम्र के दरवाज़े पर आया और वह ख़त हज़रत साहिबुल अम्र के वोकला को दिया। जवाब आया। खुदा तेरे साथी को अर्ज दे वह मर गया और जो माल उसके पास था उसकी वसीयत एक मोतमद आदमी के सिपुर्द कर गया। ताकि उसकी मंशा के मुताबिक़ सर्फ़ करे और उसके ख़त का जवाब दे दिया।

20. अली बिन मुहम्मद ने बयान किया आबा के एक शख़्स ने अहले आबा से कुछ माल हज़रत हुज्जत की ख़िदमत में पहुंचाने के लिये लिया। चलते वक़्त तलवार भूल गया। जब बक़िया माल हज़रत की खिदमत में भेजा तो आपने लिखा उस तलवार का क्या हुआ जो तुम भूल आये हो।

21. हसन बिन खफ़ीफ़ ने अपने बाप से रिवायत की है कि हज़रते हुज्जत ने अपने कुछ ख़ादिम मदीन-ए-रसूल भेजे और उनका निगरां अपने दो ख़ादिमों को मुक़र्रर किया और ख़फ़ीफ़ को लिखा कि उनके साथ जाये। जब कूफ़ा पहुंचे तो उन दो ख़ादिमों में से एक ने शराब पी, वह कूफ़ा से निकले न थे कि हज़रत का हुक्म सामरा से आया कि जिस ख़ादिम ने शराब पी है उसे वापस भेजो फिर उसे ख़िदमत से बरतरफ़ कर दिया।

22. अली बिन मुहम्मद ने अबू अली बिन ग़ियास से उस ने अहमद इब्नुल-हसन से रिवायत की है कि यज़ीद बिन अब्दुल्लाह ने वसीयत की एक घोड़े तलवार और माल के मुतअल्लिक़, उसने हज़रत की ख़िदमत में घोड़े की क़ीमत और माल तो भेज दिया मगर तलवार न भेजी। हज़रत ने लिखा कि जो तुम ने भेजा है उसके साथ तलवार भी तो थी। वह नहीं

पहुंची या जैसा हज़रत ने कहा हो (सहीह अल्फाज़ याद नहीं)।

23. इब्ने शादान नैशापुरी ने रिवायत की है कि जमा हुये मेरे पास पांच सौ दिरहम जिनमें बीस कम थे। मुझे अच्छा न मालूम हुआ कि बीस दिरहम कम भेजूं। मैंने बीस दिरहम अपने पास से शामिल कर दिये और हज़रत साहिबुल अम्र के वकील असदी के पास भेज दिया और अपने माल के मोतअल्लिक़ कुछ न लिखा। हज़रत ने जवाब लिखा कि पांच सौ दिरहम मिल गये जिन में तुम्हारे भी बीस थे।

24. हुसैन बिन अशअरी रावी है कि हज़रत हसन असकरी अलैहिस्सलाम का हुक्म आया करता था। वज़ीफ़ा जारी करने के लिये जुनैद क़ातिले फ़ारिस बिन हातिमे ग़ाली और अबुल हसन वगैरह के लिये हज़रत के मरने के बाद हज़रत साहिबुल अम्र अलैहिस्सलाम ने इजरा किया। अबुल हसन और उसके साथी का और जुनैद के लिये कुछ न लिखा। उसने कहा इससे मुझे रंज हुवा इसके बाद हज़रत के ख़त से जुनैद के मरने का हाल मालूम हुआ।

25. मुहम्मद बिन सालेह ने बयान किया कि मेरी एक कनीज़ थी जिसके हुस्न ने मुझे तअज्जुब में डाला था। मैंने हज़रत को लिखा कि उससे औलाद पैदा करने का हुक्म दीजिये। हज़रत ने जवाब दिया उससे ख़्वाहिशे औलाद न रखो और अल्लाह जो चाहता है करता है मैंने उससे जिमाअ़ किया वह हामेला तो हो गई मगर हम्ल साक़ित हो गया और वह(कनीज़) मर गई।

26. अली बिन मुहम्मद ने कहा इब्ने अजमी ने अपना तिहाई माल इमामे अस्र की ख़िदमत में भेजने के लिये निकाला और हज़रत को लिखा और तिहाई माल निकालने से

पहले उसमें से कुछ माल अपने बेटे को दे दिया था जिसका नाम अबुल मेक़दाम था और किसी को इस पर मुत्तला नहीं किया था। हज़रत के पास जब माल भेजा तो आप अलैहिस्सलाम ने तहरीर फ़रमाया कि वह माल कहां है जो अबुल मेक़दाम को दे दिया है।

27. ईसा बिन नस्र ने बयान किया कि हज़रत साहिबुल अम्र अलैहिस्सलाम को अली बिन ज़ियाद सैमरी ने एक कफ़न के लिये लिखा। आप ने तहरीर फ़रमाया तुम अस्सी साल की उम्र में मोहताजे कफ़न होगे और आपने उसके मरने से चन्द रोज़ पहले कफ़न उसके पास भेज दिया।

28. हारून बिन इमरान हमदानी कहता है कि हज़रत साहिबुल अम्र अलैहिस्सलाम के मेरे ऊपर पांच सौ दीनार क़र्ज़ थे जब मेरा हाथ तंग हुआ तो मैंने अपने दिल में कहा कि मेरी दुकानें हैं जिन को मैंने पांच सौ तीस दीनार में ख़रीदा है और नाहिया मुकद्दसा को देने हैं पांच सौ (लेहाज़ा यह दुकानें दे दूंगा) इस ख़ेयाल का इज़हार मैंने किसी पर नहीं किया था। हज़रत ने मुहम्मद बिन हाफ़र वकील को लिखा कि मुहम्मद बिन हारून की दुकानों पर उन पांच सौ दीनार के बदले में जो हमारा उन पर (क़र्ज़) है क़ब्ज़ा कर लो।

29. अली बिन मुहम्मद से मरवी है कि जाफ़र बरादर इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम ने फ़रोख़्त कर दीं वह तमाम कनीज़ें इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम की जिन में वह लड़की भी शामिल थी जो औलादे जाफ़रे तय्यार से थी और जिसको इमाम ने परवरिश किया था पस एक अलवी को ख़रीदार के पास भेजा और आगाह किया कि यह कनीज़ नहीं

उसने कहा मैं वापसी पर राज़ी हूं। लेकिन वह उसकी क़ीमत में से कम कुछ न करेगा। उसको ले जाओ वह अलवी अहले नाहिया के पास वापस आया और हाल बयान किया। उन्होंने ख़रीदार के पास 41 दीनार भेजे और उस लड़की को उसके वली यानी औलादे जाफ़रे तय्यार में से किसी के सिपुर्द करने का हुक्म दिया।

30. हुसैन बिन हसन अलवी से मरवी है कि एक शख़्स रोज़ हसनी के हम नशीनों में से था और एक दूसरा उसका रफ़ीक़ था उसने दूसरे से कहा। हज़रत साहब के पास अमवाल आते हैं और उनके वोकला तमाम अतराफ में फैले हुये हैं और इसकी ख़बर दी गई उबैदुल्लाह बिन सुलेमान को जो वज़ीरे सल्तनत था। वज़ीर ने हज़रत के वोकला को गिरफ़्तार करना चाहा। बादशाह ने कहा ऐसा न करो (शीया कसरत से है फ़ितना बरपा हो जायेगा) बल्कि उन लोगों के लिये कुछ अजनबी लोगों को तलाश करो। वह माल ले जायें। पस जो माल ले ले उसी को गिरफ़्तार कर लिया जाये। हज़रत की तरफ़ से तमाम वोकला के नाम फरमान जारी हुये कि किसी से माल न लेना और इस अम्र से उन को रोका और यह ज़ाहिर करने को कि इस मुआमले में वह बिल्कुल वाक़िफ़ नहीं। इन जासूसों ने मुहम्मद बिन अहमद का पता चलाया। उन में से एक ने ख़लवत में जाकर कहा मेरे पास कुछ माल है चाहता हूं कि हज़रत साहब तक पहुंचा दूं। मुहम्मद ने कहा कि तुमने धोका खाया है और ग़लती से मेरे पास आये हो। मैं इस मुआमले के मुतअल्लिक़ कुछ नहीं जानता वह हर चन्द चापलूसी करता रहा मगर मुहम्मद अपनी ला इल्मी ही ज़ाहिर करते रहे। जासूसों ने बहुत रग़बत दिलाई लेकिन तमाम वोकला ने इंकार किया और

किसी ने माल न लिया।

31. अली बिन मुहम्मद से मरवी है कि हज़रत ने एक हुक्म के ज़रिये मना किया। मक़ाबिरे कुरैश (काज़मैन) और हीरा (कूफ़ा और हिल्ला के दरमियान) की ज़ियारत से चन्द माह बाद वज़ीर ने बाक़ताई को बुला कर कहा तुम अहले फ़ुरात और बुर्सीयीन से मिल कर कहो कि मक़ाबिरे कुरैश की कोई ज़ियारत न करने पाये ख़लीफ़ा का हुक्म है कि जो ज़ियारत को आये उसे गिरफ़्तार कर लिया जाये।

□□□

एक सौ चौबीसवां बाब

अइम्मा–ए– इस्ना अशर अलैहिमुस्सलाम की इमामत पर दलील

1. इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम मअ इमाम हसन अलैहिस्सलाम सलमान के हाथ पर तकिया किये हुये मस्जिदे हराम में दाख़िल हुये और एक जगह बैठ गये एक शख़्स अच्छी सूरत और अच्छे लिबास का आया और अमीरूल मोमिनीन को सलाम किया हज़रत ने जवाबे सलाम दिया। उस ने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन मैं आप से तीन मसअले दरयाफ़्त करना चाहता हूं अगर आप ने इनका सहीह जवाब दे दिया तो मैं जानूंगा कि आप से पहले जिन लोगों ने दावए ख़िलाफ़त किया वह उसके हक़दार न थे और उनकी दुनिया व आख़िरत महफ़ूज़ नहीं और अगर दूसरी सूरत होगी तो मैं समझूंगा कि आप का और उनका रास्ता एक ही है। फ़रमाया पूछ जो तुझे पूछना है उसने कहा जब आदमी मरता है तो

उसकी रूह कहां जाती है।

आदमी कैसे किसी चीज़ को याद करता और भूलता है।

आदमी की औलाद उसके चचाओं और मामुओं से किस सूरत में मुशाबेह होती है।

आप अलैहिस्सलाम ने इमाम हसन अलैहिस्सलाम से फ़रमाया उसके सवाल का जवाब दो। इमाम हसन ने जवाब दिया तो उसने कहा मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और यह गवाही मैंने हमेशा दी है और गवाही देता हूं कि मुहम्मद स0 अल्लाह के रसूल स0 हैं और यह गवाही देता रहा हूं और गवाही देता हूं कि आप वसीये रसूल स0 हैं और उनकी हुज्जत व बुरहान के क़ाएम करने वाले हैं (इशारा किया अमीरूल मोमिनीन की तरफ़) और यह गवाही मैं हमेशा देता रहा हूं और इमाम हसन अलैहिस्सलाम की तरफ़ इशारा करके कहा कि मैं गवाही देता हूं कि आप अमीरूल मोमिनीन के वसी हैं और उनकी हुज्जत और बुरहान क़ाएम करने वाले हैं यानी नबुव्वते रसूल स0 के साबित करने वाले हैं।

तौज़ीह

इब्ने बाब्वैह अलैहिर्रहमह ने अपनी किताब कमालुद्दीन और तमामुन निअ़मह में इमाम हसन अलैहिस्सलाम के जवाबात मसाएले मज़कूरा के मुतअ़ल्लिक़ तहरीर फ़रमाते हैं।

1. बहालते नौम रूह कहां जाती है?

जवाब! रूह मुतअ़ल्लिक़ होती है रीह से और रीह मुतअ़ल्लिक़ होती है हवा से जब तक इंसान बेदार न हो अगर खुदा का इरादा उस रूह को फिर बदन में लौटाने का

होता है तो यह रूह रीह को और रीह हवा हो जज़्ब कर लेती है। और बदन की तरफ़ लौट आती है। और बदन में साकिन हो जाती है। और अगर ख़ुदा इजाज़त नहीं देता कि वह बदन की तरफ़ लौटे तो हवा रीह को जज़्ब कर लेती है और रीह रूह को।

2. इंसान क्यों भूलता और याद करता है?

जवाब। क़ल्बे इंसान हक़ पर पैदा किया गया है और हक़ के मुताबिक़ है अगर कोई मुहम्मद व आले मुहम्मद स0 पर दरूद भेजता है पूरी सलवात के साथ तो उसकी बरकत से यह मुताबिक़त उस हक़ से मुंकशिफ़ हो जाती है और क़ल्बे इंसान रौशन हो जाता है उस वक़्त भूली हुई बात याद आजाती है और अगर पूरा दरूद नहीं भेजता तो उसका दिल तारीक होजाता है और वह बात भूल जाता है।

3. मौलूद का चचा या मामूं से मुशाबेह होना तो जंब मर्द औरत से मुजामिअ़त करता है तो एक इज़तेरारी कैफ़ियत लाहक़ होती है उसका नुतफ़ा उछल कर उरूक़े अअ़माम पर जा गिरता है तो बच्चा चचा के मुशाबेह होता है और अगर उरूके अख़वाल पर गिरता है तो मामू से मुशाबिहत होता है।

और मैं गवाही देता हूं कि हुसैन इब्ने अली अलैहिमस्सलाम अपने भाई के वसी हैं और उन के बाद हुज्जत को क़ायम करने वाले हैं और मैं गवाही देता हूं कि अली बिन हुसैन अलैहिमस्सलाम अम्रे हुसैन अ0 के बाद हुज्जते ख़ुदा हैं फिर मुहम्मद इब्ने अली उनके बाद जाफ़र बिन मुहम्मद अ0 उनके बाद मूसा बिन जाफ़र और उनके

बाद अली बिन मूसा और उनके बाद मुहम्मद इब्ने अली और उनके बाद गवाही देता हूं उस शख़्स के हुज्जते खुदा होने की जो पिसरे हसन इब्ने अली है और उसका नाम और कुंन्नियत ज़ाहिर न होगी जब तक कि वह ज़मीन को अद्ल व दाद से उसी तरह पुर न कर देगा। जैसा कि वह जुल्म व जौर से भर चुकी होगी। और सलाम हो आप पर ऐ अमीरूल मोमिनीन! इसके बाद वह उठा और चला गया। हज़रत ने इमाम हसन से फ़रमाया। ऐ अबू मुहम्मद इसके पीछे जाओ और देखो यह कहां जाता है इमाम हसन अलैहिस्सलाम बाहर निकले और आकर कहा उसने एक पैर मस्जिद से बाहर रखा था।

फिर मैंने न जाना कि वह खुदा की ज़मीन पर कहां ग़ायब हो गया। मैं अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम के पास वापस आया और हाल बताया फ़रमाया ऐ अबू मोहम्मद स0 तुम उनको जानते हो। मैंने कहा अल्लाह और उसका रसूल स0 और अमीरूल मोमिनीन बेहतर जानने वाले हैं। फ़रमाया वह खिज़्र थे।

2. मुहम्मद बिन यहिया ने कहा मैंने मुहम्मद इब्नुल हसन से कहा ऐ अबू जाफ़र क्या अहमद बिन अब्दुल्लाह के अलावा किसी और से भी यह हदीस सुनी गई है। फ़रमाया उस ने हैरत व शक में पड़ने से दस साल पहले यह हदीस बयान की थी।

रावी को अहमद बिन अब्दुल्लाह के बयान पर इस लिये शुब्हा हुआ कि वह हज़रते हुज्जत पर ईमान लाने के बाद शक में पड़ गय था।

3. अबू बसीर ने इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम से रिवायत की है कि मेरे पदरे बुजुर्गवार ने जाबिर बिन अब्दुल्लाह

अंसारी से फ़रमाया। मेरी एक ज़रूरत है आप कब मुझ से तन्हाई में मिल सकेंगे उन्हों ने कहा जिस वक़्त आप चाहें। पस एक तंहाई में आप ने फ़रमाया ऐ जाबिर उस लौह के मोतअल्लिक़ बताओ जिसे आप ने मेरी जद्दए माजिदा हज़रत फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह के पास देखा था। उन्हों ने इस लौह में क्या लिखा हुआ बताया था। जाबिर ने कहा। मैं ख़ुदा को गवाह करके कहता हूं कि मैं हयाते रसूल स0 में आपकी वालिदा माजिदा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ इमाम हुसैन की विलादत की मुबारकबाद देने। मैंने उनके हाथ में एक सब्ज़ लौह देखी। मेरे गुमान में वह ज़मुर्रुद की थी और इस पर सूरज की तरह एक रौशन तहरीर थी मैंने कहा ऐ बिन्ते रसूल स0 यह लौह क्या है? फ़रमाया यह अल्लाह ने अपने रसूल स0 के पास भेजी है इसमें मेरे बाप का नाम और अली का नाम है मेरे दोनों बेटों का नाम है और औसिया का नाम है जो मेरे फ़रज़न्द की नस्ल से होंगे। आंहज़रत ने मुझे अता फ़रमाई है ताकि मैं उसे देख कर खुश हूं। जाबिर ने कहा आप की मां ने मुझे दी मैंने इसे पढ़ा और लिख लिया।

मेरे वालिद ने फ़रमाया। ऐ जाबिर! क्या तुम वह तहरीर दिखा सकते हो। उन्हों ने कहा जी हां मेरे वालिद जाबिर के साथ उनके घर तक गये जाबिर ने वह सहीफ़ा खाल पर लिखा हुआ निकाला। हज़रत ने फ़रमाया। मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाता हूं तुम अपनी तहरीर से मुक़ाबेला करते जाओ मेरे वालिद ने पढ़ा तो कोई एक हर्फ़ भी बदला हुआ न था। जाबिर ने कहा मैं गवाही देता हूं ख़ुदा के सामने कि मैंने इस लौह में यही लिखा हुआ देखा था।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

यह तहरीर अज़ीज़ व हकीम ख़ुदा की तरफ़ से मुहम्मद

स0 उसके नबी और उसके नूर और उसके सफ़ीर और हिजाब और दलील के लिये है। रूहुल अमीन इसे लेकर नाज़िल हुये रब्बुल आलमीन की तरफ़ से। ऐ मुहम्मद स0 मेरे असमा की ताज़ीम करो और मेरी नेअ़मतों का शुक्र अदा करो। और मेरी नेअ़मतों का इंकार न करो। मैं अल्लाह हूं। मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं। मैं ज़ालिमों की कमर तोड़ने वाला और मज़लूमों को दौलत देने वाला हूं और रोज़े क़यामत बड़ा जज़ा देने वाला हूं। मैं अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं जो कोई मेरे फ़ज़्ल के सिवा दूसरे से उम्मीद रखेगा और मेरे अद्ल के सिवा दूसरे से ख़ौफ़ करेगा। तो मैं उसको ऐसा सख़्त अज़ाब दूंगा कि दुनियां में किसी को ऐसा अज़ाब न दिया गया होगा। पस मेरी ही इबादत करो और मेरे ही ऊपर तवक्कुल करो, मैंने जिस नबी को भेजा है उसके अय्याम को कामिल और उसकी मुद्दत को पूरा किया है और उसके औसिया मुक़र्रर किये हैं, मैंने ऐ मुहम्मद स0! तुमको तमाम अंबिया पर फ़ज़ीलत और तुम्हारे वसी को तमाम औसिया पर और मैंने तुमको इज़्ज़त बख़्शी, तुम्हारे दो बच्चों और नवासों हसन अलैहिस्सलाम और हुसैन अलैहिस्सलाम से मैंने हसन को मअ़दिने इल्म बनाया और हुसैन को ख़ाज़िने वही और मैंने इज़्ज़त दी उसे शहादत से और ख़त्म किया इस पर सआ़दत को पस वह अफ़ज़ल व अरफ़अ़ है अज़रूऐ दरजात।

मैंने उसके साथ अपना कलेमए ताम्मा क़रार दिया और उसको अपनी हुज्जते बालिग़ा बनाया। उसकी औलाद की इताअ़त पर मैं सवाब दूंगा और नाफ़रमानी पर अज़ाब दूंगा। उनकी औलाद में अव्वल अली इब्नुल-हुसैन सय्यदुल आबिदीन

हैं जो मेरे औलिया की ज़ीनत हैं और उनके फ़रज़न्द अपने क़ाबिले सताइश जद् से मुशाबेह हैं मुहम्मद नाम मेरे इल्म के शिगाफ़्ता करने वाले हैं और मेरी हिकमत का मअ़दिन हैं उनके फ़रज़न्द जाफ़र के बारे में शक करने वाले हलाक होंगे। उनकी हिदायत को रद् करने वाला मेरे हक़ क़ौल को रद करने वाला है। मैं मक़ामे जाफ़र को मुकर्रम व मोहतरम क़रार दूंगा और उनके शियों, नासिरों और दोस्तों की कसरत से उनको ख़ुश करूंगा। और उनके बाद उनके पिसर मूसा होंगे उनके वक़्त में ज़लालत के फितने बरपा होंगे और लोग कमज़ोर एतेक़ाद के होंगे। ऐसे ज़लालत आगीं दौर में हमारे औलिया मअ़रिफ़त के भर पूर साग़रों से सेराब होंगे। जिस ने उन में से एक से भी इंकार किया उस ने मेरी नेअ़मत से इन्कार किया और जिस ने मेरी किताब की आयत को बदला उसने मुझ पर इफ़्तेरा किया। हलाक हो इफ़्तेरा करने वालों और इंकार करने वालों के लिये मेरे हबीब, मेरे नेक बन्दे मूसा के मरने पर उनके फ़रज़न्द अली के बारे में जो मेरा वली मेरा नासिर और यह वह है कि जिसपर बारे नबुव्वत की मिसाली बार रखूंगा और उसका इम्तेहान लूंगा दिल क़वी होने में और उसको क़त्ल करेगा एक मग़रूर भूत और वह दफ़न होगा, उस शहर में जिसको बसाया है अब्दे सालेह (जुलक़रनैन) ने और उसकी क़ब्र पहलू में होगी मेरी बदतरीन मख़लूक़ (हारून) के मेरा क़ौल हक़ है मैं अपने बन्दे अली (इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम) को ख़ुश करूंगा। उनके फ़रज़न्द और उनके ख़लीफ़ा और जानशीन और उनके वारिस मुहम्मद (इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम) से जो मेरे इल्म के मअ़दन हैं और मेरे असरार की जगह हैं और मेरी ख़ल्क़ पर हुज्जत हैं जो उन

पर ईमान लायेगा। मैं जन्नत में उसको जगह दूंगा और उसको शफ़ीअ़ करार दूंगा। उसके ख़ानदान के ऐसे सत्तर आदमियों के लिये जो मुस्तहक़्क़े जहन्नम होंगे और मैंने उसकी इमामत को सआदत को मख़सूस किया उनके बाद अली (इमाम नकी अलैहिस्सलाम) के लिये जो मेरे वली व नासिर हैं और मेरी मख़लूक पर गवाह हैं मेरी वही के अमीन हैं। मैं उनमें से पैदा करूंगा एक दाई को (इमाम हसन असकरी)।

वह हिदायत करने वाला है मेरे रास्ते की तरफ़ और ख़ाज़िन है मेरे इल्म का और कामिल करूंगा मैं उस दीन को उसके फ़रज़न्द मीम हे मीम दाल से जिसका वुजूद तमाम आलमों के लिये रहमत है उसमें मूसा का कमाल है ईसा की शान हैं अय्यूब का सब्र है मेरे औलिया उसके ज़मानए (ग़ैबत) में ज़लील होंगे और उनके सर इस तरह कुचले जायेंगे जैसे तुर्क व दैलम वालों के वह क़त्ल किये जायेंगे जलाये जायेंगे वह ख़ौफ ज़दा और दहशत ज़दा रहेंगे उनके ख़ून से ज़मीन रंगीन हो जायेगी। और रोने पीटने की आवाज़ उनकी औरतों से बुलन्द होगी। यह लोग मेरे सच्चे दोस्त होगें उनके ज़रिये से हर तारीक से तारीक फ़ितने को दफ़ा करूंगा और ज़लज़लों को दूर करूंगा। और उनके ज़रिये से मुशकिलात को आसान करूंगा। उन पर उनके रब की तरफ़ से सलवात व रहमत है और यही हिदायत याफ़्ता हैं।

अब्दुर्रहमान बिन सालिम से मरवी है कि अबू बसीर ने कहा अगर तू ने इसबाते इमामते अइम्मा–ए–इस्ना अशर में कोई हदीस भी न सुनी हो तो सिर्फ़ यही हदीस तेरे लिये काफ़ी है पस इसकी हिफ़ाज़त कर और ना अहलों से बयान न कर।

4. सलीम बिन क़ैस से मरवी है कि मैंने अब्दुल्लाह बिन

जाफ़रे तय्यार से सुना कि मैं और हसन व हुसैन और अब्दुल्लाह बिन अब्बास और उमर बिन सलमा और उसामा बिन ज़ैद मुआविया के पास थे और बातें हो रही थीं। मैंने मुआविया से कहा। मैंने रसूलुल्लाह से सुना है कि मैं मोमिनीन के नफ़्सों से औला हूं। मेरे बाद मेरे भाई अली बिन अबी तालिब तमाम मोमिनीन के नफ़्सों से बेहतर हैं और जब अली शहीद हो जायें तो हसन तमाम मोमिनीन के नफ़्सों से औला होंगे फिर मेरा बेटा हुसैन अलैहिस्सलाम उसके बाद तमाम मोमिनीन के नफ़्सों से बेहतर होगा। इसकी शहादत के बाद अली इब्नुल–हुसैन औला हैं मोमिनीन के नफ़्सों से और ऐ अली तुम उनको देखोगे। फ़िर उनका बेटा मुहम्मद तमाम मोमिनीन के नफ़्सों से बेहतर होगा और ऐ हुसैन अलैहिस्सलाम तुम उनको देखोगे। फिर इस इमामत की तकमील होगी बारह पर। अब्दुल्लाह बिन जाफ़र ने कहा। मैं अपने इस बयान पर गवाह करता हूं हसन व हुसैन और अब्दुल्लाह बिन अब्बास व उमर बिन उम्मे सलमा व उसामा बिन ज़ैद को पस गवाही दी उन्होंने मुआ़विया के सामने। सलीम ने कहा। मैंने इस हदीस को सुना है सलमान और अबूज़र व मिक़दाद से उन्हों ने कहा हम ने सुना है रसूलुल्लाह स0 से।

5. अबू तुफ़ैल से मरवी है कि मैं वफ़ाते अबू बकर के वक़्त मौजूद था और उस वक़्त भी जब उमर से बैअ़त की गई अली एक तरफ़ बैठे थे एक निहायत ख़ूबसूरत यहूदी लड़का उम्दा लिबास पहने हुऐ आया जो औलादे हारून अलैहिस्सलाम से था उस ने उमर से कहा। ऐ अमीरूल मोमिनीन इस इमामत में क्या आप सब से ज़्यादा जानने वाले किताबे ख़ुदा और अम्रे नबी के हैं यह सुन कर उमर ने सर झुका लिया। उस ने कहा मेरी मुराद आप ही से है। और

अपने क़ौल का फिर इआ़दा किया यह सवाल किस ग़रज़ से है, उसने कहा, मैं इस लिये आप के पास आया हूं कि मुझे अपने दीन में शक है उन्हों ने कहा उस जवान के पास जाओ। पूछा यह कौन हैं? कहा अली बिन अबी तालिब इब्ने अम्मे रसूल स0 और रसूले ख़ुदा के दोनों बेटों हसन अलैहिस्सलाम व हुसैन अलैहिस्सलाम के बाप और शौहरे फ़ातिमा बिन्ते रसूलुल्लाह स0 हैं वह हज़रत अली अलैहिस्सलाम के पास आया और कहा आप ऐसे ही हैं फ़रमाया हां उसने कहा मैं आप से तीन तीन और एक सवाल पूछना चाहता हूं हज़रत ग़ैर मामूली तौर पर मुस्कुराये और फ़रमाया ऐ हारूनी सात क्यों नहीं कहता। उस ने कहा मैं पहले आप से तीन सवाल करूंगा अगर जवाब दे दिया तो बाद में तीन और करूंगा, वरना समझूंगा कि तुम में कोई आलिम नहीं फ़रमाया मैं तुझ से यह पूछता हूँ कि जिसकी तु इब़ादत करता है वह कौन है?

अगर मैंने हर सवाल का जवाब दे दिया तो तुझे अपना दीन छोड़ कर मेरे दीन में दाख़िल होना पड़ेगा। उसने कहा मैं तो आया ही इस लिये हूं। फ़रमाया अब पूछ क्या पूछना चाहता है? उसने कहा सब से पहले रूऐ ज़मीन पर जो क़तर–ए–ख़ून बहाया गया वह कौन था और सब से पहले कौन सा चश्मा रूऐ ज़मीन पर बहा और सबसे पहले कौन सी शै रूऐ ज़मीन पर हरकत में आई? हज़रत ने इन सब के जवाब दिये। उस ने कहा अब बक़िया तीन बताइये। मुहम्मद स0 के बाद कितने इमामे आ़दिल होंगे और मोहम्मद किस जन्नत में होंगे और उनके साथ इस जन्नत में कौन होगा,

.............फ़रमाया ऐ हारूनी मोहम्मद के बारह आदिल ख़लीफ़ा होंगे। रुस्वा करने वालों की रुस्वाइयां उनको ज़रर न पहुंचायेंगी। न वह मुख़ालिफों की मुख़ालिफ़त से मुतवहहिश

होंगे। वह उमूरे दीन में पहाड़ों से ज़्यादा मुस्तहकम होंगे। मस्कने मुहम्मद जन्नत है उनके साथ बारह आदिल इमाम होंगे। उसने कहा आप ने सच कहा। क़सम उस ख़ुदा की जिसके सिवा कोई माबूद नहीं मैंने यही मज़मून अपने बाप हारून की किताबों में देखा है जिसको उन्हों ने अपने हाथ से लिखा है और मेरे चचा मूसा ने लिखवाया है अब मुझे बक़िया एक को बताइये। मुहम्मद स0 के वसी कितने दिन ज़िन्दा रहेंगे? फ़रमाया ऐ हारून वह मुहम्मद स0 के बाद 30 साल ज़िन्दा रहेंगे। एक दिन कम न ज़्यादा उनके सर पर ज़रबत लगेगी जिससे उनका सर ख़ून से भर जायेगा। यह सुन कर वह ख़ुशी से चींख उठा और अपनी कमर का पटका काट कर फेंक दिया और कहने लगा। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह वहदहू ला शरीक है और मुहम्मद स0 उसके अब्द और रसूल हैं और आप उनके वसी हैं आपको सब पर फ़ौक़ियत है और आप पर किसी को नहीं और आप साहिबे अज़मत हैं और ज़ुअफ़ का इज़हार करने वाले नहीं।-फिर हज़रत उसको अपने घर ले गये और अहकामे दीने इलाही की उसको तालीम दी।

6. अबू हमज़ा से मरवी है कि मैंने अली इब्नुल हुसैन से सुना है कि ख़ुदा ने मुहम्मद स0 व अली अलैहिस्सलाम और ग्यारह इमामों को उनकी औलाद से अपने नूर व अज़मत से पैदा किया। फिर उनको अपने नूर की रौशनी में रूह बे बदन बनाया वह तमाम मख़लूक़ से पहले अल्लाह की इबादत करते थे और उसकी तसबीह व तक़दीस करते थे वह अइम्मा हैं औलादे रसूल स0 से।

7. ज़ुरारह से मरवी है कि मैंने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना कि बारह इमाम आले मुहम्मद स0 से सब के सब मुहद्दिस थे औलादे रसूल स0 और औलादे

अली अ० से रसूल और अली दोनों उनके के बाप हैं अली बिन राशिद ने जो अली इब्नुल हुसैन की मां की तरफ़ से भाई था। इससे इंकार किया। इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० को इस पर गुस्सा आया और फ़रमाया तेरी मां का बेटा भी तो उन्ही में से है।

8. अबू सईद ख़दरी से मरवी है कि अबू बकर की मौत और उमर के खलीफ़ा होने के वक़्त मैं मौजूद था। मदीना के मुअज़्ज़िज़ यहूदियों से एक यहूदी जो अपने ज़माने का सब से बड़ा आलिम समझा जाता था वह उमर के पास आया और कहने लगा मेरा इरादा इस्लाम लाने का है। अगर आप ने मेरे सवालात का जवाब दे दिया तो मैं समझूंगा कि आप किताब व सुन्नत के आलिम हैं और मेरे सवालात के जवाब देने के अहल हैं उन्हों ने कहा कि मैं इस वक़्त जवाबात के लिये तैय्यार नहीं। लेकिन मैं एक ऐसे शख़्स के पास भेजता हूं जो इस उम्मत में किताब व सुन्नत का सब से बड़ा आलिम है और तेरे हर सवाल का जवाब देने वाला है और वह यह है इशारा किया अली की तरफ़। यहूदी ने कहा। ऐ उमर अगर ऐसा ही है तो इस आलिम के होते हुऐ लोगों की बैअत का तुम से क्या तअल्लुक? यह सुन कर उमर ने उसे झिड़का। यहूदी हज़रत के पास आया और कहा आप ही वह हैं जिन का पता उमर ने दिया है फ़रमाया। उन्हों ने क्या कहा है। उसने बताया और कहा। अगर आप ऐसे ही हैं जैसा बताया है तो मैं आपसे चन्द सवालात के जवाबात चाहता हूं।

अगर कोई तुममें से जानता है तो मैं समझूंगा कि तुम अपने ख़ैरूल उमम होने में सच्चे हो और तब मैं तम्हारे दीने इसलाम में दाख़िल हूँगा। हज़रत ने फ़रमाया जैसा उमर ने कहा है मैं वैसा ही हूं। अब जो चाहे पूछ। उसने कहा मुझे

बताइये तीन और तीन और एक फ़रमाया। ऐ यहूदी सात क्यों नहीं कहता। उस ने कहा अगर आप ने पहली तीन का जवाब दे दिया तो मैं बाक़ी दरयाफ़्त करूंगा वरना चुप रहूंगा। अगर आप ने सातों का जवाब दे दिया तो मैं समझूंगा आप रूऐ ज़मीन पर सबसे बड़े आलिम और तमाम लोगों से अफ़्ज़ल व आला हैं हज़रत ने फ़रमाया पूछ जो कुछ पूछना है उस ने कहा मुझे बताइये। कौन सा पत्थर सब से पहले ज़मीन पर रखा गया और कौन सा दरख़्त सब से पहले ज़मीन पर उगा और कौन सा चशमा है जो सब से पहले ज़मीन पर बहा। अमीरूल मोमिनीन ने उसको बताया।

तौज़ीह

कुलैनी अलैहिर्रहमह ने बग़र्ज़े इख़्तेसार जवाब छोड़ दिये हैं अल्लामा मज्लिसी ने मिरअतुल उकूल में बहवाला अल–इकमाल हस्बे ज़ैल जवाब लिखे हैं, सबसे पंहला पत्थर हजरे असवद है सब से पहला दरख़्ते खुर्मा है जिसे हज़रत आदम जन्नत से लाये थे यहूदियों के नज़दीक ज़ैतून है सबसे पहला चश्मा आबे हयात है जिसका पानी हज़रत ख़िज़्र अ0 ने पिया।

यहूदी ने कहा बताइये अपने नबी मुहम्मद स0 के मुतअल्लिक़ जन्नत में उनका मुक़ाम कहां होगा और जन्नत में उनके साथ कौन होगा हज़रत ने फ़रमाया इस उम्मत में बारह इमाम हादीए दीन ज़ुर्रियते नबी होंगे। और वह मेरी नस्ल से होंगे और जन्नत में जो लोग उनके साथ होंगे वह बारह इमाम होंगे और उनकी ज़ुर्रियत से और उनकी मायें और दादियां और परदादियां उनकी इनके सिवा और कोई

शरीक न होगा।

9. जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी से मरवी है कि मैं जनाबे फ़ातिमा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उनके सामने एक लौह थी जिसमें उन औसिया के नाम थे जो उनकी औलाद से हैं मैंने शुमार किये हैं (वह बारह थे उनका आख़िरी क़ाएम था) तीन अली उनमें थे और तीन मुहम्मद।

10. अबू हमज़ा ने अबू जाफ़र से रिवायत की है कि ख़ुदा ने हज़रत रसूले ख़ुदा को जिन् व इंस् की तरफ़ भेजा और उनके बाद बारह वसी हैं जिन में कुछ मर गये कुछ बाक़ी हैं और हर वसी के लिये सुन्नते इलाहिया जारी हुई और जो औसिया आंहज़रत स0 के बाद हुये वह औसियाए ईसा की सुन्नत पर हुए और वह बारह हैं और अमीरुल मोमिनीन अली सुन्नते मसीह के मुताबिक़ थे।

11. इमाम मुहम्मद तक़ी अ0 से मरवी है कि जनाबे अमीर अ0 ने इब्ने अब्बास से फ़रमाया कि शबे क़द्र हर साल होती है और उस रात को तमाम साल के अहकाम नाज़िल होते हैं पस रसूल के बाद औलियाए अम्र होने चाहिये। इब्ने अब्बास ने पूछा वह कौन हैं फ़रमाया मैं और ग्यारह इमाम मेरे सुल्ब से मुहद्दिस होंगे।

12. इसी सनद से फ़रमाया रसूलुल्लाह ने अपने असहाब से। शबे क़द्र पर ईमान लाओ वह मख़सूस है अली इब्ने अबी तालिब और ग्यारह इमामों से जो उनके बाद उनकी औलाद से होंगे।

13. और मज़कूरा बाला अस्नाद से यह भी है कि अमीरुल मोमिनीन अ0 ने सुरह आले इमरान की यह आयत पढ़ी। जो लोग राहे ख़ुदा में क़त्ल किये गये हैं उन्हें मुर्दा न समझो बल्कि वह ज़िन्दा हैं और अपने रब की तरफ़ से रिज़्क़

पाते हैं और फ़रमाया मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह स0 शहीद मरे (ज़ने यहूदिया ने ज़हर दिया था उसका ही असर बाइसे मौत हुआ) वल्लाह वह तुम्हारे पास आयेंगे और जब वह आयें तो यक़ीन रखना। क्यों कि शैतान सूरते रसूल में नहीं आ सकता। फिर अमीरूल मोमिनीन अ0 ने हज़रते अबू बकर को हज़रते रसूले ख़ुदा स0 को दिखाया। आंहज़रत स0 ने फ़रमाया। ऐ अबू बकर अली पर और उनकी औलाद से ग्यारह इमामों पर ईमान लाओ। यह लोग नबुव्वत के अलावा और तमाम बातों में मेरे मिस्ल हैं जो हकूमत तुम ने अपने क़ब्ज़े में की है। अल्लाह से तौबा करो। क्योंकि वह तुम्हारा हक़ नहीं। फिर आंहज़रत स0 तशरीफ़ ले गये और फिर किसी को दिखाई न दिये।

14. ज़ुरारह से मरवी है कि इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0 ने फ़रमाया कि इस उम्मत में बारह इमाम होंगे। आले मुहम्मद स0 से जो सब मुहद्दिस होंगे औलादे रसूल स0 और औलादे अली अलैहिस्सलाम से। पस रसूलुल्लाह स0 और हज़रत अली अलैहिस्सलाम दोनों उनके बाप हैं।

15. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि हुसैन इब्ने अली के बाद नौ इमाम होंगे नवां उनका क़ायम होगा।

16. ज़ुरारह कहता है मैंने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना कि बारह इमाम हैं उनमें हसन व हुसैन हैं और बाक़ी औलादे हुसैन अलैहिस्सलाम से होंगे।

17. अबू जारूद ने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया। मैं और बारह इमाम मेरी औलाद से और तुम ऐ अली यह सब इस

ज़मीन के लिये मेंख़े और पहाड़ हैं ताकि ज़मीन अपने साकिनों के साथ हिले डुले नहीं। जब बारहवां मेरी औलाद से ख़त्म हो जायेगा तो ज़मीन अपने साकिनों के साथ बैठ जायेगी। और फिर उनको मुहलत न मिलेगी।

18. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मरवी है कि हज़रत रसूले खुदा स0 ने फ़रमाया। मेरी औलाद से बारह नक़ीब नजीब मुहद्दिस और मुफ़हहिम होंगे और उनका आख़िर हक़ क़ाएम करने वाला होगा। जो ज़मीन को अदल से उतना ही ज़्यादा भर देगा जितनी वह जुल्म व जौर से भर चुकी होगी।

19. करीम से मरवी है कि मैंने क़सम खाई कि दिन में कभी खाना न खाऊंगा (रोज़ा रखूंगा) जब तब जुहूरे क़ायमे आले मुहम्मद स0 हो, पस मैं इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अपनी क़सम का हाल बयान किया। फ़रमाया ऐ करीम रोज़ा रखो मगर ईदैन और अय्यामे तशरीक़ (11,12,और 13 ज़िलहिज्जा) का नहीं और जब तुम मुसाफिर या मरीज़ हो। रोज़ा रखो तो बेहतर है मगर तुम्हारे ज़माने में जुहूर न होगा। जब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम शहीद किये गये तो आसमान व ज़मीन और जो कुछ भी उनके दरमियान है और मलायका कांप गये उन्हों ने कहा ऐ हमारे रब इस क़ौम को हलाक करने की हमें इजाज़त दे ताकि नये लोग इस ज़मीन पर आबाद हों इन लोगों ने तेरी हुरमत को ज़ाया किया। तेरे बरगुज़ीदा बन्दों को क़त्ल किया। खुदा ने उनको वही की। ऐ मेरे मलाएका और ऐ आसमानो और ज़मीन वालों ठहरो। फिर हिजाब हाये कुदरत से एक पर्दा उठा जिसके पीछे मुहम्मद और उनके बारह वसी थे और उनके दरमियान क़ाएमे आले मुहम्मद को ज़ाहिर

करके फ़रमाया। ऐ मेरे मलाएका और मेरे आसमानों और ज़मीन वालों यह है वह जिसके ज़रिये खूने हुसैन का बदला लिया जायेगा।

20. समाआ कहता है कि मैं अबू बसीर और मुहम्मद बिन इमरान गुलाम इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम मक्कए मुकर्रमा में थे मुहम्मद बिन इमरान ने कहा मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना है कि हम शुमार में बारह हैं अबू बसीर ने कहा मैंने भी हज़रत से ऐसा ही सुना है उन से ब हलफ़ एक दो बार पूछा गया। उन्हों ने कहा। मैंने ऐसा ही इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से सुना है।



एक सौ पचीसवां बाब

जब कोई बात किसी के बारे में कही जाये और उसमें न पाइ जाये तो उसकी औलाद या औलाद की औलाद में पायी जायेगी।

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। अल्लाह तआ़ला ने वही की इमरान को। मैं तुम्हें एक ऐसा लड़का देने वाला हूं जो कोढ़ियों और मुबरूसों को अच्छा करेगा और ब इज़्ने इलाही मुर्दों को जिन्दा करेगा। मैं उसको बनी इस्राईल का रसूल बनाऊंगा। इमरान ने यह बात अपनी बीवी हन्ना से बयान की। जब वह हामिला हुई तो उनका खयाल था कि लड़का पैदा होगा। लेकिन जब वज़ए हम्ल हुआ तो लड़की थी उन्होंने कहा या अल्लाह मैंने तो लड़की जनी है और लड़की लड़के जैसी तो नहीं होती यानी रसूल तो न होगी खुदा ने कहा जो जनी हो अल्लाह उसे

जानता है। जब अल्लाह ने मरयम से ईसा को पैदा किया तो यह वही थे जिनकी बशारत मरयम अ० के बाप इमरान को दी गई थी पस जब हम किसी शख़्स के बारे में कुछ कहें और वह बात उसके बेटे के बजाये पोते में पायी जाये तो उससे इंकार न करो।

2. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब हम किसी शख़्स के बारे में कुछ कहें और वह उसमें न पाई जाये और उसके बेटे या पोते में पाई जाये तो उससे इंकार न करो, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है।

3. अबू ख़दीजा से मरवी है कि मैंने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना कि एक शख़्स अद्ल या जुल्म करता है तो वह उसकी तरफ़ मन्सूब होता है और कभी ख़ुद नहीं करता और उसके बाद बेटा या पोता करता है तो वह उसी शख़्स का अमल समझा जाता है मजाज़न न हक़ीक़तन।



एक सौ छब्बीसवां बाब

अइम्मा अलैहिमुस्सलाम अम्रे इलाही क़ायम करने वाले और हिदायत करने वाले हैं।

1. हकम बिन नईम से मरवी है कि मैं इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के पास मदीने आया और कहा मैंने नज़्र की है रूक्न व मक़ाम में कि अगर आप से मुलाक़ात हुई तो मदीने से उस वक़्त तक बाहर न निकलूंगा। जब तक कि यह न मालूम कर लूंगा कि आप क़ाएमे आले मुहम्मद हैं हज़रत ने कोई जवाब न दिया। मैं तीस दिन तक ठहरा रहा।

एक रोज़ रास्ते में मुलाक़ात हो गई। हज़रत ने फ़रमाया ऐ हकम! तुम अभी तक यहीं हो। मैंने कहा जी हां। मैंने तो आपको बता दिया था जो मैंने नज़्र की है पस आप ने मुझे न ठहरने का हुक्म दिया और न किसी अम्र से रोका। फ़रमाया कल सुबह मेरे घर आओ। मैं गया तो हज़रत ने फ़रमाया बताओ तुम्हारी हाजत क्या है मैंने कहा मैंने ख़ुदा से नज़्र की है रुक्न व मक़ाम में रोज़ा व सदक़ा की।

और यह कि जब मैं आपसे मिलूंगा तो उस वक़्त तक मदीना से न निकलूंगा जब तक कि यह मालूम न कर लूंगा कि आप क़ाएमे आले मुहम्मद अ० हैं या नहीं। अगर हैं तो मैं आप की ख़िदमत में रहूंगा वरना मैं रूऐ ज़मीन की सैर करूंगा। फ़रमाया ऐ हकम हम सब अम्रे ख़ुदा के क़ाएम करने वाले हैं। मैंने कहा तो क्या आप महदी हैं। फ़रमाया हम में से हर एक ख़ुदा की तरफ़ से लोगों को हिदायत करता है। मैंने कहा क्या आप साहबे सैफ़ है फ़रमाया हममे से हर एक साहबे सैफ़ है, मैंने पूछा क्या आप अअ़दाये ख़ुदा को क़त्ल करेंगे और औलियाये ख़ुदा को इज्ज़त बख़्शेंगे और दीने ख़ुदा आपकी वजह से कुव्वत हासिल करेगा फ़रमाया वह मैं कैसे हो सकता हूं मैं 45 साल का हो गया हूं और अब तक ग़ायब नहीं हुआ और साहेबे अम्र तो बचपन ही मे साहेबे इमामत हो कर गायब होंगे और मज़कूरा बाला उमूर उनके लिये सवारी पर बैठने से ज़्यादा आसान होंगे।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जब क़ाएम के बारे में उनसे सवाल किया गया, हममे से सब क़ाएम बे अम्रिल्लाह हैं एक के बाद दूसरा यहाँ तक कि साहेबे सैफ़ का ज़हूर हो जब वह साहेबे सैफ़ आएगा तो उससे इन बातों का ज़हूर होगा जो साबिक़ में नहीं हुई।

3. अब्दुल्लाह बिन सिनान से मरवी है कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुतअल्लिक़ सवाल किया "रोज़े क़यामत हम तमाम लोगों को उनके इमाम के साथ बुलायेंगे" फ़रमाया इमाम उनका वह होगा जो अपने अहले ज़माना के सामने हो ख़्वाह ज़ाहिर हो कर या ग़ायब हो कर।



एक सौ सताइसवां बाब

इमाम अलैहिस्सलाम तक माल पहुंचाना

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने जिस ने गुमान किया कि इमाम लोगों के माल का मुहताज है तो वह काफ़िर है बल्कि लोग उसके मुहताज हैं कि इमाम उनका माल कुबूल करे खुदा फ़रमाता हैं कि उनके अमवाल को लो ताकि वह सदक़ा वग़ैरह देने की वजह से पाक साफ़ हो जायें।

2. ख़ैबरी और यूनुस बिन ज़बियान से मरवी है कि उन्होंने कहा हम ने इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम से सुना है कि खुदा के नज़दीक कोई चीज़ इससे ज़्यादा महबूब नहीं कि दिरहमों को इमाम के लिये निकाला जाये। खुदा उसके बदले में उसको जन्नत में कोहे उहद के बराबर देगा। खुदा अपनी किताब में फ़रमाता है कि जो अल्लाह को क़र्ज़े हसना दे वह उसको बहुत कुछ बढ़ा कर देगा। हज़रत ने फ़रमाया इससे मुराद ख़ास तौर से सिलए रहम है इमाम के साथ।

3. हम्माद बिन मुआज़ ने कहा मैंने इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम से सुना है कि अल्लाह अपनी मख़लूक़

से उनके माल के लिये सवाल नहीं करता क्यों कि उसे क़र्ज़ लेने की ज़रूरत नहीं और न यह उसके लिये सज़ावार है वह अपने वली के लिये चाहता है।

4. इसहाक बिन अम्मार ने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुतअल्लिक़ पूछा। कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़े हसना दे वह उसको दो चन्द वापस देगा। और उसके लिये बहुत बड़ा अज्र है। फ़रमाया इससे मुराद इमाम तक माल पहुंचाना है।

5. रावी कहता है मुझ से इमाम जाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ मैय्याह एक दिरहम जो इमाम तक पहुंचाया जाये वह अज़ रूऐ वज़न गरां तर है कोहे उहद से।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने एक दिरहम जो इमाम तक पहुंचाया जाये बेहतर है उन लाखों दिरहम से जो किसी अम्रे ख़ैर में ख़र्च किया जाये।

7. इब्ने बुकेर से मरवी है कि मैंने अबू अब्दिल्लाह से सुना कि मैं तुम से जो माल लेता हूं या अकसर अहले मदीना से लेता हूं तो इससे मेरी ग़रज़ यह है कि तुम पाक हो जाओ।



एक सौ अट्ठाइसवां बाब

माले फैय व इंफ़ाल व तफ्सीरे खुम्स और उसके हुदूद और किस में वाजिब है।

अल्लाह तआला ने तमाम दुनिया को अपने ख़लीफ़ा के लिये बनाया है जैसा कि फ़रमाता है अपने मलायका से मैं रूऐ

ज़मीन पर अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं लेहाज़ा यह तमाम दुनिया आदम की मिल्कियत हुई और उनकी नेक औलाद और उनके जानशीनों को मिली। पस उनके दुश्मनों ने अज़ राहे ग़लबा जिस हिस्सए ज़मीन को ले लिया है फिर वह जंग या ग़लबे से उनके पास वापस आई। उसका नाम फ़ैय है क्योंकि वह लौटी है उनकी तरफ़ जंग में ग़ालिब आने से और इसका हुक्म ब फ़रमूदए इलाही होगा। जान लो कि जो चीज़ तुमको ग़नीमत में मिली है उसका पांचवां हिस्सा अल्लाह और उसके रसूल स0 और ज़विल कुर्बा, यतीमों, मिसकीनों और मुसाफ़िरों का है। पस वह अल्लाह व रसूल और क़राबतदाराने रसूल के लिये है और वह फ़ैअ–इर–राजेअ कहलाती है राजेअ़ के मअ़नां यही हैं कि जो ग़ैरों के पास थी वह बज़ोरे शमशीर ले ली गई।

और जो चीज़ बगैर जंग व पैकार के हासिल हो जाये वह इंफ़ाल है वह मख़सूस है अल्लाह और उसके रसूल से दूसरे की इस में शिरकत नहीं। शिरकत तो उस में है जिस पर जंग हो।

जो लोग रसूल के साथ शरीके जंग हों उनके लिये चार हिस्से होंगे। और रसूल के लिये एक जिनकी तक़सीम छः हिस्सों में होगी तीन रसूल की और तीन यतीमों और मुसाफ़िरों की लेकिन इन्फ़ाल में यह तरीक़ा न होगा। वह सब रसूल का होगा। और अमीरूल मोमिनीन का और किसी का इसमें हिस्सा नहीं। इस पर लफ़्ज़े फ़ैय का इतलाक़ न होगा। बल्कि उनको इंफ़ाल कहेंगे। यही हुक्म है नयस्तानों, कानों, दरियाओं और जंगलों का यह सब इमाम से मख़सूस होंगे अगर लोग इन में ब इज़्ने इमाम काम करेंगे तो उनके लिये चार हिस्से होंगे और पांचवां इमाम का और जो हिस्सा इमाम का होगा। उसकी

तक़सीम खुम्स की तरह होगी। और बग़ैर इज़्ने इमाम काम करेंगे तो वह सब इमाम का हक़ होगा। ऐसे ही हुक्म है उसका जो किसी जगह को आबाद करे या उसकी इसलाह करे या पड़ती को क़ाबिले काश्त बनाये बग़ैर इज़्ने साहिबे ज़मीन, उससे चाहे तो कुल ले ले और चाहे उसके पास बाक़ी रखे।

1. सलीम बिन क़ैस से मरवी है कि मैंने अमीरूल मोमिनीन को फ़रमाते सुना। वल्लाह हम ही वह हैं जिनको अल्लाह ने ज़विल कुरबा फ़रमा कर अपनी ज़ात और नबी स0 के साथ ज़िक्र फ़रमाया है फिर माले फ़ैय में अल्लाह ने जो अहले क़रियह से हासिल हो हक़ क़रार दिया है अपना और रसूल का और ज़विल कुरबा और यतीमों और हमारे मिसकीनों का और हमारे लिये सदक़े में कोई हिस्सा नहीं रखा। ख़ुदा ने अपने नबी को मुकर्रम और हम को मुकर्रम समझ कर बचाया है जो लोगों के हाथों में मैल कुचैल है।

2: इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने यह आयत वअ़्लमू मिन ग़निमतुम के मुतअल्लिक़ फ़रमाया कि ख़ुम्स अल्लाह का है और रसूल का और ज़विल क़ुर्बा का। फ़रमाया इससे मुराद क़राबते रसूल स0 अल्लाह है और ख़ुम्स अल्लाह का और रसूल स0 का और हमारा।

3. फ़रमाया इमाम ज़ाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इन्फ़ाल वह है जो बगैर जंग हासिल हो या किसी क़ौम ने सुलह करने पर दिया हो या अता किया हो उसमें तमाम बंजर ज़मीन और वादियां शामिल हैं पस यह सब रसूल स0 का हक़ है और उनके बाद इमाम का वह जैसे चाहे सर्फ़ करे।

4. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने खुम्स

पांच चीज़ों से निकाला जाता है। माले ग़नीमत और ग़ोता लगाने से जो अज़ क़िस्म दुर व गोहर वग़ैरह दरियाओं से निकले। और ख़ज़ाने और कानें और नमक ज़ार से इन तमाम चीज़ों से खुम्स निकाला जायेगा। और उसकी तक़सीम ब हुक्मे खुदा यूं होगी। एक सहम अल्लाह का एक सहम रसूल स0 का और एक सहम ज़विल क़ुर्बा को और एक सहम यतीमों का एक मिसकीनों का एक मुसाफ़िरों का अल्लाह का और रसूल स0 का हिस्सा रसूल स0 के बाद ऊलिल अम्र को मिलेगा वर्सतन पस इमाम के तीन हिस्से होंगे। दो वर्सतन और एक अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर किया हुआ हक यानी खुम्स का निस्फ़ हक़्क़े इमाम है और बाक़ी उनके अहले बैत का हक़ होगा। यानी एक हिस्सा उनके यतीमों का और एक हिस्सा उनके मिसकीनों का और एक हिस्सा उनके मुसाफ़िरों का। और यह तकसीम होगी किताब व सुन्नत के मुताबिक़। उनको उतना दिया जायेगा कि उनके एक साल के नफ़के के लिये काफी हो और इससे ज़्यादा हो तो वह इमाम का हक़ है। और अगर इतना न हो कि उनको एक साल के ख़र्च से बे नियाज़ कर सके तो इमाम पर लाज़िम होगा कि अपने पास से उतना दे दे कि वह बे नियाज़ हो जायें और यह सूरत रहेगी उनके मरते दम तक और यह उसके लिये है कि जो बाक़ी बचता है वह इमाम को मिलता है खुम्स ख़ास तौर से आले रसूल स0 का हक़ है क्यों कि आम लोगों के लिये जो सदक़ा है उस में इन लोगों का हक़ नहीं रखा गया यह क़राबते रसूल स0 की वजह से खुदा ने उनको मैल कुचैल से बचाया है और इस लिये भी कि वह खुदा के नज़दीक मुकर्रम हैं पस उनको खुदा ने मख़सूस किया अपने हिस्से से ताकि बे पर्वाह कर दे उनको उस चीज़ से जो उनके लिये बाइसे ज़िल्लत व तौहीन व गदा गरी

है हां जो सदक़ात उनके होंगे तो वह एक दूसरे से ले सकते हैं। यह वह लोग हैं जिनके लिये खुदा ने खुम्स क़रार दिया है और यह क़राबत दाराने रसूल हैं जिनका ज़िक्र खुदा ने यूं किया है। ऐ रसूल अपने क़बीले के ग़रीब रिश्तेदारों को डराओ और वह औलादे अब्दुल मुत्तलिब है औरत हो या मर्द, इनमें कुरैश के और घराने शामिल नहीं और न अरबों में से कोई इस खुम्स का हक़दार है उनके लिये लोगों के सदक़ात है जिन में वह दीगर अफ़राद उम्मत के बराबर हैं जिनकी मां हाशिमी हो और बाप कुरैश के अवाम से हो तो उनका खुम्स में हिस्सा नहीं है क्यों कि खुदा ने फ़रमाया है उनको उनके बापों के नाम से बुलाओ और अमवाल से इमाम ख़ालिस और पाक माल लेगा जैसे खूबरू कनीज़ अच्छा घोड़ा, कपड़े और दूसरी क़िस्म का सामान जिनको वह लेना चाहेगा और उसका वह हक़ माल से निकाला जायेगा और उसके लिये जायज़ हो कि वह इस माल से दूसरों की ज़रूरतें पूरी करे। मस्लन मोअल्लिफ़तुल कुलूब को दे दिया और जिसको चाहे अगर इससे कुछ बच रहे तो इस में से खुम्स निकाले और उसके मुस्तहिक़ों को दे और जो बाक़ी बचे वह उनको दे जिन्होंने लशकरियों से इस माल को जमा किया है और अगर कुछ न बचे तो उन लशकरियों के लिये जिन्हों ने जंग की है मुशरिकीन की छोड़ी हुई चीज़ों से कुछ न मिलेगा। और न उस चीज़ से जिस पर ग़लबा हासिल किया है अलबत्ता जो उन्होंने जमा किया है उस में से मिलेगा।

और बादिया नशीनों के लिऐ तक़सीम में कोई हिस्सा नहीं अगरचे वह इमाम के साथ लड़ें क्यों कि रसूलुल्लाह स0 ने इन बादिया नशीनों से इस शर्त पर सुलह की थी कि वह अपने मक़ामात पर रहेंगे। और हिजरत न करेंगे। और अगर

दुश्मन हमला करेगा रसूलुल्लाह पर तो वह मदद करेंगे और उनके साथ जंग करेंगे और माले ग़नीमत में उनका कोई हिस्सा न होगा और यह तरीक़े कार उनमें और उनके ग़ैर में जारी रहेगा। और जो ज़मीनें जंग से ली जायेंगी वह मौकूफ़ा और मतरूका होगा उन लोगों के हाथ में जो उसे आबाद करें और ज़रख़ेज़ बनायें और उनका मुआमला इमाम की मर्ज़ी से तै होगा ब क़द्र उनकी मेहनत के निस्फ़ दिया जायेगा या सुल्स या दो सुदुस जैसा मुनासिब हो ताकि उनको नुक़सान न पहुंचे।

ज़रूरी इख़राजात वज़अ़ करने के बाद इमाम सब पैदावार में से दसवां हिस्सा लेगा अगर वह ज़ेराअ़त बारिश या ज़मीन जारी होने वाले पानी से हुई हो और बीसवां हिस्सा लेगा अगर आबपाशी रेहट या ऊंटों के ज़रिये हुई हो और इसको इमाम मुवाफ़िक़ ब हुक्मे इलाही आठ हिस्सों में तक़सीम करेगा। और दिया जायेगा फ़ुक़रा और मसाकीन, काम करने वालों और मुअल्लिफ़तुल कुलूब लोगों, गुलामों को आज़ाद कराने और मक़रूज़ों का कर्ज़ अदा करने और राहे ख़ुदा में और मुसाफ़िरों की मदद में यह आठों हिस्से उनमें तक़सीम होंगे और हर एक तबक़े को इतना दिया जायेगा कि वह बे तंगी और कमी साल भर के ख़र्च से बे नियाज़ हो जायें।

और जो उन सबको देने के बाद बचेगा वह इमाम की तरफ रद् होगा और इन शुरकारए कार की तरफ़ जो उस ज़मीन में काम करने वाले और गढ़े खोदने वाले होंगे पानी जमा होने के लिये पस हस्बे मसलेहते इमाम उनको हिस्सा दिया जायेगा और बाक़ी से उन लोगों को दिया जायेगा जो दीने ख़ुदा के मददगार हों और जिन से इस्लाम को कुव्वत

पहुंचे।

जिहाद वग़ैरह के मुआमेलात में बराये मस्लेहते इमाम के लिये इस में से कुछ नहीं, कम हो या ज़्यादा व उस के लिये माल में से ख़ुम्स के बाद अन्फ़ाल है। अन्फ़ाल हर वह तबाह शुदा ज़मीन है जिसके बाशिंदे तर्के सुकूनत कर गये हों और बग़ैर जंग व पैकार हासिल हुई हो। ख़्वाह उन लोगों ने सुलह कर ली हो या बग़ैर क़िताल अता कर दी हो और दाख़िले अन्फ़ाल हैं पहाड़ों की चोटियां वादियों के दामन सहरा और ज़मीने मुर्दा जिसका कोई मालिक न हो और शिर्के शलूक के वह क़तआत जो बिदूने जंग ग़स्ब किये गये हों यानी मुसलमानो से ग़स्ब न किये गये हों क्यों कि ऐसी अमलाक को उनके वोरसा की तरफ़ से रद् किया जायेगा और इमाम वारिस होगा उस चीज़ का जिसका कोई वारिस न हो। अमवाल की तमाम क़िस्मों को बग़ैर तक़सीम के नहीं छोड़ा, ख़ास व आम में से हर एक को उसका हक़ दिया है, फ़ोक़रा व मसाकीन हों या दूसरी अस्नाफ़ और यह भी फ़रमाया कि अगर उन लोगों के दरमियान अद्ल से काम लिया जाये तो वो ग़नी हो जोयेंगे। अद्ल शहद से ज़्यादा शीरीं है और अद्ल नहीं करता मगर वही जो ख़ूबी–ए–अद्ल से वाक़िफ़ है और उसका सहीह इल्म रखता है और रसूल बादिया नशीनों के सदक़ात बादिया नशीनों में सर्फ़ करते थे और शहरियों के शहरियों में आठ अस्नाफ़ में बराबर तक़सीम नहीं करते थे कि हर एक को 1/8 मिल जाये। बल्कि तक़सीम करते थे। बल्कि आठ अक़साम में से उन लोगों पर जो मौजूद हों और हर सिन्फ़ को इतना देते थे कि उसके साल भर के ख़र्च को काफ़ी हो। यह तक़सीम किसी ख़ास

सूरत में मुअय्यन न थी और न किसी से नामज़द थी और न बग़रज़े तालीफ़े क़ल्ब थी यह तो हज़रत की सवाबदीद पर मुन्हसिर थी और मौजूद होने वालों पर मक़सूद यह था कि वह फाक़ा कशी से बच जायें और इस तक़सीम के बाद जो बचता वह दूसरे लोगों को दिया जाता था और इन्फ़ाक़ हक़्क़े इमाम है और हर वह ज़मीन जो ज़मान–ए–रसूल में फ़तह हुई उसका हुक्म आख़िर तक एक ही रहेगा। ख़्वाह वह अहले जौर से ली गई हो या अहले अद्ल से। रसूल की ज़िम्मेदारी अव्वलीन व आख़िरीन के लिये बराबर है। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया मुसल्मान आपस में भाई भाई है उनके ख़ून बलेहाज़ क़द्र व क़ीमत बराबर हैं जो फ़ोक़रा व मसाकीन हैं उनकी ख़बर गीरी ओमरा के ज़िम्मे है जो माले ख़ुम्स साल भर तक इमाम के पास रहे इस में ज़कात नहीं है क्यों कि फ़ोक़रा जो आठ क़िस्म के हैं अपना हिस्सा अमवाले मरदुम से पा चुके हैं अब उन में कोई बाक़ी न रहा।

और जो फ़ोक़रा और क़राबतदाराने रसूल हैं उनके लिये ख़ुम्स था जिस ने बे नियाज़ कर दिया उनको सदक़ाते नबी व इमाम से पस न कोई मुसतहक़ बाक़ी रहता है फ़ोक़रा व अवाम में और न क़राबतदारानें रसूल में मगर यह कि वह बे नियाज़ है इसी लिये माले नबी व इमाम पर ज़कात न होगी। क्यों कि कोई फ़क़ीर व मुहताज बाक़ी नहीं रहा सब अपना हक अपने अपने तरीक़े से पा चुके।

5. अली बिन अस्बात से मरवी है कि जब इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम महदी अब्बासी के पास आये तो वह लोगों के ग़सब शुदा माल वापस कर रहा था हज़रत ने फ़रमाया हमारे ग़स्ब शुदा को भी वापस दे दो। उस ने कहा

वह क्या है फ़रमाया जब अल्लाह ने अपने नबी को फिदक पर फतह दी। और बग़ैर जंग हासिल हुआ तो यह आयत नाज़िल हुई। ऐ रसूल स0 ज़विल कुर्बा का हक़ उसे दे दो, जिब्रईल से हज़रत ने पूछा ये कौन है जिब्रईल ने ख़ुदा से पूछा ख़ुदा ने वही की फ़िदक फ़ातिमा को दे दो। पस हज़रत ने उनको बुलाया और फ़रमाया। ख़ुदा ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं बाग़े फ़िदक तुमको दे दूँ। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह जो ख़ुदा और रसूल स0 ने अता किया है मैंने उसे कुबूल किया। पस हज़रत फ़ातिमा के वोकला हयाते रसूल स0 तक उसकी आमदनी वसूल करते रहे जब अबू बकर ख़लीफ़ा हुये तो उन्होंने वोकलाएं फ़ातिमा को फ़िदक से निकाल बाहर किया। वह अबू बकर के पास आई और वापसी का सवाल किया। उन्होंने कहा तुम कोई काला गोरा गवाह लाओ वह अमीरूल मोमिनीन और उम्मे ऐमन को लेकर गईं उन्हों ने गवाही दी। अबू बकर ने वा गुज़ाश्त के लिये एक तहरीर लिख दी वह उस तहरीर को ले कर निकलीं। राह में उमर मिले। उन्हों ने कहा यह क्या है? सैय्यदा स0 ने फ़रमाया। यह तहरीर अबू बकर ने मुझे लिख दी है उन्हों ने कहा मुझे दिखाओ। उन्हों ने इन्कार किया। उमर ने उनके हाथ से वह तहरीर छीन ली और उसको पढ़ कर थूक से मिटा दिया और फाड़ डाला और कहा इस इलाक़े पर तुम्हारे बाप ने फ़ौज कशी नहीं की थी। तुम हमारी गर्दन में रस्सी डाल रही हो। महदी ने कहा इस इलाक़े की हुदूद क्या हैं फ़रमाया एक कोहे उहद है दूसरी अरीशे मिस्र, तीसरी सैफुल बह्र और चौथे दौमतुल जुंदल। उसने कहा यह है कुल इलाक़ा। फ़रमाया हां इस इलाक़े पर लड़ाई नहीं हुई। उसने कहा यह

तो बहुत बड़ा इलाक़ा है मैं ग़ौर करूंगा।

6. मुहम्मद बिन मुस्लिम से मरवी है कि मैंने अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम से सुना अन्फ़ाल बख़्शिशे इलाही है सूरह अन्फ़ाल नाज़िल करके ख़ुदा ने हमारे मुख़ालिफ़ों की नाक रगड़ दी है।

7. इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम से यह आयत वअ़लमू अन्नमा ग़निम्तुम के मुतअल्लिक़ किसी ने पूछा अल्लाह के सहम का मालिक कौन है। फ़रमाया रसूलुल्लाह स0 और जो रसूलुल्लाह स0 का सहम है उसका मालिक इमाम है। किसी ने पूछा अगर मुस्तहिक़्क़ीन की एक सिन्फ़ ज़्यादा तादाद में हों और दूसरी कम तो इस हालत में तक़सीम की क्या सूरत होगी। फ़रमाया यह इमाम की राय पर मौकूफ़ है जैसा कि रसुलूल्लाह स0 के वक़्त होता था हज़रत अपनी राय से जितना जिसको चाहते थे देते थे पस यही सूरत इमाम के लिये है।

8. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मरवी है कि हज़रत से पूछा क्या है सोने, चांदी, लोहा, रांगा और तांबे की कानों के मुतअल्लिक़ फ़रमाया उन पर ख़ुम्स है।

9. ज़ुरारह से मरवी है कि इमाम को यह हक़ हासिल है कि क़ब्ले तक़सीमे सेहाम जिसे चाहे बख़्शे जिसे चाहे अता करे। रसूलुल्लाह ने जंग की ऐसी क़ौम की मदद से (एराब) जिनका हिस्सा माले फ़ैय में न था। लेहाज़ा हज़रत ने न दिया लेकिन अगर चाहते तो उनके दरमियान तक़सीम कर देते।

10. हकीम मुअज़्ज़िन बिन ईसा से मरवी है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से सवाल किया गया। आयत वअ़लमू अन्नमा ग़निम्तुम के मुतअल्लिक़ हज़रत ने अपनी

दोनों कुहनियों को दोनों घुटनों पर रख कर अपने सीने की तरफ़ इशारा किया। फिर फ़रमाया वल्लाह फ़ाएदा पहुंचाना रोज़ बरोज़ है मेरे वालिद ने अपने शीयों के लिये पहुंचाना इस लिये क़रार दिया कि वह रोज़ी से बे नियाज़ होकर अपने नफ़्सों को पाक व पाकीज़ा रखें।

11. समाआ से मरवी है कि मैंने इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम से ख़ुम्स के मुतअल्लिक़ सवाल किया। फ़रमाया हर उस शैय में है जिससे लोग फ़ायदा पायें कम हो या ज़्यादा।

12. अहमद बिन मोहम्मद बिन ईसा बिन यज़ीद से मरवी है कि मैंने इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम को लिखा। मैं आप पर फ़िदा हूं। मुझे फ़ायदे की हद बताइये। ख़ुदा आपको सलामत रखे इस तौज़ीह से मुझ पर एहसान कीजिये ताकि अम्रे हराम मुझ से सरज़द न हो और रोज़ा व नमाज़ ज़ाया न हो जाये। हज़रत ने जवाब में लिखा हर वह चीज़ जिस से नफ़अ हासिल किया जाये। इस नफ़े पर ख़ुम्स होगा। और ज़ेराअ़त पर बाद मिंहाई इख़राजात वग़ैरह।

13. अबू नस्र से मरवी है कि इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को लिखा कि ख़ुम्स मिन्हाई इख़राजात से पहले दिया जायेगा या बाद में। हज़रत ने लिखा बाद में।

14. अबू बसीर से मरवी है कि फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हर वह जंग जो मुसलमान ख़ुदा की वहदानियत और रसूल स0 की रिसालत पर क़रेंगे तो उसके माले ग़नीमत में हमारा पांचवां हिस्सा है और किसी के लिये हलाल नहीं कि वह इस ख़ुम्स की कोई शै ख़रीदे जब तक वह हक़ हम तक पहुंचे।

15. अब्दुल अज़ीज़ से मरवी है कि हम चन्द आदमी जिन में ग़ुलाम ज़ादगाने सलातीने बनी उमय्या दाख़िल थे।

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में इज़्न तलबी के लिये हाज़िर हुये हम ने कहला कर भेजा। जवाब आया कि दो दो दाख़िल हों मैं दाख़िल हुआ मेरे साथ एक और शख़्स था। मैंने उससे कहा। मैं चाहता हूं कि तू इज़्ने गुफ़्तगू हासिल करके सवाल कर मैं जवाब सुनूंगा। उसने हज़रत से कहा। मेरा बाप बनी उमय्या के कैदियों में से था और मैं जानता हूं कि बनी उमय्या इसके मजाज़ नहीं कि किसी चीज़ को हलाल या हराम कर दें और यह कि कम या ज़्यादा जो कुछ उनके पास है वह इसके अहल नहीं इसके मुस्तहक़ तो आप हैं पस जब मैंने इस पर ग़ौर किया तो उनकी ख़िदमत तर्क कर दी। और तौबा की क्योंकि इस तसव्वुर ने मेरी अक़्ल को फ़ासिद कर दिया था। हज़रत ने फ़रमाया जो हो चुका वह तेरे लिये हलाल है और जिसका हाल तेरा सा हो उसके लिये भी।

रावी कहता है हम उठ खड़े हुये और हज़रत का गुलाम मुअत्तिब उन लोगों के पास आया जो इज़्ने इमाम के मुंतज़िर थे पस दो खड़े हुये। गुलाम ने उनसे कहा कामयाबी हासिल की। अब्दुल अज़ीज़ बिन नाफ़े ने ऐसी कामयाबी कि दूसरों को नसीब न होगी। पूछा वह क्या है उस ने बयान किया यह सुन कर दोनों खड़े हुए और ख़िदमते इमाम में आकर कहने लगे। मेरा बाप बनी उमय्या के क़ैदियों में से था। और हम जानते हैं कि बनी उमैया उसके अहल नहीं जो उनके पास है कम या ज़्यादा। मैं चाहता हूं कि जो मैंने ख़िदमते सलातीने बनी उमय्या से हासिल किया है उसे हलाल क़रार दीजिये। फ़रमाया यह हमारे अख़तियार में नहीं कि हम हलाल या हराम क़रार दें यह सुन कर वह दोनों चले गये। इमाम को गुस्सा आया। उस रात जो कोई आपके पास आया। आप

अलैहिस्सलाम ने यही ज़िक्र किया। फ़रमाया क्या तुम तअजुब नहीं करते फुलां शख़्स से कि मैं हलाल कर दूँ माले बनी उमैय्या को (उन्होंने धोखा दिया था तर्के मुलाज़ेमत न की थी और न तौबा की थी और वह इस हीले से ख़िलाफ़ते बनी उमय्या को जायज़ क़रार देना चाहते थे) गोया वह समझते थे कि हलाल को हराम बनाना हमारे अख़तियार में है पस इस रात और दिन में न फ़ायदा पाया। किसी ने क़लील व कसीर से सिवाये अव्वल वाले दो आदमियों के वह बे परवा हो गये अपनी ज़रूरतों से।

16. रावी कहता है कि अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम जानते हो कि लोगों में ज़िना कहां से दाख़िल होता है मैंने कहा मुझे मालूम नहीं। फ़रमाया वह हम अहले बैत के ख़ुम्स अदा न करने से होता है। (लोग कनीज़ों को ख़रीदते हैं और ख़ुम्स अदा नहीं करते) लेकिन हमारे शिया जो ख़ुम्स देने वाले है उनकी औलाद हलाल होती है।

17. रावी कहता है फ़रमाया- इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि हम वह हैं कि हमारी इताअ़त को अल्लाह ने फ़र्ज़ क़रार दिया है हमारे लिये अन्फ़ाल है और हमारे लिये पाक व साफ़ माल है।

18. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा गया कि कोई ऐसा शख़्स जिसका कोई वारिस न हो और न आक़ा हो तो उसके माल का मालिक कौन होगा? फ़रमाया उसका हुक्म इस आयत के तहत होगा। यसअलून–क–अनिल अन्फाल यानी इमाम उसका मालिक है।

19. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि ख़ज़ानों के मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है? फ़रमाया ख़ुम्स, पूछा मअ़दिन के मुतअल्लिक़ क्या है? फ़रमाया ख़ुम्स

इस तरह रांगा, तांबा और लोहा है हर मअ़दनी चीज़ पर उसी तरह लिया जायेगा जैसे सोना चांदी पर लिया जाता है।

20. रावी ने इमाम मोहम्मद बाक़िर या जाफ़र सादिक़ अलैहिमस्सलाम में से किसी एक से रिवायत किया है कि क़ेयामत का दिन लोगों पर बड़ा सख़्त होगा जबकि साहिबे ख़ुम्स यानी इमाम खड़ा होकर कहेगा ऐ मेरे पर्वरदिगार मेरा ख़ुम्स! यानी अपना हक़ तलब करेंगे और हम ने अपने शीयों के लिये पाक क़रार दिया है ताकि उनकी विलादत पाक व साफ़ हो।

21. इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम से रावी ने सवाल किया उन चीज़ों के मुतअल्लिक़ जो दरियाओं से निकलती हैं जैसे मोती, याकूत, ज़बरजद, सोने और चांदी की कितनी मिक़दार पर ख़ुम्स है? फ़रमाया इन में से जब किसी की क़ीमत एक दीनार तक पहुंच जाये तो इस में ख़ुम्स है।

22. रावी ने इमाम से सवाल किया कि एक शख़्स को हज करने के लिय माल दिया गया आया इस माल पर जब कि उसके पास माले ख़ुम्स भी आया हो या हज के बाद जो उसके पास बच रहे उस पर ख़ुम्स है फ़रमाया नहीं।

23. इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम्हारे ऊपर ख़ुम्स नहीं है जब कि साहिबे माल ने तसरीह कर दी हो यानी निसाब या ख़ुम्स अदा कर दिया हो इमाम ने फ़रमाया अगर किसी शैय पर ख़ुम्स अदा कर दिया गया हो तो दोबारा इमाम को ख़ुम्स अदा करने की ज़रूरत नहीं है।

24. रावी कहता है कि इमाम अली नक़ी अलैहिस्सलाम को लिखा कि पढ़ी अली बिन महज़ियार ने आपके पिदरे बुज़ुर्गवार की तहरीर मेरे सामने उस चीज़ के मुतअल्लिक़ जो

वाजिब है अरबाबे ज़ेराअत पर कि इख़राजात निकालने के बाद छटे हिस्से का निस्फ़ ज़कात है और नहीं उस पर निस्फ़ सुदुस जो अपने ख़र्च से ज़मीन को क़ाबिले काश्त बनाये इस अम्र में हमारी तरफ़ से इख़्तेलाफ़ हुआ। लोगों ने कहा ज़ेराअत पर ख़ुम्स भी है ज़ेराअत के इख़राजात सरकारी टेक्स अलग करने के बाद बग़ैर उसके ज़ाती ख़र्च और अयाल के ख़र्च के। हज़रत ने लिखा बाद ख़र्च ज़ेराअत व अयाल व सरकारी टैक्स वाजिब होगा।

25. रावी कहता है कि एक फ़ारस के सौदागर ने इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम के गुलाम को ख़त लिखा कि हज़रत से इजाज़त चाहिये मेरे लिये ख़ुम्स को अपने लिये सर्फ़ करने की हज़रत ने जवाब में लिखा बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। अल्लाह तआला साहिबे वुस्अत व बख़्शिश है किसी के माल का मोहताज नहीं वह ज़ामिन है अमले ख़ैर पर सवाब देने का, दिल तंगी के एवज़ का नहीं कोई माल हलाल न होगा मगर उसी तरह जैसे अल्लाह ने हलाल किया है। ख़ुम्स हमारे दीन की इआनत के लिये है और जो हम ख़र्च करें या सामान खरीदें दुश्मनों के ज़ुल्म से बचने के लिये तुम उसको हम से न रोको और अपने नफ़सों को हमारी दुआओं से महरूम न करो। इख़राज तुम्हारे रिज़क़ों की कुन्जी है और तुम्हारे गुनाहों को मिटाने वाला है और बचाने वाला है तुम को फ़ाक़े के दिन से। मुस्लिम वह है जो वफ़ा करे उस अहद को जो उसने अल्लाह से किया है वह मुसलमान नहीं जो अहकामे ख़ुदा को ज़बान से तो क़ुबूल करे और दिल से मुख़ालिफ़त करे।

26. रावी कहता है कि ख़ुरासान के कुछ लोग इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम के पास आये और कहने लगे हमें ख़ुम्स

से बरी कर दीजिये फ़रमाया कैसी सख़्त है तुम्हारी यह ख़्वाहिश तुम ज़बान से हमारी मुहब्बत का दावा करते हो और हमारे हक़ को हम से रोकते हो हालांकि वह ख़ुदा का मुक़र्रर करदा हैं और वह ख़ुम्स है मैं ऐसा नहीं करूंगा कि तुममें से किसी के लिये हलाल क़रार दे दूं।

27. रावी कहता है कि मैं इमाम मुहम्मद तक़ी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर था कि सालेह बिन मुहम्मद जो हज़रत की तरफ़ से कुम के वक़्फ़ का मुतवल्ली था आया और कहने लगा मैं दस हज़ार अपने ख़र्च में ले आया हूं मुझे मआफ़ कर दीजिये। फ़रमाया मआफ कर दिये। जब वह चला गया तो आप ने एक शख़्स से फ़रमाया। उसने हमला किया आले मुहम्मद के हक़ पर उनके यतीमों, फ़क़ीरों और मुसाफ़िरों के हक़ पर, माल को छुपा दिया है और मुझसे कहता है वह मेरे लिये हलाल क़रार दीजिये उसका गुमान था मैं ऐसा न करूंगा। इन लोगों से अल्लाह रोज़े क़यामत सख़्त बाज़ पुर्स करेगा।

28. हलबी ने कहा मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से अंबर और गोता से निकलने वाले मोतियों के मुतअल्लिक पूछा फ़रमाया इस पर ख़ुम्स है।



एक सौ उन्नतीसवां बाब

तीनते मोमिन व काफ़िर

1. फ़रमाया हज़रत अली इब्नुल–हुसैन ने अल्लाह तआला ने अंबिया को कुलूब व अब्दाल को इल्लीयीन की तीनत से बनाया है और इसी तीनत से मोमिनीन के कुलूब को पैदा किया है और अब्दान को दूसरी तीनत से और

कुफ़्फ़ार के कुलूब तीनते सिज्जीन से बनाये गये हैं और इसी से उनके अब्दान, फिर उन दो तीनतों को मिला कर बना है यही वजह है कि मोमिन से काफ़िर पैदा होता है और काफ़िर से, मोमिन। और यही वजह है कि मोमिन से बदी सरज़द होती है और काफ़िर से नेकी, मोमिन का दिल, उस चीज़ की तरफ़ मायल होता है जिससे वह पैदा किया गया है और काफ़िर का दिल उस चीज़ की तरफ़ मायल होता है जिससे वह ख़ल्क़ हुआ है।

तौज़ीह

अख़बार व अहादीस से साबित है कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नेक बन्दों को बुलन्द मर्तबा और पाक व साफ़ तीनत से पैदा किया है और अशक़िया को सिज्जीन या दोज़ख़ की मिट्टी से बनाया है और एक गिरोह को दोनों के इमतेज़ाज से।

इस हदीस से यह शुबह पैदा होता है कि बन्दा सआ़दत व शक़ावत पर मजबूर है जिसको अल्लाह ने जन्नत की ख़ाक से पैदा किया तो उसका नेकी करना क़ाबिले तारीफ़ न होगा। कुल्लो शैइन यरजिओ इला असलिहि। और न उसका अमल क़ाबिले जज़ा होगा। क्योंकि वह अपनी तीनत के इक़्तेज़ा से नेकी करने पर मजबूर है इसी तरह जिसको तीनते नार से पैदा किया है उसमें शैतनत का होना लाज़िम और वह अपनी ख़िलक़त व जिबिल्लत की वजह से बदी करने पर मजबूर है लेहाज़ा यह हदीस जब्र पर दाल है।

रद्दे शुबहा

हर इंसान अपनी ख़िलक़त के बाद इस दुनिया में कुछ करने वाला था वह उसके वजूद में आने से पहले ही इल्मे इलाही में था लेहाज़ा ब अख़्तियारे ख़ुद जैसा जिसका अमल होने वाला था उसको उसी तीनत से पैदा किया गया इसी अंदाज़े को तक़दीरे इलाही कहते हैं चूंकि इसका इल्म ऐने ज़ात है। लेहाज़ा हमारे इल्म से उसको कोई लगाओ नहीं, हम बादे वुक़ूअ़े फ़ेअ़ल किसी चीज़ का इल्म हासिल करते हैं और वह वुक़ूअ़ से पहले जब इंसान कोई क़ाबिले ज़िक्र चीज़ न था। वह इल्मे आगही में ब ज़ात व सिफ़ात मौजूद था लेहाज़ा उसकी ख़िलक़त उसी लिहाज़ से की गई है जिन लोगों ने यह नतीजा निकाला है कि बन्दा अपने फ़ेअ़ल पर मजबूर है उन्हों ने धोका खाया है और इल्मे इलाही को समझा ही नहीं है यह कहना भी ग़लत है कि यह अम्र अद्ले इलाही के ख़िलाफ़ है कि किसी को अच्छी मिट्टी से बनाये और किसी को बुरी मिट्टी से, हांलाकि सब उसी के बन्दे हैं। यह शुबह भी हमारे पहले जवाब से दफ़ा हो जाता है। ताहम उसको एक मिसाल के ज़रिये समझाते हैं।

एक सन्नाअ़ एक मशीन ईजाद करना चाहता है उसके ज़हेन में वह तमाम पुर्ज़े महफ़ूज़ हैं जो इस मशीन की ग़रज़े ईजाद को पूरा करने के ज़िम्मेदार होंगे वह इस पर ग़ौर करता है कि हर पुर्ज़े का काम क्या होगा। इन कामों को पेशे नज़र रख कर वह बाज़ पुर्ज़े बनाता है बाज़ मअ़मूली लोहे के, बाज़ पीतल, तांबे के बाज़ रबर या चमड़े के, साख़्त और माद्दे में यह इख़्तेलाफ़ पुर्ज़ों की आइंदा कार गुज़ारियों पर है जिसका नक़्शा अभी मूजिद के ज़हेन में है इसी तरह जो नफ़्से इंसानी आलमे वुजूद में जो कुछ करने वाला था वह

इल्म में बारी–ए–तआ़ला के था। लेहाज़ा उसने मोमिन को इल्लीयीन से बनाया और काफ़िर को सिज्जीन से।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने मोमिन को तीनते जन्नत से पैदा किया और काफिर को तीनते नार से और फ़रमाया कि जब ख़ुदा किसी बन्दे से नेकी का इरादा करता है तो उसकी रूह और जसद को पाक बना देता है ऐसा आदमी जब कोई अच्छी बात सुनता है तो उसे पहचान लेता है और जब बुरी बात सुनता है तो इंकार करता है और यह भी फ़रमाया कि तीनीयात तीन हैं। तीनतुल अंबिया और तीनते मोमिन इसी तीनत से फ़र्क़ यह है कि तीनत निखरी हुई है और वह असल है और यही वजहे फ़ज़ीलत है और मोमिन की तीनत उस लसदार तीनत की फ़रअ़ है यही वजह है कि उनके ताबिईन के दरमियान इफ़्तेराक़ नहीं होता तीसरी तीनते नासिब सड़ी हुई मिटटी से है और ज़ईफुल ईमान की ख़िलक़त तुराब से है। मोमिन अपने ईमान से और नासिबी अपने नसब से नहीं हटता और उनमें मशीयते ख़ुदा जारी है।

जवाबे शुबहा

कोई कहने वाला कह सकता है कोई नबी हो या वली मोमिन हो या काफ़िर, हर एक का पैकर इसी ख़ाक से बनता है जिस से हम बने हैं न किसी के लिये जन्नत से मिट्टी आई है न दोज़ख़ से फिर इल्लीयीन से सिज्जीन से ख़िलक़त क्या माना रखती है।

जवाब इसका यह है कि यहां ख़िलक़त व तीनत से मुराद हक़ीक़ते इंसानिया है जो एक ग़ैर शरई चीज़ है और वही लफ़्ज़ मैं का मिसदाक़ है जब यह आवाज़ किसी आदमी

के मुंह से निकलती है मेरा बदन मेरा नफ़्स, मेरी रूह, तो मालूम होता है कि "मैं" हक़ीक़ते इंसानिया है जिसको मिट्टी के जौहर से पैदा किया गया है। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है। लक़द ख़लक़नल इन्साना मिन सुलालतिन मिन तीन (हमने इंसान को मिट्टी के जौहर से पैदा किया) यही जौहर है जिसकी ख़िलक़त इल्लीयीन या सिज्जीन से होती है यही इंसान के अजज़ाये असलिया हैं। उसी को नुत्फ़ऐ–इन्सानिया के अन्दर छुपा दिया जाता है नुतफ़े में अजज़ाये ज़ायदा है इसी तरह सारा बदन अजज़ाये ज़ायदा से बनता है यह अजज़ा कम व बेश होते रहते हैं जिसकी वजह से इंसान कभी मोटा होता है कभी लाग़र, यही अजज़ाये असलिया हैं जिन से रोज़े अलस्त ख़ालिक़े आलम ने अपनी रुबूबियत का इक़रार लिया था जो बदन मां के पेट में बनता है वह बेशक इसी ज़मीन की पैदावार है न कि वह अजज़ाये असलिया जो हक़ीक़ते इंसानिया है फ़फ़्हम व तदब्बर।

3. सालेह इब्ने सहल ने बयान किया कि मैंने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से दरयाफ़्त किया कि ख़ुदा ने तीनते मोमिन को किस चीज़ से पैदा किया है। फ़रमाया तीनते अंबिया से। यही वजह है कि वह नजासते कुफ़्र व शिर्क से कभी आलूदा नहीं होते।

तौज़ीह

यहां यह एतराज़ होता है कि जब तीनत मोमिन और अम्बिया एक हैं तो फिर मोमिन भी मासूम होना चाहिये लेकिन ऐसा नहीं। इसका जवाब यह है कि तीनत के दरजात है कोई ज़्यादा पाक

व साफ़ है कोई कम, पस अंबिया जिस तीनत से ख़ल्क़ होते हैं वह तीनते मोमिन से ज़्यादा असफ़ा व अतहर होती है।

4. अबू हमज़ा सुमाली ने कहा कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से सुना कि ख़ुदा ने हम को इल्लीयीन से पैदा किया है और हमारे शियों के कुलूब को उसी चीज़ से पैदा किया है जिस से हमको पैदा किया है और उनके अबदान को दूसरी चीज़ से। उनके कुलूब हमारी तरफ़ इसलिये मायल है कि उनकी और हमारी ख़िलक़त एक ही चीज़ से है फिर सूरह अल मुतफ़्फ़िफ़ीन की यह आयत पढ़ी। बेशक अबरार की किताब इल्लीयीन में है और ऐ रसूल स0! तुम जानते हो इल्लीयीन क्या हैं वह लिखी हुई किताब है जिसकी गवाही ख़ुदा के मुक़र्रब बन्दे देते हैं और हमारे दुश्मन सिज्जीन से बने हैं और इसी से उनके पीर व मुर्शिद पैदा हुए हैं यही वजह है कि उनके दिल हमारे दुश्मनों की तरफ़ झुकते हैं कि दोनों की तीनत एक है फिर यह आयत पढ़ी। किताबे फुज्जार सिज्जीन में है और तुम जानते हो सिज्जीन क्या है। वह किताबे मरकूम है हलाकत है रोज़े क़यामत झुठलाने वालों के लिये।

तौज़ीह

किताबे मरकूम की तौज़ीह मे अल्लामा मज्लिसी अलैहिर्रहमा मिरअतुल उकूल में तहरीर फ़रमाते हैं इन्सान जो चीज़ें अपने हवास से महसूस करता है उसका असर उसकी रूह पर वाक़े होता है और यह सब उसके सहीफ़ा–ए–ज़ात और ख़ज़ान–ए–मुदरिकात में जमा होते रहते हैं और इसी तरह हर ज़र्रा नेकी व बदी वहां मुर्तसिम हो जाती है जिस

तरह बार बार करने के कोई आदत या मलका रासिख़ हो जाता है पस अफ़आल मुतकर्रिरह या अक़ाइदे रासिख़ा नुफूस में इस तरह जम जाते हैं जैसे नुकूशे किताबत कागज़ पर जैसा कि खुदा फ़रमाता है उलाइका क–त–ब– फ़ी कुलूबिहिमुल ईमान (यही है वह जिन के कुलूब पर अल्लाह ने ईमान को लिख दिया है उन्हीं सहाएफ़े नफ़ीसा को सहायफुल आमाल कहा गया है। इसी की तरफ़ इशारा है इस आयत में। इज़स्सुहुफु नुशिरत (जब यह सहीफ़े खोल दिये जायेंगे) और यह भी फ़रमाया है व कुल्लो इंसानिन अलज़मनाहु ताएरहु फ़ी उनुक़िहि व नुख़रिजु लहु यौमल क़ियामते किताबन यलक़ाहु मंशूरा (रोज़े क़ेयामत हर इंसान का आमाल नामा उसकी गर्दन में पड़ा हुआ उड़ रहा होगा। और रोज़े कयामत हम वह मकतूब भी निकाल, बाहर करेंगे जिसको वह खुला हुआ पायेगा।) यह वही किताब होगी जो नफ़्से इंसानी पर लिखी गई होगी। पस नेकियों की यह किताब तीनते इल्लीयीन से मुतअल्लिक़ होगी और फुज्जार की सिज्जीन से।

5. अब्दुल्लाह बिन कैसान कहता है कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि मैं आपका गुलाम अब्दुल्लाह बिन कैसान हूँ फ़रमाया नसब तो पहचान गया मगर तुझसे वाक़िफ़ नहीं मैं पहाड़ी इलाक़े में पैदा हुआ। मुल्के फ़ारस में पला बढ़ा। मैं तिजारत वग़ैरह के सिलसिले में मुख़तलिफ़ क़िस्म के लोगों से मिलता जुलता हूं। मैं एक ऐसे शख़्स से मिला जो अच्छे आदात व अख़लाक़ वाला और अमीन था। जुस्तजू से पता चला कि उसके दिल में आपकी अदावत है फिर एक बद खुल्क़ और ख़ाइन से मिला। लेकिन उसको आपका दोस्त पाया ऐसा क्यों है फ़रमाया। ए इब्ने

कैसान तुम्हें मालूम नहीं कि अल्लाह ने कुछ मिट्टी जन्नत की ली और कुछ दोज़ख़ की। इन दोनों को मिला दिया। फिर एक में से दूसरे को निकाला। पस अमानत और हुस्ने खुल्क का सबब तीनते जन्नत है क्यों कि लोग उसी तरफ़ लौटेंगे जिससे वह पैदा किये गये हैं और जिन में क़िल्लते अमानत बदख़ुल्क़ी और फ़ितना परदाज़ी को देखा और असर है दोज़ख वाली तीनत का। वह उसी की तरफ़ बाज़गश्त करेंगे। जिससे वह पैदा हुए हैं।

तौज़ीह

मतलब यह है कि असलाबे औलादे आदम में बिना बर मशीयते ईज़दी दोनों तीनतों को मिला दिया। फिर उनमें से किसी एक में से ख़िल्क़त हुई लेहाज़ा इसका असर बरक़रार रहा और दूसरा असर बलेहाज़ दूसरी तीनत के है जिससे असलाबे आबा में इत्तेसाल रहा था। अल्लामा मज्लिसी ने इस हदीस को ज़ईफ़ तहरीर फ़रमाया है।

6. रावी ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा क्या मोमिन तीनते अंबिया से पैदा होता है। फ़रमाया हां।

7. रावी कहता है फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा ने जब आदम अ० को ख़ल्क़ करने का इरादा फ़रमाया तो रोज़े अव्वल की साअत में भेजा। उन्हों ने अपनी दाहिनी मुठ्ठी मे सातवें आसमान से लेकर आसमाने दुनिया तक की ख़ाक ले ली। और फिर बायें हाथ में ज़मीन के सातों तबक़ात की मिट्टी ले ली। फिर अल्लाह ने अपने कलमे को हुक्म दिया उसने पहले कब्ज़े को दाहने हाथ में लिया और

दूसरे क़ब्ज़े को बाऐं हाथ में। पस ख़ुदा ने इस मिट्टी को दो हिस्सों में कर दिया। और बिखेर दिया ज़मीन वाली मिट्टी को जो बायें हाथ में थी और आसमानों वाली मिट्टी को जो दाहिने हाथ में थी और उससे कहा तुझ से रसूल, नबी, वसी, सिद्दीक़, मोमिन और वह नेक लोग पैदा होंगे जिन को साहबे करामत बनाना चाहता हूं पस साबित और लाज़िम हुआ उनके लिये जो कुछ कहा था यानी वह तमाम अक़साम पैदा हुये। और बायें हाथ वाली मिट्टी से कहा। तुझ से जब्बार मुशरिक व काफ़िर पैदा होंगे और ऐसे सरकश व ना फ़रमान, जिनकी ज़िल्लत व बदबख़्ती का मैं इरादा करूंगा। पस वही हुआ जो अल्लाह ने कहा था फिर ख़ुदा ने इन दोनों तीनतों को मिलाया। इसी को ज़ाहिर करती है यह आयत। वह दाने और गुठली को शिगाफ़्ता करने वाला है। दानए–तीनते मोमिन है और नवाए तीनते काफ़िर है। यह लोग वह हैं जो हर शर से दूर हैं नवा नाम इस लिये रखा गया है कि वह नेकी से अलग हैं ख़ुदा फ़रमाता है कि वह ज़िन्दा को मुर्दा से और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है। पस ज़िन्दा वह मोमिन है जिसकी तीनत तीनते काफ़िर से निकलती है और मय्यत वह है जो ज़िन्दा से निकालता है पस हय्युन से मुराद मोमिन है और मय्यत से मुराद क़ाफ़िर, यही मतलब है ख़ुदा के उस क़ौल से जो मुर्दा था हम ने उसे ज़िन्दा किया। और यह कि उसकी मौत थी और यह कि उसकी तीनत का इख़तेलात तीनते काफ़िर से हुआ और यही उसकी ज़िन्दगी है क्योंकि ख़ुदा ने इन दोनों तीनतों के दरमियान जुदाई पैदा कर दी है अपने कलिमा (जिब्रईल) के ज़रिये से पस ख़ुदा मोमिन को विलादत के वक़्त तारीकी से निकाल कर नूर की

तरफ़ ले आता है और काफ़िर को नूर की तरफ़ से निकाल कर जुलमत की तरफ़ ले जाता है जैसा कि सूरह यासीन में है ताकि डराये अज़ाब से उसको जो ज़िन्दा था और काफ़िरों पर अल्लाह का क़ौल सच साबित हुआ।

तौज़ीहात

हकीक़त यह है कि हदीसे तीनत मुशकिल तरीन अहादीस से है इसके असरारे वाक़ेईया को अम्बिया और अइम्मा के सिवा कोई नहीं समझ सकता है मसालेहे एज़दी को समझना उकूले बशरी से बाहर है हमारे समझाने को जो कुछ मासूमीन अलैहिस्सलाम ने बयान किया है वह माद्दी तरीक़े कार के लेहाज़ से है और एक इजमाली बयान है उसकी हक़ीक़त का इल्म सिर्फ़ उन्हीं हज़रात को हो सकता है जो ख़िलक़ते आलम के वक़्त मौजूद थे और जो मदरसाए मिन लदुन के तालीम याफ़्ता थे।

इस हदीस को अल्लामा मज्लिसी ने ज़ईफ़ लिखा है। काफ़ी के मुहश्शी लिखते हैं :–

कि यह हदीस मुतशाबिहातुल अख़बार और मुज़लातुल आसार से है इससे जब्र का इसबात और अख़्तियार की नफ़ी लाज़िम आती है ओलमाये इमामिया का मसलक इसके मुतअल्लिक़ मुख़तलिफ़ है।

1. अख़बारियों का मसलक यह है कि हम को मुजमिलन ईमान लाना काफ़ी है और इसकी हक़ीक़त के मुतअल्लिक़ अपने जेहल का इक़रार कर लेना चाहिये और कहना चाहिये ख़ुदा ने अपनी मसलिहत से जैसा चाहा बना

दिया इसका इल्म अइम्मा अलैहिमुस्सलाम को है।

2. एक गिरोह का ख़ेयाल है कि यह हदीस महमूल बर तक़य्या है जिसमें रिवायाते आम्मा और मसाहिबे अशायरा जबरिया की मुवाफ़िक़त की गई है।

3. अल्लाह तआला ने बन्दों के पैदा होने से उनके तमाम अफ़आल को जो वह मुद्दतुल उम्र करने वाले थे अपने इल्म में ले लिया था लेहाज़ा उन्हीं अक़ाएद व आमाल के लेहाज़ से उनकी तीनत को मख़सूस किया गया। लेहाज़ा जब्र लाज़िम नहीं आता। जब आयाते कुरआनी से इंसान का फ़ाएले मुख़तार होना साबित है जैसे कुल्लु नफ़सिम मा क–स–बत वं हुम ला युज़लमून तो जब्र का सवाल ही नहीं पैदा होता।

4. तीनत के मुतअल्लिक़ जो बयान किया गया है यह किनाया है लोगों की इस्तेदाद के मुख़तलिफ़ होने से और क़ाबिलियतों की कमी बेशी से और यह अम्र ऐसा बय्यिन है कि इससे इन्कार नहीं हो सकता। किसी आक़िल को इससे इन्कार नहीं कि हज़रते रसूले ख़ुदा और अबू जेहल एक दर्जे में नहीं ब लेहाज़ इस्तेदाद क़ाबेलीयत और हसूले कमालात, ख़ुदा ने अपने नबी को मुकल्लफ़ बनाया उन उमूर का जिनके वह अहल थे और अबू जेहल को उनका जिसका वह अहल था ख़ुदा ने उसको शर व फ़साद पर मजबूर नहीं किया बल्कि यह उसका ज़ाती फ़ेअ़ल था इसी तरह हर इंसान अपनी ज़िन्दगी में जो कुछ करने वाला था वह इल्मे इलाही में था इसी के लेहाज़ से उसको तीनत दी गई।

5. जब आलमे ज़र में अल्लाह ने रूहों को मुकल्लफ़ बनाया तो किसी ने ब अख़्तियारे ख़ुद ख़ैर को अख़्तियार किया किसी ने शर को। लेहाज़ा इसी लेहाज़ से उनको ख़ल्क़ किया गया।

एतेराज़

ख़ुदा की इसमें क्या मसलिहत थी कि उसने जा बजा से मिट्टी मंगाई एक ही मिट्टी से सबको क्यों न पैदा किया?

इसका जवाब यह है कि मशीयते एज़दी यह थी कि हर ख़ित्त–ए–ज़मीन को बनी नौए इंसान से आबाद करे चूंकि हर ख़ित्त–ए–ज़मीन की तासीर जुदागाना है लेहाज़ा ज़रूरत थी कि हर ख़ित्ते के बाशिंदों को वहीं की मिट्टी से बनाया जाए ताकि वह सहूलत से ज़िन्दगी बसर कर सकें और वहां की आब व हवा और पैदावार उनके मिज़ाज के मुताबिक़ हो नीज़ यह कि एक सरज़मीन का आदमी दूसरे ख़ित्ते के लेहाज़ से जुदा हो ताकि शेनाख़्त में आसानी हो।

एतेराज़

इसकी क्या ज़रूरत थी कि ख़ुदा मोमिन व कुफ़्फ़ार की दो तीनतों को मख़लूत करे और फिर उनको एक दूसरे से जुदा करके मोमिन से काफ़िर और काफ़िर से मोमिन को पैदा करे यह तो बच्चों का सा खेल हुआ।

इस का जवाब यह है इंसान तीन क़िस्म के हैं अव्वल वह तबक़ा जिनसे गुनाहों का सुदूर नहीं होता यह बनी नौए इंसान का आला तबक़ा है उसकी तीनत आला इल्लीयीन से है दूसरा तबक़ा वह है जो शयातीन का आल–ए कार है और

कुफ़्र व शिर्क ज़ुल्म व फ़ितना परदाज़ी की नजासत में मुलव्विस है उसकी तीनत सिज्जीन है यानी सबसे बदतर यह नोऐ इंसानी का पस्त तरीन तबक़ा है तीसरा तबक़ा वह है जो नेकी व बदी दोनों का मर्कज़ है लेहाज़ा उसका वुजूद मख़लूत तीनतों से होना चाहिये।

एतेराज़

जब मोमिन व काफ़िर दोनों का पैदा करने वाला ख़ुदा ही है तो फिर जज़ा व सज़ा बे सूद है?

जवाब यह है कि इंसान मोमिन व काफिर अपने अक़ाएद व आमाल से बनता है न कि ख़ुदा ने उसे मोमिन या काफ़िर जबरन बनाया है ख़ुदा ने मोमिन को अच्छी तीनत और काफ़िर को बुरी तीनत से बलेहाज़ उनके अफ़आल के बनाया है जो वह इस दुनिया में आकर करेगा। चूंकि वह सब बातें इल्मे इलाही में पहले से हैं लेहाज़ा उन्हीं के लेहाज़ से उसको मोमिन या काफ़िर कहा गया है।



एक सौ तीसवां बाब

ज़िक्रे तक्लीफ़े अव्वल

1. इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। अगर लोग यह जान लें कि दुनिया की इब्तेदा क्यों कर हुई तो दो आदमियों के दरमियान भी अख़्तेलाफ़ न हो। ख़ुदा ने उन लोगों को ख़ल्क़ करने से पहले फ़रमाया। मीठा पानी हो जा मैं तुझ से अपनी जन्नत को पैदा करूंगा और अपने फ़रमांबरदार बन्दों को फिर फ़रमाया नमकीन पानी हो जा मैं तुझसे अहले नार और अहले मअ़सियत को पैदा करूंगा फिर उनको मिल जाने का हुक्म दिया चुनांचे मीठा पानी और खारा

पानी मिल गया यही वजह है कि मोमिन से काफ़िर और काफ़िर से मोमिन पैदा होता है फिर ज़मीन के ऊपर से मिट्टी ली और उसे सख़्त झटका दिया कि वह ज़र्रा ज़र्रा हो गयी। कुछ ज़र्रे दाहिनी तरफ़ गये और कुछ बाईं तरफ़ गये। दाहिनी तरफ़ वालों से कहा कि तुम सलामती से जन्नत की तरफ़ जाओ और असहाबे शेमाल से कहा कि तुम दोज़ख़ की तरफ़ जाओ। फिर नार को हुक्म दिया वह भड़क उठे। असहाबे शेमाल से कहा इसमें दाख़िल हो। वह ख़ौफ़ ज़दा हो गये और इन्कार कर दिया। पस उसी रोज़ इताअत और मअ़सियत साबित हो गई। पस न असहाबे यमीन असहाबे शेमाल में से हैं और न असहाबे शेमाल असहाबे यमीन से।

तौज़ीह

इस हदीस से चन्द बातों पर रोशनी पड़ती है : (1) क़ेदामते माद्दा का इबताल, क्योंकि जब हर शैय की असल ज़िन्दगी पानी से है जैसा कि खुदा फ़रमाता है व जअ़ल्ना मिनल मा–इ कुल्लो शैइन हय्यिन (हमने हर शैय को पानी से ज़िन्दा किया) पस जब चीज़ों की असल ही हादिस है तो इससे बनने वाला माद्दा क्यों न हादिस होगा। (2) नेक बन्दों की ख़िलक़त आबे शीरीं व खुशगवार से हुई है यानी जिस तरह आबे शीरीं से मख़लूक़ात को बे शुमार फ़ायदे पहुंचते हैं उसी तरह नेकियों से फ़ायदा पहुंचता है। (3) आलमे ज़र ही में पता चल गया कि किस में फ़रमांबरदारी की अहलियत है और किस में नहीं जब रोज़े अव्वल ही में इमतेहान ले लिया गया

तो जो तीनत दी गई है वह उसी के लेहाज़ से हुई।

2. ज़ुरारह से मरवी है कि हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से एक शख़्स ने इस आयत का (जब तेरे रब ने औलादे आदम के असलाब से उनकी औलाद को बाहर निकाला और उनके नफ़्सों पर उनको गवाह बना कर कहा। क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं। उन्हों ने कहा हां)मतलब पूछा। इमाम ने फ़रमाया। मेरे पदरे बुज़ुर्गवार हज़रत अली इब्नुल–हुसैन अलैहिस्सलाम सुन रहे थे। उन्हों ने मुझसे फ़रमाया अल्लाह तआला ने एक मुठ्ठी ख़ाक इस ज़मीन से ली। जिंससे आदम को पैदा किया था। इस पर आबे शीरीं और खुश गवार छिड़का और चालीस रोज इसी हालत में रहने दिया। फिर उस पर खारी और कड़वा पानी छिड़का और चालीस रोज उसी हालत में रहने दिया। जब मिट्टी ख़मीर हो गई तो उसे ख़ूब मला कि उसका एक एक जुज़ अलाहिदा हो गया तो रूहें इस में से चूंटियों की तरह निकलीं कुछ दायें तरफ़ गई और कुछ बायें तरफ़। खुदा ने सबको हुक्म दिया कि दाख़िले नार हो दाहिनी तरफ़ वाली उसमें दाख़िल हो गई आग सलामती से उन पर ठण्डी पड़ गई और बायें तरफ़ वालों ने इन्कार कर दिया।

तौज़ीह

बईद नहीं कि आबे शीरीं से यह किनाया हो उन असबाब व दवाअी की तरफ़ जो इंसान को ख़ैर व इस्लाह की तरफ़ ले जाते हैं जैसे अक़्ल नफ़्से मलकूती और खारी पानी से मुराद वह दवाअी हैं जो शहवात को अभारते हैं और दोनों को मिलाने

से इज़हार है उनके असरात का। और हदीसे अव्वल में अख़लक़्तु मिनका से यह मुराद है कि मैं तेरी वजह से अपनी जन्नत और अपने फ़रमांबरदार बन्दों को पैदा करूंगा वरना अगर इंसान में जेहते ख़ैर न हो तो जन्नत के पैदा करने से फ़ायदा क्या और न कोई इसका मुस्तहक़ होगा और न कोई अल्लाह का फरमांबरदार बन्दा बन सकता है ऐसे विदाअ़ी सरज़द न होते तो कोई ख़ुदा की ना फरमानी न करता और न गुनहगारों को अज़ाब देने के लिये दोज़ख़ को बनाने की ज़रूरत पेश आती।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा ने जब आदम को पैदा करने का इरादा किया तो मिट्टी पर पानी बरसाया फिर उस में से मिट्टी ले कर उसको मला फिर उसके दो हिस्से किये। फिर ज़र्रे चूंटियों की शक्ल में हो गये और चलने लगे फिर उनके लिये आग को बुलन्द किया और अहले शेमाल को हुक्म दिया कि इसमें दाख़िल हो जाये। वह उसके पास तक गये और फिर इंकार कर दिया। फिर ख़ुदा ने अहले यमीन को हुक्म दिया कि वह दाख़िल हों वह वहां गये और कूद पड़े ख़ुदा ने आग को हुक्म दिया कि सलामती के साथ सर्द हो जा। जब अहले शेमाल ने यह देखा तो कहने लगे हमारी ख़ता से दर गुज़र कर, ख़ुदा ने मआफ़ कर दिया। वह गये और किनारे पर खड़े हो गये उसके अन्दर गये नहीं, ख़ुदा ने फिर उन्हें मिट्टी की तरफ़ पल्टा दिया और आदम को उस से पैदा किया। फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने, न यह उस

गिरोह में शामिल होने के क़ाबिल हैं और न वह इन में और फ़रमाया। लोग रिवायत करते हैं कि आग में सब से पहले दाखिल होने वाले रसूले ख़ुदा थे इसी लिये ख़ुदा ने फ़रमाया है ऐ रसूल स0 कह दो अगर ख़ुदा के कोई बेटा होता तो मैं सब से पहले उसकी इबादत करने वाला होता।



एक सौ एक्तीसवां बाब

1. हुमरान से मरवी है कि फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जब ख़ुदा ने मख़लूक़ को पैदा करना चाहा तो पहले मीठा पानी पैदा किया। फिर खारी और कड़वा। फिर दोनों को मिला दिया। इसके बाद जो मिट्टी सतहे अर्ज़ पर बनी उसको यदे क़ुदरत ने ख़ूब मिलाया इसके बाद ज़र्रों से चूंटियां सी बन कर दाहिनी तरफ़ चलीं। ख़ुदा ने उन से कहा। तुम जन्नत की तरफ़ जाओ सलामती के साथ और बायें तरफ़ जाने वालों से कहा तुम दोज़ख़ की तरफ़ जाओ मुझे तुम्हारी परवाह नहीं। फिर सब रूहों से कहा। क्या मैं तुम्हारा रब नहीं। उन्हों ने कहा हां यह इक़रार इस लिए है कि रोज़े क़यामत यह न कहो कि हमें ख़बर न थी। फिर अंबिया से मीसाक़ लिया गया। मैं तुम्हारा रब नहीं और यह कि मुहम्मद स0 तुम्हारा रसूल स0 है और यह अली अलैहिस्सलाम अमीरूल मोमिनीन है। सब ने कहा हां। पस नबुव्वत साबित हुई और अंबिया ऊलुल अज़्म (नूह अ0, इब्राहीम अ0, मूसा अ0, ईसा अ0, और मोहम्मद स0) से अहद लिया। अपनी रूबूबियत और मुहम्मद स0 की रिसालत का और अली अलैहिस्सलाम की इमामत का और उनके बाद होने वाले औसिया अलैहिस्सलाम का जो वालियाने अम्रे इलाही और खज़ाना दारे इल्मे इलाही हैं और महदी की

इमामत का इक़रार लिया और कहा यह मेरे दीन का नासिर है मैं अपनी हुकूमत को इससे मज़बूत करूंगा। और इसके ज़रिये अपने दुश्मनों से इंतेकाम लूंगा। और इसकी वजह से मेरी इबादत की जायेगी। चाहे ब ख़ूशी या ब इक्राह, सब ने कहा पर्वरदिगार हम ने इक़रार किया और गवाही दी। और आदम अलैहिस्सलाम ने न तो इक़रार किया और न ही इंकार। पस पांच अंबिया के लिये तो अज़ीमत साबित हुई। महदी अलैहिस्सलाम के बारे में और आदम अलैहिस्सलाम का इकरार साबित न हुआ जैसा कि खुदा फरमाता है हम ने आदम अलैहिस्सलाम से अहद लिया। पस उसने तर्क किया और हम ने उसमें अज़्म को न पाया।

इमाम ने फ़रमाया इस आयत में नसेया के माना तर्क (छोड़ दिया) के हैं फिर ख़ुदा ने आग को हुक्म दिया कि वह शोला फ़ेशां हो जब शोले भड़के तो असहाबे यमीन से कहा इसमें दाख़िल हो जाओ वह दाख़िल हो गये तो आग सलामती के साथ ठण्डी पड़ गयी। यह देख कर असहाबे शेमाल ने कहा परवरदिगार! हमारी ख़ता से दर गुज़र, दर गुज़र की, अच्छा अब दाख़िल हो जाओ उन्हों ने इन्कार कर दिया। पस यहां से ही इताअत, विलायत और मअ़सियत का सुबूत मिलता है।

तौज़ीह

मीठे और कड़वे पानी से मुराद मिज़ाजे इन्सानी की खुसूसियत है कभी वह खुश होता है कभी ना ख़ुश, कभी लोगों से अच्छा बरताव करता है कभी नहीं या आबे शीरीं से मुराद उसकी ईमानी कुव्वत है और आबे नमकीन व तल्ख़ से मुराद उसका कुफ़्र व शिर्क है।

ज़र्रात से जो चूंटियों की तरह चलने वाले थे इंसान के वही अजज़ाए असलिया मुराद थे जिनका ज़िक्र हम पहले कर चुके हैं। यही बाइसे तकलीफ़ और मरकज़े ईमान व इरफान हैं यही वह हैं जिनको नुतफ़–ए–इंसानी के अन्दर छुपा दिया जाता है यही इंसान के जिस्म के हर हिस्से को अजज़ाये ब्रशरी की सूरत में बाक़ी रखने के ज़िम्मेदार हैं जब यह जिस्म इंसान से ख़ारिज हो जाते हैं तो मौत वाक़ेअ हो जाती है।

यह अजज़ाये असलिया आलमे ज़र में साहिबे अक़्ल व शअूर थे वर्ना अलस्तो बिरब्बिकुम के जवाब में बला न कहते। क्योंकि किसी चीज़ का इक़रार उसी वक़्त किया जाता है जब उसकी हक़ीक़त से वाक़िफ़ हो। यक़ीनन वह उसी आलम में उसकी रूबूबियत की शान देख चुके। इन अजज़ाए असलिया की तरबियत ख़ुदा ने किस तरह की। यह अक़्ले ब्शरी से दूर की बात है।

आग में दाख़िल होने का हुक्म देना बग़र्ज़े इम्तेहान था ताकि फ़रमांबरदार और ना फ़रमान का इल्म हो जाए। ख़ुदा को तो इल्म था यह तो सिर्फ़ बन्दों पर इतमामे हुज्जत की गरज़ से था ताकि उनकी हस्बे हाल उनकी तीनत रखी जाए।

असहाबे यमीन और असहाबे शेमाल से मुराद फ़रमांबरदार व ना फ़रमान हैं चूंकि दस्ते रास्त को दस्ते चप पर फ़ौक़ियत है इस लिये नेकों को असहाबे यमीन कहा गया है और बदों को असहाबे शिमाल।

चूंकि अंबिया और औसियाए अंबिया और ज़ाते हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स० और उनके औसिया से निज़ामे हयाते

बशरी की वाबस्तगी थी और उनके सहारे दीने इलाही क़यामत तक चलने वाला था लेहाज़ा उनकी नबुव्वत और अइम्मा की इमामत का इक़रार लेना ज़रूरी था खुसूसन इमाम महदी अलैहिस्सलाम से मुतअल्लिक़ जिन पर हर शबे क़दर में ता क़यामत मलायका और रूह नाज़िल होती रहीं और अम्र निज़ामें कायनात के मुतअल्लिक़ उनके पास आयेगा। चूंकि ओहदए जलीला दीने इलाही. के नश्र का सबसे बड़ा सबब है लेहाज़ा इकरारे इमामते इमामे महदी ज़रूरी हुआ।

2. रावी कहता है मुझसे इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदाए अज्ज़ व जल्ल् फ़रमाता है। अल्लाह तआला ने जब औलादें आदम को पुश्ते आदम से निकाला ताकि उनकी अपनी रूबूबियत और हर नबी की नबुव्वत का अहद ले। तो सबसे पहले जिसकी नबुव्वत का मीसाक़ लिया गया वह नबुव्वत हज़रत मुहम्मद मुस्तफा स0 थी। ख़ुदा ने आदम से कहा। बताओ तुम क्या देखते हो। आदम अलैहिस्सलाम ने अपनी औलाद की तरफ़ निगाह की वह सब चूंटी की मिस्ल थीं जिनसे पूरा आसमान भरा हुआ था। आदम ने कहा पालने वाले मेरी औलाद किस क़दर ज़्यादा है तू ने इनको इस लिये पैदा किया है क्या उनसे अहद लेने का इरादा है। फ़रमाया इस लिये पैदा किया है कि यह मेरी इबादत करें और मेरे साथ किसी को शरीक न करें और मेरे रसूलों पर ईमान लायें और उनका इत्तेबाअ़ करें।

आदम ने कहा पालने वाले में बाज़ मोर्चों (चिटियों) को बाज़ से बड़ा पाता हूं। बाज़ मे नूर ज़्यादा है बाज़ में कम। बाज़ में बिल्कुल नही, ख़ुदा ने फ़रमाया एसा ही किया है ताकि हर हालत में उनको आज़माऊं, आदम ने कहा पालने

वाले, कलाम की मुझे इजाज़त दे। फ़रमाया बोलो तेरी रूह मेरी रूह हैं लेकिन तेरी तबीअ़त में मेरी ज़ात से मुख़ालिफ़त का माद्दा मौजूद है आदम ने कहा अगर तू उनको एक ही मिसाल और एक ही अन्दाज़े एक ही तबीअ़त एक ही फ़ितरत, एक ही रंग और एक ही उम्र का पैदा करता और उनका रिज़्क़ भी बराबर होता तो ये एक दूसरे से बग़ावत न करने और उनके बीच हसद न होता और बुग़ज़ न पाया जाता और किसी चीज़ में इख़्तिलाफ़ न होता। ख़ुदा ने कहा ऐ आदम मैंने तुझ को अपनी रूह से गोया किया और तेरी ज़ोफ़े तबीअ़त का लेहाज़ करके तुझे मुकल्लफ़ बनाया जिसका तुझे इल्म नहीं और मैं ख़ालिक़े आलम हूँ और मैंने अपने इल्म के मुताबिक अपनी मखलूक़ में इख़तेलाफ़ रखा है और मेरी मशीयत के मुताबिक़ मेरा हुक्म उनमें जारी होता है और मेरी तदबीर और अंदाज़े से उनके काम होंगे मेरी ख़ल्क़ में कोई तबदीली न होगी मैंने जिन् व इंस् को इबादत के लिये पैदा किया है और जन्नत को उन लोगों के लिये ख़ल्क़ फ़रमाया जो इताअ़त व इबादत करेंगे और मेरे रसूलों की इत्तेबाअ़ करेंगे। और मुझे उनकी एबादत व इताअत की परवा नहीं। मैंने तुझे और तेरी औलाद को पैदा किया। दरआंहालेंकि मेरी कोई इहतियाज उनकी तरफ़ न थी और न तेरी तरफ़। मैंने तुझको और उनको इस लिए पैदा किया ताकि मैं तुझे और उनको आज़माऊ कि अज़रूए अमल इस दारे दुनिया की ज़िन्दगी में अपनी मौत से पहले कौन अच्छा है इसी लिये मैंने दुनिया व आख़िरत, ज़िन्दगी और मौत, ताअ़त व मअ़सियत और जन्नत व नार को पैदा किया और इसी तरह इरादा किया अपनी तदबीर व तक़दीर का, पस मेरा इल्म उनमें

जारी है मैंने अलग अलग पैदा की उनकी सूरतें, उनके अजसाम, उनके रंग, उनकी उम्रें, उनके रिज़क़, उनकी इताअ़त, उनकी मअ़सियत, मैंने उनको शक़ी और सईद, बसीर और अन्धा, कोताह और तवील, ख़ूबसूरत और बदसूरत, आलिम व जाहिल, ग़नी और फ़क़ीर, फ़रमांबरदार और ना फ़रमान, तंदुरूस्त और बीमार, ऐबदार और बेअ़ैब पैदा किया, इस लिए कि तंदुरूस्त बीमार को देख कर मेरी हम्द करे, अपनी तंदरूस्ती पर और तंदुरूस्ती को देख कर मुझ से सेहत का सवाल करे और मेरी आज़माइश पर सब्र करे अगर ऐसा करेगा तो उसे सवाब दूंगा अपनी बख़शिश से माला माल कर दूंगा और ग़नी फ़क़ीर की तरफ़ नज़र करे। पस मेरी हम्द करे इस पर कि मैंने उनको हिदायत की। इस लिय मैंने उनको पैदा किया है ताकि उनको रंज और ऐश में आज़माऊ और इस तरह कि मैं उनको सेहत दूं और बीमारियां और उनको अ़ता करूं और मना करूं। मैं बादशाह क़ादिर अल्लाह हूँ। जो चाहूं कहूँ जहां चाहूँ करूं मुक़द्दम को मोअख़्ख़र करूं और मोअख़्ख़र को मुक़द्दम, जो करूं किसी को इसके मुतअल्लिक़ सवाल का हक़ नहीं हां मैं उनसे पूछूंगा उनके आमाल के बारे में।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि अल्लाह ने मख़लूक़ को पैदा किया और जिन को दोस्त रखता था उनको अपनी पसंदीदा चीज़ से पैदा किया। यानी तीनते जन्नत से और जिन को दुश्मन रखता था उनको उस चीज़ से पैदा किया जो उसके नज़दीक बुरी थी। यानी तीनते नार से, फिर भेजा उनको साये में, मैंने कहा यह क्या चीज़ है फ़रमाया क्या तुम ने धूप में अपना साया नहीं देखा

कि कुछ है भी और कुछ नहीं भी, यानी वह रूह बिला बदन के थी। फिर उनमें नबियों को मब्ऊस किया, उन्होंने लोगों को इक़रार बिल्लाह की तरफ़ दावत दी, बाज़ ने इक़रार लिया और बाज़ ने इन्कार किया फिर उनको बुलाया हमारी विलायत की तरफ़, बाज़ ने जो मुहब्बत वाले थे इक़रार कर लिया और जो दुश्मन थे उन्हों ने इंकार कर दिया और ख़ुदा फ़रमाता है जिन्हों ने पहले तकज़ीब की है चाहे कि अब ईमान लाएं इमाम ने फ़रमाया तकज़ीब वहीं हुई थी।



एक सौ बत्तीसवां बाब

सब से अव्वल इक़रारे रुबूबियत करने वाले रसूले ख़ुदा थे

1. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कुरैश के कुछ लोगों ने हज़रत रसूले ख़ुदा स० से कहा। किस वजह से आप स० ने अंबिया पर सबक़त हासिल की। हालांकि आप स० सब से आख़िरी नबी हैं फ़रमाया मैं सब से पहले अपने रब पर ईमान लाया और जब ख़ुदा ने नबियों से मीसाक़ लिया और उनके नफ़सों पर उनको गवाह बनाया और कहा क्या तुम्हारा रब नहीं पस सब से पहले बला कहने वाला मैं था। मैंने उन सब अंबिया पर इक़रार बिल्लाह में सबक़त की।

2. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ मैं अपने बाज़ असहाब को देखता हूँ कि उनको सुबकी, तुन्दी और सफ़ाहत आरिज़

होती है उनके किरदार से मुझे रंज होता है और जब अपने मुखालिफ़ को देखता हूँ तो उसको ख़ूश राह पाता हूं आप ने फ़रमाया ख़ूश राह न कहो अच्छी राह तो हमारा ही रास्ता है बल्कि कहो अच्छी सूरत, ख़ुदा फ़रमाता है उनके चेहरों पर सजदों के असर का हुस्न है, मैंने इस में हुस्ने सीमा देखा और वक़ार पाया। पस मैं यह देख कर रंजीदा हुआ कि मेरे असहाब में तो ज़िल्लत और सुबकी है और हमारे दुश्मनों में सकीना और वक़ार है फ़रमाया अपने असहाब की इस हालत से रंजीदा न हो। जब अल्लाह ने आदम को पैदा करना चाहा तो दो क़िस्म की मिट्टी पैदा की और उससे दो गिरोह बनाये दाहिनी तरफ़ वालों से कहा कि तुम चलती हुई चूंटियों की एक मख़लूक़ बन जाओ और बायें तरफ़ वालों से कहा। मेरे हुक्म से तुम एक मख़लूक़ बन जाओ जो चलते फिरते मोर्चों की तरह हो। वह हो गये। फिर उनके इम्तेहान के लिये आग भड़काई और फ़रमाया मेरे हुक्म से तुम इस में दाख़िल हो जाओ। पस सबसे पहले इस में मुहम्मद स0 दाख़िल हुए फिर आप स0 के पीछे ऊलुल अज़्म रसूल और उनके औसिया और ताबिईन दाख़िल हुए फिर असहाबे शेमाल से फ़रमाया मेरे हुक्म से तुम भी दाख़िल हो उन्हों ने कहा ऐ हमारे पालने वाले क्या तू ने हम को जलाने के लिए पैदा किया है उन्हों ने नाफ़रमानी की, ख़ुदा ने असहाबे यमीन से कहा, मेरे हुक्म से आग से बाहर आओ आग ने उन्हें कोई तकलीफ़ न पहुंचाई और न कोई आग से जलने का असर था जब असहाबे शेमाल ने उन्हें सहीह व सालिम देखा तो कहने लगे परवरदिगार! हम अपने साथियों को देखते हैं कि वह सहीह व सालिम हैं पस हमारी नाफ़रमानी से दर गुज़र करके दोबारा फिर दाख़िले का हुक्म दे। फ़रमाया अच्छा मैंने

दर गुज़र की। अब दाख़िल हो जाओ। जब वह आग के क़रीब गये तो लपट लगी और लौट पड़े और कहने लगे। परवरदिगार! हम जलने पर सब्र नहीं कर सकते। पस दूसरी बार नाफ़रमानी की, ख़ुदा ने तीसरी बार फिर दाख़िले का हुक्म दिया। सब ने इताअत की और आग में से निकल आये। तब ख़ुदा ने उनसे कहा तुम मिट्टी बन जाओ आदम को उसी मिट्टी से पैदा किया।

इमाम ने फ़रमाया जो असहाबे यमीन हैं वह असहाबे शेमाल से न होंगे। और बरअक्स और तुम ने अपने असहाब में जो कमज़ोरी देखी वह इस वजह से है कि असहाबे शेमाल से उनकी मुजालिसत व मुख़ालिफ़त रही है और अपने मुख़ालिफ़ों में जो ख़ुशनुमाइ और वक़ार देखते हो वह नतीजा है असहाबे यमीन से मिलने जुलने का।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह से किसी ने पूछा आप स0 को औलादे आदम पर किस वजह से सबक़त हुई फ़रमाया जब ख़ुदा ने नबियों से मीसाक़ लिया और उनके नफ़्सों पर उनको गवाह बना कर कहा। मैं तुम्हारा रब नहीं, सब ने कहा हां, मैं उन में सब से पहले जवाब देने वाला था।



एक सौ तैंतिसवां बाब

आलमे ज़र में कैसे जवाब दिया

1. अबू बसीर ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा लोगों ने कैसे जवाब दिया जबकि वह चूटियों के जैसे थे फ़रमाया ख़ुदा ने उनमें ऐसी क़ूवत पैदा करदी कि

जब उनसे सवाल किया गया तो उन्होंने मीसाक़ के बारे में जवाब दिया



एक सौ चौंतीसवां बाब

फ़ितरते ख़ल्क़ तौहीद पर है

1. हेशाम बिन सालिम ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा क्या है वह फ़ितरत जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया? फ़रमाया वह तौहीद है।

2. अब्दुल्लाह बिन सिनान ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा कि ख़ुदा के इस क़ौल का मतलब क्या है अल्लाह की फ़ितरत वह है जिस पर लोगों को पैदा किया है। फ़रमाया वह इस्लाम है जिस पर लोगों को पैदा किया जब्कि उसने तौहीद पर मीसाक़ लेने के लिये फ़रमाया। क्या मैं तुम्हारा रब नहीं। इस ख़िताब में मोमिन व काफ़िर सब शरीक थे।

3. ज़ुरारह ने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से रिवायत की है कि मैंने हज़रत से इस आयत का मतलब पूछा ख़ालिस अल्लाह के लिये बग़ैर उसकी ज़ात में किसी को शरीक किये और ख़ुलूस हो इस फ़ितरत से जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है और ख़ुदा की बनाई हुई चीज़ों में कोई तबदीली नहीं। इमाम ने फ़रमाया। ख़ुदा ने लोगों को मअ़रिफ़त पर पैदा किया है जब आदम अलैहिस्सलाम की पुश्त से उनकी औलाद को निकाला और उनके नफ़्सों पर उनको गवाह क़रार दे कर कहा। क्या मैं तुम्हारा रब नही हूं? उन्हों ने कहा हां। हज़रत ने फ़रमाया ख़ुदा ने रोज़े क़ियामत

तक आदम अलैहिस्सलाम की जिस क़दर औलाद होने वाली थी उसकी पुश्तों से निकाला। वह इस तरह निकले जैसे छोटी छोटी चूंटियां, खुदा ने उनको अपनी मअ़रिफ़त कराई और अपने आसारे कुदरत को उन्हें दिखाया। अगर ऐसा न होता तो ख़ुदा की मअ़रिफ़त इंसान को हासिल न होती। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया हर बच्चा फ़ितरत यानी मअ़रिफ़त पर पैदा होता है यह जानते हुए कि ख़ुदा–ए–अज़्ज़् व जल्ल् इसका ख़ालिक है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है ऐ रसूल! अगर तुम उनसे पूछो कि आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला कौन है? तो वह कहेंगे अल्लाह।

4. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से ज़रारह ने पूछा कौले बारीए तआला के मुतअल्लिक़ अल्लाह की फ़ितरत वही है जिस पर उन लोगों को पैदा किया। इमाम ने फ़रमाया। अल्लाह तआला ने उनको तौहीद पर पैदा किया है।

5. खुदा ने लोगों को अपनी फ़ितरत पर पैदा किया है और उनकी फ़ितरत तौहीद पर है।



एक सौ पैंतीसवां बाब

मोमिन का सुल्बे काफ़िर से पैदा होना

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से ज़रारह ने पूछा मोमिन का नुत्फ़ा सुल्बे मुशरिक में होता है तो शर्रे शिर्क से उसे कोई नुक़सान न पहुंचेगा और जब नुत्फ़ा रहमे मुशरिका में आयेगा। तब भी शर्रे शिर्क से कोई नुक़सान न होगा और जब पैदा होगा तो भी यहां तक कि क़लमे कुदरत उसके मुतअल्लिक़ चले।

2. अली बिन यक़्तीन (उर्फ़ अबुल हसन) से रवायत है कि मैंने इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से कहा मैं ख़ौफ़ ज़दा हूँ इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की उस तक़रीर से जो उन्होंने मेरे बाप यक़्तीन से (जो इख़वाने बनी अब्बास से थे) और उस वक़्त तक कोई बच्चा उनके पैदा न हुआ था यानी मैं सुल्बे पदर में था। हज़रत ने फ़रमाया ए अबुल हसन जैसा तुम्हारा ख़याल है ऐसा नहीं मोमिन सुल्बे काफ़िर में बमंज़िलाए एक संगरेज़ा के है जो किसी ईंट के अंदर हो बारिश आकर परागंदा कर देती है ईंट को और उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचता।



एक सौ छत्तीसवां बाब

कैफ़ियते ख़ल्के मोमिन

1. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जन्नत में एक दरख़्त जिस का नाम मुज़्न है जब ख़ुदा किसी मोमिन को पैदा करना चाहता है तो उससे एक क़तरा टपका देता है पस उससे जन्नत में जो नबातात या फल पैदा होता है उसको आलमे अरवाह में जो कोई मोमिन या काफ़िर खाता है उसके सुल्ब से खुदा मोमिन को इस दुनिया में पैदा करता है।



एक सौ सैंतीसवां बाब

खुदा का रंग

1. आयत "अल्लाह का रंग और अल्लाह से बेहतर रंगने वाला कौन है" के मुतअल्लिक़ इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इससे मुराद इस्लाम है और आयत

उस ने रस्सी को मज़बूती से पकड़ लिया। फ़रमाया वह रस्सी ईमान है अल्लाह की तौहीद पर।

तौज़ीह

जिस पानी से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को नहलाया गया था उसको शीशों में रखा गया उसके बाद एक एक क़तरे से हज़ारों ज़र्फ भर लिये गये वह सिलसिला आज तक चला आता है ईसाई अपने बच्चों को इसी पानी से नहलाते हैं और इसको इस्तेबाग या पबतस्मह कहते हैं और मतलब यह होता है कि अब यह मज़हबी रंग में रंगा गया। अहदे रसूल के ईसाई मुसलमानों को तअ़ना देते थे कि तुम चूंकि रंगे नहीं गये लेहाज़ा तुम पाक नहीं, मुसलमानों से इसका जवाब नहीं बन पड़ता था। खुदा ने फ़रमाया उन लोगों से कह दो कि अल्लाह से बेहतर रंगने वाला कौन है उस ने हम को ईमान से रंगा है। ज़ाहिर पानी से रंगना दलीले पाकीज़गी–ए–नफ़्स नहीं पाकीज़गी–ए–नफ़्स का तअल्लुक़ दर हक़ीक़त ईमान से है।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने आयत सिबग़तुल्लाह के मुतअल्लिक फ़रमाया अल्लाह का रंगना इस्लाम है।

3. मुहम्मद बिन असलम ने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम या इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से रवायत की है कि सिबग़तुल्लाह में सिबग़ा से मुराद इस्लाम है और फ़रमाया जो शैतान से अलग रहा और अल्लाह पर ईमान लाया तो उसने मज़बूत रस्सी को पकड़ लिया।

फ़रमाया इस रस्सी से मुराद ईमान है।



एक सौ अड़तीसवां बाब

सुकूने क़ल्ब ईमान है

1. रावी ने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुतअल्लिक़ पूछा। ख़ुदा ने कुलूबे मोमिनीन पर सकीना नाज़िल किया फ़रमाया इससे मुराद ईमान है और दूसरी आयत "ख़ुदा ने उनकी मदद की, अपनी रूह से" के मुतअल्लिक़ फ़रमाया इससे मुराद ईमान है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने यह वह हैं जिनके कुलूब में अल्लाह ने ईमान को लिख दिया है रावी ने कहा कि क्या उनके कुलूब में अमल भी डाला? फ़रमाया नहीं।

तौज़ीह

अल्लाह तआला ने रूह और सकीना को ईमान कहा है जिससे मालूम हुआ ईमान का तअल्लुक़ दो चीज़ों से है इल्म और अमल से, इल्म मअ़रिफ़ते बारीए तआ़ला यौमे अलस्त दे दिया गया था अब रहा इमान बिलअमल वह इंसान से मुतअल्लिक़ है फ़ाएले मुख़्तार है जो चाहे करे।

3. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने सकीना से मुराद ईमान है।

4. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया इस

आयत में सकीना से मुराद ईमान है।

5. फ़रमाया हज़रत इमाम ज़ाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि इन आयात में सकीना, रूह और कलेमा और तक़्वा से मुराद ईमान है।

एक सौ उन्तालीसवां बाब

इख़्लास

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हनीफ़म मुस्लिमन के मुतअल्लिक़ कि इस से मुराद है वह ख़ालिस इबादत जिस में बुतों की इबादत का शाएबा भी न हो।

2. फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा ने, लोगों अगर ख़ालिस दिल से इबादत है तो अल्लाह की है वरना शैतान की, हक़ व बातिल, हिदायत व ज़लालत, नेकी और गुमराही, दुनिया व दीन, नेकी व बदी है उन में जो नेकियां हैं उनका तअल्लुक खुदा से है और जो बातें बद हैं उनका शैतान से है।

3. इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम फरमाते थे बशारत हो उसके लिये जो खालिस दिल से अल्लाह की इबादत और दुआ करे। और उसकी आंखें जो देखती हैं उनमें से कोई चीज़ ख़ुदा की तरफ़ से उसकी तवज्जुह न हटा सके और जो कानों से सुने वह यादे ख़ुदा को भुला न दे और जो ग़ैर को दे उससे तंग दिल न हो।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा फ़रमाता है ताकि तुम को आज़माए कि अज़ रूए अमल

तुम में कौन अच्छा है। फ़रमाया यहां मुराद कसरते अमल नहीं बल्कि दुरूस्ती–ए–अमल है और दुरूस्ती–ए–अमल खुदा का ख़ौफ और सिदक़े नीयत है और नेकी है फिर फ़रमाया अमल पर खुलूस से बाक़ी रहना सख़्त तर है अमल से और अमले ख़ालिस की यह शान है कि तुम यह न चाहो कि इस पर तुम्हारी कोई तारीफ़ करे सिवाए अल्लाह के और नीयत अफ़ज़ल है अमल से। आगाह हो कि नीयत ही से अमल है फिर यह आयत पढ़ी हर शख़्स अपनी शाकिला यानी नीयत पर अमल करता है।

5. रावी ने इमाम अलैहिस्सलाम से इस आयत का मतलब पूछा जिसको अल्लाह तआला ने क़ल्बे सलीम दिया वह है जिसमें अल्लाह के सिवा दूसरा न हो यह भी फ़रमाया जिस दिल के अन्दर शिर्क या शक हो वह साक़ितुल एतेबार है, ज़ाहिद फ़िद्दुनिया का मतलब यह है कि लोगों के दिल आख़िरत के लिये ख़ाली हो जायें।

6. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिस ने चालीस दिन अपने ईमान बिल्लाह में खुलूस दिखाया या किसी बन्दे ने खुदा का ज़िक्रे जमील चालीस रोज़ किया तो खुदा उसे दुनिया से मुतनफ़्फ़िर कर देगा और उसकी बीमारी हिर्से दुनिया और उसका इलाज उसके पेशे नज़र कर देगा। और उसके क़ल्ब में हिकमत को जगह देगा और पुर हिकमत बातें उसकी ज़बान से जारी करायेगा फिर यह आयत तिलावत की जिन लोगों ने बछड़े की पूजा की वह बहुत जल्द खुदा के ग़ज़ब को पा लेंगे और दुनिया की ज़िन्दगी में उनको ज़िल्लत होगी और हम इफ़तेराक़ करने वालों को ऐसा बदला दिया करते हैं ऐ रसूल स0! तुम

बिदअ़त करने वालों को ज़लील पाओगे यह लोग अल्लाह, उसके रसूल स0 और उनके अहले बैत पर इफ़्तिरा करने वाले हैं यह लोग ज़लील हैं।



एक सौ चालीसवां बाब

शराएअ़

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला ने अता कीं मुहम्मद स0 को नूह अ0 व इब्राहीम अ0, मूसा अ0, ईसा अ0 की शरीअतें, तौहीद व इख़्लास, बुतों से दूरी, पुर खुलूस फ़ितरत, सख़ावत पसंदी और रहबानियत से दूर रखा और जंगलों में बे ज़रियए मआ़श घूमने से (कि इसमें जानों के तलफ़ होने का अंदेशा रहता है) और हलाल किया उनके लिए पाकीज़ा चीज़ों को और हराम किया ख़बीस चीज़ों को और आंहज़रंत स0 ने लोगों के बोझ को हल्का किया और उस तौक़ को जो लोगों की गदर्नों में पड़ा था निकाला फिर उन पर फ़र्ज़ किया नमाज़ व ज़कात व रोज़ा व हज और अम्र बिल मअ़रूफ़ व नही अनिल मुंकर को और आगाह किया हलाल व हराम व मीरास व हुदूद व फ़राइज़ व जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह से और ज़्यादा किया इस पर वज़ू को और फ़ज़ीलत दी सूरह फ़ातिहा से और ख़त्मे सूरते बक़र से और सूरते मुहम्मद स0 से आख़िरे कुरआन तक और हलाल किया माले ग़नीमत और माले फ़ैय को और नुसरत की उनका रोअ़ब क़ायम करने में कुफ़्फ़ार पर और ज़मीन को उनके लिये मस्जिद बनाया और उसको ताहिर क़रार दिया। और रसूल बनाया उन सब पर।

ख्वाह सफ़ेद हों या काले और जिन् व इंस् पर और जिज़िया लेने मुश्रिकों को कै़द करने और फ़िदया लेने की इजाज़त दी गई और उसको वह तकलीफ़ दी गई जो किसी नबी को नहीं दी गई जिस के लिये बे न्याम की तलवार नाज़िल की गई और कहा गया फ़ी सबीलिल्लाह कि़ताल करो और अपने नफ़्स के सिवा (अली अलैहिस्सलाम) और किसी को तकलीफ़ न दो (जैसा कि ग़ज़वए उहद में अकेले अली अलैहिस्सलाम मुहाफिज़े रसूल स0 भी रहे और जंग भी करते रहे।

2. समाआ बिन मेहरान से मरवी है कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुतअल्लिक़ पूछा। ऐ रसूल ऊलुल अज़्म रसूलों की तरह सब्र करो। फ़रमाया ऊलुल अज़्म नूह अलैहिस्सलाम, इब्राहीम अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम व ईसा अलैहिस्सलाम और मुहम्मद सल्लल्लाहुअलैहिवआलेहीवसल्लम हैं मैंने कहा यह हज़रात ऊलुल अज़्म क्यों कहलाते हैं फ़रमाया इस लिए कि ख़ुदा ने नूह को मबऊस फ़रमाया किताब व शरीअ़त के साथ। उनके बाद जितने अंबिया आये, उन्हों ने किताबे नूह अलैहिस्सलाम, शरीअते नूह अलैहिस्सलाम और तरीक–ए–नूह अलैहिस्सलाम पर अमल किया। यहां तक कि इब्राहीम पर सहीफे नाज़िल हुए। उन्हों ने किताबे नूह अलैहिस्सलाम को अज़ रूए अज़ीमत तर्क किया न कि नबुव्वते नूह अलैहिस्सलाम से इन्कार के तौर पर। उसके बाद जितने अंबिया इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बाद आये उन्हों ने मुताबिके शरीअ़ते इब्राहीमी और सहीफों के अहकाम के मुताबिक अमल किया। यहां तक कि मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरैत नाज़िल हुई शरीअ़त व सुन्नत मुकर्रर हुई और उन्हों ने पूरे अज़्म से सुहुफे इब्राहीमी

को तर्क किया। मूसा के बाद आने वाला हर नबी तौरैत और शरीअ़ते मूसवी का मानने वाला रहा। यहां तक कि मसीह पर इंजील नाज़िल हुई और उन्हों ने शरीअ़ते मूसवी को तक्र किया और उनकी शरीअ़त और सुन्नते नबी जो अंबिया (मुराद औसियाए ईसा अलैहिस्सलाम) उनके बाद आए उन्हों ने शरीअ़ते ईसवी पर अमल किया। उनके बाद हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स0 कुरआन लें कर आये और उनकी शरीअ़त व सुन्नते नबी स0 पस हलाले मुहम्मदी क़ियामत तक के लिए हलाल है और हरामे मुहम्मदी क़ियामत तक के लिए हराम है पस यह हैं ऊलुल अज़्म रसूल स0।



एक सौ इकतालीसवां बाब

दआ़इमे इस्लाम

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर रखी गई है नमाज़, ज़कात, सौम, हज और विलायत और इस्लाम इस शान से किसी चीज़ के साथ नहीं पुकारा गया जितना विलायत के साथ।

2. रावी कहता है मैंने अबू अब्दिल्लाह से कहा मुझे हुदूद व इमान से आगाह कीजिये फ़रमाया गवाही देना इसकी कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद स0 अल्लाह के रसूल हैं और हज़रत जो कुछ ख़ुदा की तरफ़ से लाए उसका इक़रार और पंजगाना नमाज़ और ज़कात देना और माहे रमज़ान को रोज़ा और बैतुल्लाह का हज़ और हमारे वली की विलायत का इक़रार और हमारे दुश्मनों से

अदावत रखना और सादिक़ीन के साथ रहना।

3. फ़रमाया सादिक़े आले मुहम्मद ने इस्लाम के बुनियादी पत्थर तीन हैं नमाज़, ज़कात और विलायत। इन में से कोई बग़ैर अपने दो के मुकम्मल नहीं।

4. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है नमाज़ ज़कात, सौम, हज और विलायत और इस्लाम की सबसे नुमायां चीज़ है विलायत, लोगों ने चार को लिया और विलायत को छोड़ दिया।

5. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाकर अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है नमाज़, ज़कात, हज, रोज़ा और विलायत। ज़ुरारा ने पूंछा इन में अफ़ज़ल कौन है? फ़रमाया विलायत, इस लिए कि वह उन सब की कुंजी है और वली उन सब चीज़ों की तरफ़ हिदायत करने वाला है। मैंने कहा इसके बाद कौन अफ़ज़ल है? फ़रमाया नमाज़, रसूलुल्लाह ने फ़रमाया है कि नमाज़ तुम्हारे दीन का सुतून है। मैंने कहा इसके बाद? फ़रमाया ज़कात, ख़ुदा ने नमाज़ के बाद इसका ज़िक्र किया है। रसूलुल्लाह ने फ़रमाया ज़कात गुनाहों को दूर करती है, मैंने कहा इसके बाद कौन अफ़ज़ल है, फ़रमाया हज ख़ुदा के लिए उन लोगों पर ख़ाना–ए– कअ़बा का हज फ़र्ज़ किया गया है जो वहां पहुंचने की कुदरत रखते हैं।

और जिस ने इन्कार किया तो अल्लाह दोनो आलमों से बे परवाह है और रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया एक हज्जे मक़बूल बेहतर है बीस नाफ़िला नमाज़ों से और जो ख़ाना–ए–कअ़बा का तवाफ़ करे और सात सात बार घूमे और दो रकअ़त अच्छे तरीक़े से बजा लाए तो अल्लाह उसके

गुनाह बख़्श देगा और आंहज़रत स0 ने यौमे अरफ़ा और यौमे मशअ़र ऐसा फ़रमाया है। मैंने कहा हज के बाद कौन अफ़्ज़ल है फ़रमाया रोज़ा, रसूलुल्लाह ने फ़रमाया रोज़ा सिपर है आतिशे दोज़ख़ से। फिर फ़रमाया अफ़्ज़ल अशया वह है कि जब तुम में से कोई फ़ौत हो जाये तो इसके सिवा चारा–ए–कार न हो कि उसको बजा लाया जाये और बिऐनिहि अदा किया जाये। नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज और विलायत ऐसी इबादतें हैं कि कोई शैय उनकी क़ायम मुक़ाम नहीं होती और बग़ैर अदा किये चारा–ए–कार नहीं लेकिन रोज़ा अगर फ़ौत हो जाये या क़स्र हो या माहे रमज़ान में संफ़र हो तो जो रोज़े क़ज़ा हो जायें तो दूसरे वक़्त उनको अदा किया जा सकता है और इस गुनाह का बदला सदक़ा से हो जायेगा। और क़ज़ा बजा लाना ज़रूरी न होगा। लेकिन इन चार के लिये ऐसा नहीं है। फिर फ़रमाया अम्रे इलाही की चौटी और बुलंदी उसकी कुंजी और बाइसे रिज़ाऐ रहमान ताअ़ते इमाम है इसकी मअ़रिफ़त के बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है जिस ने रसूल की इताअ़त की। उसने अल्लाह की अताअ़त की और जिसने रूगर्दानी की (तो करे) ऐ रसूल! हमने तुम को उन पर निगरां बना कर नहीं भेजा। आगाह हो अगर कोई शख़्स क़ाएमुल्लैल और साएमुन्नहार हो और अपना तमाम माल राहे खुदा में दे दे और तमाम उम्र हज करे। लेकिन विलायते वलीयुल्लाह को न पहचान्ता हो और उसके आमाल उसकी रहनुमाई में न हों तो अल्लाह के नज़दीक न इसका कोई सवाब है और न वह अहले ईमान से है फ़िर फ़रमाया जो लोग उनमें नेकूकार हैं अल्लाह अपनी रहमत से उनको जन्नत में दाख़िल करेगा।

6. रावी ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा मुझे इस्लाम के वह सुतून बताईये जिसमें किसी चीज़ की कमी की गुंजाइश नहीं और अगर उन में से कोई चीज़ कम हो जाये तो उसका दीन फ़ासिद हो जाए और जिसको उसकी मअ़रिफ़त हो और अमल करे तो दीन दुरूस्त रहे और अमल उसका मक़बूल हो और तंग न हो किसी अम्र में किसी शैय की जिहालत की वजह से।

हज़रत ने फ़रमाया गवाही देना इसकी कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और ईमान इस पर कि मुहम्मद स0 अल्लाह के रसूल हैं और इक़रार करना उन तमाम बातों का जो आँहज़रत सा0 ख़ुदा की तरफ़ से लाये और अमवाल में ज़कात को हक़ समझना और विलायते आले मुहम्मद स0 को जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है इक़रार करना। मैंने कहा विलायत के लिए कोइ ऐसी क़वी दलील है जिससे तमस्सुक किया जाए। फ़रमाया हां अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअ़त करो और इताअ़त करो रसूल स0 की और उन लोगों की जो तुम में से ऊलिल अम्र हैं और रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया है जो शख़्स मर गया और उसने अपने इमाम को न पहचाना वह कुफ़्र की मौत मरा और वह ऊलिल अम्र रसूल स0 और अली अलैहिस्सलाम थे। दूसरे कहते हैं मुआ़विया था और अली अलैहिस्सलाम के बाद हसन अलैहिस्सलाम और फिर हुसैन अलैहिस्सलाम और मुख़ालिफ़ों के नज़दीक यज़ीद बिन मुआ़विया। दरआंहालेकि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम मौजूद थे, यह दोनों बराबर नहीं हो सकते और न उनके बाप बराबर थे यह फ़रमाकर आप साकित हुए फिर फ़रमाया और कुछ बयान करूं। ह–कमे

अअ़वर ने कहा ज़रूर। फ़रमाया हुसैन अलैहिस्सलाम के बाद अली इब्नुल–हुसैन वली–ए–अम्र थे उनके बाद अबू जाफ़र मुहम्मद इब्ने अली। हज़रत से पहले शिया हज के मनासिक और हलाल व हराम को नहीं जानते थे अबू जाफ़र ने यह दरवाज़े उन पर खोले और हज के मनासिक तालीम किये और हलाल व हराम को बताया यहां तक कि तहसीले इल्मे दीन में लोग उनकी तरफ़ मुहताज हो गये और वह किसी की तरफ़ मुहताज न रहे और यह अम्र यूं ही जारी रहा। ज़मीन इमाम से ख़ाली नही रहती। जो मर गया और उसने अपने ज़माने के इमाम को न पहचाना तो वह कुफ़्र की मौत मरा और जब वह तुम्हारी रूह खींच कर यहां तक (इशारा किया अपने हलक़ की तरफ़) आजायेगी उस वक़्त तुम शीअ़त के ज़्यादा मुहताज होगे उस वक़्त दुनयवी तअल्लुक़ात का सिलसिला मुंकतअ़ हो जायेगा और तुम कहोगे मैं अम्रे हसन (अच्छे मुआ़मेले) से मुतअल्लिक़ रहा।

7. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है विलायत, नमाज़, ज़कात, रमज़ान के रोज़े और हज।

8. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मरवी है कि इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, और विलायत और किसी का उन में से इस तरह एलान नहीं किया गया जिस तरह विलायत का एलान रोज़े ग़दीर किया गया था।

9. रावी ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा मुझे बताइये कि इस्लामी सुतूनों की बुनियाद किस चीज़ पर है ताकि उनको अख़्ज़ करके मेरा अमल पाक हो जाये और

उसके बाद जिहालत मुझे नुक़सान ने दे। फ़रमाया गवाही देना उसकी कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद स0 अल्लाह से रसूल हैं और उन तमाम बातों का इक़रार करना जो आंहज़रत स0 ख़ुदा की तरफ़ से लाये और अपने माल में ज़कात को हक़ समझना और विलायत जिसका ख़ुदा ने हुक्म दिया है विलायते आले मुहम्मद हैं। और रसूलुल्लाह ने फ़रमाया जो शख़्स मर गया और उस ने अपने इमाम को न पहचाना तो वह कुफ़्र की मौत मरा और ख़ुदा ने फ़रमाया अल्लाह की इताअ़त करो, रसूल की और ऊलिल अम्र की, जो तुम में से हों वह अली हैं फिर हसन अलैहिस्सलाम फिर हुसैन अलैहिस्सलाम फिर अली इब्ने हुसैन फिर मुहम्मद इब्ने अली, फिर इसी तरह यह अम्र जारी रहेगा। रूऐ ज़मीन की इसलाह नहीं हो सकती मगर इमाम से जो शख़्स मर गया मगर इमाम को न पहचाना वह कुफ़्र की मौत मरा। तुम में से हर एक मअ़रिफ़ते इमाम का उस वक़्त ज़्यादा मुहताज होगा। जब उसका दम यहां तक पहुंचेगा (वक़्ते मिर्ग) और इशारा किया अपने सीने की तरफ़ और कहेगा इस वक़्त मअ़लूम हुआ कि मैं अच्छे अक़ीदे पर था।

10. अबुल जारूद ने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कहा या इब्ने रसूलुल्लाह आप जानते हैं जो मुहब्बत मुझे आप से है? और आपके दुश्मनों से मेरा क़तअ़ तअल्लुक़ है और खुसूसियत के साथ आप से मुहब्बत है। फ़रमाया हां! मैंने कहा, मैं एक मसअला दरयाफ़्त करता हूँ। मुझे जवाब दीजिये। मैं अंधा हूँ चलने की ताक़त कम रखता हूँ। इस लिए आप की ज़्यारत से मअ़ज़ूर हों, फ़रमाया बयान करो क्या पूछना चाहते हो। मैंने कहा मुझे अपने उस दीन के मुतअल्लिक़ बताईये जिस पर आप और आपके अहलेबैत हैं ताकि अल्लाह

मुझे वही दीन अता करे अगर तू अपने कलाम को मुख़्तसर कर दे तो मैं तुझ से अज़मते मसअला को बयान करूं वल्लाह मैं तुझे बताऊंगा अपना दीन और अपने आबा का दीन जिस को ख़ुदा ने क़ाएम किया है उस गवाही पर कि ख़ुदा के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद स0 उसके रसूल हैं और जो कुछ वह ख़ुदा की तरफ़ से लाये हैं उस पर ईमान लाना और हमारे वली की विलायत पर ईमान लाना और हमारे दुश्मनों से इज़हारे बराअत करना और हुक्म को तसलीम करना और हमारे क़ाएम का इन्तेज़ार करना और अम्रे नेक की कोशिश करना और परहेज़गारी अख़्तियार करना।

11. अबू बसीर से मरवी है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से किसी ने कहा मुझे दीन की वह बातें बताइये जो अल्लाह ने अपने बन्दों पर फर्ज़ की हैं जिनसे जाहिल न रहना चाहिये और उनके बग़ैर कोई अमल मक़बूल न हो। फ़रमाया फिर इआ़दा कर उसने फिर बयान किया। फ़रमाया वह गवाही देना है इस बात की कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद स0 उसके रसूल हैं और नमाज़ को क़ाएम करना और ज़कात देना और हज करना जो वहां तक पहुंच सके और माहे रमज़ान के रोज़े उसके बाद आप कुछ देर ख़ामोश रहे फिर दो बारा फ़रमाया विलायत। फिर फ़रमाया, यह वह है जिसको अल्लाह ने अपने बन्दों पर फ़र्ज़ किया है रोज़े क़ियामत ख़ुदा बन्दों से यह नहीं पूछेगा कि जो कुछ मैंने फ़र्ज़ किया था उस पर तुम ने क्या ज़्यादती की लेकिन जिस ने ज़्यादा अमल किया होगा उसको ज़्यादा सवाब मिलेगा और रसूल ने कुछ अच्छी

सुन्नतें करार दी हैं उस पर अमल करना चाहिये।

12. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने खुदा ने पांच चीज़ें इस मख़लूक़ पर फ़र्ज़ की हैं उन में से चार में कमी की इजाज़त दी है सिवाये एक के।

तौज़ीह

नमाज़, रोज़ा और ज़कात ऐसे फ़राएज़ हैं कि वक़्ते ज़रूरत उनको बजा न लाने की इजाज़त है। मस्लन हैज़ व निफास के ज़माने में औरत को नमाज़ मुआफ़ है सफ़र और बीमारी में रोज़ा न रखने का हुक्म है माल अगर निसाब के मुताबिक़ नहीं तो उस पर ज़कात नहीं, अगर हज के लिये बैतुल्लाह तक जाना मुमकिन न हो तो फ़रीज़ए हज साक़ित है यानी फ़रीज़ा–ए–विलायत यानी अइम्मा–ए–इस्ना अशर की इमामत का इक़रार और उनसे मुहब्बत रखना ऐसा फ़रीज़ा है जिसके लिए किसी हालत में मुआफ़ी नहीं।

13. एक शख़्स इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम के पास आया उसके पास एंक तहरीर थी। हज़रत ने उसे देख कर फ़रमाया, यह सहीफ़ा–ए–मुख़ासिम है सवाल करता है उस दीन के मुतअल्लिक़ जिस में अमल मक़बूल हो। रावी ने कहा मैं यही सुनना चाहता हूँ फ़रमाया गवाही देना इस अम्र की कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद स0 उसके अब्द व रसूल हैं और इक़रार करना उन सब बातों का जो रसूले खुदा की तरफ़ से लाए और विलायत हम अहलेबैत

की और बराअत हमारे दुश्मन से और कुबूल करना हमारे अम्र का और परहेज़गारी और तवाज़ुअ़ और हमारे क़ाएम का इंतेज़ार, हमारे लिये दौलत व हुकूमत है जब चाहेगा उसको अल्लाह ले आयेगा।

14. अम्र बिन हरीस से मरवी है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जबकि आप अपने भाई अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद के घर में थे। मैंने कहा आप इस मकान में क्यों तशरीफ़ लाये फ़रमाया झगड़ों और क़ज़ियों से बचने के लिए। मैंने कहा मैं दीन के मुतअल्लिक अपने अक़ाएद बयान करना चाहता हों। फ़रमाया ज़रूर। मैंने कहा ख़ुदा का दीन है गवाही देना इसकी कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद स0 उसके अब्द व रसूल हैं और क़ियामत से शक नहीं और अल्लाह मुर्दों को क़बरों से निकालेगा और नमाज़ का क़ाएम करना और ज़कात का देना और माहे रमज़ान के रोज़े रखना और हज करना और रसूलुल्लाह स0 के बाद विलायते अमीरूल मोमिनीन का इक़रार और उनके बाद हज़रत हसन अलैहिस्सलाम व हुसैन अलैहिस्सलाम की विलायत का इक़रार फिर अली इब्नुल–हुसैन और मुहम्मद इब्ने अली की विलायत का इक़रार और उनके बाद आप सब पर दरूद हो और यह कि आप लोग मेरे इमाम है इसी पर मेरी ज़िन्दगी है इसी पर मेरी मौत है और यही मेरा दीन है। फ़रमाया ऐ अम्र यही तो अल्लाह का दीन है और मेरे आबा का दीन है ज़ाहिर वा बातिन दोनों हालतों में। पस अल्लाह से डरो और अपनी ज़बान अम्रे ख़ैर के सिवा बन्द रखो। यह मत कहो। मैंने अपने नफ़्स को हिदायत की। बल्कि कहो अल्लाह ने मुझे हिदायत की और ख़ुदा की नेअमत का शुक्र अदा करो और उन लोगों

में से न बनो जिनके मुंह पर भी लोग ताना दें और पीछे भी और लोगां की ज़्यादा मलामत करके उनको अपने शानों पर सवार न कर अगर तू ने ऐसा किया तो लोग तेरे दोनों शानों के दरमियान का हिस्सा शिगाफ़्ता कर देंगे।

15. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया क्या मैं बताऊँ कि इस्लाम की अस्ल क्या है फ़रअ़ क्या है और उसकी बुलंदी में सबसे ऊंचा नुक़्ता क्या है। मैंने दिल में कहा मैं आप पर फ़िदा हूँ ज़रूर बताइये। फ़रमाया उसकी अस्ल नमाज़ है उसकी शाख़ ज़कात है और बुलन्द चोटी जिहाद है फिर फ़रमाया क्या मैं बताऊं अबवाबे ख़ैर क्या हैं? मैंने कहा हां। फ़रमाया रोज़ा सिपर है दोज़ख़ की, सदक़ा गुनाहों को दूर करता है और ज़िक्रे खुदा के लिए बन्दे का रात को इबादत करना। यह आयत पढ़ी। दूर रखता है अपने पहलू बिस्तर से।



एक सौ बयालीसवां बाब

इस्लाम लाने के बाद क़त्ल से बच जाता है और सवाब मौक़ूफ़ है ईमान पर

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इस्लाम लाने के बाद काफ़िर की जान महफ़ूज़ हो जाती है उसकी रखी हुई अमानत को वापस दिया जाता है उसका निकाह मुसलमान औरतों से हो सकता है लेकिन अमल का सवाब ईमान पर मौक़ूफ़ है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ईमान इक़रार और अमल दोनों का नाम है और इस्लाम इक़रार है बिला अमल के।

3. मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से इस आयत का मतलब पूछा। अरब के बद्दुओं ने कहा हम ईमान लाये, ऐ रसूल कह दो कि तुम ईमान नहीं लाये, बल्कि यूं कहो कि हम इस्लाम ले आये और ईमान तो तुम्हारे दिलों में दाख़िल ही नहीं हुआ क्या तुम ने ग़ौर नहीं किया कि ईमान इस्लाम से अलग है।

4. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से एक शख़्स ने इस्लाम व ईमान और उनके फ़र्क़ के मुतअल्लिक़ सवाल किया। आप ने कोई जवाब न दिया। उसने फिर पूछा। आप ने फिर जवाब न दिया। एक रोज़ उसकी हज़रत से मुलाक़ात सरेराह हुई जब्कि उसके कूच का वक़्त क़रीब था। हज़रत ने फ़रमाया क्या तुम्हारा कूच क़रीब है। उसने कहा जी हां, फ़रमाया तुम मेरे घर आकर मिलो। वह मिला और इस्लाम व ईमान और उन दोनों के दरमियान फ़र्क़ दरयाफ़्त किया। फ़रमाया इस्लाम वह ज़ाहिरी हालत है जिस पर आम लोग हैं यानी गवाही देना। इसकी कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद स0 उसके अब्द व रसूल हैं और नमाज़ क़ायम करना और ज़कात देना माहे रमज़ान में रोज़े रखना यह तो है इस्लाम, रहा ईमान तो इन चीज़ों के साथ अम्रे विलायत व इमामत की मअ़रिफ़त है जिस ने उसे न पहचाना वह मुस्लिम गुम करदा–ए राह है।

5. आयत क़ालतिल आराबः के मुतअल्लिक़ फ़रमाया जिस ने यह गुमान किया कि वह ईमान ले आये तो उसने झूठ बोला और जिसने यह गुमान किया कि वह इस्लाम नहीं लाये वह भी झूठा है।

6. फ़रमाया सादिक़े आले मुहम्मद अ0 ने इस्लाम लाने

के बाद जान महफूज़ हो जाती है अमानत अदा की जाती है। फुरूज हलाल हो जाती हैं लेकिन अमल का सवाब ईमान के बाद मिलता है।

एक सौ तैंतालीसवां बाब

ईमान के अन्दर इस्लाम दाखिल है इस्लाम में ईमान दाखिल नहीं।

1. समाआ़ से मरवी है कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा मुझे बताइये क्या इस्लाम और ईमान दो मुख़तलिफ़ चीज़ें हैं? फ़रमाया ईमान में इस्लाम शरीक है और इस्लाम में ईमान नहीं। मैंने कहा दोनों का वस्फ़ बयान कीजिये फ़रमाया इस्लाम नाम है गवाही देना तौहीद क़ी और रसूल स0 की इस्लाम लाने से ख़ून महफूज़ हो जाता है मुनाकिहत दुरूस्त हो जाती है और मीरास मिल जाती है और आंम मुसलमानों में बज़ाहिर शामिल हो जाता है और इमान हिदायत है और वह क़ायम होता है लोगों के दिलों में। इस्लाम है (इक़रारूश्शहादतैन) की ज़ाहिरी सूरत से और ज़ाहिर बज़ाहिर अमल से और ईमान इस्लाम से एक दर्जा बुलंद है (इसमें तसदीक बिलक़ल्ब होती है) ईमान में इस्लाम शरीक है बज़ाहिर और बातिनन इस्लाम शरीके ईमान नहीं है अगरचे क़ौल व सिफ़त में दोनों जमा हो जायें (जैसे इक़रारे शहादतैन बज़बान और ज़ाहिरी तौर पर एतेक़ाद)।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ईमान में इस्लाम दाख़िल है लेकिन इस्लाम में ईमान दाख़िल नहीं यानी जो मोमिन है वह मुस्लिम ज़रूर है लेकिन हर

मुस्लिम मोमिन नहीं होता।

3. फ़रमाया अबू अब्दिुल्लाह अलैहिस्सलाम ने ईमान में इस्लाम शरीक है और इस्लाम में ईमान शरीक नहीं ईमान वह है जो कुलूब में रासिख़ हो और इस्लाम के बाद निकाह हो सकता है। मीरास मिल जाती है क़त्ल से जान बच जाती है ईमान में दाख़िल इस्लाम है मगर इस्लाम में ईमान नहीं।

4. रावी कहता है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मैंने पूछा। ईमान अफज़ल है या इस्लाम। हमारे क़रीब कुछ लोग ऐसे रहते हैं जो कहते हैं इस्लाम ईमान से अफ़ज़ल है फ़रमाया ईमान का दर्जा इस्लाम से बुलंद है मैंने कहा जो आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है उसे समझा दीजिये। एसे शख़्स के मुतअल्लिक़ तुम्हारी क्या राये है जो मस्जिदुल हराम में क़सदन पेशाब करे। मैंने कहा उसको सख़्ती के साथ पीटना चाहिये। फ़रमाया और उस शख़्स के बारे में क्या कहोगे जो यह ना शाइस्ता हरकत कअ़बा में करे और क़सदन करे। मैंने कहा उसे क़त्ल कर देना चाहिए। फ़रमाया ठीक है। अच्छा तुम जानते हो कि कअ़बा मस्जिदुल हराम से अफ़ज़ल है और कअ़बा में मस्जिदुल हराम शरीक है। लेकिन मस्जिद में कअ़बा शरीक नहीं। ऐसे ही ईमान के अन्दर इस्लाम दाख़िल है लेकिन इस्लाम के अन्दर ईमान नहीं यानी जो मोमिन है वह मुस्लिम ज़रूर होगा। लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि जो मुस्लिम है वह मोमिन भी हो।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ईमान वह है जो दिल में जगह पकड़ जाए और ख़ुदा तक सब से ज़्यदा रसांई पैदा करने वाला हो और उसका अमल इस अम्र की तसदीक़ हो कि वह अल्लाह का फ़रमांबरदार है

और उसके हुक्म का कुबूल करने वाला है और इस्लाम तो ज़ाहिरी क़ौल व फ़ेअ़ल का नाम है। और इस्लामी जमाअ़त में शामिल हो जाने का किसी एक फ़िर्क़े के साथ और उसकी वजह से उसकी गर्दन नहीं मारी जाती और मीरास के अहकाम जारी हो जाते हैं निकाह जायज़ हो जाता है और हमारे मुख़ालिफ़ों ने इजमाअ़ किया है इस पर कि नमाज़, रोज़ा, ज़कात, और हज बजा लाने का नाम ईमान है। लेकिन इन उमूर के बाद तो वह कुफ़्र से बाहर आ जाते हैं और ईमान की तरफ़ निसबत दिये गये हैं वरन् इस्लाम में ईमान शरीक नहीं और ईमान में इस्लाम शरीक है ख़ुदा ने फ़रमाया अरब कहते हैं हम ईमान ले आये हैं ईमान तो तुम्हारे दिलों में दाख़िल हुआ ही नहीं, पस अल्लाह का क़ौल सब से ज़्यादा सच्चा है मैंने कहा क्या मोमिन को किसी चीज़ में फ़ज़ीलत है मुस्लिम पर फ़ज़ाएल व अहकाम व हुदूद वग़ैरह में, हज़रत ने फ़रमाया नहीं वह दोनों एक शख़्स के लिए बोले जाते हैं और एक लफ़्ज़ दूसरे का क़ायम मक़ाम बनता है लेकिन मोमिन को मुसलमान पर फ़ज़ीलत बलिहाज़ दोनों के अमल से है। और इस अम्र में दोनों तक़र्रुब इलल्लाह हासिल करते हैं। मैंने कहा ख़ुदा फ़रमाता है जो एक नेकी करेगा। अल्लाह उसका दस गुना बदला देगा। और मेरा गुमान है कि आम मुसलमान जमा होते हैं मोमिन के साथ नामज़, ज़कात, रोज़ा और हज में। फ़रमाया क्या ख़ुदा ने यह नहीं फ़रमाया कि वह अज्र को बहुत ज़्यादा बढ़ा देगा पस यह मोमिनों के लिए है उनके हर हसना का सत्तर गुना सवाब ज़्यादा देगा। यह है फ़ज़ीलते मोमिन कि अल्लाह तआ़ला उसका अज्र बढ़ा दे सात सौ गुना ज़्यादा तक बक़द्रे

सेहते ईमान, ख़ुदा मोमिनों से जितना एहसान चाहता है करता है, मैंने कहा जो इस्लाम में दाख़िल है क्या वह मोमिन नहीं, फ़रमाया नहीं, लेकिन उसको ईमान की तरफ़ निसबत दी जाती है (मोमिन कहा जाता है) और कुफ़्र से उसका इख़राज होता है मैं एक मिसाल से समझाऊंगा ताकि फ़र्क़ समझ में आ जाये और ईमान की फ़ज़ीलत इस्लाम पर साबित हो। अगर तुम मस्जिदुल हराम में किसी को देखो तो क्या इसकी गवाही दोगे कि मैंने उसे कअ़बा में देखा था। मैंने कहा। ऐसा कहना मेरे लिए जायज़ नहीं फ़रमाया अगर तुम किसी को कअ़बा में देखो तो इसकी गवाही दोगे कि मैंने मस्जिदुल हराम में उसे देखा है मैंने कहा, ज़रूर कहूंगा। फ़रमाया यह क्यों? मैंने कहा कअ़बा में बग़ैर मस्जिदुल हराम के दाख़ेला मुमकिन नहीं। फ़रमाया। तुम ने ठीक जवाब दिया। बस यही सूरत ईमान व इस्लाम की है।

एक सौ चवालीसवां बाब

इस्लाम क़ब्ले ईमान होता है

1. रावी कहता है मैंने अपना ख़त अब्दुल मलिक बिन अअ़युन के हाथ इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में भेजा और यह सवाल किया कि ईमान क्या है? हज़रत ने अब्दुल मलिक के हाथ यह जवाब भेजा, तुझ पर ख़ुदा की रहमत हो तू ने ईमान के मुतअल्लिक़ सवाल किया है। इमान नाम है ज़बान से इक़रार दिल से ऐअ़तेक़ाद और अअ़ज़ा से अमल करने का और ईमान में एक का तअल्लुक दूसरे से है और वह मिस्ल एक घर के है और ऐसे ही इस्लाम भी एक घर है और कुफ़्र भी एक घर है एक शख़्स मोमिन

बन्ने से पहले मुसलमान होगा और मोमिन नहीं हो सकता जब तक मुसलमान न हो इस्लाम क़बले ईमान है और वह ईमान में शरीक है जब कोई बन्दा गुनाहे कबीरा या वह गुनाहे सग़ीरा करता है जिससे अल्लाह ने मना किया है तो वह ईमान से ख़ारिज हो जाता है और मोमिन का इतलाक़ इस पर नहीं होता लेकिन मुसलमान बाक़ी रहता है हां अगर तौबा कर ले तो दारे ईमान की तरफ़ लौट आता है कुफ़्र की तरफ़ नहीं ले जाता उसको मगर ख़ुदा से इंकार और हलाल को कह दे कि यह हराम है और हराम को कह दे कि यह हलाल है ऐसी सूरत में इस्लाम से ख़ारिज हो जायेगा और कुफ़्र में दाख़िल हो जायेगा। और यह शख़्स उस जैसा होगा जो हरम में दाख़िल हो फिर कअ़बा में आये और वहां पेशाब या पाख़ाना कर दे और उसको कअ़बा और हरम से बाहर लाकर गर्दन मारी जाये और आग में जला दिया जाये।

2. समाआ से मरवी है मैंने इमाम अलैहिस्सलाम से ईमान व इस्लाम के मुतअल्लिक़ सवाल किया और उन दोनों के मुतअल्लिक फ़र्क़ मअ़लूम किया फ़रमाया मैं एक मिसाल से समझाता हूं ईमान और इस्लाम की मिसाल कअ़बा और हरम की सी है कभी इंसान हरम में होता है कअ़बा के अन्दर दाख़िल नही होता और कअ़बा तक नहीं पहुंच सकता बग़ैर हरम में जाये पस एक शख़्स एक वक़्त में मुसलमान तो होता है मोमिन नहीं होता। और मोमिन नहीं हो सकता जब तक मुसलमान न हो। मैंने कहा ईमान से जब कोई चीज़ ख़ारिज करती है तो किधर ले जाती है फ़रमाया इस्लाम की तरफ़ या कुफ़्र की तरफ़ और उसको यूं समझाया कि अगर कोई कअ़बा में दाख़िल हो और बे अख़्तियारी की हालत में पेशाब

निकल जाये तो वह काबे से निकाला जायेगा हरम से नहीं। वहां अपना कपड़ा धोकर पाक करलेगा। फिर कअ़बे में उसका दाख़िला ममनूअ़ न होगा। और अगर कोई ख़ानए कअ़बा में अज़ रूए हिक़ारत व अदावत पेशाब कर देगा। तो उसको कअ़बा से निकाल कर क़त्ल कर दिया जायेगा।

एक सौ पैंतालीसवां बाब

ततिम्मा हर दो बाबे साबिक़्

1. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाकिर अलैहिस्सलाम ने कि लोग इस कुरआन के मुतअल्लिक़ बगैर इल्म के कलाम करते हैं इसी के मुतअल्लिक़ ख़ुदा फ़रमाता है अल्लाह वह है जिसने तुम पर किताब नाज़िल किया, उसमें आयाते मुह्कमात हैं और वही असल किताब हैं और दूसरी मुतशाबेह आयात हैं पंस जिनके दिलों में कजी है वह मुतशाबिहात से बचत करते हैं जिससे उनका मक़सद फ़ितना परदाज़ी और ग़लत तावील करना होता है और इसकी तावील नहीं जानता मगर अल्लाह और इल्म में रूसूख़ रखने वाले पस मंसूख़ आयात मुतशाबिहात में से हैं और नासिख़ मुह्कमात से हैं ख़ुदा ने नूह को उनकी क़ौम की हिदायत को भेजा। उन्हों ने कहा लोगो! अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और मेरी एताअत करो। फिर उन्हों ने ख़ुदा–ए–वाहिद की तरफ़ लोगों को बुलाया ताकि वह उसकी इबादत करें और उसका शरीक किसी को न बनायें फिर ख़ुदा ने और अंबिया को भेजा उसी काम के लिए ताआंकि हज़रत रसूले ख़ुदा स0 तक नौबत पहुंची। हज़रत ने अपनी उम्मत को हिदायत फ़रमाई कि वह अल्लाह की इबादत करें और किसी को उसका

शरीक क़रार न दें। और ख़ुदा ने फ़रमाया है। ख़ुदा ने अपनी शरीअत का क़ानून बनाया उन चीज़ों को जिन की वसीयत नूह अलैहिस्सलाम को की और वह जिसकी वही हम ने ऐ रसूल स0 तुम पर नाज़िल की और इब्राहीम व मूसा व ईसा अलैहिमुस्सलाम को वही की और वह बात यह थी कि दीन को कायम करो और इसमें तफ़रिक़ा न डालो। तुम जो अल्लाह की तरफ लोगों को बुला रहे हो यह मुशरिकीन पर बहुत शाक़ है खुदा जिसको चाहता है इस काम के लिए मुन्तख़ब कर लेता है जो उसकी तरफ़ रुजूअ़ करता है उसे हिदायत करता है।

ख़ुदा ने अंबिया को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि वह लोगों से गवाही दिलवाऐं इस अम्र की कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और इसका कि जो कुछ अंबिया ख़ुदा की तरफ़ से लाए वह हक़ है। पस जो ख़ुलूस से ईमान लाया और उसकी मौत इसी अक़ीदे पर हुई तो ख़ुदा उसे जन्नत में दाख़िल करेगा और ख़ुदा अपने बन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता।

और ख़ुदा अपने बन्दों पर उस वक़्त तक अज़ाब नही करता जब तक बन्दा क़त्ल और उन गुनाहों को बार बार बजा न लाये जिन के इरतिकाब पर ख़ुदा ने दोज़ख को वाजिब कर दिया है और जब हर नबी की क़ौम ने उसकी दावत इलल्लाह को कुबूल कर लिया और इस पर ईमान ले आये तो ख़ुदा ने उन में से हर नबी के लिए एक रास्ता साबिक़ नबी के रास्ते से जुदा बना दिया।

और अल्लाह ने हज़रत रसूले ख़ुदा से फ़रमाया। हम ने तुम्हारे ऊपर उसी तरह वही की जिस तरह हम ने वही की थी नूह पर और उनके बाद वाले नबियों पर और हर नबी को

हुक्म दिया कि वह सबील व सुन्नत पर क़ायम रहे और सबील वही है जिसका हुक्म ख़ुदा ने मूसा को दिया था और वह यौमे सब्त के मुतअल्लिक़ था जो कोई स्बत की अज़मत को बरक़रार रखता था और ख़ुदा के ख़ौफ़ से उसकी हुर्मत को ज़ायल नहीं करता था तो ख़ुदा उसे दाख़िले जन्नत करता था और जो उसके हक़ को ख़फ़ीफ़ जानता था और हरामे ख़ुदा को हलाल क़रार देता था तो ख़ुदा उसको दोज़ख़ में डाल देता था उसकी सूरत यह थी कि जिन लोगों ने रोज़े सब्त मछलियों को गढ़ों में रोका और यौमे सब्त उनको खाया। अल्लाह का उन पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ। हालांकि न तो उन्हों ने शिर्क बिल्लाह किया था और न इंकार किया था उन चीज़ों का जो अल्लाह ने मूसा पर नाज़िल की थीं ख़ुदा ने कुरआन में फ़रमाया है तुम ने जान लिया उन लोगों को जिन्हों ने (ए यहूदियो) तुम ने सब्त के बारे में हद से तजावुज़ किया तो हम ने उन से कहा। तुम ज़िल्लत के साथ बन्दर हो जाओ। फिर अल्लाह ने उसकी गवाही के साथ कि कोई मअ़बूद अल्लाह के सिवा नहीं। हज़रत ईसा को भेजा और इक़रार के साथ जो ईसा ख़ुदा की तरफ़ से लाये थे और उन क़वानीन को एक जुदागाना शरीअत और तरीक़े अमल क़रार दिया। पस सब्त के जो अहकाम इससे पहले क़ाबिले ऐहतेराम थे वह ख़त्म कर दिये गये और मूसा की सबील व सुन्नत मंसूख़ हो गयी और यह क़रार पाया कि जो सुन्नते ईसा का इत्तेबाअ़ न करेगा अल्लाह उसको जहन्नम में डाल देगा और तमाम अंबिया की उम्मतों को यह हुक्म दिया था कि अल्लाह की ज़ात में किसी को शरीक करार न दें इसके बाद हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा स० को भेजा वह मक्के में दस साल उसी तरह रहे कि ला इलाहाइल्लल्लाह और मुहम्मदुर्ररसूलुल्लाह

की गवाही दे कर मरने वाला कोई न था। ख़ुदा ने जन्नत लाज़िम की इक़रारे शहादतैन पर और वह ईमान बित्तसदीक़ है और ख़ुदा ने किसी ऐसे मरने वाले पर अज़ाब नाज़िल नहीं किया जो ताबेअ हो मुहम्मद स0 का सिवाए उसके जिस ने शिर्क बिल्लाह किया और उसकी तस्दीक़ सूरह बनी इस्राईल की इस आयत से होती है। ऐ रसूल स0 तेरे रब ने यह फ़ैसला कर दिया है कि सिवाए उसके और किसी की इबादत न की जाये और वालिदेन के साथ एहसान करे। आयत के आख़िर में फ़रमाता है। बेशक वह ख़बर रखने वाला और देखने वाला है यह अदब, नसीहते तालीम और नही बहुत हलके तरीक़े से की गई है न इस पर कोई वअ़दा है और न अम्रे ममनूअ़ बजा लाने की जुरअत पर कोई तंबीह है न तो बीच और जिस जगह जिन उमूर से रोका है उनसे बचाना चाहा है मगर नही कों ज़्यादा ज़ोर के साथ नहीं बयान किया गया और न कोई धमकी दी गई है फ़रमाता है अपनी औलाद को मुफ़्लिसी के ख़ौफ़ से क़त्ल न करो। हम उनको भी रिज़्क़ देने वाले हैं और तुम को भी। उनका क़त्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है और दूसरी जगह फ़रमाता है तुम ज़िना के पास न जाओ। यह तो खुली बदकारी है और बहुत बुरा तरीक़ा है। बे खता किसी को कत्ल करना खुदा ने हराम क़रार दिया है और जो मज़लूम क़त्ल किया जायेगा तो हम उसके वली को पूरा गलबा देंगे उसको चाहिये क़त्ल में हद से न गुजरे। वह फ़त्हमंद होगा।

और वह फ़रमाता है माले यतीम के पास न जाओ और अगर इस माल से लेना चाहो तो जाएज़ तरीक़ा से लो। जब तक यतीम सिने बुलूग़ तक पहुंचे। जो वादा किया है उसे पूरा करो। क्योंकि वादा के मुतअल्लिक़ पूछ गछ होगी और

पूरा तोलो डण्डी न मारो, यही तुम्हारी बेहतर और अच्छी तावील है और जिसका तुमको इल्म नहीं उस पर मत अड़ो और ज़मीन पर इतरा कर न चलो। न तुम में यह ताक़त है कि ज़मीन को शिगाफ़्ता कर दो और न तुम तूल में पहाड़ों के बराबर हो जाओगे। तुम्हारे रब के नज़दीक यह बुरी बातें हैं और अज़रूए हिकमत ख़ुदा ने उन चीज़ों की वही तुम पर कर दी है ख़ुदा के सिवा अपना किसी को मअ़बूद न बनाओ वरन् ज़िल्लत के साथ जहन्नम में तुम्हारी जगह होगी। और अल्लाह तआला सूरह वल्लैले इज़ा यग़शा में फ़रमाता है पस मैं डराता हूं तुमको आतिशे जहन्नम से जिसमें शक़ी डाला जायेगा जिस ने तकज़ीब की और रूगर्दानी की। यह शिर्क है और सूरह इज़स्समाउंशक्क़त में फ़रमाता है और जिसकी किताब उसकी पुश्त पर होगी उसके लिए हलाकत है और वह जहन्नम की आग तापेगा वह अपने अहेम में बड़ा ख़ुश हुआ करता था और गुमान करता था कि वह हमारी तरफ़ रूजूअ़ नहीं करेगा। यह मुश्रिक होगा। और सूरह तबारकल्लज़ी में है जब दोज़ख़ में बहुत से लोग डाले जायेंगे तो दोज़ख़ के ख़ज़ानेदार फ़रिश्ते पूछेंगे। क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था वह कहेंगे बेशक आया था लेकिन हम ने झुठलाया और कहा। ख़ुदा ने तो कुछ भी नाज़िल नहीं किया पस यह कहने वाले मुशरिक होंगे। और सूरह अलहाक़्क़ा में फ़रमाया है जिसका नामाए आमाल बायें तरफ़ होगा वह कहेगा। काश यह किताब मुझे न दी गई होती। और मैं न जानता। मेरा हिसाब क्या है? काश मौत ने मेरा (हमेशा के लिए) काम तमाम कर दिया होता। मेरे माल ने मुझे कुछ फ़ायदा न दिया। इला क़ौलिहि यह वह है जो साहिबे

अज़्मत अल्लाह पर ईमान नहीं लाता है। यह मुशरिक है और सूरह तासीनमीम में फ़रमाता है और गुमराहों पर जहन्नम को पेश करके कहा जायेगा तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनकी इबादत किया करते थे अब वह कहां हैं क्या वह तुम्हारी मदद करेंगे या वह ख़ुद अपनी मदद कर सकेंगे? पस उनको और दूसरे गुमराहों को ओंधे मुंह जहन्नम में डाल दिया जायेगा और इब्लीस का तमाम लशकर भी और इबलीस की औलाद उसका लशकर है जो शयातीन हैं।

और ख़ुदा फ़रमाता है (दोज़ख़ी कहेंगे) नहीं गुमराह किया हम को मगर मुजरिमों ने यानी उन मुशरिकों ने जिनकी उन्होंने पैरवी की,यही लोग है जिन्हों ने गुमराहों की पैरवी की उनके शिर्क में और वह क़ौमे मुहम्मद है (कुरैश) जिन में यहूद व नसारा में कोई नहीं और उसकी अक़वामे साबिका से जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है। झुठलाया उनसे पहले क़ौमे नूह अलैहिस्सलाम ने झुठलाया असहाबे ऐका (जंगल वालों) ने झुठलाया क़ौमे लूत ने जिस में न वह यहूदी हैं जो कहते हैं उज़ैर इब्नुल्लाह हैं और न नसारा जो कहते हैं मसीह इब्नुल्लाह हैं यह दोनों जहन्नमी हैं और हर क़ौम अपने अमल के मुताबिक़ दाख़िल होगी।

और नही बहकाया हम को मगर मुशरिकों ने, उन्हों ने अपने रास्ते की तरफ़ बुलाया और ख़ुदा उनके मुतअल्लिक़ फ़रमाता है जब वह जहन्नम में जमा होंगे तो अगली सफ़ वाले पिछली सफ़ वालों से कहेंगे ऐ हमारे रब इन्होंने हमें गुमराह किया पस जहन्नम का अज़ाब उनके लिए दोगुना करदे और ख़ुदा फ़रमाता है जब एक गिरोह दाख़िले जहन्नम होगा तो वह अपने साथी गिरोह पर लानत करेगा यहां तक

कि सब दाखिले जहन्नम हो जायेंग तो एक गिरोह दूसरे गिरोह से बेज़ारी का इज़हार करेगा। और बाज़ बाज़ के ऊपर लअ़नत करेगा और नजात की उम्मीद में एक दूसरे पर ग़लबा हासिल करना चाहेगा। और सख़्त मुसीबत से जो उन पर नाज़िल होगी वह गुलूख़लासी चाहेंगे। लेकिन अब इंतेख़ाब और इम्तेहान का वक़्त गुज़र चुका होगा। अब न मअज़िरत कुबूल की जायेगी और न नजात की कोई सूरत होगी। यह आयात और इनकी मिस्ल आयात जो मक्के में हज़रत स0 पर नाज़िल हुई इन से मअ़लूम होता है कि जहन्नम में नहीं दाख़िल होंगे मगर मुशरिक।

जब अल्लाह ने हज़रते रसूले ख़ुदा स0 को मक्के से मदीने की तरफ़ खुरूज की इजाज़त दी तो इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर रखी गवाही देना इसकी कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और यह कि मुहम्मद स0 उसके अब्द और रसूल हैं, नमाज़ का क़ायम करना, ज़कात देना, हज करना और माहे सियाम में रोज़े रखना और हज़रत पर हुदूद को नाज़िल फ़रमाया और फ़राइज़ के तक़सीम को और आगाह किया उन गुनाहों से जिन पर अल्लाह ने जहन्न्म को वाजिब किया है और क़ातिल के मुतअल्लिक़ बयान किया है जो कोई अमदन किसी मोमिन को क़त्ल करेगा उसकी सज़ा जहन्नम है जिस में वह हमेशा रहेगा। अल्लाह का ग़ज़ब और लअ़नत उस पर होगी और उसके लिये सख़्त अज़ाब है।

अल्लाह मोमिन पर लअ़नत नहीं फ़रमाता है बेशक अल्लाह लअ़नत करता है काफ़िरों पर और उनके लिए जहन्नम मुहैय्या है और वह उस में हमेशा रहेंगे न वहां उनका कोई सरपरस्त होगा न मददगार।

और क्योंकि मशीयते इलाही (मग़फ़िरत) से मुतअल्लिक़ हो सकता.है वह शख़्स जो जहन्नमी बन कर मौरिदे ग़ज़ब व लअ़नते इलाही हो। और उन लोगों के मलऊन होने का बयान उस ने अपनी किताब में कर दिया है और जिस ने जुल्म से यतीम के माल को खाया उसके लिए फ़रमाता है जो लोग यतीमों का माल जुल्म से खाते हैं वह अपने पेट में आग भरते हैं और वह अन्क़रीब जहन्नम में डाले जायेंगे माले यतीम का खाने वाला रोज़े क़यामत इस तरह आयेगा कि नार उसके शिकम में शोला ख़ेज़ होगी और उसके मुंह से आग की लपटें निकल रही होंगी। यहां तक कि अहले महशर समझ जायेंगे कि उसने यतीम का माल खाया है और कम तोलने वालों के लिए वैल (दोज़ख़ की एक वादी) उनके लिए है जो कम तौलने वाले हैं और वैल का मुसतहक़ सिवाए काफ़िर के दूसरा नहीं।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया है उन लोगों के लिए जिन्हों ने कुफ़्र किया। रोज़े क़0यामत और अहेद के बारे में नाज़िल हुआ है जो लोग अल्लाह के अहेद और अपने मुआहिदों को थोड़ी सी क़ीमत में बेच डालते हैं उनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। ख़ुदा उनसे कलाम नहीं करेगा। और न रोज़े क़ियामत उनकी तरफ़ देखेगा। और ने उनको तज़किया नसीब होगा और उनके लिए सख़्त अज़ाब होगा और ख़लाक़ के माने हिस्सा के हैं। पस जिसका आख़िरत में हिस्सा ही नही वह जन्नत में दाखिल कैसे होगा। और मदीना में यह आयत नाज़िल हुई। ज़ानी निकाह नहीं करेगा मगर ज़ानिया या मुशरिका से और ज़ानिया निकाह नहीं करेगी मगर ज़ानी या मुशरिक से और यह मोमिन पर हराम है

अल्लाह ने ज़ानी को मोमिन नहीं कहा और न ज़ानिया को मोमिना और रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया है और अहले इल्म इस में शक नहीं रखते कि ज़ानी जब जिना करता है तो मोमिन नहीं होता और न चोर जब चुराए तो मोमिन रहता है ज़िना या चोरी करते ही ईमान उससे इस तरह अलग हो जाता है जैसे क़मीज़ बदन से और मदीना में यह आयत नाज़िल हुई और जो लोग शौहर दार औरतों पर ज़िना की तोहमत लगाते हैं और चार गवाह नहीं पेश करते तो उनको अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही को हरगिज़ कुबूल न करो। यह लोग फ़ासिक़ है मगर वह लोग जो उसके बाद तौबा कर लें और इसलाह पर आमादा हों बेशक अल्लाह ग़फ़ूर व रहीम है और अल्लाह ने उन लोगों को (मुशरिकीन) जो मक्के में मुक़ीम हैं उससे दूर रखा है कि उन पर ईमान का इतलाक़ हो। फरमाता है क्या मोमिन फासिक़ जैसा होता है यह दोनों बराबर नहीं और यह भी फ़रमाया हैं मुनाफ़िक़ लोग फ़ासिक़ हैं और ऐसे लोगों को अल्लाह ने मलऊन क़रार दिया है और यह भी फ़रमाया है जो लोग ग़फ़लत शेआर मोमिनात पर तोहमते ज़िना लगाते हैं उन पर दुनिया व आख़िरत में लअ़नत की गई है और उनके लिए बड़ा अज़ाब है क़ियामत के दिन उनके ख़िलाफ़ उनकी ज़बानें, उनके हाथ और उनके पाओं गवाही देंने उनके करतूतों की लेकिन मोमिन के आज़ा मोमिन के ख़िलाफ़ गवाही न देंगे। वह तो उसी के ख़िलाफ़ बोलेंगे जो अज़ाब के मुसतहक़ हो चुके हैं।

मोमिन का आमाल नामा उसके दाहिने हाथ में दिया जायेगा ख़ुदा फ़रमाता है जिन लोगों का आमाल नामा दाहिने हाथ में होगा वह उसे पढ़ेंगे और उन पर ज़र्रा बराबर ज़ुल्म

न किया जाऐगा और सूर : नूर सूरह निसा के बाद नाज़िल हुई और उसकी तसदीक़ है कि अल्लाह तआला ने अपने रसूलों पर सूरह निसा में यह नाज़िल फ़रमाया, तुम्हारी औरतों में जो बदकार हों उनके ख़िलाफ़ चार आदिमयों की गवाही लो अगर वह तसदीक़ कर दें तो उन औरतों को ज़िन्दगी भर घरों के अन्दर रोके रहो (कहीं और जाने न दो) या यह कि अल्लाह उनके लिए कोई और तरीक़ए कार का हुक्म दे और सबील के मुतअल्लिक़ फ़रमाता है यह सूरत जिसको हम ने नाज़िल किया और फ़र्ज़ क़रार दिया है।

और हम ने कुरआन में रोशन व वाज़ेह आयात को नाज़िल किया। ज़ानिया और ज़ानी दोनों को सौ सौ कोड़े मारो और यह दीनी मुआमला में किसी ज़िना करने वाले पर मेहरबानी न करो अगर तुम अल्लाह और रोज़े क़ियामत पर ईमान रखते हो और उनको सज़ा दिये जाने के वक़्त मोमिनीन का एक गिरोह मौजूद रहना चाहिये।

2. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अमीरून मोमिनीन से पूछा गया कि जो ला इला–ह इल्लल्लाह और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही दे तो वह मोमिन है? फ़रमाया और फ़राएज़ की बजा आवुरी कहां गई रावी कहता है कि हज़रत ने फ़रमाया पूरा पूरा ईमान तो वही है कि जो चीज़ें उससे मुतअल्लिक़ हैं बजा लाए अगर ईमान सिर्फ़ शहादतैन ही का अदा करना होता तो फिर रोज़ा, नमाज़ और हलाल व हराम से दीन का कोई तअल्लुक ही न होता। रावी कहता है मैंने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कहा कुछ लोग कहते हैं जिसने ला इला–ह इल्लल्लाह और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही दे दी तो वह मोमिन है फ़रमाया

कि फिर मुजरिमों को सज़ायें क्यों दी जाती हैं लोगों के हाथ क्यों काटे जाते हैं खुदा ने मोमिन से ज़्यादा मुकर्रम किसी को नहीं बनाया। मलायका मोमिनीन के ख़ादिम हैं अल्लाह का जवार मोमिनीन ही के लिए है फिर फ़रमाया जिस ने फ़राएज़ से इन्कार किया वह काफ़िर है।

3. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ईमान यह है कि खुदा की इताअ़त की जाए उसकी मअ़सियत न की जाए।

एक सौ छियालीसवां बाब

अजज़ाए ईमान तमाम अअज़ाए बदन में होते हैं।

1. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा। ऐ आलिम मुझे बताइये कि खुदा के नज़दीक कौन सा अमल अफ़ज़ल है फ़रमाया वह जिस के बग़ैर कोई अमल मक़बूल नहीं होता। मैंने कहा वह क्या है? फ़रमाया अल्लाह पर ईमान लाना और कहना ला इला–ह इल्ला हु–व। अअ़माल में अज़रूए दर्जा सबसे आला है और मंज़िलत में सब से अशरफ़ है और नसीबा में सब से बुलन्द है। मैंने कहा मुझे ईमान के मुतअल्लिक़ बताइये आया वह क़ौल व अमल दोनों का नाम है या क़ौल बिला अमल का? फ़रमाया ईमान कुल अमल है और क़ौल इस अमल का एक जुज़ है जो अल्लाह की तरफ़ से फ़र्ज़ है और उसने अपनी किताब में बयान किया है उसका नूर वाज़ेह है उसकी हुज्जत साबित है किताबे खुदा उसकी गवाही देती है और उसकी तरफ़ बुलाती है।

मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हों इसकी वज़ाहत फ़रमाइये ताकि मैं समझ लूं। फ़रमाया ईमान के लिए हालात व दरजात व तबक़ात व मनाज़िल हैं उन में से बाज़ ताम हैं। बाज़ नाक़िस और उस में से बाज़ की तरफ़ रुजहान ज़्यादा है। मैंने कहा क्या ईमान तमाम व नाक़िस व ज़ायद भी होता है। फ़रमाया हां मैंने कहा वह कैसे। फ़रमाया अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ किया है ईमान को बनी आदम के तमाम आज़ा पर और उनको उन सब पर तक़सीम कर दिया है और उनके दरमियान फ़र्क़ पैदा कर दिया है। पस आज़ा में कोई उज़ो ऐसा नहीं मगर यह कि ईमान से कोई ऐसी चीज़ उसके सिपुर्द की गई है जो अलग है दूसरे अज़ों की सिपुदर्गी में दी हुई चीज़ से। उन आज़ा में एक अज़ो दिल है जिस से समझता और जानता है और दिल बदने इंसान का अमीर है।

और वह ऐसा अमीर है कि अअ़ज़ा उसके हुक्म को रद् नही कर सकते और उसकी राय और हुक्म से हर अमल उनसे सादिर होता है इंसान अपनी दोनों आंखों से देखता है दोनों कानों से सुनता है दोनों हाथों से चीज़ों को पकड़ता है और दोनों पैरों से चलता है और शर्मगाह से जिमाअ़ करता है ज़बान से बोलता है सर में चेहरा है उन में हर एक अज़ो को वह हिस्सए ईमान दिया गया है जो उसके ग़ैर को नहीं दिया गया। यह अल्लाह की तरफ़ से इसका फ़र्ज़ क़रार दिया गया है किताबे खुदा इस पर नातिक़ है और इसकी गवाही देती है दिल का फ़र्ज़ कान के फ़र्ज़ से अलग है और कानों का फ़रीज़ा आंखों के फ़र्ज़ से जुदागाना है और आंखों का फ़र्ज़ ज़बान के फ़र्ज़ से दूर और ज़बान का फ़र्ज़ हाथों के फर्ज़ से अलग और हाथों का फ़र्ज़ पैरों के फ़र्ज़ से जुदा

है और पैरों का फ़र्ज़ शर्मगाह के फ़र्ज़ से अलग है और शर्मगाह का फ़र्ज़ चेहरे के फ़र्ज़ से ग़ैर।

क़ल्ब का फ़रीज़ा मुतअल्लिक़ ब ईमान यह है कि ख़ुदा की तौहीद का इक़रार करे, ख़ुदा की मअ़रिफ़त हासिल करे और कहे कि वह वहदहु ला शरीक लहु है न उसके जोरू है न बेटा और यह कि मुहम्मद स0 ख़ुदा के अब्द और रसूल हैं और ख़ुदा की तरफ़ से जो ख़बर या किताब लाये हैं वह हक़ है पस जो चीज़ अल्लाह ने क़ल्ब पर फ़र्ज़ की है वह इक़रार व मअ़रिफ़त है और यही उसका अमल है। ख़ुदा ने फ़रमाया है मगर वह जो (कलिमा–ए–कुफ़्र कहने पर मजबूर किया जाये लेकिन उसका दिल ईमान की तरफ़ से मुतमइन हो लेकिन जिसका सीना कुफ़्र से कुशादा है (तो उसकी नजात नहीं) और ख़ुदा ने फ़रमाया आंगाह हो कि ज़िक्रे ख़ुदा से (बेचैन) दिलों को इतमीनान हासिल हो जाता है।

और फ़रमाता है ऐसे भी हैं कि मुंह से कहते हैं कि ईमान ले आये हालांकि उनके दिल ईमान नही लाये और फ़रमाया जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे ज़ाहिर करो या छुपाओ अल्लाह उसका हिसाब ज़रूर लेगा। पस जिसे चाहेगा बख़्श देगा और जिसे चाहेगा अज़ाब देगा।

पस ख़ुदा ने दिल पर जिस चीज़ को फ़र्ज़ किया है वह इक़रारे मअ़रिफ़त है और यही उसका अमल है और यही उसका असल ईमान है और ख़ुदा ने क़ौल को ज़बान पर फ़र्ज़ किया है और क़ल्ब में जो अक़ीदा है उसको बयान करना और इक़रार करना, अल्लाह तआला फ़रमाता है लोगें से अच्छी अच्छी बातें करो और ख़ुदा ने फ़रमाया कह दो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये हैं और उस पर भी जो किताब

हमारी हिदायत के लिए नाज़िल हुई और इस पर भी जो तुम्हारी हिदायत के लिए आई थी और हमारा मअ़बूद एक ही है और हम उसी के फरमांबर्दार हैं यह है वह जिसे ख़ुदा ने ज़बान का फ़रीज़ा क़रार दिया है।

और यही उसका अमल है और अल्लाह ने कानों का यह फर्ज़ क़रार दिया है और जिन चीज़ों का सुन्ना अल्लाह ने हराम क़रार दिया है उस से बचें और एअ़राज़ करे उस अम्र से जो उनके लिए हलाल नहीं है और अल्लाह तआला ने उस से रोका है और न सुनें उन बातों को जो अल्लाह को ग़ज़ब में लाने का बाइस हों। ख़ुदा ने अपनी किताब में नाज़िल फ़रमाया है जब तुमं सुनो कि लोग आयाते ख़ुदा से इंकार करते हैं और उनका मज़ाक़ उड़ाते है और तुम उनके पास बैठो ताकि वह किसी और के मुतअल्लिक़ बात चीत करने लगें और इसतेस्ना किया है भूलने का मौक़ा। फ़रमाया है (अल–इंआ़म) अगर (मेरा यह हुक्म) तुम्हें शैतान भुला दे तो (जब याद आ जाये) ज़ालिम लोगों के पास न बैठो। फिर यह भी फ़रमाया मेरे उन बन्दों पर ख़ुश ख़बरी सुनाओ जो सुनी हुई बातों में से उन पर अ़मल करते हैं जो अच्छी हों यह वह लोग हैं जिन को अल्लाह ने हिदायत की है और यही लोग अक़्लमंद हैं और यह भी फ़रमाया है फलाह पाई उन मोमिनों ने जो ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ अदा करते हैं और बेहूदा बातों के सुन्ने से गुरेज़ करते हैं और ज़कात देते हैं और कहते हैं कि हमारे अमाल साथ हैं और तुम्हारे अअ़माल तुम्हारे साथ और जब लगो बातों के सुनने से गुरेज़ करते हैं तो बुर्जुगाना शान से गुज़रते हैं पस यह है जो अल्लाह ने कानों पर फ़र्ज़ किया है अज़रूए ईमान यह कि जिन बातों

का सुन्ना जायेज़ न हो उन को न सुनें यह है कानों का अमल और वह ईमान से मुतल्लिक़ है।

और आंख का यह फ़र्ज़ क़रार दिया कि ख़ुदा ने जिन चीज़ों की तरफ़ नज़र करना हराम क़रार दिया है उनकी तरफ़ न देखो और जिन से अल्लाह ने मना किया है उनको न देखे। यही उसका अमल है और तअल्लुक़ ईमान का इस से है। फ़रमाता है ऐ रसूल मोमिनों से कह दो कि अपनी आंखों को झुकाये रहें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें ख़ुदा ने उनको मना किया है इस से कि वह उनकी शर्मगाहों पर नज़र करें और न यह जाएज़ है कि कोई मर्द अपने भाई की शर्मगाह को देखे और अपनी शर्मगाह को भी दूसरों की नज़रों से बचाए और फ़रमाया है कि ऐ रसूल स0 कह दो मोमिन औरतों से कि वह अपनी आंखों को झुकाये रहें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें इस से कि उनको लोग देखे या कोई औरत दूसरी औरत की फुर्ज (शर्मगाह) को देखें और अपनी शर्मगाह को दूसरों की नज़रों से बचाए। इमाम ने फ़रमाया। कुरआन में जहां हिफ़ाजते फुर्ज का ज़िक्र है वह ज़िना के सिलसिले में है सिवाए इस आयत के यह नज़र से मुतअल्लिक है और ख़ुदा ने मजमूई तौर पर दिल ज़बान और कान और आंख के फुर्ज का ज़िक्र एक दूसरी आयत में कर दिया है। फ़रमाया है जो तुम छुपाया करते थे उनकी गवाही तुम्हारे ख़िलाफ़ तुम्हारे कान, तुम्हारी आंखें और तुम्हारी खालें देंगी। इमाम ने फ़रमाया जुलूद(खालों) से मुराद शर्मगाहें और रानें हैं और ख़ुदा ने फ़रमाया है जिस अम्र का तुमको इल्म नहीं उसके मुतअल्लिक़ क़ियाफ़ा से काम न लो बेशक कान, आंख, और दिल हर एक से उसके मुतअल्लिक़ सवाल

किया जायेगा पस यह हैं वह चीज़ें जो अल्लाह ने फ़र्ज़ की हैं आंखों पर कि परहेज़ करें उन चीज़ों को देखने से जिसको अल्लाह ने हराम क़रार दिया है पस आंख का इमानी अमल यही है।

और अल्लाह ने फ़र्ज़ किया है हाथों पर कि न पकड़ें उन चीज़ों का जिनका लेना अल्लाह ने हराम क़रार दिया है और लें उन चीजों को जिन के लेने का अल्लान ने हुक्म दिया है और ख़ुदा ने हाथों पर फ़र्ज़ किया है कि वह सदक़ा दें सिलए रहम करें राहे ख़ुदा में जिहाद करें और नमाज़ के लिए अपने बदन और लिबास को ताहिर करें।

और फ़रमाता है ऐ ईमान वालो! जब तुम नमाज़ के लिए खड़े हो तो अपने मुंह धो लो और हाथों को कोहनियों तक धोओ और अपने सरों का मसह करो और पैरों का मसह टख़नों तक और फ़रमाया जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उनकी गर्दनें मारो। यहां तक कि जब उन्हें चूर चूर कर डालो तो उनकी मुशकें बांध लो। फिर या तो एहसान रख कर छोड़ दो या बदला (जान का माल) ले कर रिहा करो ताकि कुफ़्फ़ार अपने हथियार डाल दें, अल्लाह ने हाथों का यहीं फ़र्ज़ क़रार दिया है क्योंकि मार पीट की हाथों को मश्क होती है।

और पैरों का फ़र्ज़ यह क़रार दिया है कि मआ़सियते इलाही की तरफ़ न उठें और उनका फ़र्ज़ है कि वह मरज़ी–ए–इलाही के मुताबिक़ राह चलें फ़रमाता है रूऐ ज़मीन पर अकड़ कर न चल तु इतनी ताक़त वाला नहीं कि क़दम मार कर ज़मीन को शिगाफ़्ता कर दे और न बुलन्दी में पहाड़ जैसा हो सकता है फिर फ़रमाता है अपनी चाल में

मियाना रवी अख़्तियार कर और अपनी आवाज़ को धीमा कर। सब से ज़्यादा ना पसंदीदा आवाज़ गधे की है और हाथों और पैरों की गवाही अपने साहिबों के ख़िलाफ होने का जिन्हों ने अम्रे इलाही के ख़िलाफ हाथ पैर चलाये यूं तज़किरा फ़रमाता है रोज़े क़ियामत हम उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे जो कुछ उन्हों ने किया होगा उसका हाल उनके हाथ और पाओं बयान करेंगे यह है वह फ़र्ज़ जो अल्लाह ने हाथ और पाओं के ज़िम्मा क़रार दिया है यह है उन दोनों का अमल अज़रूए ईमान।

और चेहरे के लिए सजदा फ़र्ज़ किया रात और दिन में औक़ाते नमाज़ में। ख़ुदा फ़रमाता है ए ईमान वालो। रूकूअ़ करो और सजदा करो और अपने रब की इबादत करो और नेकी करो ताकि तुम्हारी बहाली का बाइस हो यह मुकम्मल फ़रीज़ा है चेहरा हाथों और पैरों के लिए और एक दूसरी जगह फ़रमाया है अल्लाह की मसाजिद में अल्लाह के सिवा किसी को न पुकारो।

इमाम ने फ़रमाया और अल्लाह ने आज़ा पर नमाज़ के लिए तहारत को फ़र्ज़ क़रार दिया है। यह इस तरह कि जब अल्लाह ने अपने नबी को बैतुलमुकद्दस से कअ़बा की तरफ रूख़ फेरने का हुक्म दिया तो यह आयत नाज़िल की। अल्लाह तुम्हारे ईमान का ज़ायअ़ करने वाला नहीं बेशक अल्लाह लोगों पर मेहरबान और रहम करने वाला है पस नमाज़ का नाम ईमान है पस जो ख़ुदा से मिलेगा इस हाल में कि अपने आज़ा के फ़राइज़ की हिफ़ाज़त करने वाला होगा तो वह कामिलुलईमान होगा। अहले जन्नत से होगा और जो इन फ़राइज़ में से किसी में कोई कोताही करेगा या

अम्रे ख़ुदा से तजावुज़ करेगा तो वह अल्लाह से नाकिसुल ईमान की सूरत में मिलेगा। मैंने कहा मैं समझ गया ईमान के पूरा होने और कम होने को। लेकिन ज़्यादती की क्या सूरत होगी? फ़रमाया ख़ुदा फ़रमाता है जब कोई सूरह नाज़िल हुई तो उनमें से मुनाफ़िक़ कहते हैं इस सूरह ने तुम्हारे ईमान में क्या ज़्यादती कर दी लेकिन जो ईमान वाले हैं तो उनका ईमान बढ़ जाता है हां जिन लोगों के दिलों में बीमारी है तो उनके दिलों में कसाफ़त और बढ़ जाती है और ख़ुदा फरमाता है हम तुम से उनकी (असहाबे कहफ़) सच्ची ख़बर बयान करते हैं वह चन्द जवान है जो अपने रब पर ईमान लाये और हम ने उनकी हिदायत को और बढ़ा दिया। अगर ईमान की एक ही हालत होती न उसमें कमी होती न ज़्यादती तो एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत न होती और इन्आमे इलाही की सब में बराबरी होती और सब लोग यक्सां बन जाते फ़ज़ीलत बातिल हो जाती लेकिन तकमीले ईमान की सूरत में बारगाहे इलाही में दरजाते आलिया पर सरफ़राज़ होंगे और नुक़सान की वजह से कोताही करने वाले जहन्नम में जायेंगे।

2. रावी कहता हैं मुझ से इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बेशक कान आंख और दिल हर एक से उसके मुतअल्लिक़ पूछ गछ की जायेगी। फ़रमाया कानों से उसके मुतअल्लिक़ जो मुक़तज़ा है और आंखों से उसके मुतअिल्लक़ जो देखा है और दिल से उसके मुतअल्लिक़ जो अक़ीदा रखा है।

3. फ़रमाया इमाम ज़ाफर सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि ईमान नाम है इस अम्र की गवाही देने का कि अल्लाह से

सिवा कोई मअ़बूद नहीं और मुहम्मद स0 अल्लाह के रसूल हैं। और इक़रार उन सब बातों का जिनको आंहज़रत स0 ख़ुदा की तरफ़ से लाये और उनकी तसदीक़ के बाद दिल में जगह देना है कहा गवाही देना अमल नहीं है फ़रमाया हां। मैंने कहा क्या अमल ईमान में से है। फ़रमाया हां ईमान नहीं होता मगर अमल से, अमल उसका जुज़ है बग़ैर अमल ईमान साबित ही नहीं होता।

4. बाज़ असहाब ने सादिक़े आले मुहम्मद स0 से रिवायत की है मैंने कहा इस्लाम क्या है? फ़रमाया अल्लाह के दीन का नाम इस्लाम है और वह दीने ख़ुदा तुम से पहले भी था और तुम से बाद भी रहेगा जिस ने दीने ख़ुदा होने का इक़रार किया वह मुसलमान है और जिस ने अहकामे ख़ुदा पर अमल किया वह मोमिन है।

5. अबू बसीर ने बयान किया मैं इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में था कि सलाम ने कहा कि इब्ने ख़सीमा ने आप से हदीस बयान की है कि उस ने आप से इस्लाम के मुतअल्लिक़ सवाल किया। आप ने उस से कहा कि इस्लाम यह है कि जो कोई हमारे क़िब्ला का इस्तिक़बाल करे और हमारी शहादत (तौहीद व रिसालत वग़ैरह) की गवाही दे और हमारी तरह इबादत करे और हमारे दोस्तों को दोस्त रखे और दुश्मनो को दुश्मन रखे वह मुसलमान है। फ़रमाया इब्ने ख़सीमा ने सच कहा। मैंने कहा फिर उसने आपसे ईमान के मुतअल्लिक़ सवाल किया और आप ने फ़रमाया अल्लाह पर ईमान लाना और किताबे ख़ुदा की तसदीक़ करना और अल्लाह की ना फ़रमानी न करना ईमान है फ़रमाया इब्ने ख़सीमा ने सच कहा।

6. रावी ने कहा मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से ईमान के मुतअल्लिक़ सवाल किया। फ़रमाया गवाही देना इसकी कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नही और मुहम्मद स0 अल्लाह के रसूल हैं। रावी ने कहा क्या यह अमली सूरत नहीं है? फ़रमाया हां है। मैंने कहा तो क्या अमल ईमान का जुज़ है फ़रमाया ईमान बेदूने अमल साबित ही नही होता और अमल उसका जुज़ है।

7. रावी कहता है एक शख़्स ने इमाम अलैहिस्सलाम से कहा ऐ आलिम मुझे बताइये कि कौन सा अमल इंदल्लाह अफ़ज़ल है फ़रमाया वह जिस के बग़ैर कोई अमल मक़बूल नहीं। उसने कहा वह क्या है? फ़रमाया अल्लाह पर वह ईमान जो आमाल में आला दर्जे का है और अज़ रूऐ हज़ ज़्यादा रौशन है और अज़ रूए मंज़िलत ज़्यादा अशरफ़ है। मैंने कहा यह बताइये कि ईमान क़ौल व अमल दोनों का नाम है, या क़ौल बिला अमल का नाम? फ़रमाया ईमान पूरा पूरा अमल है और बाज़ क़ौल भी अमल है अल्लाह के फ़र्ज़ करने से जिसको उसने अपनी किताब में बयान कर दिया है और वह वह है जिसका नूर वाज़ेह है उसकी हुज्जत साबित है किताबे ख़ुदा उसकी गवाही देती है और उसकी तरफ़ बुलाती है मैंने कहा ज़रा तौज़ीह कीजिए ताकि मैं समझ जाऊं, फ़रमाया ईमान के हालात व दरजात व तबक़ात व मनाज़िल हैं जिन में बाज़ कामिल है। बाज़ नाक़िस और बाज़ ज़ाएद हैं और उनकी ज़्यादती ज़्यादा राजेह है मैंने कहा क्या ईमान तमाम भी होता है और नाक़िस भी। फ़रमाया बेशक मैंने कहा यह कैसे फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने ईमान को फ़र्ज़ किया है बनी आदम के आज़ा पर और उनको तक़सीम किया है

और फ़र्क़ पैदा कर दिया है पस आज़ा में कोई अज़ो ऐसा नही है जिसकी सुपुर्द ईमान का कोई ऐसा हिस्सा है जो उसके ग़ैर अज़ो का नहीं।

उन में एक दिल है जिस से आदमी समझता बूझता है और दिल तमाम बदन का अमीर है। आज़ा बग़ैर उसकी राये और हुक्म के कोई काम नहीं करते और आज़ा में दोनों हाथ हैं जिन से आदमी पकड़ता है और दो पैर हैं जिन से चलता है और शर्मगाह है जो शहवत रानी है और जो ज़बान है जिसके लिए किताबे ख़ुदा नातिक़ है और वह उसकी गवाही देती है और दो आंखें हैं जिन से देखता है और दो कान हैं जिन से सुनता है। क़ल्ब का फ़र्ज़ ज़बान के फ़र्ज़ से अलग है और जबान का फ़र्ज़ आंखों से अलग और कान का हाथों के फ़र्ज़ से अलग और हाथों का पैरों से अलग और पैरों का फ़र्ज़ फ़ुर्ज के फ़र्ज से और फ़ुर्ज का फ़र्ज़ चेहरे के फ़र्ज़ से जुदा है और ईमान के लेहाज़ से क़ल्ब का फ़र्ज़ यह है कि वह इक़रार करे मअ़रिफ़त हासिल करे। तसदीक़ करे और क़ुबूल करे और अपना अक़ीदा बनाये इस अम्र को कि अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वह वहदहू ला शरी–क लहू है वह यकता है बे नियाज़ है न उसके कोई जोरू है न बच्चा और यह कि मुहम्मद स0 उसके अब्द व रसूल हैं।

8. रावी कहता है कि एक शख़्स ने फ़िर्क़ए मुरजिया के क़ौल को ईमान व कुफ़्र के मुतअल्लिक़ बयान करके कहा। वह कहते हैं कि जो हमारे नज़दीक काफ़िर है वह ख़ुदा के नज़दीक भी काफ़िर है। इसी तरह मोमिन जब इक़रार कर ले अपने ईमान का तो ख़ुदा के नज़दीक मोमिन है फ़रमाया सुब्हानल्लाह यह दोनों बराबर कैसे हो जायेंगे। कुफ़्र बन्दे का

इक़रार है अपनी ना फ़रमानी का जिसके बाद फिर किसी गवाह की ज़रूरत ही बाक़ी नहीं रहती। (वह बमंज़िला मुक़िर मुद्दआ़ अलैह के है) और ईमान एक दअ़वा है जिसके इसबात के लिए गवाही ज़रूरी और यह गवाही है उसके अमल और नीयत की। जब अमल और नीयत दोनों में हमआहंगी पैदा हो जाये तो वह बन्दा ख़ुदा के नज़दीक मोमिन है और कुफ़्र की सूरत में न नीयत बाक़ी रहती है न क़ौल और अमल और अहकाम का निफ़ाज़ होता है। कुबूलियत और अमल पर और अमल की सूरत यह है कि मोमिनीन ईमान पर गवाह बन जायें और अहकामे मोमिनीन इस पर जारी हों तो वह इंदल्लाह काफ़िर न होगा। उसके ज़ाहिर क़ौल व अमल पर हुक्मे मोमिनीन जारी होगा। क्योंकि बातिन का हाल तो ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता है।

एक सौ सैंतालीसवां बाब

सबक़त इलल ईमान

1. रावी ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि ईमान के दरजात हैं मनाज़िल हैं पैशे ख़ुदा जिनकी वजह से मोमिनीन से एक दूसरे पर फ़ज़ीलत हासिल होती है फ़रमाया हां मैंने कहा ख़ुदा आपकी हिफ़ाज़त करे ज़रा तौज़ीह कीजिये ताकि मैं समझूं। फ़रमाया मोमिनीन के लिए भी उसी तरह सबक़त है जैसे घोड़दौड़ में होती है दरजात में सबक़त बाइसे फ़ज़ीलत है।

अल्लाह तआ़ला ने हर मुसलमान को उसी दर्जे पर रखा हुआ है जो जिहाद में उसकी सबकत का है ख़ुदा ने उसके हक़ में कमी नहीं की और मसबूक़ को साबिक़ पर

और मफ़ज़ूल को फ़ाज़िल पर मुक़द्दम नहीं किया और फ़ज़ीलत दी है जिहाद में आगे रहने वालों पर, पीछे रहने वालों पर अगर ईमान की तरफ़ सबक़त करने वालों को मसबूक़ की फ़ज़ीलत न होती तो इस उम्मत के आख़िर वाले अव्वल वालों से मिल जाते। हां उनके तक़द्दुम की यह सूरत हो सकती है कि ईमान की तरफ़ सबक़त करने वालों की फ़ज़ीलत न हो पीछे रह जाने वालों पर लेकिन दरजाते ईमान की सूरत में अल्लाह ने साबिक़ीन को मुक़द्दम किया है और ईमान की तरफ़ ताख़ीर व सुसती करने वालों को अल्लाह ने मोअख़्ख़र क़रार दिया है। पीछे रह जाने वाले मोमिनीन अगरचे अज़ रूए अमल अव्वलीन से ज़्यादह बेहतर हों और नमाज़, रोज़ा व हज व जिहाद व इन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाह में ईमान की तरफ़ सबक़त करने वालों के ज़्यादा हों लेकिन इनदल्लाह सबक़त करने वालों को फ़ज़ीलत है अगर ऐसा न होता तो आख़िर वाले कसरते अमल की बिना पर अव्वलीन से मुक़द्दम हो जाते।

लेकिन ख़ुदा ने पसंद न किया इसको कि अव्वलीन के मदारिज आख़िरीन को मिल जायें और जिन को ख़ुदा ने मोअख़्ख़र किया है वह मुक़द्दम हो जायें और जो मुक़द्दम हैं वह मोअख़्ख़र हों रावी कहता है मैंने कहा वह आयात बताइये। जिन से अल्लाह ने मोमिनीन को सबक़त इलल ईमान की तरफ़ दावत दी है फ़रमाया ख़ुदा फ़रमाता है। सबक़त करो अपने रब की बखशिश की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ जिसका अरज़ आसमान व ज़मीन जैसा है और जो उन लोगों के लिए बनाई गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाये हैं और फ़रमाया है सबक़त

करने वाले सबक़त करने वाले हैं और वही मुक़र्रबीने ख़ुदा हैं और फ़रमाया है और सब से पहले सबक़त करने वाले मुहाजिरीन व अन्सार हैं और वह लोग हैं जिन्हों ने नेकी में उनका इत्तेबाअ़ किया है अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी हुए।

अल्लाह तआला ने इबतेदा की मुहाजिरीने अव्वलीन से, उनके सबक़त के दर्जे को बयान करके दूसरे दर्जे में रखा है अन्सार को तीसरे में नेकियों में उनका इत्तेबाअ़ करने वालों को

ख़ुदा ने हर क़ौम को बक़द्र उन दरजात व मनाज़िल के रखा है जो ख़ुदा के नज़दीक हैं फिर ख़ुदा ने अपने औलिया की उन फ़ज़ीलतों का बयान किया जो एक को दूसरे पर हैं। चुनांचे फ़रमाता है यह रसूल है हम ने बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है उन में वह भी हैं जिन से अल्लाह तआला ने कलाम किया और बा एतबारे दरजात एक को दूसरे से बुलन्द किया और फ़रमाया हम ने बाज़ नबियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी और आख़िरत अज़ रूऐ दरजात और फ़ज़ीलत बहुत बड़ी चीज़ है और फ़रमाया। इन्दल्लाह उनके दरजात हैं और फ़रमाया हर साहिबे फ़ज़्ल को उसकी फ़ज़ीलत दी गई है और फ़रमाता है। जो लोग ईमान लाये और हिज़रत की और राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाले हैं अपने मालों और अपने नफ़सों से पेशे ख़ुदा उनके दरजात हैं और मग़फ़िरत और रहमत है और फ़रमाया तुम में से जिस ने फ़तहे मक्का से पहले राहे ख़ुदा में अपना माल सर्फ़ किया और क़िताल की, उसका बड़ा मर्तबा है वह उन लोगों के बराबर कैसे हो सकता है जिन्हों ने फ़तहे मक्का के बाद ख़र्च

किया और क़िताल किया और फ़रमाया अल्लाह उन लोगें के दरजात बुलन्द करता है जिनको इल्म के दरजात दिये गए हैं और फ़रमाया यह मर्तबा इस लिए है कि रसूलुल्लाह स0 के साथ जिहाद में न उनको प्यास का एहसास हुआ न तअ़ब का और न भूक का और न उन्हों ने ऐसी कोई पेश क़दमी की जो कुफ़्फ़ार को ग़ैज़ में लाती, और न उन्हों ने दुश्मन से कोई फ़ायदा हासिल किया मगर यह कि जो किया वह अमले सालेह था और फ़रमाया जो नेकियां तुम न अपने लिए की हैं वह तुम अल्लाह के पास मौजूद पाओगे जिस ने ज़र्रा बराबर नेकी की है वह नेकी देखेगा। जिस ने ज़र्रा बराबर बदी की है वह बदी देखेगा। पस यह है दरजाते ईमान का ज़िक्र और उसके मनाज़िल का बयान पेशे ख़ुदा–ए–अज्ज़ोवजल्ल।

एक सौ अड़तालीसवां बाब

दरजाते ईमान

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह तआला ने ईमान को सात हिस्सों में रखा है, बिर, सिदक़, यकीन, रिज़ा, वफ़ा, इल्म, हिल्म, फिर उन लोगों में तक़सीम किया। जिसको यह सातों चीजें मिल गई हों वह कामिल हो गया और बारे शरीअ़त उठाने वाला है फिर ख़ुदा ने किसी को एक हिस्सा दिया किसी को दो और किसी को तीन यहां तक कि किसी को सात। फिर हज़रत ने फ़रमाया जिसको दो हिस्से मिले हैं उस पर तीसरे का बार न रखो इस तरह तुम आजिज़ बना दोगे उनको यहां तक कि हज़रत ने सात तक यूँ ही बयान किया।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम के ख़ादिम ने

बयान किया है कि मुझे हज़रत ने जब कि आप हीरा (नाम शहर) में थे। एक ज़रूरत से भेजा मेरे साथ हज़रत के और गुलाम भी थे, हम रवाना हुए और वक़्ते शाम वहां से लौटे। मेरा बिस्तर हीरा में वहीं था जहां छोड़ा था। मैं वहीं गया और मैं मग़्मूम था हज़रत वहीं तशरीफ़ ले आये और फ़रमाया हम खुद ही तुम्हारे पास चले आये हैं बिस्तर पर उठ बैठा। हज़रत मेरे फ़र्श के सरहाने बैठ गये जिस काम के लिए भेजा था उसके मुतअल्लिक़ पूछने लगे मैंने सब हाल सुनाया। हज़रत ने खुदा की हम्द की फिर एक क़ौम को ज़िक्र चल पड़ा मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हों हम उन से बरी हैं क्यों कि (नमाज़ में) वह नहीं कहते जो हम कहते हैं फ़रमाया वह हम को दोस्त रखते हुए वह नहीं कहते जो तुम कहते हो। मैंने कहा हां फ़रमाया बहुत सी बातें ऐसी हैं जिन्हें हम बजा लाते हैं तुम नहीं करते तो क्या हमारे लिए यह ज़ेबा है कि हम तुम्हें छोड़ दें, मैंने कहा नहीं मैं आप पर फ़िदा हूँ, फ़रमाया बहुत सी बातें खुदा करता है हम नहीं करते (जैसे ना फ़रमानों को रिज़्क़ देता है) तो क्या खुदा हमें छोड़ दे मैंने कहा खुदा की क़सम ऐसा नहीं है मैं आप पर फ़िदा हूँ। हम ऐसा नहीं करेंगे।

फ़रमाया उनको दोस्त रखो उनसे बेज़ार न हो मुसलमानों में कुछ ऐसे हैं जिन को सिहामे ईमान में से एक ही हिस्सा मिला है बाज़ को दो बाज़ को तीन बाज़ को चार, बाज़ को पांच, बाज़ को छ और बाज़ को सात, पस एक वाला दो के बार को उठाने की ताक़त नहीं रखता और दो वाला तीन का और तीन वाला चार का बार और चार वाला पांच का बार और पांच वाला छ का बार और छ वाला सात का बार उठा

नहीं सकता। मैं इसे एक मिसाल के ज़रिये समझाता हूं एक मुल्ला का पड़ोसी एक नसरानी था। मुल्ला ने उसे मुसलमान कर दिया। सुबहे सादिक़ से पहले मुल्ला ने उसका दरवाज़ा खटखटाया। उस ने पूछा कौन है? कहा मैं मुल्ला हूं, उस ने कहा कैसे आये? मुल्ला ने कहा वज़ू कर के अपने कपड़े पहनो और मेरे साथ मस्जिद में नमाज़ के लिए चलो। उस ने वज़ू किया कपड़े पहने और मुल्ला के साथ चल खड़ा हुआ। जब मस्जिद में पहुंचे तो मुल्ला ने कहा पहले सुन्नत नमाज़ें पढ़ लो। फिर सुबह सादिक़ नमूदार हुई तो दोनों ने नमाज़े सुबह अदा की उसके बाद जो नसरानी था उस ने घर जाने का इरादा किया मुल्ला ने कहा अब कहां जाते हो? दिन छोटा है नमाज़े ज़ुहर के दरमियान बहुत थोड़ा वक़्त है वह रूक गया जब ज़ुहर का वक़्त आया तो उसने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी। मुल्ला ने कहा ज़ुहर व अस्र के दरमियान थोड़ा सा वक़्त है अस्र की नमाज़ पढ़ लो। उसको रोक लिया। अस्र की नमाज़ के बाद उस बेचारे ने घर जाना चाहा। मुल्ला ने कहा अब मग़रिब का वक़्त तो बहुत ही क़रीब है जब नमाज़े मग़रिब पढ़ ली तो मुल्ला ने कहा अब सिर्फ़ एक नमाज़ बाक़ी रह गयी है उसे भी पढ़ते जाओ। वह रूक गया इशा की नमाज़ के बाद वह दोनों जुदा हुए। जब दूसरी सुबह हुई तो मुल्ला ने फिर उसका दरवाज़ा खटखटाया, पूछा कौन है कहा मैं हूं फ़लां, वज़ू करके कपड़े पहनो और मेरे साथ चलकर नमाज़ पढ़ो उसने कहा इस दीन के लिए किसी ऐसे को ढूंड लो जो मुझ से ज़्यादा फ़ारिग़ुल बाल हो, मैं ग़रीब आदमी हूं और बाल बच्चों वाला। हज़रत ने फ़रमाया इस शख़्स ने एक शैय में दाख़िल किया। और दूसरी से

निकाल दिया।



एक सौ उंचासवां बाब

ततिम्मा

इस से पहले बाब में इमाम अ० ने फ़रमाया था कि ईमान के सात सहेम हैं अगर उस सात को सात में ज़र्ब दिया जाए तो उंचास हिस्से हाते हैं अगर उन में से हर एक के दस दस हिस्से किये जाऐं तो चार सौ नव्वे होते हैं।

1. इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने फ़रमाया अगर लोग यह जान लेते कि अल्लाह तआला ने इस मख़लूक़ को कैसे पैदा किया है तो एक दूसरे को मलामत न करता। रावी ने कहा यह कैसे? फ़रमाया ख़ुदा ने ईमान के 49 जुज़ करार दिये हैं फिर उन में से हर एक के दस दस हिस्से किये उनको मख़लूक़ पर तक़सीम किया, किसी को दसवां हिस्सा दिया किसी को उससे दुना दिया। किसी को तेगुना यहां तक कि एक शख़्स में एक जुज़ पूरा हो गया। फिर एक शख़्स को एक जुज़े ताम पर दसवां हिस्सा दूसरे जुज़ का और ज़्यादा किया। दूसरे को एक जुज़ और दो दहाइयां दीं। तीसरे को तीन दहाइयां यहां तक कि एक शख़्स में जाकर दो जुज़ पूरे हो गये। इसी तरह तक़सीम होते होते एक शख़्स को 49 जुज़ कामिल हो गये। बस जिसको एक जुज़ का दसवां हिस्सा मिला वह इस पर क़ादिर नहीं कि दो दहाइयों वाले की तरह अमल करे और दो दहाइयों वाला तीन दहाइयों वाले की तरह अमल नहीं कर सकता और न पूरे

जुज़ वाला दो जुज़ वाले की तरह कर सकता है अगर लोग इस बात को जान लेते कि खुदा ने अपनी मख़लूक़ में सब को ईमान के अजज़ा बराबर नहीं दिये तो कोताही–ए–अमल पर एक दूसरे को मलामत न करना।

2. रावी कहता है कि फ़रमाया सादिक़े आले मुहम्मद अ0 ने ईमान के दस दर्जे है मिसल सीढ़ी के एक डण्डे के बाद दूसरे पर जाते हैं पस जो दूसरे पर है उसे पहले डण्डे वाले से यह न कहना चाहिये कि तू कुछ भी नहीं इसी तरह दसवीं वाले तक जो तुम से पस्त है उसे नज़र से न गिराओ वरन् जो तुम से ऊपर है वह तुम को नज़र से गिरा देगा। जब तुम किसी को अपने दर्जा से नीचे पाओ तो नर्मी से उसको अपनी तरफ़ उभारो और उस पर न लादो जिसके उठाने की उस में ताक़त न हो इस सूरत में उसका ईमान शिकस्ता हो जायेगा। और जिस ने किसी मोमिन के ईमान को शिकस्ता किया उस पर उसकी तलाफ़ी लाज़िम है।

3. सुदीर से मरवी है कि फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि मोमिनीन के लिए मनाज़िल व मरातिब हैं किसी के लिए एक है किसी के लिए दो, किसी के लिए तीन किसी के लिए चार किसी के लिए पांच किसी के लिए छ और किसी के लिए सात, अगर तुम एक वाले पर दो का बोझ रखोगे तो वह ताब न लायेगा। और दो वाले पर तीन का बोझ लादोगे तो वह घबरा जायेगा और अगर तीन वाले पर चार का बोझ रखोगे तो वह तिलमिला जायेगा और अगर चार वाले पर पांच का बोझ बार कर दोगे तो वह चींख उठेगा और अगर पांच वाले पर छ का बार रख दोगे तो वह बे ताक़त हो जायेगा और अगर छ वाले पर सात का बोझ रखोगे तो उसके उठाने से आजिज़ रहेगा। पस दरजाते

ईमान की यही सूरत है।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने कहा क्या बात है कि तुम एक दूसरे से बराअत का इज़हार करते हो बेशक मोमिनीन बाज़ बाज़ से अफ़ज़ल हैं बाज़ नमाज़ ज़्यादा पढ़ने में बाज़ से ज़्यादा हैं बाज़ की नज़र बाज़ से ज़्यादा गहरी है यानी अक्ल में ज़्यादा हैं यूं ही दरजात हैं।

एक सौ पचासवां बाब

निस्बते इस्लाम

1. फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन ने मैं नफ़ी–ए–शरीके बारीये तआला की हक़ीक़त को इस तरह बयान करता हूँ कि न मुझ से पहले किसी ने इस तरह बयान किया है और न मेरे बाद कोई बयान करेगा।

अहले हक़ जो बयान करेंगे वह मेरे बयान से माख़ूज़ होगा। इस्लाम यानी नफ़ी–ए–शरीके बारी उसी वक़्त होगी जब कौले रसूल स0 को कुबूल किया जाए और यह कुबूलियत दुरूस्त न होगी। जब तक यक़ीन यानी इतमिनाने ख़ातिर न हो और इतमीनान ख़ातिर न होगा। जब तक ख़ुदा व रसूल स0 को वअद की तरह वओद में भी रास्तगो न समझा जाये और ऐसा न होगा जब दिल इस पर ठेहरेगा नहीं और यह इक़रार हासिल न होगा। जब तक अवामिर व नवाही पर अमल न हो और यह अमल सहीह न होगा। जब तक उसकी सनद न हो कि साहिबे शरअ़ के अमल से माख़ूज़ है और इस में पैरवी ज़न व कयास नहीं। मोमिन दीन को अपनी राये से नहीं लेता।

मोमिन अपने दीन को अपने रब से लेता है। मोमिन

अपने यक़ीन को अपने अमल में देखता है और काफ़िर अपने इंकार को अपने अमल में देखता है क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरा नफ़्स है लोगों ने अपने मुआमले को समझा ही नहीं पस उनके हाल से इबरत हासिल करो। काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का ज़ाते बारी से इन्कार उनके आमाले ख़बीसा से ज़ाहिर होता है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ0 ने कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया। इस्लाम उरयां है उसका लिबास हया है उसकी ज़ीनत वक़ार उसकी मुरव्वत अमले सालेह है उसका एमाद (सुतून) परहेज़गारी है और हर शैय के लिए बुनियाद होंती है और इस्लामं की बुनियाद हम अहलेबैत की मुहब्बत है ऐसी ही हदीस इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने बयान की है।

3. हज़रत अबू जाफ़र सानी ने अपने पिदरे बुज़ुर्गवार से उन्हों ने अपने जद से रिवायत की है कि अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया अल्लाह ने इस्लाम को पैदा किया। उसके लिए वुसअ़त पैदा की है उसको नूर क़रार दिया। उसको क़िला बनाया। उसके नासिर बनाये। अरसा (सेहन खाना) उसका कुरआन है नूर उसकी हिकमत है क़िला उसका नेकी है और हमारे अहलेबैत अलैहिस्सलाम उसके नासिर हैं पस मेरे अहलेबैत और उनके शीओं और नासिरों को दोस्त रखो। जब मुझे जिब्रईल अलैहिस्सलाम समाए दुनिया की तरफ़ ले गये तो मेरा तआ़रूफ अहले आसमान से कराया। अल्लाह ने मेरी और मेरे अहलेबैत की और उनके शीओं की मुहब्बत मलायका के दिलों में पैदा की जो कयामत तक हिफ़ाज़त करेंगे आगाह हो अगर मेरी

उम्मत को कोई शख़्स बक़द्रे उमरे दुनिया अल्लाह की इबादत बराबर करता रहे फिर वह अल्लाह से ऐसी सूरत में मुलाक़ात करे कि उसके दिल में मेरे अहले बैत और मेरे शीओ की तरफ़ से अदावत हो तो अल्लाह उसके सीने को कुशादा न करेगा। मगर निफ़ाक़ से।

एक सौ इक्कयावन्वां बाब

खिसालुल मोमिन

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अ० ने मोमिन में आठ ख़सलतें होनी चायिें फ़ितना व फ़साद के वक़्त साहिबे क़ाबू हो। मुसीबतों में साबिर हो ऐश मे शुक्र गुज़ार हो जो रिज़्क़ अल्लाह ने दिया है उस पर कानेअ़ हो। दुश्मनों पर ज़ुल्म न करे और दोस्तों पर बोझ न डाले या बनावटी बातें न करे। उसका बदन उससे तअब में रहे लोग इससे राहत में रहें इल्म होमिन का दोस्त है हिल्म उसका वज़ीर है अक़्ल उसके लश्कर का अमीर है नर्मी उसका भाई है नेकी उसका बाप है।

2. हज़रत अबी अब्दिुल्लाह अ० ने अपने बाप से और उन्हों ने अमीरूल मोमिनीन से नक़्ल किया है कि हज़रत ने फ़रमाया ईमान के चार रूक्न हैं ख़ुदा पर तवक्कुल, हर अम्र को ख़ुदा के सुपुर्द करना, हुक्मे ख़ुदा पर राज़ी होना और अम्रे ख़ुदा को तसलीम करना।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने तुम सालेह नहीं हो सकते जब तक मअ़रिफ़त हासिल न करो और मअ़रिफ़त नहीं होगी जब तक तसदीक़ न करो और तसदीक़ न होगी जब तक तसलीम न हो। चार दरवाज़े हैं

अव्वल बग़ैर आख़िर का दुरुस्त न होगा। तीन वाले गुमराह हो गये और वह बहुत हैरान व सरगरदां रहे अल्लाह तआला सिर्फ़ अमले सालेह को कुबूल करता है और यह नहीं कुबूल किया जायेगा मगर वफ़ा से मश्रूत व मअ़हूद हो पस जिस ने इन शराएत को पूरा किया और अपने अहद को कमाल तक पहुंचा दिया तो उसने अपने अमल को पा लिया और अपने वादा को पूरा कर दिया अल्लाह ने अपने बन्दों को बतरीक़े हिदायत ख़बरदार कर दिया है और राहे दीन में रोशनी के मनारे क़ायम कर दिये हैं और उनको आगाह कर दिया है कि वह क्यों कर राह पर चलें और फ़रमा दिया है कि मैं बख़्शने वाला हूं उस शख़्स को जो तौबा करे ईमान लाये और अमले सालेह करे फिर हिदायत पाये और यह भी फ़रमाया अल्लाह मुत्तक़ियों के अमल को कुबूल करता है। पस जो अल्लाह से डरा और उसके हुक्म को बजा लाया तो वह अल्लाह से मिलेगा ऐसी हालत में कि आं हज़रत जो ख़ुदा की तरफ़ लाए हैं उस पर ईमान लाने वाला होगा अफ़सोस सद अफ़सोस क़ौम हलाक हुई और हिदयात याफ़्ता होने से पहले मर गई और ग़लती से लोगों ने यह गुमान किया कि वह ईमान लाए हैं हालांकि उन्हों ने ग़ैर मालूम तरीक़े से शिर्क किया जिस शख़्स ने इल्म को उसके दरवाज़ों से लिया उसने हिदायत पाई और जिस ने ग़लत दरवाज़ों से लिया उसने हलाकत का रास्ता अख़्तियार किया। ख़ुदा ने वली–ए–अम्र की इताअत को अपने रसूल की इताअ़त से मुत्तसिल किया है और इताअ़ते रसूल को अपनी इताअत से। पस जिसने वालियाने अम्र की इताअत को तर्क किया तो उसने न अल्लाह की इताअ़त की न रसूल स0 की,

और रसूल की इताअत इक़रार है उन चीज़ों का जिन को वह अल्लाह की तरफ़ से लाये। और ख़ुदा ने फ़रमाया है हर नमाज़ के वक़्त ज़ीनत करो और उन घरों को तलाश करो जिनको अल्लाह ने बुलन्द किया है और जिन में ज़िक्रे ख़ुदा होता है उस ने बताया कि वह ऐसे लोग हैं कि तिजारत या ख़रीद व फ़रोख़्त उनको यादे ख़ुदा से ग़ाफ़िल नहीं बनाती। उन्हों ने नामाज़ को क़ायम किया और ज़कात को दिया है और वह उस रोज़ से डरते हैं जिस में दिल और आंख की हालत बदल जायेगी अल्लाह ने अपने रसूलों को अपने हुक्म की तामील के लिए मख़्सूस कर लिया है और वह ख़ुलूस से तसंदीक़ करने वाले है उसंकी अपने अंदाज़ में ख़ुदा ने फ़रमाया है कोई उम्मत ऐसी नहीं कि उस में अज़ाबे ख़ुदा से डराने वाला न आया हो।

जिस ने जिहालत से काम लिया वह हैरान व सर गरदां रहा और जिस ने अक़्ल से काम लिया वह हिदायत याफ़्ता हो गया। ख़ुदा फ़रमाता है आंखे अंधी नहीं होतीं बल्कि सीनो में दिल अन्धे होते हैं जो अक़्ल से काम न लेगा वह हिदायत पाएगा कैसे? और क्यों कर अक़्ल से काम लेगा वह जो अज़ाबे ख़ुदा से डरता नहीं। अल्लाह के रसूल स0 का इत्तेबाअ़ करो और ख़ुदा की तरफ़ से जो नाज़िल हुआ है उसका इक़रार करो और जो उसके हिदायात के आसार हैं उनकी पैरवी करो क्यों कि वह लोग अमानते इलाहिया के निशान हैं और तक़्वा की अलामतें हैं जान लो जिस ने ईसा बिन मरयम का इंकार किया और उनके मा सिवा रसूलों का इक़रार किया वह ईमान नहीं लाया। रास्ता चलो हिदायत के मीनारों की तलाश के बाद और उनको पर्दों के पीछे तलाश

करो। अपने अम्रे दीन को कामिल करो और अपने रब अल्लाह पर ईमान लाओ।

4. इमाम रज़ा अलैहिस्सलाम ने अपने पेदरे बुज़ुर्गवार से रिवायत की है कि एक ग़ज़वा मे कुछ लोग रसूलुल्लाह स0 के पास आये आप स0 ने पूछा यह लोग कौन हैं? उन्हों ने कहा ए रसूलुल्लाह हम मोमिन हैं फ़रमाया तुम्हारा ईमान किस चीज़ से कामिल हुआ? उन्हों ने कहा हम मुसीबत में सब्र करते हैं और ऐश में शुक्र करते हैं? और क़ज़ाए इलाही पर राज़ी हैं? फ़रमाया यह लोग हलीम और आलिम हैं करीब है कि यह अपने इल्मे दीन की बदौलत नबी हो जायेंग अगर ऐसे ही हैं जैसा कि बयान करते हैं अपनी ज़रूरत से ज़्यादा मकान न बनाओ और ज़रूरत से ज़यादा खाने का सामान मुहैया न करो उस अल्लाह से डरो जिसकी तरफ़ लौट कर जाने वाले हो।

एक सौ बावनवां बाब

ततिम्मा दो बाबे साबिक़

1. असबग़ बिन नुबाता से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन ने घर में या क़स्र में जब कि हम सब जमा थे खुतबा फ़रमाया। फिर ख़त लिख कर पढ़ा गया लोगों के सामने और इब्ने कव्वा से मरवी है कि उस ने अमीरूल मोमिनीन से ईमान व कुफ़्र व निफ़ाक़ की तारीफ़ मालूम की। फ़रमाया बाद हम्द व सलात अल्लाह तआला ने इस्लाम को एक शरीअत बनाया और आसान किया उसके अहकाम अमल करने वालों पर और जो लोग उनके अहकाम बयान करने वालों से बरसरे जंग हुए उनकी नज़र में वह अहकाम

दुश्वार मअ़लूम हुए उस ने मुअ़ज़्ज़िज़ क़रार दिया उसको जिस ने उन से मुहब्बत की और सलामती क़रार दी उनके लिए जो दायर–ए–इस्लाम में दाख़िल हुए और हिदायत याफ़्ता बनाया उनको जिन्हों ने उससे रहनुमाई हासिल की। और मज़बूत रस्सी करार दिया उसके लिए जिस ने उस से तमस्सुक किया और दलील क़रार दिया उसके लिए जिसने उसके ज़रीए से कलाम किया और जिसने उससे रौश्नी चाही उसके लिए नूर क़रार दिया और जिसने उससे मदद चाही उसके लिए उसको मददगार बनाया और शाहिद क़रार दिया उसके लिए जिस ने उस के ज़रिये से मुख़ासमा किया और फ़तह दी उसको जिस ने उसके ज़रिया से दलील बयान की और शोहरत दी उसको जिस ने उसको महफ़ूज़ रखा और क़ाबिले वुसूक़ बात क़रार दिया जिस ने उसकी रिवायत की और जिस ने उस से फ़ैसला किया सहीह हकम बनाया और जिस ने तजुर्बा किया वह साहिबे हक़म बना और जिस ने अहकामें इस्लाम में तदब्बुर किया उसके लिए वह लिबास की तरह ज़ीनत बना। और जिस ने उससे दानायी हासिल की वह साहिबे फ़ह्म हुआ। और जिस ने उसे समझा वह साहिबे यक़ीन हुआ और जिस ने उसके हुसूल का इरादा किया वह साहिबे बसीरत हुआ और जिसने उससे फ़ेरासत हासिल की वह ख़ुदा की एक निशानी बना और जिसने उससे नसीहत हासिल की उसके लिए ज़रिया इबरत बना और जिस ने उसकी तसदीक़ की उस के लिए ज़रिय–ए–नजात हुआ और जिस ने उसके ज़रिये इसलाह चाही उसके लिए बाइसे हिफ़ाज़त हुआ और जिस ने उस के ज़रिये को तक़र्रुब बनाया उसके लिए नज़दीकी–ए–ख़ुदा का सबब बना और

जिस ने उस पर तवक्कुल किया वह लायक़े वुसूक़ हुआ और जिस में अपने अफ़आ़ल को उसके सुपुर्द किया उसको फ़राख़ी हालिस हुई और जिस ने उसको अच्छा जाना उस ने सबक़त हासिल की और जो उसकी तरफ़ तेज़ी से बढ़ा उसने नेकी हासिल की और जिस ने सब्र किया उसको जन्नत मिली (या वह उसके लिए सिपर हुआ) और जिस ने तक़वा अख़्तियार किय वह उसका लिबास हुआ और जिस ने उस से हिदायत हासिल की वह उसका पुश्त पनाह हुआ और जिस ने उस पर ईमान ज़ाहिर किया वह उसके लिए जाये पनाह बना और जिस ने उसकी फ़रमांबरदारी की वह अमन में रहा और जिस ने उसकी तसदीक़ की उसके लिए बाइसे उम्मीद हुआ और जिस ने क़नाअत की वह ग़नी हो गया। यह हक़ है। उसकी राह राहे हिदायत है और उसकी अलामात बुजुर्गी हैं और उसके सिफ़ात अच्छे हैं वह सब से ज़्यादा रोशन रास्ता है और उसके मिनारे हिदायत ताबां हैं उसका चिराग़ रौशन है उसकी ग़ायत बुलन्द है। उसकी दौड़ के मैदान में दौड़ आसान है वह तेज़ी से सबक़त करने वालों का जमा करने वाला उसका इन्तेक़ाम सख़्त दर्दनाक है उसका सामान मुकम्मल है उसका शहसवार करीमुत्तबअ़ है ईमान उसका रास्ता है आमाले सालेह उसके रौशन मिनार हैं, इल्मे दीन उसके चिराग़ हैं दुनिया उसकी दौड़ का मैदान है मौत उसकी ग़ायत है क़ियामत उसके जमा होने की जगह है। जन्नत सबक़त का मैदान है दोज़ख़ उसका मुक़ाम है तक़वा उसका सामान है नेकी करने वाले उसके शहसवार हैं ईमान पर इसतिदलाल आमाले सालेह से किया जाता है और आमाले नेक फ़िक़ह से बनते हैं और फ़िक़ह मौत से डराती

है और मौत पर दुनिया का ख़ातमा है और दुनिया से गुज़रने के बाद क़ियामत है और क़ियामत में जन्नत से नज़दीकी है और जन्नत दोज़ख़ियों के लिए बाइसे हसरत होगी और दोजख मुत्तक़ियों के लिए नसीहत है और तक़वा असासे ईमान है।

एक सौ तिरपनवां बाब

सिफ़ते ईमान

1. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अमीरुलमोमिनीन अलैहिस्सलाम से ईमान के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया गया। आप ने फ़रमाया – अल्लाह तआ़ला ने ईमान के चार सुतून क़रार दिये हैं, सब्र, यक़ीन, अ़द्ल और जिहाद और सब्र की चार शाखें हैं – शौक़, इश्तियाक़, जुहद व तरक़्क़ुब। जिसने जन्नत का इश्तियाक़ रखा उसने ख़्वाहिशात से तसल्ली हासिल की और जो दोज़ख़ से डरा और मुहर्रमात से बचा और जिस ने दुनिया से तर्के तअ़ल्लुक़ किया तो उसकी मुसीबतों को हक़ीर समझा और जिसने मौत पर नज़र रखी उसने नेकियों की तरफ़ सुबक़त की और यक़ीन की चार शाख़ें हैं अपनी ज़ीरक़ी को जगाये रखना (मुहकमाते कुरआ़नी के मआनी से) हिकमते इलाहियसा में ग़ौर व फ़िक्र (नक़्ले अहवाले अम्बियाए उम्मे साबिक़)। मक़ामाते इबरत की शिनाख़्त और सुन्नते उममे साबिक़ा को मद्दे नज़र रखना जिसने ज़ीरकी पर नज़र रखी उसने हिकमत को पहचान लिया। और जिसने हिकमत के सही मानी समझ लिये उसने इबरत को पहचान लिया और जिसने इबरत को पहचान लिया उसने सुन्नते अंबिया को पहचान लिया और

जिसने सुन्नत को पहचान लिया गोया वह अव्वलीन के साथ हो गया और उस राह की तरफ़ हिदायत पायी जो सबसे ज़्यादा मज़बूत है और नजात पाने वाले के मुतअ़ल्लिक़ उस अम्र पर नज़र रखी कि किसी वजह से उसको नजात हुई और हलाक होने वाले किस वजह से हलाक हुआ। खुदा ने जिसको हलाक किया उसकी मअ़सियत की वजह से किया और जिसको नजात दी उसकी इताअ़त की वजह से दी और अ़द्ल की भी चार शाखें हैं। गहरी समझ, इल्म में रुसूख़ और दानाई या हुक्म में शगुफ़्ता फूल हो। हिल्म में तरो ताज़ा बाग़ हो जो ऐसी समझ रखता होगा वह इल्म की तफ़सीर बयान कर पायेगा।

और वह साहेबे इल्म है उसने हुक्म की राहों को पहचान लिया और जिसने हिल्म से काम लिया उसने किसी अम्र में तफ़रीत न की वह लोगों में महमूद व पसन्दीदा होकर रहा और जिहादे नफ़्स की भी चार सूरतें हैं अव्वल अम्र बिल मारूफ़, दूसरे को बुराइयों से रोकना और तमाम मक़ामात पर सच बोलना बहुत फ़र्क़ है मोमिन और फ़ासिक़ में जिसने लोगों को अम्रे नेक की हिदायत की उसने मोमिन की कमर को मज़बूत किया और जिसने नही अ़निल्मुन्कर की (बुराई से रोका) उसने मुनाफ़िक़ की नाक रगड़ दी और उसके मक्र से अमान में रहा और जिसने हर जगह सच बोला उसने वह हक़ अदा किया जो उस पर था जिसने फ़ासिक़ को दुश्मन रखा और खुश्नूदिये खुदा के लिए उसपर ग़ज़बनाक हुआ और खुदा उस के दुश्मन पर ग़ज़बनाक होगा ये है ईमान और ये हैं उसके सुतून और शाखें।



एक सौ चौवनवां बाब

फ़ज़ीलते ईमान इस्लाम पर और फ़ज़ीलते ईमान पर यक़ीन

1. जाबिर से मरवी है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐ भाई ईमान अफ़ज़ल है इस्लाम से और यक़ीन अफ़ज़ल है इस्लाम से और दुनिया की कोई चीज़ यक़ीन से अफ़ज़ल नहीं।

2. वश्शा से मरवी है कि इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ईमान पर फ़ौक़ियत रखता है एक दर्जा और तक़वा ईमान से एक दर्जा बुलन्द है और यक़ीन तक़वा से एक दर्जा बुलन्द है और लोगों में कोई शैय यक़ीन से कम नहीं तक़सीम हुई।

3. हुमरान ने बयान किया मैंने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम को कहते सुना कि अल्लाह ने फ़ज़ीलत दी है ईमान को इस्लाम पर जैसे फ़ज़ीलत दी है कअ़बा को मस्जिदे हराम पर।

4. अबू बसीर से मरवी है कि मुझ से अबू अब्दिल्लाह ने फ़रमाया ऐ अबू मुहम्मद इस्लाम का एक दर्जा है मैंने कहा हां फ़रमाया ईमान इस्लाम से एक दर्जा बुलन्द है मैंने कहा हां फ़रमाया तक़वा ईमान से एक दर्जा बुलन्द है मैंने कहा हां। फ़रमाया तक़वा से यक़ीन एक दर्जा बुलन्द है मैंने कहा हां। फ़रमाया लोगों को यक़ीन में हिस्सा सब से कम मिला है तुम ने इस्लाम का अदना दर्जा लिया है लेहाज़ा अपने को इस से बचाओ कि वह तुम्हारे हाथ से अपने को बचाये।

5. यूनुस से मरवी है कि मैंने इमाम रिज़ा अ0

अलैहिस्सलाम से ईमान व इस्लाम के मुतअल्लिक़ पूछा। फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० ने कि दीन का नाम इस्लाम है ईमान इस में एक दर्जा ज़्यादा है और तक़वा ईमान से एक दर्जा ज़्यादा है और यक़ीन तक़वा से एक दर्जा ज़्यादा है और यक़ीन से कम कोई चीज़ लोगों में तक़सीम नहीं हुई। मैंने कहा यक़ीन की तारीफ़ क्या है फ़रमाया ख़ुदा पर तवक्कुल करना उसके अहकाम को क़ुबूल करना और हुक्मे ख़ुदा पर राज़ी होना और अपने मुआमेलात को ख़ुदा के सिपुर्द कर देना। मैंने कहा इसकी तफ़सीर बयान कीजिए। फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने इतना ही बयान फ़रमाया है।

6. फ़रमाया इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने ईमान इस्लाम से एक दर्जा बुलन्द है और तक़वा ईमान से एक दर्जा बुलन्द है और यकीन तक़वा से एक दर्जा बुलन्द है और यक़ीन से कम कोई चीज़ लोगों में तक़सीम नहीं हुई।



एक सौ पचपनवां बाब

हक़ीक़ते ईमान व यक़ीन

1. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि जब रसूलुल्लाह स० किसी सफ़र मे थे तो चन्द सवार हज़रत के पास आये और कहा या रसूलुल्लाह अस्सलामुअलैकुम फ़रमाया तुम कौन हो उन्हों ने कहा हम मोमिन है फ़रमाया तुम्हारे ईमान की हक़ीक़त क्या है कहा क़ज़ा व क़द्रे इलाही पर राज़ी होना अपने उमूर ख़ुदा के सुपुर्द कर देना हुक्मे ख़ुदा को क़ुबूल कर लेना। रसुलूल्लाह स० ने फ़रमाया यह

लोग उलमा हुक्मा हैं और क़रीब है कि अपनी हिकमत की वजह से अंबिया के मरतबे पर पहुंच जायें पस अगर तुम सच्चे हो तो ऐसा मकान न बनाओ जिन में तुम्हारी सुकूनत न हो और खाने का वह सामान जमा न करो जिनको तुम न खाओ अल्लाह से डरो तुम को उसी की तरफ़ जाना है।

2. इस्हाक़ बिन अम्मार से मरवी है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने फ़रमाया। रसूलुल्लाह स0 ने लोगों के साथ सुबह की नामज़ पढ़ी आप स0 ने सजदा में एक जवान को देखा वह अपना सर इधर उधर हिला रहा है उसका रंग ज़र्द है और जिस्म नहीफ़ व नज़ार है आंखें सर में गड़ गई हैं हज़रत ने फ़रमाया ऐ शख़्स तेरा क्या हाल है उसने कहा मैं यक़ीन पर हूँ रसूलुल्लाह स0 ने उसके कहने पर तअज्जुब किया और फ़रमाया हर यक़ीन की एक हक़ीक़त भी होती है तुम्हारे यक़ीन की हक़ीक़त क्या है उसने कहा या रसूलुल्लाह वह अम्र जिसने मुझे महजून किया है और रातों को जगाया है और सख़्त गर्म दिनों में प्यासा रखा है वह गमे आख़िरत है गोया अर्शे इलाही मेरी नज़र के सामने है और मैं मौक़िफ़े हिसाब में हूँ लोग महशूर हो रहे हैं मैं भी उनमें हूँ और गोया मैं अहले जन्नत को देख रहा हूँ और नेअ़माते जन्नत से फ़ैज़याब हैं और तख़तों में तकिया लगाये हुए एक दूसरे से तआरूफ़ कर रहे हैं और गोया मैं दोज़ख़ियों को देखता हूं कि वह अज़ाबे इलाही में मुबतेला चीख़ व पुकार कर रहे हैं गोया मैं अब भी अहले नार की चीख़ व पुकार सुन रहा हूँ और वह आवाज़ें मेरे कानों में गूंज रही हैं हज़रत रसूले ख़ुदा ने अपने असहाब से फ़रमाया यह है वह बन्दा जिस के दिल को अल्लाह ने नूरे ईमान से मुनव्वर कर दिया है हज़रत ने इससे

फ़रमाया तुम अपने हाल पर क़ायम रहो। उसने कहा या रसूलुल्लाह आप दुआ करें कि ख़ुदा मुझे शहादत का दर्जा दे हज़रत ने दुआ फ़रमाई चुनाचिह एक ग़ज़वे में वह नौ शहीदों के बाद दसवें नम्बर पर शहीद हुआ।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि हारिस बिन मालिक बिन नोअ्मान अंसारी रसूलुल्लाह के पास आये। हज़रत ने उनसे पूछा ऐ हारिस तुम्हारा क्या हाल है उन्हों ने कहा या रसूलुल्लाह हक़ पर ईमान लाने वाला हूं पूरा पूरा ईमान। फ़रमाया हर शैय की एक हक़ीक़त होती है। तुम्हारे इस क़ौल की हक़ीक़त क्या है उन्हों ने कहा मेरा नफ़्स दुनिया से बेज़ार हो गया है मैं रातों को जागा हूँ गर्म दिनों में प्यासा रहा हूँ (बहालते सौम) गोया मैं देखता हूं अपने रब के अर्श की तरफ़ और यह कि मेरी तरफ़ मौक़िफ़े हिसाब है गोया मैं देख रहा हूं अहले जन्नत को कि वह जन्नत में आ जा रहे हैं और गोया मैं सुनता हूं अहले नार की चीख़ व पुकार। हज़रत ने फ़रमाया यह व बन्दा है जिसके क़लब को अल्लाह ने मुनव्वर कर दिया है उसने आसारे क़ुदरत को देखा और साबित रहा उन्हों ने कहा या रसूलुल्लाह दुआ फ़रमाइये कि ख़ुदा मुझे दर्जए शहादत नसीब करे हज़रत ने दुआ की ख़ुदावन्दा हारिसा को शर्फ़े शहादत अता फ़रमा। कुछ दिन बाद रसूलुल्लाह स0 ने एक लशकर भेजा जिस में वह भी शामिल थे उन्हों ने आठ या नौ काफ़िरों को क़त्ल किया और फिर शहीद हुए।

एक और रिवायत में है कि उन्हों ने जाफ़र बिन अबी तालिब के साथ दस्वीं नम्बर पर शहादत पाई।

4. फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने कि हर

अम्रे हक़ की एक हक़ीक़त है और हर अम्रे सवाब के लिए नूर है।



एक सौ छप्पनवां बाब

तफ़क्कुर

1. फ़रमाया अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने कि बेदार करो अपने दिल को यादे ख़ुदा से और ख़ाली करो रात को अपना पहलू बिस्तर से (नमाज़े शब पढ़ो) और अपने रब अल्लाह से डरो।

2. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा लोग बयान करते हैं कि एक घड़ी का तफ़क्कुर बेहतर है तमाम रात खड़े होकर इबादत करने से। मैंने कहा तफ़क्कुर की सूरत क्या है फ़रमाया जब किसी ख़राबे या घर की तरफ़ से गुज़रे तो कहे तेरे साकिन कहां गये तेरे बनाने वाले क्या हुए। तू बोलता क्यों नहीं।

3. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अफ़ज़ल इबादत अल्लाह और उसकी कुदरत के बारे में हमेशा ग़ौर व फ़िक्र करना है।

4. फ़रमाया इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने रोज़े और नमाज़ की ज़्यादती का नाम इबादत नहीं बल्कि अस्ल इबादत अम्रे इलाही में तफ़क्कुर करना है।

5. अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तफ़क्कुर करना दअ़वत देता है नेकी और उस पर अमल की तरफ़।



एक सौ सत्तावनवां बाब

अल—मकारिम

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मकारिमे अख़लाक़ दस हैं अगर तुम में इसतेताअत है तो इन को ज़रूर लिए रहो वह ऐसी हैं कि बाप में होती हैं बेटे में नहीं होतीं, बेटे में होती हैं बाप में नहीं होतीं गुलाम में होती हैं आज़ाद में नहीं होतीं फ़रमाया वह क्या हैं फ़रमाया दिलेरी में रास्ती (ताकि तहव्वुर न हो) ज़बान की सेदाक़त, अदाए अमानत, सिला—ए—रहम, मेहमान नवाज़ी, साएल को खाना देना, नेकियों का बदला देना। अपने हम सफ़र को पनाह देना और उन सब की सरदार हया है।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा ने मख़सूस किया है अपने रसूलों को बेहतरीन अख़लाक़ से पस तुम अपने नफ़्सों का इम्तेहान लो अगर वह तुम्हारे अन्दर हों तो ख़ुदा की हम्द करो और समझ लो कि यह नेकी में है।

और अगर न हों तो ख़ुदा में मांगो और उनकी तरफ़ राग़िब हो रावी ने कहा हज़रत ने फ़रमाया वह दस हैं यक़ीन, क़ेनाअत, सब्र, शुक्र, हिल्म, हुस्ने ख़ुल्क़, सख़ा, ग़ैरत, शुजाअत, मुरव्वत। रावी ने कहा। बाज़ लोगों ने सिदक़ और अदाऐ अमानत को और ज़्यादा किया है।

3. फ़रमाया इमाम ज़ाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि हम पसंद करते हैं उन लोगों को जो अक़लमंद, दानिशवर, फ़क़ीह, बुर्दबार, नर्मी से सुलूक करने वाला, सब से ज़्यादा साबिर सब से ज्यादा सच्चा, सब से ज़्यादा बे वफ़ा हो। बेशक ख़ुदावंदे आलम ने मख़सूस किया है अपने अम्बिया को अच्छे अख़लाक़ के साथ।

जिस के अन्दर यह औसाफ़ हों तो उसे अल्लाह की हम्द व सना करना चाहिये और जिसके अन्दर ये औसाफ़ न हों तो उसे बारगाहे इलाही में गिरया व ज़ारी करना चाहिये। रावी कहता है मैंने आप की बारगाह में अर्ज़ की आप अ0 पर कुर्बान हो जाऊं वह औसाफ़ क्या हैं आप अ0 ने इरशाद फ़रमाया वह औसाफ़ परहेज़गारी, किफ़ायत शिआरी, बुर्दबारी, हया, सख़ावत, बहादुरी, ग़ैरत, हमीयत, नेकी, सेदाक़्त और अदाऐ अमानत हैं।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ0 ने अल्लाह तआ़ला ने पसंद किया है तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को पस तुम सख़ावत और हुस्ने ख़ुल्क़ को उसके साथ रखो।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ0 ने कि अमीरूल मोमिनीन अ0 ने फ़रमाया अरकाने ईमान चार हैं क़ज़ाए ईलाही पर राज़ी होना, ख़ुदा पर तवक्कुल करना, अपने मुआमले को अम्रे इलाही के सुपुर्द करना और हुक्मे ख़ुदा को तसलीम करना।

6. रावी कहता है कि इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया चार चीज़ें ऐसी हैं जिन से इस्लाम कामिल होता है अगर उसके गुनाह सर से पैर तक हों तो कोई नुक़सान न पुहुंचायेंगे वह रास्ती, हया, हुस्ने ख़ुल्क़ और शुक्र हैं।

7. फ़रमाया रसूलुल्लाह स0 ने क्या मैं तुम्हें बताऊं कि तुम में से सब से बेहतर कौन है? रावी कहता है हम ने कहा ज़रूर फ़रमाया रसूलुल्लाह स0 फ़रमाया बेहतर वह है जो परहेज़गार और पाक दिल हो, कुशादा दस्त हो और उसका दहन और शर्मगाह हराम से महफ़ूज़ हो, वालेदैन से नेकी करे और उसके अयाल ग़ैर की तरफ़ मुहताज न हो।



एक सौ अठ्ठावनवां बाब

फ़ज़ीलते यक़ीन

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हर शैय के लिए एक हद है। मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हूं तवक्कुल की हद क्या है फ़रमाया यक़ीन, मैंने कहा यक़ीन की हद क्या है? यह कि इताअ़ते ख़ुदा के बाद तू किसी चीज़ से न डरे।

2. सेहते यक़ीन के बारे में हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमया मर्द मुसलमान लोगों को राज़ी नही करता ख़ुदा को नाराज़ करके और उनको मलामत नहीं करता उस चीज़ से जो अल्लाह ने उनको दी। किसी हरीस की हिर्स रिज़्क़ को नहीं खींचती और न किसी कराहत करने वाले की कराहत उसको रोकती है अगर कोई शख़्स अपने रिज़्क़ से इस तरह भागे जैसे मौत से भागता है तो रिज़्क़ उसको उसी तरह पा लेगा जिस तरह मौत उसको पा लेती है। और यह भी फ़रमाया अल्लाह ने इंसाफ और अदल के साथ रूह और राहत को यक़ीन और रिज़ा में पैदा किया है और हुज़्न व गम को शक और ना ख़ुशी में।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने कम इल्म जो यक़ीन के साथ हो बेहतर है उस ज्यादा अमल से जो बग़ैर यक़ीन के हो।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि अमीरूल मोमिनीन अ0 ने फ़रमाया मिम्बर पर कोई शख़्स ईमान की लज़्ज़त को न पायेगा जब तक कि यह न जान ले कि जो ख़ुदा की तरफ़ से उसको पहुंचा है उस में ख़ता न

होगी और जो नहीं पहुंचा है वह उसे मिलेगा नहीं।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम एक ऐसी दीवार के नीचे क़ज़ाया फ़ैसला फ़रमा रहे थे जो झुकी हुई थी लोगों ने कहा उसके नीचे न बैठिये यह गिरने वाली है अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मौत उनके मामले की हिफ़ाज़त करने वाली है जब उठे तो दीवार गिर गई रावी ने कहा ऐसे बहुत से उमूर अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम से मुशाहिदे में आये।

6. सफ़वान जम्माल से मरवी है कि मैंने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से सूरह कहफ़ की उस आयत के मुतअल्लिक़ पूछा वह दीवार दो यतीम लड़कों की थी जिसके नीचे उनका ख़ज़ाना था लेकिन वह ख़ज़ाना अज़ क़िस्मे चांदी सोना न था बल्कि वह चार कलिमात थे जो मेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं, जिसने मौत का यक़ीन रखा उसके दांत हंसते में न खुले, जिसने हिसाबे रोज़े क़ियामत का यक़ीन किया उसके दिल में ख़ुशी न आई और जिस ने क़ज़ा व क़दरे ईलाही का यक़ीन रखा वह अल्लाह के सिवा किसी से न डरा।

तौज़ीह

इस बारे में मुफ़स्सिरीन का इख़्तेलाफ़ है कि दीवार के नीचे क्या ख़ज़ाना था सहीह यह मअ़लूम होता है कि वह क़ीमती अलवाह थीं जिन पर चार बातें तहरीर थीं और उनको उन लोगों से बचाना मक़सूद था जो अल्लाह पर ईमान न रखते थे। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

7. इमाम जाफ़र सादिक़ अ० से मन्कूल है कि अमीरूल मोमिनीन अ० ने फ़रमाया बन्दे को लज़्ज़ते ईमान नहीं मिल सकती जब तक यह जान न ले कि जो पहुंचने वाला है वह रूकेगा नही और जो रूकने वाला है वह मिलेगा नहीं जो नुक़साने दुनिया नाफ़ेए आख़िरत है वह अल्लाह के नज़दीक अच्छा है।

8. सईद बिन क़ैस हमदानी से मरवी है कि मैंने रोज़े जंग एक ऐसे शख़्स को देखा जिसके बदन पर सिर्फ़ दो कपड़े थे मैंने घोड़ा बढ़ाया ताकि देखूं यह कौन है मैंने देखा कि वह अमीरूल मोमिनीन हैं मैंने कहा ऐसे मक़ाम पर आप यह लिबास पहने हुए हैं ज़िरह वग़ैरह कुछ नहीं, फ़रमाया हां ऐ इब्ने कैस हर बन्दे के लिए ख़ुदा की तरफ़ से एक हाफ़िज़ है और उसके साथ दो फ़रिश्ते हिफ़ाज़त के लिए रहते हैं ख़ाह वह गिरे पहाड़ की चोटी से या गिरे कुंऐं में। जब हुक्मे ख़ुदा होता है यानी मौत आती है तो वह फ़रिश्ते अलग हो जाते हैं।

9. अली बिन असबात से मरवी है कि मैंने इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से सुना कि कुरआन में जिस ख़ज़ाने का ज़िक्र है उस दीवार के नीचे उन दो यतीमों का ख़ज़ाना था। उस में यह था बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, तअज्जुब है मुझे उस पर जो मौत का यक़ीन रखते हुए भी ख़ुश होता है और तअज्जुब है उस शख़्स पर जो तक़दीर का यक़ीन रखते हुए भी रंजीदा है और तअज्जुब है उस शख़्स पर जिसने दुनिया को और उसके बाशिंदो को अदलते बदलते हालात को देखा और फिर इस पर भरोसा भी किया और सज़ावार है उसके लिए जिसे अल्लाह ने अक़्ल दी है कि ख़ुदा को तोहमत न

लगाये। क़ज़ा व क़दर में और न उसको अपने रिज़्क़ का हल जाने। रावी कहता है मैंने कहा में आप पर फ़िदा हूं इसको लिखना चाहता हूं हज़रत ने अपने हाथ से दवात उठा कर मेरे सामने रखी मैंने हज़रत को बोसा दिया और दवात ले कर लिखना शुरू कर दिया।

10. अबू अब्दिल्लाह अ0 से मरवी है कि हज़रत अली अ0 के गुलाम क़म्बर आप से बड़ी मुहब्बत रखते थे जहां हज़रत जाते वह तलवार ले कर आपके साथ होते एक रात को वह आये तो हज़रत ने पूछा कैसे आये? उन्हों ने कहा ताकि ऐ अमीरूल मोमिनीन आप अ0 के पीछे चलूं फ़रमाया वाए हो तुझ पर आया तू अहले आसमान से मुझे बचायेगां या अहले ज़मीन से? कहा नहीं, बल्कि ज़माने वालों से फ़रमाया ज़मीन वालों में यह ताक़त नहीं कि वह बग़ैर इज़्ने ख़ुदा मेरा बाल बीका कर सकें लेहाज़ा लौट जा वह लौट गये।

11. इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम से किसी ने कहा आप दअ़वाऐ इमामत करते हैं दरआं हालेकि हारून की तलवार से ख़ून टपक रहा है। फ़रमाया ख़ुदा ने एक वादी सोने की बनाई है जिस की हिफ़ाज़त का काम उसने अपनी कमज़ोर मख़लूक़ चूंटी के सिपुर्द कर दिया है अगर शुतराने दो कोहान वहां जाना चाहें तो नहीं जा सकते।



एक सौ उनसठवां बाब

रिज़ा बिल क़ज़ा

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इताअते ख़ुदा में सब का सरदार सब्र है और ख़ुदा से राज़ी

रहना हर उस अम्र में जिसे बन्दा पसंद करे या ना पसन्द करे और जो अब्दे ख़ुदा है वह नहीं पसन्द करता अल्लाह से उस चीज़ में जो महबूब या मकरूह हो मगर वही जिस में उसके लिए बेहतरी हो ख़्वाह उसे पसंद करे या ना पसंद।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के मुतअल्लिक़ दाना तर इंसान वह है कि क़ज़ाऐ इलाही पर सब से ज़्यादा राज़ी हो।

3. अली इब्नुल–हुसैन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ख़ुदा की इताअ़त में सबसे बेहतर सब्र व रिज़ा है जिस ने सब्र किया और राज़ी रहा अल्लाह से उसके हुक्म पर ख़्वाह वह महबूब रहा हो या मकरूह तो ख़ुदा उसके लिए वही करता है जो उसके लिए बेहतर हो।

4. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया अल्लाह ने हदीसे कुदसी में फ़रमाया है मेरे मोमिन बन्दों में कुछ ऐसे हैं कि उनके दीनी मुआमेलात की इस्लाह मालदारी, कुशादगी और सेहते बदन से होती है लेहाज़ा मैं उनको ग़नी कर के, खुश हाल बना के, बदन की सेहत अता करके उनके दीन की इस्लाह कर देता हूं और बाज़ मेरे मोमिन बन्दें ऐसे हैं कि उनकी इस्लाह फ़क्र व फ़ाक़ा और बदन की बीमारी से होती है पस मैं उनको फ़क्र व फाक़ा और बीमारी में मुबतेला करता हूं पर इस तरह उनके दीन की इस्लाह होती है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरे मोमिन बन्दों की इस्लाह किस तरह हो सकती है मेरे ईमान लाने वाले बन्दे ऐसे भी हैं जो अपनी मीठी नींद खोकर और अपने नर्म म गर्म बिसतर छोड़ कर रातों को मेरी इबादत करते हैं और मेरी इबादत में अपने नफ़्सों को तअब में डालते हैं।

लेहाज़ा एक रात या दो रात के लिए मैं उस पर नींद को मुसल्लत कर देता हूं अपने रहम व करम की वजह से जो उस पर है और उसकी ज़िन्दगी बाक़ी रखने के लिए पस वह सुबह तक सोता रहता है फिर बेदार होता है दर आं हालेकि अपने नफ़्स से ना खुश होता है और उसको मलामत करता है और अगर मैं उसको इबादत जारी रखने पर छोड़ दूं तो उससे ख़ुद पसंदी आ जायेगी जो उसको फ़रेफ़्ता कर देगी उसके आमाल पर। पस उसका अपने आमाल पर फरेफ़्ता होना और अपने नफ़्स से राज़ी हो जाना उसके लिए बाईसे हलाकत होगा और वह गुमान करने लगेगा कि वह अपनी इबादत में आबिदों पर फ़ौक़ियत ले गया है और अपनी इबादत में हद्दे तक़सीर से आगे बढ़ गया है ऐसी सूरत में वह मुझ से दूर हो जायेगा। और ख़याल करने लगेगा कि वह मुझ से क़रीब हो गया है। पस ऐसी सूरत में मुझ से सवाब हासिल करने के लिए जो अमल वह लोग करेंगे अमल करने वालों पर एतेमाद न रहेगा। ऐसे लोग अगर जद्दो जेहद करें और अपने नफ़्सों को तअ़ब में डालें और अपनी उम्रें सर्फ़ करें मेरी इबादत में तो भी वह क़ासिर रहेंगे और मेरी इबादत की तह तक न पहुंच सकेंगे। जिस से उनको मेरी बख़शिश की तलब होती और मेरी जन्नतों की निअ़मतें हासिल करते और मेरे जवारे रहमत में बुलन्द दर्जे पाते लेकिन मेरी रहमत व फ़ज़्ल की वजह से उनको ख़ुश होना चाहिये और मेरी तरफ़ हुसने ज़न रखने की वजी से उनको इतमिनान से रहना चाहिए ऐसी सूरत में मेरी रहमत उनको पा लेगी और मेरी मर्ज़ी उन तक पहुंच जायेगी। मेरी मग़फ़िरत हासिल होगी मेरा अफ़्व उन को ढ़ांप लेगा बेशक में रहमान व रहीम ख़ुदा

हूं और यही मैंने अपना नाम रखा है।

5. इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जिस ने ख़ुदा से अक़्ल ली है वह ख़ुदा को रिज़्क़ देने में काहिल नहीं जानता और न उसको क़ज़ा व क़द्र के मुआमले में तुहमत लगाता है।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा ने फ़रमाया (हदीसे क़ुदसी) मैं अपने बन्दए मोमिन को जिस काम में लगाता हूं वह उस के लिए बेहतरी का बाइस होता है पस उसको चाहिए कि वह मेरी मशीअत पर राज़ी हो, मेरे इम्तेहान में सब्र करे और मेरी निअ़मतों का शुक्र अदा करे ऐसे बन्दे को ऐ मुहम्मद स0 मैं सिद्दीकों में लिखूं।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि खुदा ने हज़रते मूसा पर वही की कि मैंने अपने बन्दए मोमिन से ज़्यादा महबूब कोई मख़लूक़ पैदा नहीं की। उसकी बेहतरी के लिए उसे किसी मुसीबत में डालता हूं और इसी बेहतरी के लिए किसी चीज़ को उससे रोकता हूँ मैं जानता हूँ कि मेरे बन्दे के लिए क्या चीज़ बेहतरी का बाइस होगी पस उसको चाहिए कि बला पर सब्र करे और मेरी निअ़मत का शुक्र बजा लाये और मेरे हुक्म पर राज़ी हो मैं उसको अपने सिद्दीक़ीन में लिखूंगा। अगर वह मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ अमल करे और मेरे अम्र की इताअ़त करे।

8. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मुझे तअज्जुब होता है हालत से उस मर्दे मोमिन की क़ज़ा व क़र्दे इलाही में जो कुछ होता है उसकी बेहतरी के लिए और अगर उसका बदन क़ैंचियों से काटा जाये तो भी उसकी बेहतरी के लिए हो अगर दुनिया के मशरिक़ व मग़रिब का मालिक हो तो भी उसकी बेहतरी के लिए हो।

9. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि लोगों के लिए लाएक है कि वह क़ज़ा व क़र्दे इलाही को तसलीम करें जिस ने मअ़रिफ़ते ख़ुदा हासिल की और जो क़ज़ाऐ इलाही पर राज़ी हो और हुक्मे क़ज़ा व क़द्र उस पर जारी होगा। और अल्लाह उसका अज्र ज़्यादा करेगा और जो क़ज़ाए इलाही से ना ख़ुश हुआ उस पर भी हुक्मे क़ज़ा जारी होगा लेकिन वह अज्र से महरूम रहेगा।

10. फ़रमाया इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम ने कि ज़ुह्द के दस जुज़ हैं आला दर्जा ज़ुह्द का अदना दर्जा है वरअ का और वरअ़ का आला दर्जा अदना दर्जा है यक़ीन का और आला दर्जा यक़ीन का अदना दर्जा है रिज़ा का।

11. हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम अब्दुल्लाह बिन जाफ़र से मिले और फ़रमाया ऐ अब्दुल्लाह वह शख़्स कैसे मोमिन हो सकता है जो तक़सीमे इलाही से नाराज़ हो और अपनी मंज़िलत को हक़ीर समझता हो दर आं हालेकि अल्लाह उस पर हकम हो और जिसके दिल में अल्लाह की रिज़ा के सिवा दूसरा ख़ेयाल न गुज़रता हो मैं उसका ज़ामिन हूं कि अगर वह ख़ुदा से दुआ करेगा और अल्लाह उसकी दुआ कुबूल करेगा।

12. रावी कहता है मैंने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से पूछा कि मोमिन कैसे जाना जाए कि वह मोमिन है? फ़रमाया अम्रे ख़ुदा के तसलीम करने और राज़ी होने से उस अम्र पर जो उस पर वारिद हो ख़ुशी या रंज से।

13. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने रसूलुल्लाह स0 जो चीज़ हो जाती थी उसके मुतअल्लिक़ कभी यह न फ़रमाते थे कि उसका ग़ैर होता।



एक सौ साठवां बाब

तफ़्वीज़ इलल्लाह व तवक्कुल अलल्लाह

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि अल्लाह तआला ने वही की दाऊद अलैहिस्सलाम को जिस मेरे बन्दे ने मेरी पनाह ली और मेरी मख़लूक़ में से किसी की पनाह में न गया और मैंने उसकी ख़ालिस नीयत को पहचान लिया तो आसमान व ज़मीन और जो चीज़ उनके दरमियान है मैं उससे निकलने की जगह उसके लिए क़रार दूंगा और जिस मेरे बन्दे ने मुझे छोड़ कर किसी मख़लूक़ की पनाह ली और मैंने उसकी नीयत को जान लिया तो आसमान व ज़मीन के असबाब को जो उसके सामने हैं क़तअ़ कर दूंगा और ज़मीन को उसके नीचे मुज़तरिब कर दूंगा। और मैं परवाह न करूंगा चाहे वह किसी वादी में हलाक हो।

2. अबू हमज़ा सेमाली ने बयान किया कि फ़रमाया अली इब्नुल-हुसैन अ० ने कि मैं घर से निकला और एक दीवार पर तकिया लगा कर खड़ा हुआ कि एक शख़्स दो कपड़े पहने हुए आया और मेरे चेहरे को देख कर कहने लगा। ऐ अली इब्नुल-हुसैन अ० यह क्या बात है कि मैं आपको महज़ून व मग़मूम पा रहा हूं। क्या यह रंज दुनिया के मुतअल्लिक़ है? न होना चाहिए क्योंकि रिज़्के इलाही तो हर नेक व बद के लिए है मैंने कहा इस पर क्या रंजीदा होता वह तो ऐसा ही है जैसा कि तुम कहते हो उस ने कहा तो फिर आख़िरत के मुतअल्लिक़ है? उस पर न होना चाहिए अल्लाह का वअ़दा सच्चा है उस रोज़ वह मालिक क़ाहिर हुक्मरां होगा जो हर शैय पर क़ादिर है मैंने कहा इस पर क्यों

रंजीदा होते हो। जब कि ऐसा ही है जैसा तुम ने बयान किया उस ने कहा फिर बताओ क्या ग़म है? मैंने कहा ख़ौफ़ है इब्ने जुबैर के फ़ितने का इस से हमारे शीओं पर मुसीबत नाज़िल है। यह सुन कर वह हंसा और कहने लगा ऐ अली इब्नुल–हुसैन अ० क्या तुम ने कोई ऐसा शख़्स देखा है जिस ने ख़ुदा से दुआ की हो और उस ने क़ुबूल न की हो। मैंने कहा नहीं। उसने कहा क्या तुम ने कोई ऐसा शख़्स देखा है कि उस ने ख़ुदा पर तवक्कुल किया हो और ख़ुदा ने उसका काम पूरा न किया हो मैंने कहा नहीं। उसने कहा कोई ऐसा शख़्स पाया है जिस ने अल्लाह से सवाल किया हो और ख़ुदा ने उसे न दिया हो मैंने कहा उसके बाद वह ग़ाएब हो गया।

तौज़ीह

यह शख़्स या तो कोई फ़रिश्ता था या ख़िज़्र थे जिन्हों ने यह कलाम इमाम अ० की तसकीने क़ल्ब के लिए किया। यही रिवायत अली बिन इब्राहीम ने अपने बाप से और उसने इब्ने महबूब से की है।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मालदारी और इज़्ज़त गर्दिश करती रहती हैं जब तवक्कुल का मक़ाम पाने में कामयाब हो जाती हैं तो वह डेरे डाल देती हैं।

अली बिन हस्सान ने भी ऐसी ही रिवायत की है।

4. फ़रमाया सादिक़ आले मुहम्मद अ० ने जो बन्दा मुतवज्जेह होता है उस अम्र की तरफ़ जिसको ख़ुदा दोस्त रखता है तो ख़ुदा मुतवज्जेह करता है उस तरफ़ जिसे बन्दा चाहता है और जिस ने अल्लाह की पनाह ढूंढी ख़ुदा ने

उसको पनाह दी और जो अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ और उसकी पनाह में आगया इसकी क़तअन परवाह नही हुई कि आसमान ज़मीन पर गिर पड़े या कोई बला अहले ज़मीन पर नाज़िल हो जाये और यह बला उनको घेर ले वह अपने तक़्वे की वजह से ख़ुदाई गिरोह मे शामिल होता है। क्या ख़ुदा ने नहीं फ़रमाया मुत्तकी लोग अमन क़ी जगह में हैं। (सुरह दुख़ान)

5. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम से रावी ने इस आयत के मुतअल्लिक़ सवाल किया कि जो अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो वह उसके लिए काफ़ी है। फ़रमाया तवक्कुल अलल्लाह के दरजात हैं उन में से यह है कि तुम अल्लाह पर अपने तमाम मुआमेलात में तवक्कुल करो और जो सूरत तुम्हारे लिए पेश आये उस पर राज़ी रहो और यह जान लो कि वह तुम्हारे ख़ैर और फ़ज़्ल को रोकेगा नहीं, और यह समझ लो कि इस बारे में अल्लाह का हुक्म यही है अल्लाह पर तवक्कुल करो और अपने मुआमेलात उसके सिपुर्द करो और हर मुआमले में उस पर भरोसा करो।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जिस को तीन चीज़ें मिलीं उससे तीन चीज़ें दूर न रहीं जिस ने दुआ की कुबूलियत उसे अता हुई जिस को शुक्र मिला उसको उस चीज़ में ज़्यादती मिली। जिसे तवक्कुल मिला ख़ुदा ने उसके अग़राज़ को पूरा किया। फिर फ़रमाया क्या तू ने कुरआन में यह नहीं पढ़ा जिस ने ख़ुदा पर तवक्कुल किया तो वह उसके लिए काफ़ी हुआ। और फ़रमाया अगर तुम मेरा शुक्र करोगे तो मैं नेअ़मत को ज़्यादा करूंगा और फ़रमाया तुम मझ से दुआ मांगो मैं कुबूल करूंगा।

7. हुसैन बिन उलवान (जो मुख़ालिफ़ों में से है) रावी है कि मैं तलबे इल्म के लिए एक जगह गया सफ़र में मेरे पास ख़र्च के लिए कुछ न रहा। एक दोस्त ने पूछा तुम्हें हाजत बरारी की किस से उम्मीद है? मैंने कहा फुलां से उस ने कहा तुम्हारी हाजत पूरी न होगी और तुम अपनी उम्मीद को न पाओगे और इस जुस्तजू में कामयाबी न होगी मैंने कहा अल्लाह तुम पर रहम करे तुम ने यह कैसे जाना।

उसने कहा अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने मुझसे बयान किया कि उन्हों ने किसी किताब में पढ़ा है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुझे अपने इज़्ज़त व जलाल और बुर्जुगी और अर्श की क़सम जो मुझे छोड़ कर मेरे ग़ैर से उम्मीद को वाबस्ता करता है। मैं उसकी उम्मदी को क़तअ़ कर दूंगा और लोगों के सामने उसे ज़िल्लत का लिबास पहना दूंगा। मैं उसे अपने क़रीब से हटा दूंगा और अपने फ़ज़्ल से दूर कर दूंगा क्या वह शदाएद में मेरे गैर से दफ़अ़ की उम्मीद रखता है हालांकि शदाएद का दूर करना मेरे हाथ में है वह मेरे ग़ैर से उम्मीद रखता है और फ़िक्र के वक़्त ग़ैर का दरवाज़ा खटखटाता है हालांकि अबवाब की कुंजियां मेरे हाथ में हैं लोगों के दरवाज़े बन्द हैं। मेरा दरवाज़ा हर उस शख़्स के लिए खुला हुआ है जो मुझे पुकारे वह कौन हैं ऐसा जिस ने मुसीबतों में मुझ से उम्मीद वाबस्ता की हो और मैंने उसकी उम्मीद को क़तअ़ कर दिया हो। कौन है ऐसा? जिस ने मुझ से कुछ मांगा हो और मैंने उसकी ख़्वाहिश पूरी न की हो। मैंने अपने बन्दों की उम्मीदों को अपने पास महफ़ूज़ रखा है लेकिन वह मेरी हिफ़ाजत पर राज़ी नहीं। मेरे आसमान ऐसी मख़लूक़ से भरे पड़े हैं जो मेरी तसबीह से मुलूल नहीं होते।

मैंने उनको हुक्म दे दिया कि मेरे और मेरी मख़लूक़ के दरमियान दरवाज़ों को बन्द न करें इस पर भी मेरे बन्दों ने मुझ पर एअ़तेमाद न किया। क्या वह यह नहीं जानता कि जितनी मुसीबतें नाज़िल होती हैं उन्हें मेरे सिवा कोई नहीं खोल कर दूर कर सकता है मगर मेरे इज़्न के बाद यह क्या मुआ़मला है कि बन्दा मुझे भूला हुआ है। मैंने अपने जूद व करम से उसे क्या क्या नहीं दिया। फिर जब मैंने कोई नेकी सल्ब कर ली तो उस ने लौटाने का सवाल न किया और मेरे गैर से मांगा। क्या उसने मुझे कभी ऐसा पाया है कि मैंने क़ब्ले सवाल न दिया हो या मांगने वाले की दुआ़ कुबूल न की हों। क्या मैं बख़ील हूं कि मेरा बन्दा मुझे ऐसा समझता है क्या जूद व करम मेरे लिए नहीं क्या अफ़्व व रहमत मेरे हाथ में नहीं?

क्या मैं उम्मीद का महल नहीं, पस कौन है जो मुझ से क़तअ़े तअल्लुक़ करे तो क्या लोग ग़ैरों से उम्मीद लगाते डरते नहीं अगर तमाम अहले आसमान व ज़मीन बयक वक्त मुझ से मांगे तो मैं उन में से सिर्फ़ एक को इतना दूंगा जिसकी उम्मीद इन सबको हो और मेरे ख़ज़ाने में बक़द्र च्यूंटी के एक आज़ा के कमी न होगी। और कैसे कमी हो सकती है जब इस तमाम कारख़ाने का बनाने वाला मैं हूं हलाकत हो उसके लिए जो मेरी रहमत से मायूस हुआ और तबाही हो उसके लिए जिस ने मेरी ना फ़रमानी की और मुझ से उम्मीद न रखी।

8. रावी कहता है मैं मुक़ामे यम्बअ में मूसा बिन अब्दुल्लाह बिन हसन के साथ था मेरे पास ख़र्च को कुछ न रहा मुझ से इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की नसल से एक साहब ने कहा

यह किस से मिलने की उम्मीद है, मैंने कहा मूसा बिन अब्दुल्लाह से उन्हों ने कहा तुम्हारी हाजत बरारी न होगी। मैंने कहा क्यों? उन्हों ने कहा मैंने अपने आबा की एक किताब में यह लिखा देखा है फिर ऊपर वाली रवायत बयान की। मै ने कहा या इब्ने रसूलुल्लाह मुझे लिखवा दीजिये। उन्हों ने लिखवा दीं मैंने कहा अब इसके बाद मैं उन से न मांगूंगा।



एक सौ इकसठवां बाब

ख़ौफ़ व रजा

1. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से पूछा लुक़मान की वसीयत क्या थी? फ़रमाया वह अजीब बातें हैं उन में से ज़्यादा अजीब यह है कि उन्हों ने अपने बेटे से फ़रमाया अल्लाह से पूरी तरह डरते रहो अगर दो जहां की नेकी तुम्हारे पास हो तो भी वह अज़ाब दे सकता है और इससे पूरी उम्मीद रखो अगर दो जहां के गुनाह हों तो भी वह रहम कर सकता है। फिर हज़रत ने फ़रमाया मेरे पिदरें बुज़ुर्गवार फ़रमाया करते थे कि हर बन्दए मोमिन के दिल में दो नूर हैं नूरे ख़ौफ़ और नूरे रजा अगर उसे वज़न किया जाए तो इससे ज़्यादा न होगा और अगर इसे वज़न किया जाऐ तो उससे ज़्यादा न होगा।

2. इसहाक बिन अम्मार ने रिवायत की है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ए इसहाक़ अल्लाह से डर गोया कि वह तुझे देख रहा है अगरचे तू उसे नहीं देखता लेकिन वह तो तुझे देखता है और अगर तू ने यह समझा कि वह तुझे नहीं देखता तो तु ने कुफ़्र किया और

अगर यह जानते हुए कि वह तुझे देखता है तु ने गुनाह किया तो तू ने देखने वालों में सब से ज़्यादा हक़ीर उसे समझा।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जो अल्लाह से डरेगा अल्लाह हर शैय को उससे डरायेगा। और जो अल्लाह से नहीं डरेगा अल्लाह उसको हर शैय से डरायेगा।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जिस ने अल्लाह को पहचाना वह अल्लाह से डरा और जो अल्लाह से डरा उसका नफ़्स दुनिया से बेज़ार हुआ।

5. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह से कहा कि बाज़ लोग गुनाह करते हुए बख़शिश की उम्मीद रखते हैं और इसी ख़ेयाल मे मर जाते हैं फ़रमाया यह लोग ग़लत आरज़ूयें करते हैं झूठे हैं, यह रजा वाले नहीं हैं जो कोई किसी शैय का आरज़ूमंद होता है वह उसकी तलब में रहता है और जो किसी शैय से डरता नहीं वह उससे भागा करता है।

6. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ0 से कहा आपके दोसतों में कुछ लोग ऐसे हैं जिन को मआसी पर मलामत की जाती है लेकिन वह कहते हैं हमें उम्मीद बख़्शिश है फ़रमाया वह झूटे हैं वह हमारे दोस्त नहीं वह ऐसे लोग हैं जिन्हें आरज़ुओं ने चीर लिया है जो किसी शैय की उम्मीद करता है तो उसके हासिल करने के लिए काम भी करता है और जो किसी चीज़ से ख़ौफ़ खाता है तो उससे भागता है।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि इबादत की सूरत यह है कि अल्लाह से शदीद ख़ौफ़ रखे जैसा कि वह फ़रमाता है अल्लाह के बन्दों में उलमा उससे डरते हैं और ख़ुदा ने फ़रमाया है लोगों से न डरो। मुझ से डरों और

यह भी फ़रमाया है जो अल्लाह से डरता है ख़ुदा उसको बदी से निकाल देता है इमाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जो लोग अल्लाह से डरते हैं और परहेज़गार हैं उन्हें शरफ़ व शोहरत की परवाह नहीं होती।

8. रावी कहता है हज़रत अली इब्नुल–हुसैन अ0 ने फ़रमाया कि एक शख़्स मअ़ अहलो अयाल कश्ती में सवार हुआ कश्ती टूट जाने से सिवाए उस शख़्स की बीबी के और सब डूब गये वह औरत एक तख़ता के सहारे एक जज़ीरा के किनारे जा लगी उस जज़ीरा में एक डाकू था जिस ने हुरमते इलाहिया की हतक करने में कोई दक़ीक़ा फ़रूगुज़ाश्त न किया था। यह औरत जब उसके सामने आई तो उसने सर उठा कर उसको देखा और उस से कहने लगा तू अज़ क़िसमें इंसान है या अज़ क़िस्मे जिन्। उसने कहा मैं इंसान हूं उस ने बग़ैर उससे कुछ कहे उसे पकड़ कर लिटा दिया और ज़िना करना चाहा औरत के बदन में कपकपी पड़ गई उसने पूछा तू इतनी बेचेन क्यों है? उसने कहा मैं उस से डरती हूं और इशारा किया आसमान की तरफ़, मर्द ने कहा क्या तू ने इससे पहले भी ऐसा काम कराया है उसने कहा नहीं, क़सम है इज्ज़त व जलाले ख़ुदा की उसने कहा तू तो सिर्फ उसी काम की वजह से इतना ख़ौफ़ खा रही है हालांकि मैं ज़बरदस्ती तेरे साथ यह कारेबद करना चाह रहा हूं लेहाज़ा मैं तुझ से ख़ुदा से डरने का ज़्यादा मुसतहक़ हूं यह कह कर वह उठ खड़ा हुवा और बग़ैर इस से कलाम किये अपने घर की तरफ़ चला गया और अब उसका काम सिवाए तौबा और अल्लाह की तरफ़ रूजूअ़ करने के कुछ और न रहा।

वह राह में चला जा रहा था कि एक राहिब हमसफ़र

मिला, कड़ी धूप थी राहिब ने उस जवान से कहा। अल्लाह से दुआ करो कि वह हमारे साये के लिए बादल भेज दे, धूप बहुत सख़्त हे उसने कहा मैंने कौन सी नेकी की है कि अल्लाह से दुआ करने की जुरअत करूं उस ने कहा अच्छा में दुआ करता हूं तुम आमीन कहो। चुनांचें राहिब ने दुआ की और जवान ने आमीन कही थोड़ी देर न गुज़री थी कि बादल आ गया और उसके साया में दोनों चलने लगे और दिन में देर तक चलते रहे फिर उन्हों ने अलग अलग रास्ता अख़्तियार किया एक रास्ते पर वह जवान चला दूसरे पर राहिब, बादल उस जवान के साथ हो गया। राहिब ने कहा तू मुझसे बेहतर है तेरी दुआ कुबूल हुई मेरी नहीं पस मुझे बता तेरा क़िस्सा क्या है? उस ने औरत के वाक़िआत बयान किये। उसने कहा तेरे इस ख़ौफ़ की वजह से ख़ुदा ने तेरे गुनाह बख़्श दिये। पस आगे के लिए ख़बरदार रहना।

9. रावी कहता है मैंने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम को कहते हुए सुना कि रसूलुल्लाह स0 के ख़ुतबों में से जो मैंने याद किया यह है कि हजरत ने फ़रमाया लोगो। तुम्हारे लिए दलाएल व बराहीन है और तुम्हारे लिए एक निहायत है पस अपनी निहायत पर नज़र रखो आगाह हो कि बन्दए मोमिन दो कुव्वतों के दरमियान काम करता है एक उम्र का वह हिस्सा है जो गुज़र चुका वह नहीं जानता कि अल्लाह उसके मुतअल्लिक़ क्या करेगा। और उम्र का एक वह हिस्सा जो बाक़ी है वह नहीं जानता कि अल्लाह उसके मुतअल्लिक़ क्या फ़ैसला करेगा। पस चाहिए कि बन्दए मोमिन जो काम करे वह उसके नफ़्स के लिए मुफ़ीद हो और दुनिया से आख़िरत के लिए हासिल करे और जवानी में बुढ़ापे से पहले और ज़िन्दगी में मौत से पहले। क़सम उस ज़ात की जिसके

कब्ज़ए कुदरत में मुहम्मद स0 की जान है कि दुनिया के बाद कोई उज़्र कुबूल न होगा इस दुनिया के अलावा सिवाए जन्नत व नार कोई और घर नहीं।

10. आयतः जो अल्लाह के सामने खड़े होने से डरा उसके लिए दो जन्नतें हैं: के मुतअल्लिक़ फ़रमाया जिस ने यह जान लिया कि अल्लाह हर उस काम को देखता है जो वह करता है और हर उस बात को सुनता है जो वह कहता है और उसके हर अमल को अच्छा हो या बुरा जानने वाला है तो वह शख़्स आमाले क़बीहा से रूक जाता है यह मतलब है इस आयत का कि जिस ने ख़ौफ़ किया मकामे रब से और बुरी ख़्वाहिशों से नफ़्स को रोका।

तौज़ीह

दो जन्नतों से मुराद एक तो बहिश्ते दुनिया है वह हासिल होती है क़ज़ाए इलाही पर राज़ी होने से और दूसरी बहिश्ते आख़िरत है जो जज़ा है मरज़िये इलाही पर राज़ी होने की।

11. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ0 ने कोई मोमिन, मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि ख़ौफ़ करने वाला और उम्मीद करने वाला न हो और ऐसा नहीं हा सकता जब तक ख़ौफ़ और रजा के मुआमेलात पर अमल करने वाला न हो।

12. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ0 ने मोमिन दो ख़ौफ़ों के दरमियान है एक वह गुनाह जो गुज़र गया। नहीं जानता कि ख़ुदा ने उसके मुतअल्लिक़ क्या किया दूसरे बाक़ी उम्र के मुतअल्लिक़ नहीं जानता कि कैसी मुहलिक ग़लतियों का मुर्तकिब होगा। वह सुबह करता है ख़ौफ़ की

हालत में और उसकी इसलाह नहीं कर सकता मगर ख़ौफ़।

13. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि मेरे बाप ने फ़रमाया है कोई बन्दा-ए-मोमिन ऐसा नहीं जिसके कल्ब में दो नूर न हों नूरे खौफ और नूरे रजा अगर इन दोनों को वज़न किया जाए तो एक दूसरे पर फौक़ियत न होगी।।



एक सौ बासठवां बाब

अल्लाह अज्ज़-व-जल्ल के साथ हुस्ने ज़न्

1. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० ने कि रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि अमल करने वाले अपने अमल में मेरे सवाब पर भरोसा नहीं करते यह लोग अगर कोशिश करें और उम्र भर अपने नफ़्सों को मेरी इबादत करके तअ़ब में डालें तो भी वह क़ासिर रहेंगे। और मेरी इबादत की तह तक न पहुंच सकेंगे जिस से जुस्तुजू कर लें मेरे इन्आ़म व इकराम की और उन निअ़मओं की जो मेरी जन्नत में हैं और वह बुलन्द दरजात जो मेरे जवार में हैं लेकिन यह सब कुछ मेरी रहमत के बग़ैर नहीं हो सकता। पस लोगों को चाहिये कि मुझ से डरें और मेरे फज़ल के उम्मीदवार रहें मेरी तरफ़ से अच्छा गुमान रखें तो मुतमइन हो जायेंगे।

ऐसी सूरत में मेरी रहमत उनको पा लेगी और मेरी रेज़ा और मग़फ़िरत उन तक पहुंच जायेगी। और मेरा अफ़्व उन को ढांप लेगा मैं रहमान व रहीम अल्लाह हूं और इसी लिए

मेरा यह नाम है।

2. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से मरवी है कि हम ने किताबे अली में पाया कि रसूलुल्लाह स0 ने मिम्बर पर फ़रमाया क़सम है उस ख़ुदा की जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं। किसी मोमिन को दुनिया व आख़िरत की नेकी उस वक़्त तक कभी नहीं दी गई जब तक अल्लाह के साथ उसका हुस्ने ज़न न हो और अपनी उम्मीदों को उससे वाबसता न रखता हो और हुसने ज़न ख़ल्क़ का मालिक न हो। मोमिनीन की ग़ीबत से बाज़ न रहे और क़सम है मअबूदे यकता की। ख़ुदा किसी मोमिन को बाद तौबा इस्तिग़फ़ार मुअज़्ज़ब नहीं करता। लेकिन जब ख़ुदा से उसको सूए ज़न हो और उम्मीद मे कोताही हो या बद ख़ुल्क़ी हो या मामिनों की ग़ीबत करे। ख़ुदा की क़सम बन्दा–ए–मोमिन का हुस्ने ज़न ख़ुदा के साथ उसी सूरत में होगा कि वह मोमिन अपने ज़न के मुताबिक़ ख़ुदा को समझे भी यानी यह न जाने कि ख़ुदा कारसाज़े मुतलक़ है क्योंकि सब कुछ उसकी के हाथ मे है वह हया करता है इस बात से कि बन्दा मोमिन हुसने ज़न के बाद अपने ज़न के ख़िलाफ़ अमल करे और अपनी उम्मीद उससे क़तअ़ करे। पस अल्लाह की तरफ़ अच्छा गुमान रखो और उसी तरफ़ रग़बत करो।

3. इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह के साथ हुस्ने ज़न रखो ख़ुदा हदीसे क़ुदसी में फ़रमाता है, मैं बन्दए मोमिन के नज़दीक हूं अगर वह मेरे मुतअल्लिक़ अच्छा गुमान रखता है तो उसके लिए बेहतरी है और अगर बुरा गुमान रखता है तो बुराई है।

4. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने

खुदा के साथ हुस्ने ज़न यह है कि इसी से उम्मीद रखी जाऐ और उसी का गुनाह करने से ख़ौफ़ किया जाए।



एक सौ तिरसठवां बाब

एतराफ़े तक़सीर

1. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने अपने एक फ़रज़न्द से कि बेटा कोशिश को अपने लिए लाज़िम क़रार दो और इबादत व इताअ़ते ख़ुदा में अपनी तक़सीर के मोअ़तरिफ़ रहो क्योंकि ख़ुदा की इबादत का हक़ कोई अदा नहीं कर सकता।

2. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जाबिर जअ़फ़ी से। ख़ुदा तुम को नुक़्स और तक़सीर से ख़ारिज न कर दे।

3. रावी कहता है मैंने इमाम काज़िम अलैहिस्सलाम से सुना कि बनी इस्राईल का एक शख़्स चालीस साल से इबादत कर रहा था फिर उस ने कुरबानी की जो कुबूल न हुई। उस ने अपने नफ़्स से कहा जो कुछ हुआ तेरी वजह से हुआ गुनाह तेरा ही है। ख़ुदा ने उसे वही की। तेरा अपने नफ़्स की मज़म्मत करना अफ़ज़ल है तेरी चालीस साला इबादत से।

4. फ़रमाया अबुल हसन अलैहिस्सलाम ने अकसर यह दुआ किया करो। ख़ुदावन्दा मुझे रिआ़यती ईमान वाला क़रार न दे और मुझे तक़सीर से ख़ारिज न कर, मैंने आरियतन ईमान दिये हुओं को तो पहचान लिया और जान लिया कि एक शख़्स आरियतन दीन में आता है। फिर उससे निकल

जाता है लेकिन तक़सीर से ख़ारिज होने के क्या मअ़नी। फ़रमाया जो अमल तुम करो तो उसे अपने दिल में कम ही समझो क्यों कि जो अमल बन्दों का ख़ुदा और उसके नफ़्स के दरमियान है वह उनमें ज़रूर कोताही करने वाले हैं, सिवाए उनके जिनको ख़ुदा ने मासूम बनाया है।



एक सौ चौसठवां बाब

इताअ़त व तक़्वा।

1. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने मज़ाहिबे बातिला तुमको मज़हबे हक़ से न हटा दें ख़ुदा की क़सम हमारा शिया वही है जो ख़ुदा की इताअत करे।

2. फ़रमाया हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुतबा बयान फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा ने हज्जतुल विदाअ़ में और फ़रमाया। लोगो! वल्लाह कोई शै तुमको जन्नत से करीब करने वाली और दोज़ख से दूर रखने वाली नहीं है मगर वह जिसका मैने तुमको हुक्म दिया है और कोई शै तुम को नार से क़रीब करने वाली और जन्नत से दूर करने वाली नहीं, मगर वही जिसकी नही मैंने की है और आगाह हो कि जिब्रईल ने मेरे दिल में यह वही डाली कि कोई शख़्स नही मरता जब तक कि उसका रिज़्क़ पूरा ना हो। अल्लाह से डरो और उसकी तलब में पूरी कोशिश करो और तुम में से कोई ऐसी रोज़ी तलाश न करे जो हलाल न हो। कोई अल्लाह से नहीं पा सकता सिवाए उसकी इताअत के।

3. इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जाबिर से

फ़रमाया। ऐ जाबिर सिर्फ़ यह कहना कि हम अहलेबैत से मुहब्बत रखते हैं शीआीयत के लिए काफ़ी है ख़ुदा की क़सम हमारा शीया नहीं हो सकता मगर जबकि वह अल्लाह से डरे उसकी इताअत करे और ऐ जाबिर यह नहीं हो सकता बग़ैर तवाज़ोअ़ ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़, अदाए अमानत, कसरते ज़िक्रे ख़ुदा, रोज़ा नमाज़, वालिदैन से नेकी, हुस्ने सुलूक, हमसाया फ़क़ीरों और मिसकीनों, मक़रूज़ों और यतीमों से और क़ौल में सेदाक़त हो, कुरआन की तिलावत हो और लोगों के बारे में नेकी के सिवा कुछ न कहना और अपने क़बाएल की अशया में अमीन होना। जाबिर ने कहा ऐ फ़र्ज़नदे रसूल इस ज़माने में ऐसा आदमी तो कोई नज़र नहीं आता। फ़रमाया। ऐ जाबिर! मज़ाहिबे बातिला तुमको मज़हब से हटा न दें क्या यह काफ़ी है एक शख़्स के लिए कि मैं अली अलैहिस्सलाम को दोस्त रखता हूं और उसके सिवा वह करने वाला कुछ न हो ऐसे ही अगर वह कहे कि मैं रसूलुल्लाह को दोस्त रखता हूं। रसूल अली अलैहिस्सलाम से बेहतर हैं? उसके बाद वह रसूल स0 की सीरत की पैरवी न करे और उनकी सुन्नत पर उसका अमल न हो तो हज़रत की मुहब्बत उसे कुछ फ़ायदा न देगी। अल्लाह से डरो और सहीह अमल करो जो पेशे ख़ुदा मक़बूल हो किसी शख़्स और ख़ुदा के दरमियान क़राबत नहीं है। ख़ुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब व मुकर्रम वह है जो सब से ज़्यादा परहेज़गार है और उसकी इताअत अमलन ज़्यादा करने वाला है ऐ जाबिर कोई ख़ुदा का मुक़र्रब नहीं बन सकता मगर इताअ़त से उसके बग़ैर हमारे साथ होना बराअत नहीं और न ख़ुदा पर कोई हुज्जत है जो अल्लाह का मुतीअ़ है वह हमारा दोस्त है जो अल्लाह का

गुनहगार है वह हमारा दुश्मन है। हमारी विलायत को कोई नहीं पा सकता मगर अमल और परहेज़गारी से।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने रोज़े क़ियामत लोग क़बरों से उठ कर दरवाज़–ए–जन्नत पर आयेंगे उसे खटखटाऐंगे उनसे पूछा जायेगा तुम कौन हो? वह कहेंगे हम अहले सब्र है उन से कहा जायेगा तुम ने किस चीज़ पर सब्र किया वह कहेंगे हम ने इताअ़ते ख़ुदा में हर मुसीबत पर सब्र किया और मआसी से रूकने पर हर मुसीबत पर सब्र किया अल्लाह कहेगा उन्हों ने सच कहा उन्हें जन्नत में दाख़िल करो। ख़ुदा फ़रमाता है सब्र करने वालों को बेहिसाब अज्र दिया जायेगा।

5. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम नेकि अमीरूलमोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तक़वा के साथ कोई अमल कम नहीं होता और कैसे कम समझा जाए वह अमल जिसको ख़ुदा क़ुबूल करे।

6. अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम से मरवी है कि आप ने फ़रमाया। ऐ गिरोहे शीआ़, ऐ शीअ़याने आले मुहम्मद स0 तुम तकिया की तरह बनो जिस पर एतेमाद किया जाता है ताकि ग़ाली तुम्हारी तरफ़ लौटे और पसमांदा तुम से मिल जाए। सअ़द अंसारी ने कहा मैं आप पर फ़िदा हूं ग़ाली कौन है? फ़रमाया वह लोग जो हमारे में वह बातें कहते हैं जो अपने लिए नहीं कहते। यह लोग हम में से नहीं और न हम उन में से हैं उस ने कहा ताली कौन है? फ़रमाया जो अमले खैर का इसतिंबात अमले इमाम से करता है वह नेकी को पा लेता है और इस पर उसको अज्र मिलता है फिर हम से मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया। हमारे साथ रहने में बराअत नहीं, क्यों कि

हमारे और अल्लाह के दरमियान कोई क़राबत नहीं और न हमारे लिऐ अल्लाह पर कोई हुज्जत है. खुदा से तक़र्रुब हासिल नहीं किया जा सकता मगर इताअत से जो अल्लाह की इताअत करेगा उसको हमारी विलायत नफ़ा देगी और जो आसी होगा हमारी विलायत उसको नफ़ा न देगी। वाए हो तुम पर शैतान से धोखा न खाओ, शैतान से धोका न खाओ।

7. रावी कहता है मैं हज़रत अबू अब्दिल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर था हम ने अपने आमाल का ज़िक्र छेड़ा। मैंने कहा मेरा अमल किस क़दर कमज़ोर है। फ़रमाया असतग़फ़िरूल्लाह उसे छोड़ो कम अमल अगर तक़वा के साथ हो तो वह बिला तक़वा के ज़्यादा अमल से बेहतर है मैंने कहा बिला तक़वा के अमले कसीर कैसे होगा? फ़रमाया उसकी मिसाल उस शख़्स की सी है जो खाना खिलाता है और अपने पड़ोसियों से अच्छे तरीक़े से पेश आता है और मेहमान नवाज़ी करता है लेकिन जब उसके लिए हराम का दरवाज़ा खुलता है तो वह उसमें दाख़िल हो जाता है पस यह अमल बिला तक़वा है और दूसरा वह है जिसके पास कुछ नहीं जब उसके लिए हराम का दरवाज़ा खुलता है तो वह उस में दाख़िल नहीं होता।

8. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से सुना खुदा ने किसी बन्दे को मआसी की ज़िल्लत ने निकाल कर अगर तक़वा की इज़्ज़त दी है तो उसको बग़ैर माल के ग़नी बना दिया है और बग़ैर क़बीले की मदद के इज़्ज़त दी है और बग़ैर इंसान उसे तंहाई से मानूस बना दिया है।



एक सौ पैंसठवां बाब

वरअ़

1. रावी कहता है मैंने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से कहा कि चन्द साल में एक बार हाज़िरे ख़िदमत होता हूं पस मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये कि मैं उस पर अमल करूं। फ़रमाया ख़ुदा से डरना, गुनाहों से परहेज़ करना और हुसूले नेकी की कोशिश करना और जब गुनाह से न बचा जाये तो यह कोशिश फ़ायदा न देगी।

2. रावी कहता है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ० से सुना अल्लाह से डरो और अपने दीन की हिफ़ाज़त परहेज़गारी से करो।

3. रावी कहता है कि हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हमको नसीहत की इताअते ख़ुदा का हुक्म दिया और दुनिया से रग़बत न रखने के लिए फ़रमाया। फिर फ़रमाया परहेज़गारी को अपने लिए लाज़िम क़रार दो, ख़ुदा की रहमत बग़ैर परहेज़गारी के नहीं मिलती।

4. फ़रमाया सादिक़े आले मुहम्मद अलैहिस्सलाम ने बग़ैर परहेज़गारी इजतिहाद नाफ़ेअ़ नहीं।

5. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने परहेज़गारी सख़्त तरीन इबादत है।

6. अबू सब्बाह कनानी ने अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से कहा किस क़दर तकलीफ़ होती है आपके बारे में हम को लोगों से? फ़रमाया मेरे बारे में तुमको लोगों से क्या आज़ार पहुंचता है अबू सब्बाह ने कहा मुझ से हमेशा एक शख़्स से

गुफ़्तगू हुआ करती है वह कहता है जाफ़री ख़बीस होते हैं फ़रमाया लोग मेरी वजह से तुमको अ़ैब लगाते हैं। अबू सब्बाह ने कहा हां। फ़रमाया यह इस वजह से है कि तुम में मेरे सच्चे पैरौ बहुत कम हैं मेरे असहाब तो वह हैं जो परहेज़गारी में ज़्यादा सख़्त हों अपने ख़ालिक़ के लिए अमल करें और उसके सवाब की उम्मीद रखें ऐसे हैं मेरे असहाब।

7. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाकि़र अलैहिस्सलाम ने कि हदीसे कुदसी में ख़ुदा ने फ़रमाया है ऐ इब्ने आदम जो मैंने तेरे लिए हराम कर दिया है उस से बच तो तू परहेज़गारों में से हो जायेगा।

8. रावी ने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से पूछा कि परहेज़गार आदमी से कौन मुराद है फ़रमाया जो महारिम से परहेज़ करता है।

9. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने ऊपर लाज़िम करो तक़वा, परहेज़गारी, कोशिश अम्रे दीन में सच बात कहना। अमानत अदा करना, पड़ोसी से नेकी और अपने अमल से अपने दीन की तरफ़ लोगों को बुलाना न सिर्फ़ अपनी ज़बानों से बल्कि अपने आमाल से अपने अइम्मा के लिए ज़ीनत बनो और बद आमाली से उनके लिए बाइसे तंग न बनो और अपने रूकूअ़ व सुजूद को तूल दो कि जब तुम तूल देते हो तो शैतान तुम्हारे पीछे से कहता है हाय इसने इताअ़त की और मैंने ना फ़रमानी की, उस ने सजदा किया और मैंने सजदे से इन्कार किया।

10. रावी कहता है कि मैं हज़रत अबू अब्दिल्लाह की ख़िदमत में हाज़िर था कि ईसा बिन अब्दुल्लाह अल–कुम्मी हाज़िर हुआ। हज़रत ने मरहबा कहा और अपने क़रीब बिठा

कर फ़रमाया। ऐ ईसा वह लोग हम से नहीं और न उनके लिए कोई करामत व बुजुर्गी है कि अगर किसी शहर में हमारे शीआ एक लाख और उससे भी जायद हों और हमारे मुख़ालिफ़ों में एक शख़्स भी उन से परहेज़गार हो (क्योंकि उस में हमारी दोस्ती बदनाम होगी।)

11. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह से अर्ज़ की। मुझे नसीहत फ़रमाइये। फ़रमाया मेरी नसीहत यह है कि अल्लाह से डरो, परहेज़गार बनो, इबादत में मशक़्क़त को बर्दाशत करो और यह जान लो कि यह मशक़्क़त फ़ायदा न देगी जब तक परहेज़गारी न हो।

12. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने हमारी मदद परहेज़गारी से करो जो शख़्स कि परहेज़गारी के साथ ख़ुदा के सामने जायेगा उसको कुशादगी नसीब होगी, ख़ुदा फ़रमाता है जिस ने अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त की तो यह लोग उस गिरोह के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने अपनी निअ़मतें नाज़िल की हैं और वह अमबिया व सिद्दीक़ीन व शोहदा व सालेहीन हैं और यह अच्छे रफ़ीक़ होंगे पस हम में नबी भी हैं सिद्दीक़ भी हैं शुहदा व सालिहीन भी हैं।

13. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने हम किसी शख़्स को मोमिन नहीं समझते जब तक कि वह तमाम उमूर में हमारा इत्तेबाअ़ करने वाला न हो और इरादा न करे इन उमूरे बद की बजा आवुरी का, आगाह हो जिस ने हमारा इत्तेबाअ़ किया और परहेज़गारी का इरादा किया तो हमारा मक़सद वही परहेज़गारी है अपने को उससे आरास्ता करो अल्लाह तुम पर रहम करे इस पर परहेज़गारी के ज़रिये हमारे

दुश्मनों को ज़लील करो। अल्लाह तुम को बुलन्द मरतबा अता करेगा।

14. अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम लोगों को दीन की तरफ़ अपने अमल से बुलाओ न कि अपनी ज़बानों से ताकि वह तुम्हारी परहेज़गारी इबादत में मशक़्क़ते नमाज़ और अम्रे ख़ैर को देखें बड़ी दअ़वते दीन यही है।

15. इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। मैंने अपने वालिद को बार बार यह फ़रमाते हुए सुना है वह हमारा शीआ़ नहीं जिस की परहेज़गारी इतनी शोहरत पज़ीर न हो कि मसतूरात पसे पर्दा उसकी परहेज़गारी का ज़िक्र करें और हमारे ओलिया में से नहीं है वह जो किसी ऐसी बस्ती में हमारे मुख़ालिफ़ों की हो जिस में कोई एक भी उससे ज़्यादा परहेज़गार हो।



एक सौ छियासठवां बाब

इफ़्फ़त

1. फ़रमाया इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह की इबादत में सबसे अफ़ज़ल शिकम और शर्मगाह को हराम से बचाना है।

2. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने बेहतरीन इबादत शिकम व शर्मगाह को हराम से बचाना है।

3. फ़रमाया हज़रत इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि अमीरूल मोमिनीन ने फ़रमाया अफ़ज़ल इबादत पाकदामनी है।

4. अबू बसीर से मरवी है कि एक शख़्स ने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से कहा मैं ज़ईफुल अमल और क़लीलुस्सौम हूँ लेकिन मैं कोशिश करता हूं कि हलाल रोज़ी खाऊं फ़रमाया इफ़्फ़ते बतन व फुर्ज से बेहतर कोई इबादत नहीं।

5. फ़रमाया रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने मेरी उम्मत के ज़्यादा लोग दो ख़ाली जगहों की वजह से दाख़िले जहन्नम होंगे एक शिकम दूसरे शर्मगाह।

6. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमाया तीन चीज़ें है जिन से मैं अपने बाद अपनी उम्मत से डरता हूं अव्वल मअ़रिफ़त के बाद गुमराही, दूसरे फ़ितनों वाली गवाहियां तीसरे बतन और फ़र्ज की शहवत।

7. इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया बतन और फ़र्ज को हराम से बचाने से बेहतर कोई इबादत नहीं।

8. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा के नज़दीक कोई इबादत शिकम व शर्मगाह के हराम से बचाने से अफ़ज़ल नहीं।



एक सौ सरसठवां बाब

महारिम से इजतेनाब

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने इस आयत के मुतअल्लिक़ जो ख़ुदा के सामने खड़े होने से डरा उसके लिए दोहरी जन्नत है। फ़रमाया जिस ने यह जान लिया कि अल्लाह तआला उसके हर अमल को देखता और हर क़ौल को सुनता है ख़्वाह वह अच्छा हो या बुरा तो यह

उसको आमाले क़बीहा की बजा आवुरी से रोकेगा उसी के मुतअल्लिक़ ख़ुदा ने फ़रमाया है जिसने मकामे रब से खौफ़ किया और नफ़्स को बुरी ख़्वाहिशों से रोका। (वह नजात याफ़्ता है)

2. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने रोज़े क़ियामत हर आंख रोयेगी सिवाए तीन आंखों के जो इबादते ख़ुदा में जागी जो ख़ौफे ख़ुदा से रोई जो महारिमे इलाहिया से कतराई।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा ने मूसा अलैहिस्सलाम से मुनाजात की। ऐ मूसा जो कोई हराम चीज़ों से परहेज़ करता है वह मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा मुक़र्रब है मैं जन्नाते अदन् को बिला शिरकते ग़ैरे उसके लिए मुबाह कर दूंगा।

4. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा अपनी मख़लूक पर जो ज़िक्रे क़सीर फ़र्ज़ किया है उन में एक ज़िक्र सब से ज़्यादा है उस ज़िक्र से मेरी मुराद तस्बीहाते अरबआ़ नहीं है अगरचे वह भी ज़िक्र है बल्कि मेरी मुराद वह ज़िक्र है जो उस वक़्त हो कि हलाल चीज़ को शौक़े सवाब में बजा लाये और हराम को ख़ौफ़े अ़ज़ाब में तर्क करे अगरचे वह अम्र इताअ़त से मुतअल्लिक़ हो तो बजा लाए और अगर मअ़सियत से मुतअल्लिक़ हो तो तर्क करे।

5. रावी कहता है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ० से इस आयत के मुतअल्लिक़ पूछा उन्हों ने जो अमल किया हम ने उसको गुबारे प्रागन्दा बना दिया। फ़रमाया अगरचे उनके आमाल मिस्र के सफ़ेद कपड़े से ज़्यादा सफ़ेद थे मगर जब हराम चीज़ उन पर पेश की जाती थी तो उसको छोड़ते

न थे।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमाया जिस ने ख़ौफ़े ख़ुदा से मअ़सियत को तर्क किया रोज़े क़ियामत अल्लाह उससे राज़ी होगा।



एक सौ अरसठवां बाब

अदाए फ़राएज़

1. फ़रमाया हज़रत अली इब्नुल–हुसैन अलैहिस्सलाम ने बेहतरीन आदमी वह है जो ख़ुदा ने उस पर फ़र्ज़ किया है उसे बजा लाये।

2. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ0 ने इस क़ौले ख़ुदा के मुतअल्लिक़ सब्र करो(अदाए फ़राएज़ में) और निहायत सब्र करो(रेज़ाए इलाही हासिल करने में जिन मसायब का सामना हो) और रोको अपने को(पैरवी–ए–अइम्मा–ए–ज़लालत से) यहां सब्र से मुराद फ़रायज़ पर सब्र करना है।

3. आयत : "इस्बिरू व साबिरू व राबितू" के मुतअल्लिक़ सादिक़े आले मुहम्मद अ0 ने फ़रमाया सब्र करो अदाये फ़रायज़ पर और ज़्यादा सब्र करो मसायब पर और राबेता पैदा करो अइम्मा अलैहिमुस्साम से और एक रिवायत में इतना ज़्यादा है कि अल्लाह से डरो उन फ़राएज़ की अदाएगी में जो तुम पर वाजिब किये गये हैं।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया अल्लाह के फ़राएज़ पर अमल करो लोगों में सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी हो जाओगे।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि हदीसे कुदसी में ख़ुदा ने फ़रमाया है कि मेरे बन्दे ने मेरा महबूब बनने के लिए जो वसीला अख़्तियार किया है उसमें सबसे बेहतर मेरे नज़दीक उस फ़र्ज़ का अदा करना है जो उस पर वाजिब किया गया है।



एक सौ उनहत्तरवां बाब

इसतवाए अमल और उस पर बाक़ी रहना

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जब कोई अमल करे (मसलन नमाज़े शब) तो उसको चाहिये कि एक साल तक वह अमल किये जाए उसके बाद अगर चाहे तो वह उसको बदल दे (कोई दूसरी इबादत करे और यह इस लिए है कि हर साल शबे क़द्र आती है जो एक हज़ार माह से बेहतर है लेहाज़ा यह अमल उस में हो जाए।

2. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब यह है कि बन्दा अमले ख़ैर को मुतवातिर बजा लाता रहे चाहे वह अमल कम ही क्यों न हो।

3. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कोई शैय ख़ुदा के नज़दीक इससे ज़्यादा महबूब नहीं कि वह अपने अमल पर क़ाएम रहे अगरचे वह कम ही क्यों न हो।

4. फ़रमाया हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम ने मैं सबसे ज़्यादा महबूब मुदावेमते अमल को रखता हूं अगरचे कम हो।

5. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि

हज़रत अली इब्नुल—हुसैन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं इस अम्र को दोस्त रखता हूं कि अपने रब के सामने इस तरह जाऊँ कि मेरा अमल मुसतवी हो। यानी कम न ज़्यादा बलेहाज़े ज़माना, इफ़रात व तफ़रीत़ न हो।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने अपने को इससे बचाओ कि जो फ़रीज़ा अपने लिए क़रार दिया है उस पर बारह महीने अमल न हो।



एक सौ सत्तरवां बाब

इबादत

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने तौरैत में लिखा है ऐ इब्ने आदम अपने दिल को मेरी इबादत के वक़्त दूसरों की मुहब्बत से ख़ाली कर तांकि मैं तेरे दिल को बे नियाज़ी से पुर कर दूं और त़लबे रिज़्क़ के मुआमले में तुझे बे परवाह बना दूं और तेरी एहतियाज का सद्दे बाब कर दूं और मेरे ख़ौफ़ से अपने दिल को पुर कर और अगर तू ने ऐसा न किया तो मैं तेरे दिल को शुग्ले दुनिया से पुर कर दूंगा। और तेरी मुहताजी का सद्दे बाब न करूंगा और तेरी तलब में तुझे बे परवाह बना दूंगा।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि अल्लह ने फ़रमाया ऐ मेरे महबूब सिद्दीक़ बन्दों मेरी इबादत से दुनिया में तलबे राहत करो मैं इसकी वजह से तुम को आख़िरत में अपनी निअ़मतों से लज़्ज़त अंदोज़ बना दूंगा।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जिस ने इबादत से इश्क़ किया और उससे मुआ़निक़ा किया

और दिल से उसे दोस्त रखा और जिस्म से अफ़आले इबादत बजा लाने में लगा रहा और अपने दिल को उसके लिए ख़ाली किया वह इसकी परवाह नहीं करता कि इस दुनिया में वह तंगी से गुज़ारे या राहत से।

4. ईसा बिन अब्दुल्लाह ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से पूछा। इबादत क्या है? फ़रमाया इताअते ख़ुदा के लिए हुस्ने नियत उन तरीक़ों से जिन से इताअते ख़ुदा की जाती है लेकिन ऐ ईसा तुम उस वक़्त तक मोमिन न होगे जब तक नासिख़ को मंसूख़ से न पहचानो, मैंने कहा क्या तरीक़ा है? नासिख़ से मंसूख़ को पहचानने का? फ़रमाया वह यह है कि तुम हुसने नियत के साथ इताअते इमाम को अपने नफ़्स में क़रार दो और जब यह इमाम मर जाये और उसकी जगह दूसरा आये तो ख़ालिस नीयत के साथ उसकी इताअत को अपने नफ़्स में क़रार दो, मैंने कहा। हां फ़रमाया बस यही तो मअ़रिफ़ते नासिख़ व मंसूख़ से है।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने इबादत तीन तरह की है कुछ लोग खौफ़े नार की इबादत करते हैं यह गुलामों की इबादत है और कुछ लोग ऐसे हैं जो तलबे सवाब में इबादत करते हैं यह इबादत ताजिरों की है और एक वह क़ौम है जो महज़ हुब्बुल्लाह इबादत करती है। यह इबादते अहरार है और यह अफ़ज़ले इबादात से है।

6. हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से मरवी है कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया किस क़द्र बुरा है फ़क्र दौलतमंदी के बाद और किस क़द्र क़बीह है बे नियाज़ी बादे इफ़्लास इस तरह कि अल्लाह की इबादत करने वाला उसकी इबादत को छोड़ दे।

7. फ़रमाया अली इब्नुल–हुसैन अलैहिस्सलाम ने जिस ने अमल किया उस चीज़ पर जो अल्लाह ने उन पर फ़र्ज़ की है तो वह सबसे ज़्यादा इबादत करने वाला है।



एक सौ इकहत्तरवां बाब

निय्यत

1. फ़रमाया अली इब्नुल–हुसैन अलैहिस्सलाम ने अमल दुरूस्त नहीं मगर नीयत से यानी अगर कोई अमल कुरबतन इलल्लाह की नियत से न किया जाए।

2. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया नियते मोमिन उसके अमल से बेहतर है और नियते काफ़िर उसके अमल से बद है हर अमल करने वाला अपनी नियत पर अमल करता है।

मक़सद यह है कि अगर अमल करने वाला सहीह नियत रखता है और अमल मयस्सर न भी हो तो उस नियत का सवाब उसे मिल जायेगा और अगर नियत नहीं तो अमल करने पर भी सवाब न मिलेगा।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कोई बन्दाए मोमिन मुहताज अगर ख़ुदा से कहता है ऐ मेरे रब मुझे रिज़क़ अता फ़रमा ताकि मैं फुलां फुलां नेकी और उमूरे ख़ैर अंजाम दूं तो अल्लाह तआला उसकी नियत की सच्चाई को मअ़लूम करके उसको वह अज्र अता फ़रमाता है जो उसके काम करने पर देता है बेशक अल्लाह वुसअ़त वाला और करीम है।

4. अबू बसीर ने इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से

पूछा उस इबादत की हद को कि जब उसका फ़ाएल बजा लाये तो वह सहीह हो फ़रमाया इताअत में अच्छी नियत हो।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने दोज़ख़ी दोज़ख़ में हमेशा इस लिए रहेंगे कि दुनिया में उनकी नियत यह थी कि अगर वह दुनिया में हमेशा रहें तो हमेशा ख़ुदा की ना फ़रमानी करते रहेंगे और अहले जन्नत हमेश इस लिए जन्नत में रहेंगे कि दुनिया में उनकी नियत यह थी कि अगर वह हमेशा दुनिया में रहें तो वह हमेशा ख़ुदा की इबादत करेंगे। फिर आयत पढ़ी हर शख़्स अपनी नियत पर अमल करता है।



एक सौ बहत्तरवां बाब

ततिम्मा

1. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया कि हर इबादत के लिए पहले शौक़ होता है फिर उसमें सुस्ती पैदा हो जाती है पस जिसका शौक़े इबादत मेरी सुन्नत के मुताबिक़ हो उसने हिदायत पाई और जिस ने मेरी सुन्नत के ख़िलाफ़ किया वह गुमराह हो गया और उसका अमल बरबाद गया। मैं नमाज़ पढ़ता हूं मैं सोता हूं मैं रोज़ा रखता हूं और इफ़तार करता हूं मैं हंसता हूं मैं रोता हूं पस जिस ने मेरे तरीक़ा–ए–कार से नफ़रत की वह मुझ से नहीं है और यह भी फ़रमाया कि लोगों को मौत से नसीहत हासिल करनी चाहिये और यक़ीन की बेनियाज़ी तुम्हारे लिए और इबादत का शग़ल काफ़ी है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने हर शख़्स

के लिए एक शौक़ होता है और हर शौक़ के बाद सुस्ती पैदा हो जाती है पस खुशा हाल उसका जिसकी सुस्ती ख़ैर की तरफ़ हो।



एक सौ तिहत्तरवां बाब

इबादत में मियाना रवी

1. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया इस दीन में तंगी नहीं पस लोगों को इस में नर्मी के साथ दाख़िल करो और इबादते ख़ुदा को उसके बन्दों के लिए बाइसे नफ़रत न बनाओ वरन् तुम उस सवार के मानिंद हो जाओगे जो अपनी सुरअते सैर की बिना पर सफ़र से भी बाज़ रहता है और मरकब से भी हाथ धो बैठता है।

2. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने इबादत को अपने नफ़्सों पर बार न बनाओ।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला जब किसी बन्दे को दोस्त रखता है तो उसके थोड़े अमल पर भी बड़ी जज़ा देता है और यह उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि मैं नौजवानी में मश्गूले तवाफ़ था और पसीना बदन से टपक रहा था कि मेरे वालिद ने मुझे देख कर फ़रमाया ए जाफ़र मेरे फ़रज़न्दे ख़ुदा जब किसी बन्दे को दोस्त रखता है तो उसको दाख़िले जन्नत करता है अगर चे उसका अमल कम ही हो तो भी उससे राज़ी होता है।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह ने मैं ब आलमे जवानी सख़्त इबादत करता था मेरे वालिद ने मुझसे फ़रमाया ऐ फ़रज़न्द इबादत कम करो अल्लाह अपने जिस बन्दे को दोस्त रखता है उसके थोड़े अमल पर भी राज़ी होता है।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया ऐ अली यह दीन सहूलत वाला दीन है पस उसमें नर्मी से अमल करो और अपने रब की इबादत को अपने नफ़्स के लिए दुश्वार न बनाओ। तेज़ रौ सवार न सफ़र करने के क़ाबिल रहता है और न अपनी सवारी को क़ाबिले सफ़र रखता है। अमल उस नीयत से करो कि तुम बूढ़े हो कर मरोगे और ख़ौफ़ करो जहन्नम का उस शख़्स की तरह जो उम्मीद रखता है कि कल मर जाऊंगा।



एक सौ चौहत्तरवां बाब

उसके बारे में जो अपने अमल का सवाब पाता है

1. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जिस ने किसी ऐसे अमले नेक के मुतअल्लिक़ सुना जो बाइसे सवाब हो फिर वह इसको अमल में लाया तो उसको सवाब मिलेगा अगरचे वह पूरे तरीक़े से उस तक न पहुंचा हो।

2. वही मज़मून है जो ऊपर मज़कूर हुआ।



एक सौ पचहत्तरवां बाब

सब्र

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने सब्र ईमान का सर है।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि सब्र का ईमान से वही तअल्लुक़ है जो सर का बदन से जब सर न हो तो बदन बेकार है उसी तरह जब सब्र न हो तो ईमान बेकार है।

3. फ़रमाया अबू अब्दिुल्लाह अलैहिस्सलाम ने ऐ हफ्स (रावी) जिस ने सब्र किया लेकिन उसका अज्र बाकी रहने वाला है और जिस ने बेताबी का इज़्हार किया तो उसकी बेताबी थोड़ी ही देर रही लेकिन इस की शर्मिंदगी देरपा रही, फिर फ़रमाया सब्र को अपने लिए लाज़िम क़रार दे अपने तमाम उमूर में खुदा ने हज़रत मुहम्मद मुसतफ़ा स0 को रसूल बना कर भेजा और मदारा करने का हुक्म दिया और फ़रमाया लोगों के कहने पर सब्र करो और पूरी तरह उन से क़तअे तअल्लुक़ करो और झुठलाने वालों और दौलतमंदों को छोड़ दो और फ़रमाया लोगों के कहने पर सब्र करो और पूरी तरह उनसे क़तअे तअल्लुक़ करो और झुठलाने वालों और दौलतमंदों को छोड़ दो और फ़रमाता है लोगों के एतेराज़ का अच्छे तरीक़े से दफ़इया करो आज जिससे दुश्मनी है मुमकिन है कल वह ख़ालिस दोस्त बन जाए और उसकी तौफ़ीक़ नहीं होती मगर सब्र करने वालों या जिन को बारगाहे इलाही से बुरा हिस्सा मिला।

पस रसूलुल्लाह ने सब्र किया फिर उन्हों ने बड़े सख़्त

अल्फ़ाज़ में दुशनाम तराज़ी की और हज़रत को अ़ेब लगाये जिस से आप दिल तंग हुए खुदा ने ये आयत नाज़िल की (हम जानते हैं कि लोगों का कहना तुमको दिल तंग बनाता है पस तुम अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करो सजदा करने वालों में से बनो उन लोंगो ने फिर भी झुठलाया और तोहमत तराशी की, हज़रत ग़मगीन हुए तो खुदा ने यह आयत नाज़िल की, हम जानते हैं कि लोगों का कहना तुमको रंजीदा करता है वह तुम्हें नहीं झुठलाते बल्कि यह ज़ालिम आयाते खुदा से इन्कार करते हैं तुम से पहले भी रसूलों को झुठलाया गया था, लेकिन इस तकज़ीब पर उन्हों ने सब्र किया और वह अज़ीयत दिये गये यहां तक कि हमारी नुसरत उनके पास आई। पस रसूलुल्लाह स0 ने सब्र को अपने ऊपर लाज़िम क़रार दिया। फिर मुशरिकों ने हद से तजावुज़ किया और अल्लाह को बुरा कहने लगे और उसको झुठलाया। हज़रत ने फ़रमाया। मैंने सब्र किया अपने मुआमले में अपने अहलेबैत और अपनी आबरू के मुआमले में लेकिन सब्र नहीं हो सकता खुदा का बुरा कहने में, खुदा ने इस पर यह आयत नाज़िल की, हम ने आसमान व ज़मीन को पैदा किया और जो कुछ उनके दरमियान है उसको भी छ दिन में बनाया और हम को कोई थकन न हुई। पस जो कुछ यह कहते हैं, इस पर सब्र करो। इस बिना पर आंहज़रत ने हर हालत में सब्र किया फिर हज़रत को बशारत दी गई। इतरत के अइम्मा होने की और सब्र से उनकी तारीफ़ की और फ़रमाया। हम ने उनको इमाम बनाया वह हमारे हुक्म से हिदायत करते हैं और उन्हों ने सब्र किया और हमारी आयात पर यक़ीन करने वाले हैं इसी लिए रसूल ने फ़रमाया है। सब्र को ईमान

से वही निसबत है जो बदन को सर से है हज़रत ने इस पर ख़ुदा का शुक्र अदा किया और ख़ुदा ने इस पर यह आयत नाज़िल की। और तेरे रब का कलेमए हसना तमाम हुआ बनी इस्राईल पर इस लिए कि उन्हों ने सब्र किया और जो फ़िरऔन ने और उसकी क़ौम ने किया था। और जो मकानात बनाये गये थे और बाग़ लगाये थे उन सब को हलाक व तबाह किया। आंहज़रत स0 ने फ़रमाया यह बशारत है मेरे लिए और ख़बरे इंतेक़ाम है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया मुशरिकों से क़िताल करो जहां उनको पाओ और उनको पकड़ लो, महसूर कर लो और हर घात की जगह उनके लिए बैठो और जहां पाओ उनको क़त्ल करो पस अल्लाह ने उनको रसूलुल्लाह स0 के हाथों और उनके अहबाब के हाथों क़त्ल कराया और उनके सब्र पर सवाब अता किया। और आख़िरत में उनके लिए सवाब का ज़ख़ीरा किया।

पस जिस ने सब्र किया वह दुनिया से न जायेगा। जब तक अल्लाह उसकी आंखों को तबाही दुश्मन के बाद ठण्डा न कर दे और इसके अलावा आख़िरत में भी सवाब का ज़ख़ीरा होगा।

4. फ़रमाया हज़रत अली इब्नुल-हसैन अलैहिमस्सलाम ने सब्र को ईमान से वही निसबत है जो सर को बदन से और जिसके लिए सब्र नहीं उसके लिए ईमान नहीं।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने सब्र को ईमान से वही निसबत है जो सर को जिस्म से है, अगर सर गया तो जिस्म भी गया उसी तरह सब्र गया तो ईमान भी गया।

6. अबू बसीर कहते हैं कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़

अलैहिस्सलाम से सुना कि आज़ाद मर्द तमाम हालतों में आज़ाद रहता है अगर इस पर कोई मुसीबत आती है तो उस पर सब्र करता है और अगर मसाएब हुजूम करते हैं तो उसका दिल नहीं टूटता और अगर कै़द किया जाए या मग़लूब हो या तवंगरी उसरत से बदल जाए तो भी जैसे सिद्दीक़ व अमीन यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को गुलाम बनने ने हुर्रियत पसंदी से नहीं रोका वह मग़लूब हुए कैद किये गये लेकिन वह अपने मौक़िफ़ से न हटे। कुंअें की तारीकी और वहशत ने उन्हें कोई नुक़सान न पहुंचाया यहां तक कि ख़ुदा ने उन पर एहसान किया और नाफ़रमान व सरकश को उनका गुलाम बना दिया जो पहले उनका मालिक था और उनको ख़ुदा ने अपने रसूल बनाया और उस ज़माने के लोगों पर उनकी वजह से रहम किया। पस इसी तरह सब्र के बाद बेहतरी होती है लेहाज़ा सब्र किया करो। तुम अपने नफ़्स के लिए सब्र को लाज़िम क़रार दो ख़ुदा से अज्र पाओगे।

7. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जन्नत तकालीफ़ से घिरी हुई है और सब्र से जिस ने तकालीफ़े दुनिया पर सब्र किया वह दाख़िले जन्नत हुआ और जहन्नम घिरा हुआ है लज़्ज़ात व शहवात से जिस ने अपने नफ़्स को लज़्ज़त व शहवत में रखा वह दाख़िले जहन्नम हुआ।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जो मोमिन क़ब्र में दाख़िल होता है तो नमाज़ उसके दाहिनी तरफ़ होती है और ज़कात बायें तरफ़ और नेकी इस पर साया किये होती है और सब्र गोशा गीर होता है जब मुन्किर व नकीर आते हैं और सवाल करते हैं तो सब्र नमाज़ व

ज़कात व नेकी से कहता है अगर तुम उसको नजात नहीं दिला सकते तो हट जाओ मैं इसके लिए काफ़ी हूं।

9. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि अमीरूल मोमिनीन एक रोज़ मस्जिद में दाख़िल हुए देखा दरवाज़ा–ए–मस्जिद पर एक शख़्स निहायत महज़ून व मग़मूम खड़ा है फ़रमाया तेरा क्या हाल है, उसने कहा बाप, भाई और बहन के मरने से हद दर्जा दिल शिकस्ता हूं फ़रमाया तक़वा और सब्र से काम ले कल सब्र तेरे काम आयेगा। (तू मरने वालों से अंक़रीब मिलेगा) मुआमेलात में सब्र करना ऐसा है जैसे सर का बदन पर होना। जब बदन पर सर नहीं रहता तो बदन फ़ासिद हो जाता है और जब सब्र नहीं रहता तो तमाम मुआमेलात ख़राब हो जाते हैं।

10. रावी कहता है इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मुझ से कि साले गुज़िशता तुम्हें हज से किस चीज़ ने रोका? मैंने कहा मैं आप पर फ़िदा हूं मेरे ऊपर क़र्ज़ बहुत है मेरा माल गया और जो क़र्ज़ मेरे ऊपर है वह मेरे माल के जाने से ज़्यादा है अगर मेरा एक दोस्त मुझे इस साल हज के लिए ले कर न आता तो मैं आ नहीं सकता था, हज़रत ने मुझ से फ़रमाया अगर सब्र करोगे तो ख़ुश हाल हो जाओगे और अगर सब्र न करोगे तो चाहे राज़ी हो या नाराज़ मक़ादीरे इलाहिया तो नाफ़िज़ हो कर रहेंगी।

11. असबग़ बिन नबाता से मरवी है कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया सब्र दो तरह का है एक मुसीबत पर सब्र करना और इससे बेहतर सब्र वह है जो उस चीज़ पर किया जाये जो अल्लाह ने तुझ पर हराम कर दी है और ज़िक्र दो ज़िक्र है एक वक़्ते मुसीबत अल्लाह को

याद करना और इस से ज़्यादा अफ़ज़ल हराम चीज़ों से बचने के लिए अल्लाह का ज़िक्र है कि यह ज़िक्र तुझे हराम से बचा लेगा।

12. इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम से मरवी है कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया लोगों पर एक वक़्त ऐसा आयेगा कि बादशाहत न मिलेगी मगर क़त्ल और जुल्म करने से और मालदारी हासिल न होगी मगर ग़स्ब और बुख़्ल से और मुहब्बत न होगी मगर दीन से ख़ारिज होने और ख़्वाहिशों की पैरवी करने के बाद जो शख़्स उस ज़माने को पाये उसको फ़क़ीरी पर सब्र करना चाहिए दर आंहालेकि उसे तवंगरी पर कुदरत हो और सब्र करना चाहिए बुग्ज़ पर दर आंहालेकि उसको मुहब्बत पर कुदरत हो और सब्र करना चाहिए ज़िल्लत पर दर आंहालेकि उसे इज़्ज़त पर कुदरत हो अल्लाह तआला उसको पचास ऐसे सिद्दीक़ों का सवाब अता फ़रमायेगा जिन्हों ने मेरी तसदीक़ की हो।

13. फ़रमाया हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि मेरे पदरे बुजुर्गवार हज़रत अली इब्नुल–हुसैन अलैहिमस्सलाम के मरने का वक़्त आया तो मुझे अपने सीने से लगा कर फ़रमाया बेटा! मैं तुमको वसीयत करता हूं जो मुझे वसीयत की है मेरे पिदरे बुजुर्गवार ने वक़्ते वफ़ात और फ़रमाया उनको वसीयत की उनके वालिद ने कि बेटा अम्रे हक़ में सब्र करना अगरचे वह कितना ही तल्ख़ हो।

14. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने सब्र दो तरह का है। सब्र करना बला पर हसन व जमील है और दोनों सब्रों में महारिम से परहेज़ करना अफ़ज़ल है।

15. फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि

व सल्लम ने सब्र की तीन सूरतें हैं मुसीबत पर सब्र इताअत पर सब्र और मअ़सियत पर सब्र। सब्र जिस ने मुसीबत पर पूरा पूरा किया। अल्लाह उसके लिए तीन सौ दर्जे मुअय्यन करता है जिसके एक दर्जे को दूसरे से इतना ही फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दरमियान है और जिस ने इताअत पर सब्र किया ख़ुदा उसके लिए छ सौ दर्जे ऐसे लिखता है जिसके दर्जे को दूसरे से इतना ही फासला है जितना ज़मीन के आख़िरी हिस्से को अर्श से है और जिस ने मअ़सियत पर सब्र किया उसके लिए नौ सौ दर्जे एसे लिखता है जिन में एक का फ़ासला दूसरे से उतना है जितना आख़िर हिस्सा ज़मीन से इंतेहाये अर्श तक है।

16. रावी कहता है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने मुझे हुक्म दिया कि मैं मुफ़ज़िल बिन उमर के पास जा कर उनके फ़रज़न्द इसमाईल के मरने पर ताज़ियत करूं और फ़रमाया। मुफ़ज़िल को सलाम कहना। और उससे कहो कि इसमाईल की मौत से हम पर भी मुसीबत आई थी हम ने सब्र किया लेहाज़ा तुम भी उसी तरफ़ सब्र करो जैसे हम ने सब्र किया था एक अम्र का इरादा हम ने किया और एक अम्र का अल्लाह ने हमने अल्लाह के इरादा को तसलीम किया।

17. अबू हमज़ा से मरवी है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ० ने फ़रमाया जो मोमिन किसी मुसीबत में मुबतेला हो और वह उस पर सब्र करे तो उसको हज़ार शहीद का सवाब मिलता है।

18. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला ने एक क़ौम को निअ़मतें दीं उन्हों ने शुक्र न किया

उन पर वबाल नाज़िल हुआ और एक क़ौम को मसायब में मुबतेला किया उन्हों ने सब्र किया उन पर ख़ुदा ने निअ़मतें नाज़िल कीं।

19. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने इस आयत के मुतअल्लिक़ ऐ ईमान वालो सब्र करो और इंतेहाई सब्र करो। फ़रमाया इससे मुराद मसायब पर सब्र है।

20. बयान किया हज़रत से बाज़ असहाब ने अगर मुसीबत से पहले सब्र न पैदा किया जाता तो मोमिन का दिल उसी तरह टुकड़े टुकड़े हो जाता जिस तरह अण्डा सख़्त पत्थर पर गिर कर टुकड़े टुकड़े हो जाता है।

21. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हदीसे कुदसी में फ़रमाया मैंने दुनिया में अपने बन्दों के दरमियान क़र्ज़े हसना को जारी किया है पस जिस ने मुझे क़र्ज़ दिया यानी मुसतहक बन्दों को दिया तो मैं उसके बदले में दस से लेकर सात सौ तक दूंगा। बल्कि उससे भी कहीं ज़्यादा दूंगा और जिस ने मुझे क़र्ज़ न दिया तो मैं अपने इन्आ़म को इससे कुछ कम कर लूंगा अगर उसने इस पर सब्र किया तो मैं उनको तीन ख़सलतें ऐसी दूंगा कि अगर उन में से एक अपने मलायक को दे दूं तो वह मेरे इस अतिये को पसंद करें। फिर हज़रत ने इस आयत की तिलावत की, उन लोगों पर जब कोई मुसीबत नाज़िल हुई तो उन्होंने कहा हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं यही वह लोग हैं जिन पर दूरूद और रहमत है और यही हिदायत याफ़ता हैं। हज़रत ने फ़रमाया यह तो उसके लिए है जो थोड़ी सी कमी पर सब्र करे और जो बड़े बड़े

मसाइब पर सब्र करने वाले हैं उनके अज्र का क्या ठिकाना है।

22. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जवांमर्दी से सब्र दिखाना हाजत, फ़ाक़ा, पाक दामनी और बे नियाज़ी के वक़्त कहीं बेहतर है लोगों को अता करने से।

23. जाबिर ने इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से पूछा सब्रे जमील क्या है फ़रमाया वह सब्र जिस में लोगों की तरफ़ शिकायत न हो।

24. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह या इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिमास्सलाम ने कि जिस ने मसायबे ज़माना पर सब्र न किया ज़माना उसे आजिज़ कर देगा।

25. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने हम सब्र करने वाले हैं और हमारे शिया हम से ज़्यादा सब्र करने वाले है मै ने कहा। मैं आप पर फ़िदा हूं शिया आप से ज़्यादा साबिर कैसे हो गये। फ़रमाया हम सब्र करते हैं इस सूरत में कि हक़ीक़ते अम्र को जानते हैं और शिया सब्र करते हैं बावजूद ला इल्मी के।



एक सौ छिहत्तरवां बाब

शुक्र

1. फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने खाने वाले शुक्र गुज़ार के लिए वह अज्र है जो रोज़े हिसाब के सवाब के लिए रोज़ा रखने वाले का है और तन्दुरूस्त शुक्र गुज़ार का वह जो बीमार से सब्र करने वाले का हे और बख़्शिश करने वाले शाकिर का अज्र उस महरूम

के अज्र के बराबर है जो क़ानेअ़ है।

2. रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया अल्लाह ने जिस पर शुक्र का दरवाज़ा खोला उस पर निअ़मत की ज़्यादती का भी दरवाज़ा खोल दिया।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि तौरैत में है जो तुम को निअ़मत दे उसका शुक्र अदा करो और जो तुम्हारा शुक्र अदा करे उसको निअ़मत दो, जब तुम शुक्र अदा करोगे तो निअ़मत का ज़वाल न होगा और अगर कुफ़्र करोगे तो निअ़मत को बक़ा न होगी। शुक्र में निअ़मत की ज़्यादती है और ग़ैर से अमान है।

4. अबू जाफ़र या अबू अब्दिल्लाह अलैहिमास्सलाम से मरवी है कि तन्दुरूस्त शाकिर का अज्र वही है जो बीमार साबिर का है और अता करने वाले शाकिर का अज्र वही है जो महरूम क़ानेअ़ का है।

5. रावी कहता है मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से इस आयत के मुतअल्लिक़ पूछा अपने रब की निअ़मत को ज़िक्र करो। फ़रमाया उस ज़ाते पाक का ज़िक्र करो जिस ने तुम पर फ़ज़्ल किया और तुम पर एहसान किया और अता किया। फिर फ़रमाया बयान करो उसके दीन के मुतअल्लिक़ जो उसने अता किया हैं और इन्अ़ाम फ़रमाया है।

6. फ़रमाया अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह स0 आइशा की [illegible] उनके पास थे उन्हों ने कहा या रसूलुल्लाह आप स0 अपने नफ़्स को तअ़ब में क्यों डालते हैं दर आंहालेकि अल्लाह ने आपके अगले पिछले गुनाह मआ़फ़ कर दिये हैं फ़रमाया उसका शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं हज़रत

इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया रसूलुल्लाह स.0 पैर की उंगुलियों के सिरों पर खड़े हो कर नामज़ पढ़ते थे ख़ुदा ने वही नाज़िल फ़रमाया ए मेरे ताहिर बन्दे मैंने कुरआन इस लिए नहीं नाज़िल कया कि तुम अपने को मशक़्क़त में डालो।

7. मैंने सुना हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से कि तीन चीज़ के होते हुए कोई शैय नुक़सान नहीं पहुंचा सकती, कर्ब व बेचैनी के वक़्त दुआ, गुनाह के बाद इसतिग्फ़ार, और निअ़मत के वक़्त अल्लाह तआला का शुक्र।

8. फ़रमाया अबू अब्दिुल्लाह अलैहिस्सलाम ने जिसको शुक्र दिया गया उसको निअ़मत में ज़्यादती अता की गई ख़ुदा फ़रमाता है अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं निअ़मत को ज़्यादा कर दूंगा।

9. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दुल्लाह ने कि जिस बन्दे पर ख़ुदा ने अपनी रहमत नाज़िल की और उस ने अपने दिल से उसकी मअ़रिफ़त हासिल की और ख़ुदा की हम्द की अपनी ज़बान से तो उसका कलाम तमाम होते ही ख़ुदा ज़्यादती–ए–निअ़मत का हुक्म देता है।

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने निअ़मत का शुक्र यह है कि मुहर्रमात से बचा जाए और पूरा शुक्र है यह कहना कि अल–हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

11. मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम को कहते सुना हर निअ़मत का शुक्र ख़्वाह कितनी बड़ी सआदत हो ख़ुदाए अज़्ज़ व जल्ल् की हम्द करना है।

12. अबू बसीर ने बयान किया कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से पूछा कि शुक्र की कोई हद है

कि जब बन्दा उसे बजा लाए तो शुक्र गुज़ार कहलाए। फ़रमाया हां है मैने पूछा वह क्या है फ़रमाया अल्लाह की हम्द करे हर उस नेमत पर जो उसके अहल व माल के मुतअल्लिक़ हो अगर चे उसने हर उस माल में जो ख़ुदा ने उसको दिया है उसका हक़ अदा कर दिया हो यानी ज़कात वग़ैरह दे दी हो और ख़ुदा उसी शुक्र के मुतअल्लिक़ फ़रमाता है पाक है वह अल्लाह जिसने चौपायों को हमारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया हालांकि हम उनको क़ाबू करने वाले न थे यानी जब सवारी पर बैठे या माल ढोने का काम ले तो उसका शुक्र अदा करे और ख़ुदा ने फ़रमाया है कि यह कहो। ए मेरे रब मुझे मुबारत जगह में उतार और तूं उतारने वालों में सब से बेहतर है और यह भी फ़रमाया (यह कहो) ए मेरे परवरदिगार मुझे सच्चाई में दाख़िल होने की जगह दाख़िल कर और सिदक़ के निकलने की जगह से निकाल और एक ग़ालिब आने वाले मददगार को मेरा मददगार बना। यानी हर हर मौक़े पर ख़ुदा से दुआ करता रहे और उसकी हम्द बजा लाये।

13. मुअम्मर से मरवी है मैंने इमाम रेज़ा अलैहिस्सलाम से सुना कि जिस ने हम्दे ख़ुदा की उसने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और हम्द अफज़ल है उस निअमत से।

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जब ख़ुदा अपने किसी बन्दे को निअमत दे छोटी हो या बड़ी और वह कहे अल–हम्दो लिल्लाह तो उसने उस निअमत का शुक्र अदा कर दिया।

15. फरमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जिसको ख़ुदा ने कोई निअमत दी और उसने दिल से उसकी मअरिफत हासिल की तो उस निअमत का शुक्रिया अदा

किया।

16. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने एक शख़्स तुम में से पानी का ज़र्फ़ ले कर उठाये तो हम्दे ख़ुदा करे तो अल्लाह उस पर जन्नत को वाजिब करेगा। और जब मुहं के क़रीब लाये और बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम कहे और थोड़ा सा पिये फिर ज़र्फ़ को अलग रख कर ख़ुदा की हम्द करे फिर दोबारा उठाये और थोड़ा सा पिये और ख़ुदा की हम्द करे तो अल्लाह उस पर जन्नत वाजिब करता है।

17. उमर बिन यज़ीद ने कहा मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह से कहा मैंने ख़ुदा से दुआ की कि मुझे फ़रज़न्द अता करे उस ने मुझे बेटा दिया। मैंने दुआ की कि मुझे घर दे उसने मुझे घर दिया। मैं उस से डरा कि कहीं यह मेरी शकावत की बिना पर तो नहीं दिया जा रहा है फ़रमाया अगर हम्दे ख़ुदा के साथ है तो ऐसा नहीं है।

18. हम्माद ने कहा अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम मस्जिद से बरआमद हुए तो हज़रत का घोड़ा गुम हो गया। फ़रमाया अगर ख़ुदा ने उसे लौटा दिया तो मैं उसका पूरा पूरा शुक्र अदा करूंगा फ़रमाया तुम ने सुना नहीं मैंने कहा अल–हम्दुलिल्लाह।

19. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने रसूलुल्लाह स0 को जब किसी अम्र से मुसर्रत हासिल होती थी तो फ़रमाते थे अल हम्दु लिल्लाहि अ़ला हाज़िहिन निअ़मह अल हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हाल उस निअ़मत पर ख़ुदा की हम्द और जब किसी अम्र से रंज पहुंचता तो फ़रमाते हर हाल में ख़ुदा की हम्द।

20. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने

कि जब तुम किसी बीमार को देखो तो बग़ैर उसके कान तक आवाज़ पहुंचाए कहो। हम्द है उस ख़ुदा की जिस ने मुझे इस बला से बचा लिया जिस मे तुम मुबतेला हो अगर वह चाहता तो मुझे भी मुबतेला कर देता जो ऐसा कहेगा तो वह उस बीमारी में कभी मुबतेला न होगा।

21. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह न कि जो कोई किसी बीमार को देख कर कहे हम्द है उस ख़ुदा की जिस ने मुझे इस बला से महफ़ूज़ रखा जिस में तुम मुबतेला हो और ब लिहाज़े सिहत मुझे तुम पर फ़ज़ीलत दी, ख़ुदावन्दा तु मुझे महफ़ूज़ रखना उस से जिस में उसको मुबतेला किया है तो इस मरज़ मैं कभी मुबतेला नहीं होगा।

22. फ़रमाया सादिके आले मुहम्मद ने जब तुम किसी बीमार को देखो दर आंहालेकि तुम पर ख़ुदा ने सेहत का इन्आम किया हो तो कहो ख़ुदावन्दा मैंने न इस बीमार का मज़ाक उड़ाता हूँ और न अपनी सेहत पर फ़ख़ करता हूं बल्कि मैं ख़ुदा की हम्द करता हूं उन निअमतों पर जो उस ने मुझे दी हैं।

23. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया जब तुम मुसीबत ज़दों को देखो तो बग़ैर उनको सुनाये कहो मैं अल्लाह की हम्द करता हूं सुनाने से उसे रंज पहुंचेगा।

24. फ़रमाया हज़रत इमाम अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुअलैहि व आलिहि व सल्ल्म सफ़र में थे आप स0 अपने ऊँट से उतरे और पांच सजदे किये। जब सवार होने लगे तो लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह! आज आपने वह किया जो इससे पहले न किया था।

फ़रमाया हां इस वक़्त जिब्रईल ने नाज़िल हो कर ख़ुदा की तरफ़ से कुछ बशारतें दीं मैंने अल्लाह का शुक्र अदा किया और हर बशारत पर ख़ुदा का शुक्र अदा किया।

25. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने जब तुम में से कोई किसी से ज़िक्र करे ख़ुदा की निअ़मत का तो उसको चाहिये कि शुक्रे ख़ुदा के लिए अपना रूख़सारा मिट्टी पर रखे और अगर सवार हो तो सवारी से उतर कर अपना रूख़सारा ख़ाक पर रखे और अगर शोहरत की वजह से कि राफ़ज़ी ऐसा करते हैं न उतरे तो चाहिये कि बरबूसे ज़ीन पर रूख़सारा रखे और अगर यह भी मुमकिन न हो तो अपनी हथेली पर रख कर जो निअ़मत उसको दी है उस पर शुक्र बजा लाए।

26. हशाम बिन अहमर ने कहा मैं इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम के साथ जा रहा था कि मदीना के एक रास्ते में आप ने अपनी सवारी से अपने पैर उतारे और सजदे में गये और बड़ी देर तक उसी हालत में रहे फिर सर उठाया और सवार हुए। मैंने कहा मैं आप अलैहिस्सलाम पर फ़िदा हूं आप ने सजदे को बड़ा तूल दिया। फ़रमाया मुझे ख़ुदा की अपने ऊपर एक निअ़मत याद आ गई मैंने चाहा कि अपने रब का शुक्र अदा करूं।

27. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि वही की ख़ुदा ने मूसा को ऐ मूसा मेरा शुक्र करो जो हक़ शुक्र अदा करने का है फ़रमाया ऐ मेरे परवरदिगार मैं कैसे तेरा पूरा पूरा शुक्र अदा करूं क्यों कि तेरा शुक्र तो लाज़िम हर उस निअ़मत पर है जो तू ने मुझे दी है और तेरी निअ़मतें हैं लगातार, ख़ुदा ने फ़रमाया जब तू ने यह जान लिया कि हर

निअ़मत मेरी तरफ़ से है तो तू ने हक़्क़े शुक्र अदा कर दिया।

28. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जब सुबह करो या शाम करो तो दस बार कहो या अल्लाह मैंने जो दीन या दुनिया की निअ़मत या आफ़ियत इस सुबह को पाई है वह ऐ वहदहू ला शरीक ज़ात तेरी तरफ़ से पाई है तू सज़ावारे हम्द है तो जो निअ़मत तू ने दी है उस पर तेरा शुक्र ताकि ऐ रब तू मुझ से राज़ी हो जैसा तू ने फ़रमाया है मैंने हर उस चीज़ का शुक्र अदा किया जो तू ने सुबह या शाम मुझे दी।

29. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने नूह अलैहिस्सलाम हर सुबह को ऐसा ही कहा करते थे इसी लिए ख़ुदा ने उनका नाम बन्दा–ए–शुक्र गुज़ार रखा और रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया है जिसने अल्लाह की तसदीक़ की नजात पाई।

30. फ़रमाया अली अलैहिस्सलाम इब्नुल–हुसैन अलैहिस्सलाम ने कि अल्लाह रंजीदा दिल वाले को दोस्त रखता है और हर शुक्र गुज़ार बन्दे को भी रोज़े क़ियामत ख़ुदा अपने बन्दे से कहेगा तु ने फुलां का शुक्र अदा किया वह कहेगा ऐ परवरदिगार मैंने तेरा शुक्र अदा किया। ख़ुदा कहेगा जब तू ने उसका शुक्र न किया तो मेरा क्या किया। फिर इमाम ने फ़रमाया। तुम में ख़ुदा का सब से ज़्यादा शुक्र गुज़ार वह है जो बन्दों का सबसे ज़्यादा शुक्र गुज़ार है।



एक सौ सतहत्तरवां बाब

हुस्ने ख़ुल्क़

1. फ़रमाया अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम ने कि अज़ रूए ईमान सब से ज़्यादा कामिल वह है जो अज़ रूए ख़ुल्क़ सब से ज़्यादा अच्छा हो।

2. फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुअलैहि व आलिहि व सल्लम ने रोज़े क़ियामत मीज़ान में किसी का कोई अमल हुसने ख़ुल्क़ से ज़्यादा अफ़ज़ल न होगा।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने चार चीज़ें जिस के पास हों उसका ईमान कामिल है अगरचे सर से पैर तक उसके गुनाह हों यह उसके मर्तबे में नुक़सान न देंगे और वह चार सिदक़ अदाये अमानत, हया और हुस्ने ख़ुल्क़ हैं।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़राएज़ के बाद ख़ुदा के नज़दीक किसी मोमिन का कोई अमल इस अमल से ज़्यादा महबूब नहीं कि वह अपने हुस्ने ख़ुल्क़ से लोगों को ख़ुश करे।

5. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुअलैहि व आलिहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अच्छे अख़लाक़ वाले का अर्ज पेशे ख़ुदा वही है जो एक क़ाएमुल्लैल रोज़ा दार का है।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया मेरी उम्मत में जन्नत में दाख़िल होने वाले अकसर साहिबे तक़वा और साहिबे हुसन ख़ुल्क़ होंगे।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि हुसने

ख़ुल्क़ गुनाहों को इस तरह घुला देता है जैसे सूरज पाले को।

8. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने नेकी और हुसने ख़ुल्क़ शहरों को आबाद करते हैं और उम्रों को बढ़ाते हैं।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि खुदा ने बनी इस्राईल के एक नबी को वही की कि हुसने ख़ुल्क़ गुनाहों को इसी तरह पिघला देता है जैसे सूरज पाले को।

10. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि अहदे नबी में एक शख़्स मर गया गोरकुन आये मगर क़ब्र न खोद सके उन्हों ने रसूलुल्लाह से कहा कि ज़मीन इतनी सख़्त है कि हमारे औज़ार काम नहीं करते यह माअ़लूम होता है कि जैसे हम पत्थर पर मार रहे हैं फ़रमाया अगर यह शख़्स साहिबे हुसने ख़ुल्क़ होता तो ऐसा न होता। अच्छा एक पियाले में पानी लाओ आप स0 ने उस में हाथ डाला और ज़मीन पर छिड़का, मिट्टी रेत की तरह भुरभुरी हो गई और गोरकुनों ने क़ब्र खोद ली।

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने ख़ुशख़ुई एक अतिया है जो अल्लाह अपनी मख़लूक़ को बख़्शता है उनमें बाज़ तबअ़ी हैं और बाज़ बिलक़स्द, मैंने पूछा उनमें अफ़ज़ल कौन है? फ़रमाया तबअ़ी। ख़ुशख़ूई जिस पर आदमी पैदा किया गया है उसके ग़ैर पर ताक़त नहीं रखता और साहिबे ज़ीनत जो पूरा पूरा सब्र करे इताअत पर उन दोनों से अफ़ज़ल है।

12. अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया अल्लाह तआला अता करता है बन्दे को सवाब उसके हुसने ख़ुल्क़

पर वही जो अता करता है मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह को ख़ाह सुबह को जिहाद करे या शाम को।

13. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला ने अपने दुश्मनों को आरियतन अच्छे अख़लाक़ इस लिए दिये हैं ताकि वह दुश्मनों की हकूमत में राहत से बसर कर सकें और एक रिवायत में है कि अगर ऐसा न होता तो औलियाए ख़ुदा क़त्ल कर दिये जाते।

14. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने लोगों से ज़्यादा मेल जोल न करो अगर इसतिताअ़त रखते हो तो तुम्हारा हाथ उँचा होना चाहिए यानी उन से अच्छा सुलूक करो। अगर कोई शख़्स ब लिहाज़े इबादत कम हो और ख़ुल्क़ अच्छा हो तो अल्लाह तआला उसको क़ाएमुल्लैल रोज़ा दार का दर्जा अता करता है।

15. अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ बहर ख़ुशख़ूई अपने साहब को ख़ुश हाल रखती है फ़िर फ़रमाया एक दिन रसूलुल्लाह स0 मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे कि अंसार में से किसी की कनीज़ आई और उसका आक़ा ख़ड़ा हुआ था उस कनीज़ ने हज़रत के लिबास का एक किनारा पकड़ लिया। हज़रत उठ खड़े हुए उस कनीज़ ने न तो हज़रत से कुछ कहा और न हज़रत ने उससे। उस कनीज़ ने तीन बार एसा ही अमल किया। चौथी बार हज़रत खड़े हुए तो उसने लिबास से एक टुकड़ा हज़रत के पीछे जाकर काट लिया। लोगों ने उस से कहा तेरा बुरा हो तू ने तीन बार रसूलुल्लाह स0 को परेशान किया न तु ने कुछ कहा न हज़रत ने। आख़िर इससे तेरा क्या मक़सद था उसने कहा हमारे घर एक मरीज़ है घर वालों ने मुझे इस लिए भेजा है

कि मैं हुसूले शिफ़ा के लिए हज़रत के लिबास से एक टुकड़ा काट लूं। जब मैंने इरादा किया हज़रत ने मुझे देख लिया। मुझे हया आई कि हज़रत के देखने की हालत में काटूँ और यह भी अच्छा न जाना कि उसके लिए हज़रत से इजाज़त लूं, पस मैंने पसे पुश्त जा कर इस तरह हासिल किया।

16. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि फ़रमाया रसूलुल्लाह स0 ने तुम मे से बेहतर वह लोग है जो अज़ रूए अख़लाक़ सब से बेतहर है उन्हों ने अपने अतराफ़ को हमवार किया है यानी अपने हमसायों से नेक बरताओ करते हैं और उनसे मुहब्बत रखते हैं और वह उसको और उनके घरों में मेंहमान के लिए जगह है।

17. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि अमीरूल मोमिनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मोमिन वह है जिस को लोग दोस्त रखें नहीं है बेहतरी उसके लिए जो न दूसरों से उल्फ़त रखे और न दूसरे उससे।

18. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने हुसने ख़ुल्क़ इंसान को क़ाएमुल्लैल रोज़ा दार के दर्जे को पहुंचा देता है।



एक सौ अठहत्तरवां बाब

कुशादा रवी

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया औलादे अब्दुलमुत्तलिब तुम माल से लोगों को खुश नहीं कर पाओगे। लेहाज़ा तुम उन से खन्दा पेशानी और कुशादा रूई से मिलो। और एक रिवायत

में है कि बजाये बनी अब्दुल मुत्तलिब बनी हाशिम फ़रमाया।

2. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने तीन ख़सलतें ऐसी हैं कि उन में से अगर एक भी हो तो अल्लाह उस पर जन्नत को वाजिब करता है। मुहताज को देना, सब से ज़्यादा ख़दा पेशानी से मिलना और दूसरे का हक़ जो अपने ऊपर हो उसे देना।

3. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि एक शख़्स रसूलुल्लाह के पास आया और कहा कुछ नसीहत फरमाइये और बातों के हज़रत ने फ़रमाया अपने भाई से ख़न्दा पेशानी से मिलो।

4. किसी ने इमाम मुहंम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से पूछा हुसने ख़ुल्क़ की हद क्या है? फ़रमाया मुलातिफ़त मिलने वालों से और उन से ख़ुश कलामी और ख़न्दा पेशानी से मिलना।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि एहसान करना और ख़न्दा पेशानी से मिलना मुहब्बत को खींचते हैं और जन्नत में दाख़िल करते हैं और बुख़्ल और तुर्श रूई ख़ुदा से दूर करते हैं और जहन्नम में दाख़िल करते हैं।

6. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने शगुफ़्ता रवी कीना को दिल से दूर करती है।



एक सौ उन्नासीवां बाब

सिद्क़ और अदाए अमानत

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला ने किसी नबी को नहीं भेजा मगर बात की सच्चाई और हर नेक व बद की अमानत को अदा करने के साथ।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने धोका न खाओ लोगों की नमाज़ व रोज़ा से क्यों कि इंसान नमाज़ व रोज़ा का बाज़ औक़ात ऐसा हरीस हो जाता है कि उसके तर्क से उसे वहशत होती है बल्कि उसे आज़माओ गुफ़्तगू की सच्चाई और अदाए अमानत से।

3. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जिस की ज़बान सच्ची है उसका अमल पाक साफ़ है।

4. रावी ने कहा फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जब मैं पहली ही बार हज़रत के पास आदाबे गुफ़्तार हासिल करने आया फ़रमाया पहले सिदक़ बयानी हासिल करो।

5. रावी कहता है कि मैंने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम से कहा कि अब्दुल्लाह बिन याफ़ूर ने आपको सलाम कहा है फ़रमाया उस पर और तुम पर सलाम हो जब तुम अब्दुल्लाह के पास जाना तो उस पर मेरा सलाम कहना और यह कहना कि जाफ़र बिन मुहम्मद ने कहा है कि तुम उस चीज़ की तरफ़ नज़र करो जिसकी वजह से अली अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह स0 से तक़र्रुब हासिल किया और उसके लिए लाज़िम क़रार दो और वह गुफ़्तगू में सेदाक़त और अमानत का अदा करना है।

6. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने ऐ फ़ुज़ैल सच की तसदीक़ सब से पहले ख़ुदा करता है और सादिक़ की सिदक़ को जानता है इस लिए उसकी तसदीक़ करता है।

7. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने हज़रत इसमाईल का नाम इस लिए सादिक़ुल वअ़द हुआ

कि उन्हों ने एक जगह एक शख़्स से मिलने का वादा किया था उसके इंतेज़ार में वहां एक साल तक ठहरे रहे इस लिए ख़ुदा ने उनको सादिकुल वअ़द फ़रमाया। जब वह शख़्स आया तो हज़रत इसमाईल ने कहा कि मैं अब तक तेरा इंतेज़ार करता रहा।

8. फ़रमाया हज़रत इमाम मुहम्मब बाक़िर अलैहिस्सलाम ने ऐ रबीअ़ इंसान रास्त गोई करे ता ईंकि अल्लाह उसको सबसे ज़्यादा रास्तगो लिखे ब ग़ायत रास्त गोई ज़बान दलील है। दावाए ईमान की सेदाक़त पर।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जो बन्दा सच बोलता है उसको अल्लाह रास्त गोयों में लिखता है और झूठों को झूठ गोयों में लिखता है। सच बोलने वाले के मुतअल्लिक़ मलायका से कहता है उस ने सच बोला और नेकी की और झूठे के मुतअल्लिक़ कहता है उस ने झूठ बोला और फ़ासिक़ हुआ।

10. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक अलैहिस्सलाम ने कि लोगों को नेकी की तरफ़ ज़बान से न बुलाओ बल्कि अपने अमल से ताकि वह तुम्हारी कोशिश सच्चाई और परहेज़गारी को देखें।

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जिस की ज़बान सच्ची है उसका अमल पाक साफ़ है और जिसकी नियत अच्छी है उसका रिज़्क़ ज़्यादा होगा और जिसकी नेकी सहीह होगी अपने ख़ानदान वालों के साथ उसकी उम्र ज़्यादा हो जायेगी।

12. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने किसी शख़्स के तूले रूकूअ़ व सुजूद को न देखो क्यों कि

यह तो आदत हो गई है अगर उसको तर्क कर दे तो उसे वहशत होगी बल्कि उसकी बात की सच्चाई और अदाए अमानत को देखो।



एक सौ अस्सीवां बाब

हया

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने शर्म ईमान की एक शर्त है और ईमान की जगह जन्नत में है लेहाज़ा ईमान वाला जन्नती है क्यों कि सिफ़त बग़ैर मौसूफ़ न होगी।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने हया पाकदामनी और ज़बान को फ़ुज़ूल गोई से रोकना और दिल को कुन्द न बनाना, यह तीनों अलामाते ईमान से हैं।

3. फ़रमाया जो तंग दिली और हया करता है मअ़लूम करने में उसका इल्म कम होता है य़ानी तलबे इल्म और इज़हारे हक़ में हया न करनी चाहिए।

4. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर या इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिमास्सलाम में से किसी ने हया और ईमान दोनों एक रस्सी में बंधे हुए हैं अगर एक जायेगा तो दूसरा उसके पीछे जायेगा।

5. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ० ने जिसके पास हया नहीं उसके पास ईमान नहीं।

6. फ़रमाया रसूलुल्लाह स० ने हया दो तरह की होती है हयाये अक़्ल व हयाए हुम्क़, हयाए अक़्ल इल्म है और हयाए हुम्क़ जिहालत है।

7. फ़रमाया अबू अब्दुल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि

रसूलुल्लाह ने फ़रमाया चार चीज़ें एसी हैं जिस में यह होंगी अगरचि उसके गुनाह सर से पैर तक हों अल्लाह तआला उनको हसनात से बदल देता है और वह चार यह हैं। सिदक़, हया, हुसने ख़ुल्क़ और शुक्र।



एक सौ इक्यासीवां बाब

अफ़्व

1. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया एक ख़ुतबा में क्या मैं तुम को बताऊं कि दुनिया व आख़िरत के लेहाज़ से बेहतरीन आदमी कौन है, वह है जो अपने ज़ालिम को मआफ़ करे, सिलए रहम करे उससे जो क़तऐ रहम करे, एहसान करे उसके साथ जो बुराई करे और बख़्शिश करे उसके साथ जिस ने उसे बख़्शिश से महरूम कर दिया हो।

2. फ़रमाया रसूलुल्लाह स0 ने क्या मैं बताऊँ कि दुनिया व आख़िरत में बेहतरीन अख़लाक़ वाला कौन है? सिलए रहम कर उससे जो क़तऐ रहम करे अता कर उसको जो तुझे महरूम करे और मआफ़ कर उसको जो तुझ पर जुल्म करे।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने मकारिमे दुनिया व आख़िरत में तीन चीज़ें हैं जो जुल्म करे उसे मआफ़ कर दो, जो तुम से क़तऐ रहम करे उससे सिले रहम करो जो जिहालत से काम ले उसके साथ हिल्म से काम लो।

4. रावी कहता है मैंने हज़रत अली इब्नुल–हुसैन अ0 से सुना कि रोज़े क़ियामत ख़ुदा अव्वलीन व आख़िरीन को

जमा करेगा एक ज़मीन पर और एक मुनादी निदा करेगा। कहां हैं साहिबाने फ़ज़्ल, यह सुन कर लोगों की गर्दनें बुलन्द होंगी। मलाएका उन से मिल कर कहेंगे तुम्हारी फ़ज़ीलत क्या है वह कहेंगे कि हम ने क़तअ़े रहम करने वालों से सिलए रहम किया, महरूम करने वालों पर बख़्शिश की, और अपने ऊपर ज़ुल्म करने वालों को मआ़फ़ किया वह कहेंगे तुम ने सच कहा जन्नत में दाख़िल हो जाओ।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया अफ़्व को लाज़िम क़रार दो वह बन्दे की इज़्ज़त को ज़्यादा करता है अगर अफ़्व करोगे तो अल्लाह इज़्ज़त देगा।

6. फ़रमाया अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम ने अफ़्व पर निदामत अफ़ज़ल और आसान है उस निदामत से जो सज़ा देने के बाद हो।

7. मोअत्तिब से मरवी है कि इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम का एक बाग़ ख़ुर्मा का था आप अलैहिस्सलाम उस में ख़ुर्मे जमा कर रहे थे। मैंने हज़रत के एक ग़ुलाम को देखा कि उस ने एक ख़ुर्मों का ख़ोशा ले कर दीवार के बाहर फेंक दिया। मैंने उसको पकड़ लिया और उसको हज़रत के पास ले गया और कहा इसने यह हरकत की है आप ने उस से फ़रमाया ऐ फ़ुलां! क्या तू भूखा है? कहा नहीं फिर फ़रमाया क्या तू बरहना है, उस ने कहा नहीं, फ़रमाया फिर तू ने ऐसा क्यों किया। उसने कहा महज़ अपनी ख़ाहिश की बिना पर। फ़रमाया अच्छा तो यह तू ही ले ले और मुझ से फ़रमाया उसे छोड़ दो।

8. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने जब

दो लश्कर मुक़ाबिल हों तो उन में फ़तह उसी की होगी जो दुश्मन को मआफ़ करे यानी जो दुश्मन पर बख़शिश करता है और ब ख़ुल्क व नर्मी पैश आता है वह दुश्मन पर ग़ालिब आता है।

9. फ़रमाया अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम ने कि जिस यहूदिया ने बकरी के गोश्त में ज़हर पेवस्त करके हज़रते रसूले ख़ुदा को खिलाना चाहा था। आप ने उससे कहा तू ने ऐसा क्यों किया? उस ने कहा इस लिए कि अगर आप नबी हैं तो यह ज़हर नुक़सान न देगा और अगर बादशाह हैं तो लोगों को आप से नजात मिल जायेगी। फ़रमाया जा मैंने मअ़ाफ़ किया।

10. फ़रमाया अबू जाफ़र अलैहिस्सलाम ने कि तीन चीज़ें एसी हैं कि मर्दे मुसलमान उन से इज़्ज़त हासिल करता है अव्वल दर गुज़र करना उससे जो उस पर जुल्म करे, दूसरे अता करना जो उसे महरूम रखे, तीसरे सिलए रहम करना उस से जो कतअ़े रहम करे।



एक सौ बयासीवां बाब

गुस्से का पीना

1. फ़रमाया हज़रत अली इब्नुल–हुसैन अलैहिस्सलाम ने मैं दोस्त नहीं रखता कि नफ़्स की ज़िल्लत के साथ निअ़मतें हासिल करूं और कोई चीज़ पीना मेरे नज़दीक गुस्सा के पीने से ज़्यादा महबूब नहीं, जिस पर गुस्सा आये तो बदले में उससे नेकी करूं।

2. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने गुस्से का

पीना सबसे बेहतर है उस शख़्स के लिए जा इस पर सब्र करे। जितनी मुसीबत सख़्त होती है उतना ही उसका अज्र ज़्यादा होता है ख़ुदा जिस क़ौम को ज़्यादा दोस्त रखता है उसे मुबतेलाए बला करता है।

3. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने कि दुश्मनों के ज़ुल्म पर सब्र करो क्यों कि जिस ने तुम्हारे मुआमले में अल्लाह की ना फ़रमानी की है तुम उससे बदला इस से बेहतर सूरत में नहीं ले सकते कि अल्लाह की इताअत करो, अल्ला खुद उसे अज़ाबे जहन्नम में गिरफ़्तार कर देगा।

4. फ़रमाया अबू अब्दुल्लाह अलैहिस्सलाम ने जिन दुश्मनों की सलतनत में तुम हो उनके मज़ालिम पर गुस्सा का पीना एहतियाती तक़य्या है ख़ुसूसन उसके लिए जो गिरफ़्तारे बला हुआ। और बलाए दुनिया के पेश आने से और साहिबाने हुकूमत की दुश्मनी से बचने के लिए और उसकी दुश्मनी का इज़हार बग़ैर तक़य्या के अम्रे ख़ुदा का तर्क करना है ऐसे लोगों से मियाना रवी के साथ सुलूक करो ताकि तुम्हारी यह रविश उनके नज़दीक वज़न दार बने तुम उनसे खुल्लम खुल्ला दुश्मनी न करो वरन् तुम उनको अपनी गर्दनों पर सवार करके ज़लील हो जाओगे।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जो शख़्स गुस्से को ज़ब्त करता हे ख़ुदा उसकी इज़्ज़त दुनिया व आख़िरत में ज़्यादा करता हे और ख़ुदा ने फ़रमाया है वह (साहिबाने ईमान) गुस्से को पीने वाले और लोगों को मआफ़ करने वाले है और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है और वह उसको उस ग़ैज़ के बदले एक मकान

(जन्नत में) देता है।

6. रावी कहता है मुझ से एक शख़्स ने बयान किया जिस ने हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ0 से सुना जिस ने गुस्सा को ज़ब्त किया दर आं हालेकि वह उसको जारी कर सकता था तो रोज़े क़ियामत ख़ुदा अपनी मर्ज़ी से उसके दिल को पुर कर देगा।

7. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जिस ने गुस्से को ज़ब्त किया दर आं हालेकि वह उसको ज़ाहिर कर सकता था तो ख़ुदा उसके दिल को रोज़े क़ियामत अमन व ईमान से पुर कर देगा।

8. ज़ैद शहाम से मरवी है कि फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने ऐ ज़ैद निअ़मत के दुश्मनों पर सब्र करो ख़ुदा के दुश्मन से बेहतर बदला यह है कि तुम इस मामले में अल्लाह तआला की इताअ़त करो। ऐ ज़ैद अल्लाह ने दीने इस्लाम को बर गुज़ीदा किया है पस् तुम को चाहिए कि सख़ा और हुसने ख़ुल्क़ के साथ इस में शामिल रहो।

9. फ़रमाया अली इब्नुल–हुसैन ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया कि जो राहे ख़ुदा को दोस्त रखता है उसको दो घूंट पीने है एक गुस्से का है जिस में हिल्म से काम ले और एक मुसीबत का है जिस में सब्र से काम ले।

10. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार ने फ़रमाया बेटा कोई शैय मेरे लिए इस से ज़्यादा ख़ुशी का बाइस नहीं होती कि वक़्ते गैज़ सब्र से क़ाम लूं और इससे ज़्यादा मुझे ख़ुशी नहीं होती कि अच्छी निअ़मतों से अपने नफ़्स को बचा लूं।

11. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने

कि निअ़मतों के दुश्मन के जुल्म पर सब्र करो जो तुम्हारे मुआमला में अल्लाह की ना फ़रमानी करे उसको बेहतरीन बदला यह है कि तुम उस मामले में अल्लाह की इताअत करो यानी उस जुल्म के इंतेक़ाम को ख़ुदा पर छोड़ दो वह इससे अच्छी तरह बदला ले लेगा।

12. हासिले हदीस वही है जो पहले गुज़रा।

13. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि ख़ुदा के नज़दीक इस से ज़्यादा महबूब कोई चीज़ नही कि आदमी अपने गुस्से को फ़रू करे चाहे सब्र से हो या हिल्म से।



एक सौ तिरासीवां बाब

हिल्म

1. फ़रमाया इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने कि कोई आबिद नहीं बन सकेगा बग़ैर हिल्म के, बनी इस्राईल में जब तक कोई आबिद दस बरस तक ख़ामोश न रहता था उसे लोग आबिद नहीं कहते थे (शरीअते मूसा में सौमे सुम्त बेहतरीन समझा जाता था)

2. फ़रमाया अबू हमज़ा सुमाली ने जो असहाबे हज़रत अली इब्नुल–हुसैन व इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से है जो मोमिन साहिबे हिल्म होता है वह किसी मज्लिस में तहसीले इल्म के लिए बैठता है और बोलता है तो इस लिए कि दूसरों से कुछ समझे और अपने दोस्तों के राज़ो को ज़ाहिर नहीं करता और दुश्मनों के मुक़ाबिल को छुपाता नहीं और अम्रे हक़ में रिया को दख़ल नहीं देता और किसी से शर्म

के बाइस अम्रे हक़ को तर्क नहीं करता, लोगों की तारीफ़ से इस लिए डरता है कि उस में ख़ुदपसंदी न आ जाए और अल्लाह से इस्तिग़फ़ार करता है उन फ़रोगुज़ाश्तों पर जिन को लोग नहीं जानते और जो उसके हालात से जाहिल हैं उसकी बात से फ़रेब नहीं खाता और जो अमल उसने किया है उसको शुमार करने से डरता है।

3. फ़रमाया हज़रत अली इब्नुल-हुसैन अलैहिमस्सलाम ने मुझे तअज्जुब होता है उस शख़्स की हालत पर यानी मैं उसको पसंद करता हूं जो वक़्ते ग़ज़ब हिल्म से काम ले।

4. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह दोस्त रखता है साहिबे हया व हिल्म को।

5. हज़रत रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया ख़ुदा ने जाहिल को कभी इज़्ज़त नहीं दी और हलीम को कभी ज़लील नहीं किया।

6. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने हिल्म जैसा नासिर तेरे लिए काफ़ी है और अगर तू हलीम नहीं है तो हलीम बन।

7. हफ़्स से मरवी है कि इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने एक ग़ुलाम को एक ज़रूरत से भेजा जब वह देर तक न आया तो हज़रत उसकी तलाश में निकले देखा कि वह सो रहा है आप ने उसके सिरहाने बैठ कर पंखा झलना शुरू किया जब वह बेदार हुआ तो फ़रमाया ऐ शख़्स तुझे य ज़ेबा नही रात तेरे सोने के लिए है और दिन हमारे काम के लिए है।

8. फ़रमाया हज़रत रसूले ख़ुदा स0 ने कि अल्लाह दोस्त रखता है साहिबे हया हलीम को जो अफ़ीफ़ हुआ और

अपने को बुराइयों से बचाए।

9. फ़रमाया सादिके़ आले मुहम्मद अ० ने जब दो शख़्सों के दरमियान झगड़ा होता है तो दो फ़रिश्ते नाज़िल होते है और इन दोनों में जो बेवकूफ़ होता हैं उससे कहते है तू ने दुश्नाम देही की और तू इसी का अहल है इसका बदला तुझे मिलेगा। और इन में जो हलीम है उससे कहते हैं तू ने सब्र किया और हिल्म से काम लिया। तुझे इसका बदला मिलेगा। अगर तू इस पर क़ायम रहा। अगर हलीम अपने हिल्म पर बाक़ी नहीं रहता तो फ़रिश्ते उससे नाराज़ हो कर चले जाते हैं।



एक सौ चौरासीवां बाब

हिफ़्ज़े लिसान व ख़ामोशी

1. फ़रमाया इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने इल्म दीन की एक अलामत हिल्म, इल्म व खामोशी है खामोशी एक दरवाज़ा है जन्नत के दरवाज़ों से, खामोशी मुहब्बत को हासिल करती है और वह दलील है हर नेकी की।

2. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि हमारे शीया लगो और बातिल कलाम से ख़ामोश रहते हैं।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने अपने गुलाम सालिम से फ़रमाया दर आं हालेकि आप को हाथ उसके मुंह पर रखा था ऐ सालिम अपनी ज़बान को रोक सही व सालिम रहेगा लोगों को हमारी गर्दनों पर सवार न कर।

4. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने दर आं हालेंकि एक शख़्स आप से नसीहत ख़्वाह हुआ। अपनी

ज़बान को रोक इज़्ज़त पायेगा। और लोगों के हाथ में अपनी रस्सी न दे कि वह ज़िल्लत के साथ तुझे खींचे फिरेंगे यानी तेरी बात की गिरफ़्त करे तुझे ज़लील करेंगे।

5. फ़रमाया रसूले ख़ुदा स0 ने एक शख़्स से जो आप के पास आया था क्या मैं तुझे ऐसी बात बताऊं कि अल्लाह तुझे जन्नत में दाख़िल करे उस ने कहा ज़रूर या रसूलुल्लाह! फ़रमाया जो ख़ुदा ने तुझे दिया है तू उसे दूसरों को दे उस ने कहा अगर मैं खुद ही मुहताज हूं तो फ़रमाया तो फिर मज़लूम की मदद कर। उस ने कहा अगर मैं कम्ज़ोरी के बाइस इमदाद न कर सकों। फ़रमाया तो जो कम फहम हो उसकी फ़ह्म को दुरूस्त कर। उस ने कहा अगर मैं ख़ूद ही कम फ़ह्म हूं फ़रमाया तो अम्रे ख़ैर के सिवा और हर बात में ख़ामोश रह। अगर उन में से एक ख़सलत भी तेरे अन्दर पाई जाएगी तो वह तुझे जन्नत में ले जाएगी।

6. फ़रमाया अबू जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि लुक़मान ने अपने बेटे से कहा ऐ फ़रज़न्द अगर तेरे गुमान में कलाम चांदी है तो ख़ामोशी सोना है।

7. रसूले ख़ुदा स0 ने फ़रमाया अपनी ज़बान को रोको कि यह तुम्हारे लिए सदक़ा होगा यानी बाइसे रद्दे बला, फिर फ़रमाया बन्दा बग़ैर अपनी ज़बान को रोके हक़ीक़ते ईमान को नहीं जान सकता।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने उस कलामे ख़ुदा के मुतअिल्लक़ क्या तुम ने नहीं देखा उन लोगों की तरफ़ जिन से कहा गया तुम अपने हाथ रोक लो यानी अपनी ज़बान को रोक लो।

9. रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया मोमिन की नजात

ज़बान के रोकने में है।

10. अबू ज़र ने फ़रमाया ऐ इल्म के जोया यह ज़बान नेकी की कुन्जी है और बदी को भी तू अपनी ज़बान पर इस तरह मुहर लगा जैसे सोने और काग़ज़ पर लगाता है।

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि मसीह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है सिवाए ज़िक्रे खुदा ज़्यादा कलाम न करो जो ज़िक्रे खुदा के अलावा ज़्यादा कलाम करते हैं उनके दिल सख़्त हो जाते हैं लेकिन वह जानते नहीं।

12. फ़रमाया इमाम ज़ाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता कि जिस्म का हर एक अज़ो ज़बान को काफ़िर न बनाता हो और यह न कहता हो खुदा की क़सम हम तेरी वजह से अज़ाब दिये जायेंगे।

13. फ़रमाया अली इब्नुल–हुसैन अलैहिस्सलाम ने कि ज़बान बनी आदम के तमाम आज़ा से हर सुब्ह को पूछती है तुम ने किस हालत में बसर की? वह कहते हैं कि अगर तू हम को छोड़ दे तो नेकी में गुज़रती है। अल्लाह अल्लाह हम में है और उसको क़सम दे कर कहते है हमें सवाब भी तेरी वजह से मिलेगा और अज़ाब भी तेरी वजह से।

14. एक शख़्स रसूलुल्लाह स0 के पास आया और कहने लागा मुझे नसीहत कीजिये फ़रमाया अपनी ज़बान को रोके रहो। लोग उसी ज़बान के नतीजे में ओंधे मुंह दोज़ख़ में डाले जायेंगे।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया जो शख़्स अपने कलाम का अपने अमल से हिसाब नहीं लगाता यानी उसको कम करता है और बकवास ज़्यादा करता है तो उससे ख़तायें ज़्यादा सर ज़द

होती हैं और उसके लिए अ़ज़ाब मौजूद रहता है।

16. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया है खुदा ज़बान को वह अ़ज़ाब देगा जो अ़ज़ाब आज़ा में से किसी को न देगा। ज़बान कहेगी ऐ मेरे परवरदिगार तू ने मुझे ऐसा अ़ज़ाब दिया जो और किसी अज़ो को न दिया कहा जायेगा तू ने एसे कलिमात निकाले जो मशरिक़ से मग़रिब तक पहुंचे उनकी वजह से बे गुनाहों के ख़ून बहाये गये लोगों का जाएज़ माल लूटा गया और नाजायज़ शर्मगाहों से ज़िना किया गया और अपने इज़्ज़त व जलाल की क़सम मैं तुझ को वह अ़ज़ाब दूंगा जो बदन के किसी और अज़ो को न दूंगा।

17. रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया अगर किसी शैय में बद बख़्ती है तो वह इंसान की ज़बान है।

18. रावी कहता है मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम से सुना कि बनी इस्राईल में जब कोई आबिद इरादा–ए–इबादत करता था तो दस बरस तक पहले खामोश रहता था।

19. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया कि जो अमल के लिहाज़ से अपने कलाम पर नज़र करता है वह कम बोलता है सिवाए उसके जिसका इरादा करे यानी ज़िक्रे खुदा।

20. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने औलादे दाऊद की हिकमतों में से एक यह भी थी कि मर्दे आक़िल पर लाज़िम है कि वह अपने ज़माने का आबिद हो यानी अपनी उम्र के लिहाज़ से काम करे और अपनी शान का ख़ेयाल रखते हुऐ और अपनी ज़बान की रोक थाम करते हुए।

21. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जब तक बंदए मोमिन साकित रहता है वह नेकी करने वाला हमेशा लिखा जाता है और जब बोलता है तो फिर जब बोलता है तो फिर नेकी करने वाला लिखा जाता है या बदी करने वाला।



एक सौ पचासीवां बाब

मुदारात

1. रसूले ख़ुदा स0 ने फ़रमाया तीन चीज़ें हैं जिनके बग़ैर अमल तमाम नहीं होता परहेज़गारी जिसकी वजह से ख़ुदा की ना फ़रमानी से रूके रहो ख़ुल्क़ जिसकी वजह से वह लोगों से ब मुदारात पेश आये और हिल्म जिसकी वजह से जाहिल की जिहालत को रद किया जाए।

2. इमाम जाफ़र स़ादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जिब्रईल रसूले ख़ुदा स0 के पास आये और कहा कि आप स0 का रब सलाम कहता है कि तुम मेरी मख़लूक़ से ब मुदारात पेश आओ।

3. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि तौरेत में है कि मुनाजात की मूसा अलैहिस्सलाम से अल्लाह ने और फ़रमाया ऐ मूसा कि मेरे राज़ को अपने दिल में छुपाये रहो और ज़ाहिर करो मेरी तरफ़ से मुलाएमत को अपने दुश्मन और मेरे दुश्मन पर और मेरे लिए उनकी गालियां हासिल न करो, मेरे राज़हाये सर बसता को ज़ाहिर करके वरन् मुझे दुश्नाम दिलवाने में मेरे दुश्मन के साथ तुम भी शरीक हो जाओगे यानी अगर फ़िरऔन और उसके

लश्कर वाले तुमसे पूछें मा बालुल कुरूने ऊला (हमारे बाब दादा जो मर गये उनका क्या हाल है) तो उनके जवाब में कहो उनका इल्म अल्लाह को है यह न कहो कि वह अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार हैं क्योंकि यह उनको बुरा लगेगा और वह तुम्हारे ख़ुदा को और तुम को गालियां देंगे।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अ0 ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया मेरे रब ने मुझे लोगों के साथ ब ख़ुल्क़ व मुदारात पेश आने का हुक्म दिया है इसी तरह जैसे अदाए फ़राएज़ का।

5. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया कि लोगों से ब मुदारात पेश आना निस्फ़ ईमान है और उन से नर्मी करना निस्फ़ ऐश, फिर हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया नेकियों से इज़हारे दोस्ती पोशीदा तौर से करो। यानी दिल से और फ़ाजिरों से ज़ाहिरी तौर पर ताकि वह तुम्हें न सतायें और उनकी ख़ताओं को उन पर ज़ाहिर न करो वरन् वह तुम पर जुल्म करेंगे एक ज़माना ऐसा आने वाला है कि दीनदारों में सिर्फ़ वही लोग नजात पायेंगे जिन को बेवकूफ़ और कोतिल समझा जायेगा पस सब्र करो इस पर कि लोग यह कहें कि बे वक़ूफ़ है उसे अक़्ल नहीं।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने एक क़ौम लोगों में एसी है कि वह लोगों में मुदारात का बरताव कम करते है और लोग कुरैश से अलग हो गये वल्लाह उनके हसब में कोई ऐब न था (मगर चूंकि उन्हों ने बुरा बरताव किया लेहाज़ा वह अइम्माए ज़लालत के पंजें में फंस गये) और चूंकि ग़ैर कुरैश ब ख़ुल्क़ व मुदारात पेश आये लिहाज़ा

वह ख़ानवादा–ए–गिरामी (बनी हाशिम) से मुलहक़ रहे फिर फ़रमाया जो शख़्स लोगों से अपना हाथ रोके रहता है तो उसका एक हाथ रूकने से बहुत से हाथ रूक जाते हैं।



एक सौ छियासीवां बाब

रिफ़्क़

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने हर शैय के लिए एक कुफ़्ल होता है और ईमान का कुफ़्ल मेहरबानी और नर्म दिली है (जो शैतान के दाख़ले को रोकने वाला है)

2. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जिस को नर्म दिली मिल गई उसको ईमान मिल गया।

3. फ़रमया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि अल्लाह तआला आहिसतगी और हमवारकारी वाला है और उसी को पसंद करता है जो उसकी इबादत तदरीजन करता है तो लोगों के कीने उससे अलग कर देता है और उनकी बद खाहिशों और दिलों को रोक देता है और अपने बन्दों के साथ उसकी मेहरबानी यह है कि वह अपने मुकल्लफ को अलग कर देता है उस अम्र से जिस से वह उनको अलग रखना चाहता है ताकि ईमान की बहुत सी पाबंदियां और उसका बोझ एक बार ही उन पर न पड़े जिस से वह कमज़ोर पड़ जायें जब वह इस अम्र का इरादा करता है तो एक हुक्म को दूसरे से मंसूख कर देता है।

4. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने अल्लाह मेहरबान है और मेहरबानी को दोस्त रखता है और

मेहरबान बन्दा को वह कुछ देता है जो तुन्द मिज़ाज को नहीं देता।

5. अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया कि मेहरबानी बरकत है सख़्त पसंदी नहूसत है।

6. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने जहां नर्मी और मेहरबानी किसी अम्र में होती है ख़ुदा उसे ज़ीनत देता है और जहां नहीं पाई जाती उसे ज़िश्त क़रार देता है।

7. रसूलुल्लाह स० ने फ़रमाया रिफ़्क़ में ज़्यादती और बरकत है और जो इस से महरूम है वह ख़ैर से महरूम है।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अ० ने जिस घराने में रिफ़्क़ व मेहरबारी नहीं वहां ख़ैर नहीं।

9. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जिन घर वालों को ख़र्च में हमवारी और मियाना रवी दी गई वहां अल्लाह उनके रिज़्क में वुसअ़त देता है और रिफ्क़ कमी माल की सूरत में बेहतर होता है ब निस्बत ज़्यादती माल की सूरत के और हमवारी और मियाना रवी किसी चीज़ में आजिज़ नहीं बनाती और माल का तलफ़ करना कोई शैय बाक़ी नहीं रखता अल्लाह तआला साहिबे रिफ़्क़ है और रिफ़्क़ को दोस्त रखता है।

10. रावी कहता है कि मेरे और क़ौम के एक शख़्स के दरमियान गुफ़्तगू हो रही थी कि इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया नर्मी से बात करो मुमकिन है गुस्सा में कोई उन में से कुफ़्र का कलिमा कह जाए। नहीं हे बेहतरी उस शख़्स के लिए जो गुस्से में कलिमए कुफ़्र कहे।

11. फ़रमाया इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम ने मियाना रवी आधा ऐश हे।

12. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया अल्लाह तआला रिफ़्क़ को दोस्त रखता है और रिफ़्क़ वाले की मदद करता है अगर तुम कमज़ोर चोपाया पर सफ़र कर रंहे हो तो चाश्त और नमाज़ के वक़्त उतर पड़ो अगर ज़मीन बे ग्याह हो तो उसे तै कर जाओ और अगर सबज़ा ज़ार हो तो वहां उतर कर नमाज़ पढ़ो और अपनी ज़रूरियात पूरी करो, चोपाया भी वहां घास खा लेगा और कुछ देर वहां आराम मिल जाएगा।

13. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया कि अगर रिफ़्क़ कोई मख़लूक़ होता तो मख़लूक़ाते इलाही में कोई उस से ज़्यादा हसीन न होता।

14. फ़रमाया इमाम मुहम्मद बाक़िर या जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने, अल्लाह मेहरबान है और मेहरबानी को दोस्त रखता है और जिस में तुम में से रिफ़्क़ पाया जाता है उसके दिल से कीने दूर हो जाते है और वह ख़ाहिशे नफ़्सानी की ज़िद में काम करता है अल्लाह तआला अपने रहम व करम से अम्रे मुश्किल को अपने बन्दे से हटा देता है और उस हुक्म का नासिख़ ला कर मंसूख़ कर देता है ताकि अम्रे हक उस पर बार न हो।

15. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि रसूलुल्लाह स0 ने फ़रमाया जब दो शख़्स मिल कर बैठें तो उन दोनों में अज़ रूए अज्र और उन दोनों में ज़्यादा ख़ुदा का दोस्त वह होगा जो उन में अपने साथी पर ज़्यादा

मेहरबान हो।

16. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जो शख़्स साहिबे रिफ़्क़ है वह लोगों से जो पाने का इरादा करेगा पा लेगा।



एक सौ सत्तासीवां बाब

तवाज़ोअ

1. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि नज्जाशी बादशाहे हबशा ने जनाब जाफ़र और उनके असहाब को बुला भेजा वह लोग आये तो देखा कि वह अपने मकान में ख़ाक पर बैठा है और पुराना लिबास पहने हुए है जाफ़र का बयान है कि हम उसकी यह हालत देख कर डर गये जब उस ने हमारे चहरों का तग़ैय्युर देखा तो कहने लगा। हम्द है उस ख़ुदा की जिस ने मुहम्मद स0. की नुसरत की उसकी आंखों को ठण्डा किया। क्या मैं ख़ुशख़बरी सुनाऊं। मैंने कहा ज़रूर ऐ बादशाह। उस ने कहा मेरे पास अभी अभी तुम्हारे मुल्क की तरफ़ से मेरा एक जासूस आया है जो वहां रहता है और यह ख़बर लाया है कि ख़ुदा ने अपने नबी मुहम्मद स0 की मदद की, उनके दुश्मनों को हलाक किया और फुलां फुलां नामवर क़ुरैश क़ैद कर लिये गये। यह मुक़ाबेला बदर में हुआ था जहां पीलू के दरख़्त ब कस्रत है गोया मैं अपने को वहां देख रहा हूं जब्कि मैं अपने आक़ा के जो बनी जमरा से था ऊँट चराता था।

यह इशारा है उस वाक़िआ की तरफ़ कि नज्जाशी का बाप बादशाह था और नज्जाशी के चचा के

बारह लड़के थे इन सब ने उसको मार डाला और नज्जाशी को गुलाम बनाकर बनी जमरा के ताजिर के हाथ फ़रोख़्त कर डाला जो उसे हिजाज़ ले आया और ऊँट चराने की ख़िदमत उसके सुपुर्द की, चूंकि नज्जाशी के चचाज़ाद भाइयों में सलतनत करने की अहलियत न थी लेहाज़ा लोग हिजाज़ ले आये और नज्जाशी को ले जाकर बादशाह बना दिया।

जनाब जाफ़र ने कहा ऐ बादशाह यह तो फ़रमाईए कि आप ख़ाक पर क्यों बैठे हैं और यह पुराने कपड़े क्यों पहने हुए हैं उस ने कहा हम ने जनाबे ईसा अ0 पर नाज़िल हुई किताब में पढ़ा है कि बन्दों पर अल्लाह का हक़ यह है कि जब किसी निअ़मत के वक़्त बन्दों से बात करें तो तवाज़ोअ से करें जब ख़ुदा ने मुझे मुहम्मद स0 जैसे नबी की निअ़मत दी तो मैं तवाज़ुअ़ व इंकेसारी से बात क्यों न करूं यह तवाज़ोअ ख़ुश्नूदी–ए–ख़ुदा के लिए है जब हज़रत रसूले ख़ुदा को यह ख़बर मिली तो अपने असहाब से यह फ़रमाया सदक़ा देने से निअ़मत ज़्यादा होती है तुम सदका दो अल्लाह तुम पर रहम करेगा। तवाज़ुअ़ करने वाले की रफ़अ़त को ज़्यादा करती है लेहाज़ा तवाज़ुअ़ अख़्तियार करो ख़ुदा तुम्हारा मर्तबा बुलन्द करेगा और माफ़ करना इज़्ज़त को बढ़ाता है पस तुम माफ़ करो अल्लाह तुम्हें इज़्ज़त देगा।

2. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने आसमान में दो फ़रिश्ते बन्दों पर मुअक्किल हैं जो कोई क़ुरबतन इलल्लाह तवाज़ोअ करता है उसका रूतबा बुलन्द करते हैं और जो तकब्बुर करता है उसे गिरा देते हैं।

3. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि शबे पंजशंबा में रसूलुल्लाह स0 ने मस्जिदे कुबा में अफ़्तारे सौम किया और फ़रमाया कुछ पीने के लिए भी है औस बिन खूली अंसारी दही में शहद मिला हुआ ले आये हज़रत ने मुंह लगा कर उसे अलग कर लिया और फ़रमाया दो चीज़ों की क्या ज़रूरत है जब्कि एक ही काफ़ी है। मैं दोनों को न पियूंगा। हराम नहीं करता। बल्कि ब लिहाज़ तवाजुअ़ ख़ुशनूदी ख़ुदा के लिए ऐसा करता हूं जो तवाजुअ़ पसंद है ख़ुदा उसका मतर्बा बुलन्द करता है और जो तकब्बुर करता है उसको ज़लील करता है और जो मआ़श में किफ़ायत शिआ़री से काम लेता है अल्लाह उस पर रिज़्क़ ज़्यादा करता है और जो फुज़ूल ख़र्ची करता है अल्लाह उसे रिज़्क़ से महरूम रखता है और जो ज़िक्रे मौत अकसर करता है अल्लाह उसको दोस्त रखता है।

4. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने जो अल्लाह को ज़िक्र अकसर करता है ख़ुदा उसे जन्नत के साये में रखता है।

5. फ़रमाया इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने कि जिब्रईल रसूले ख़ुदा के पास आये और कहने लगे अल्लाह तआला आप से कहता है चाहे रसूले मुतवाज़ेअ़ हो कर मेरे बन्दे बनो और चाहे रसूल रह कर बादशाह बनो, हज़रत ने फ़रमाया जिब्रईल ने मेरी तरफ़ देख कर फ़रमाया और इशारा किया हाथ से कि तवाजुअ़ इख़तियार करो। हज़रत ने फ़रमाया मैं तो अब्दे मुतवाज़ेअ की सूरत में रसूल हूं। फ़रिश्ता ने कहा आप के रब के नज़दीक इस सूरत में कोई शैय आपके मतर्बा से कम न हुई इमाम ने फ़रमाया कि फ़रिश्ता के

पास ख़ज़ाइने अर्ज़ की कुंजियां थीं (जो देने आया था)।

6. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने तवाज़ोअ़ यह है कि किसी मज्लिस में नीचे मक़ाम पर बैठे और जिस से मिले उस पर सलाम करे और झगड़े को तर्क करे अगरचे हक़ पर हो और उसे पसन्द न करे कि तक़वा पर तेरी तअ़रीफ़ करे।

7. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने कि वही की अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ ऐ मूसा तुम जानते हो कि मैंने अपनी मख़लूक़ को छोड़ कर तुम ही को अपने कलाम से क्यों मख़सूस किया उन्हों ने अर्ज़ की मुझे बता कि एसा क्यों किया? ख़ुदा ने वही कीं, ऐ मूसा मैंने अपने बन्दों की ख़ूब जांच की, उन में से किसी के नफ़्स को मैंने अपने सामने तेरे नफ़्स से ज़्यादा मुतवाज़ेअ न पाया जब तू नमाज़ पढ़ता है तो अपने रूख़सार को ख़ाक पर रखता है और एक रिवायत में हैं ज़मीन पर रखता है।

8. फ़रमाया हज़रत अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने हज़रत अली इब्नुल–हुसैन अलैहिस्सलाम चन्द जुज़ामियों की तरफ़ से गुज़रे दर आं हालेकि अपने हिमार पर सवार थे वह लोग नाश्ता कर रहे थे उन्हों ने हज़रत से खाने में शिरकत की दरख़ास्त की फ़रमाया अगर मैं रोज़ा से न होता तो ज़रूर तुम्हारे साथ खाता, जब वहां से घर आये तो हुक्म दिया कि पुर तकल्लुफ़ खाना तैयार करें जब दूसरा दिन हुआ तो आप ने उन लोगों को नाश्ते पर बुलाया और उनके साथ ख़ुद भी खाया।

9. फ़रमाया हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने तवाज़ोअ से एक अम्र यह भी है कि अपने मर्तबे से पस्त मुक़ाम पर बैठे।

10. रावी कहता है कि हज़रत अबू अब्दिल्लाह ने मदीना के एक आदमी को देखा कि उस ने अपनी अयाल के लिए कुछ सामान ख़रीदा और ले कर चला जब उस ने हज़रत को देखा तो शर्मा गया। हज़रत ने फ़रमाया। ऐ शख़्स यह तूने अपने बाल बच्चों के लिए ख़रीदा और उसे उनके पास लिये जा रहा है ख़ुदा की क़सम अगर अहले मदीना की तअ़न का ख़ौफ़ न होता तो मैं यह पसंद करता कि अपने बच्चों के लिए सामान ख़रीद कर के ले जाऊँ।

11. फ़रमाया अबू अब्दिल्लाह अलैहिस्सलाम ने ख़ुदा ने दाऊद अ० को वही भेजी, ऐ दाऊद जिस तरह तवाज़ोअ करने वाले ख़ुदा से ज़्यादा क़रीब हैं उसी तरह तकब्बुर करने वाले उस से ज़्यादा दूर हैं।

12. अबू बसीर से मरवी है जिस साल इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम का इंतेक़ाल होने वाला था मैं मक़ामे मिना में इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की मैं आप पर फ़िदा हूं आप ने कुरबानी में मेंढा जबह किया और फुलां यानी आपके भाई अब्दुल्लाह अफ़तह ने ऊटँ नह्र किया। फ़रमाया ए अबू मुहम्मद नूह अलैहिस्सलाम कशती में थे और इस में जो अल्लाह ने चाहा वह था और कशती महकूमे अम्रे नूह थी। उसने बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। और वह मनासिके हज का आख़िरी तवाफ़े निसा था और ख़ुदा ने कहा मेरे बन्दे नूह ने कशती को छोड़ दिया कि ए पहाड़ो वह तुम में से किसी पहाड़ पर जा ठहरे। बुलन्द पहाड़ों ने तकब्बुर किया और अपना सर फ़ख़्र से अज़ राहे तकब्बुर उभारा और जूदी ने जो इराक़ अरब का सब से छोटा पहाड़ है तवाज़ोअ का इज़हार

किया पस नूह अलैहिस्सलाम की कशती ने अपने सीने को उसी पहाड़ से टकरा दिया। नूह ने ब ज़बाने सिरयानी बारगाहे इलाही में अर्ज़ की। ख़ुदावन्दा मुझे ग़र्क़ होने से बचा ले। अबू बसीर कहते हैं कि मेरा गुमान यह है कि इमाम अलैहिस्सलाम ने अपनी इमामत और अब्दुल्लाह अफ़तह के ग़लत दअ़वे की तरफ़ इशारा किया।

13. फ़रमाया इमाम रिज़ा अलैहिस्सलाम ने तवाज़ोअ़ यह है कि तुम लोगों को वह अता करो जिसे तुम चाहते हो कि कोई तुम को अता करे। रावी कहता है मैंने पूछा हद्दे तवाज़ोअ़ क्या है? जिस के करने पर बन्दा उर्फ़े आम में मुतवाज़ेअ़ समझा जाये। फ़रमाया तवाज़ोअ के दरजात है उन में से एक यह है कि इंसान अपने नफ़्स की क़दर जान कर सच्चे दिल से अपने को उस मंज़िलत से पस्त तर दिखाऐ और यह बात पसंद करे कि दूसरों को वही मिले जिसको वह अपने लिए चाहता है और अगर किसी से बुराई देखे तो उसका बदला नेकी से दे। गुस्सा का पीने वाला कुसूर का मआ़फ़ं करने वाला है और अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है।

(ख़त्म शुद)

